॥ श्री जिनाय नमः ॥

श्री जिन पूजा महोदधि.

खरतर तप गच्छादि ३७ पूजाका संग्रह

यथामति संसोधन करके

प्रसिद्ध करनेवाला

पं. प्रा. धर्मशील गणिके प्रशिष्य

युक्ति वारिधिः उपाध्याय

श्री रामलाल गणि

तथा

शिष्य पं. क्षेमचंद पेमचंद अमरचंद

विद्याशाला.

मुंबाई.

शान्ति सुधाकर प्रेसमें छापा गया.

संवत १९५८ वीरात् २४२७.

मूल्य रु. ४॥

॥ श्री जिनाय नमः ॥

श्री जिन पूजा महोदधि.

खरतर तप गच्छादि ३७ पूजाका संग्रह

यथामति संसोधन करके

प्रसिद्ध करनेवाला

पं. प्रा. धर्मशील गणिके प्रशिष्य

युक्ति वारिधिः उपाध्याय

श्री रामलाल गणि

तथा

शिष्य पं. क्षेमचंद पेमचंद अमरचंद

विद्याशाला.

मुंबाई.

शान्ति सुधाकर प्रेसमे छापा गया.

संवत १९५८ वीरात् २४२७.

मूल्य रु. ४॥

॥ श्री सरस्वत्यै नमः ॥

प्रस्तावना.



यह जिनपूजा महोदधि नाम ग्रंथ हे सो पूजाओका समुद्र हे. पहली पूजा कराणेका काव्य तथा गाथाओ संस्कृत तथा प्राकृत में थी. जबसें भारतवर्षमें संस्कृत प्राकृत पढणेका प्रचार कम पडा, ओर लोकोमें अज्ञानरूप अंधकार फेला, उस अंधारके घूक प्रतिमा उत्थापक मत निकला. उनोने जिन मूर्त्ति पूजाकी ढालोमें अडंग वडंग रागणीया वणाकर हिंसा दिखाकर भोले लोकोकों अज्ञान कष्ट दिखाकर अपणा कपोल कल्पित मत चलाणा सरू करा, तव खरतरगच्छी श्रीजिनचंद्रसूरिने महा संवेग भावनामें वर्त्तमान क्रिया उद्धारी सर्व साधूओके संग ज्ञानभास्करने उजाला करणा सरू करा. तब वहोत भव्यजीवोंको सनातन मार्ग दीखणे लगा. उस वखत अपणे साधुवर्गसें प्रेरणा करणेसें भाषा सुगमाभिलाषी भव्य जनोके उपगारार्थ श्री ज्ञातासूत्र तथा रायपसेणी जीवाभिगमके लिखत मुजव सुसाधू पंडित साधूकीर्त्ति मुनिःने अनेक राग रागणीयोंमे सतरह भेदकी पूजा भाषा गर्भित वनाई. यह पूजा गायन रूप संवत विक्रम सोलेसे अठारेमें वणी. भाषा गायन पूजामें यह आद पूजा हे. वाद खरतर पंडितोने तथा तपा पंडितोने भाषामें पूजा वणाणा सरू करा. इस पूजाओमें अनेक तरेपर जिन भक्ति करते सत्पदार्थ तत्वाभिलाषीयोकुं तत्वपदार्थका ज्ञान होता हे. किबहुना, आगे पढके स्वत· देख लेवें. इण पूजामेंभी कुछ२ संस्कृती लवजका जाणकार होगा सोही परमार्थ समझेगा. वीस स्थानकादि ४ पूजा वारे व्रतादिक पूजामें संस्कृत मिश्रित भाषा पद हे. वीस विहरमानकी पूजामें षटद्रव्यादि पदार्थ निर्णय हे.

जिनमंदिरकी ८४ आसातना टालणा, जिनमंदिरकी सार संभाल पूजा प्रमुखमें उपयोग रखणा, रखवाणा, जीर्णोद्धार भंडार वृद्धिके उपाय करणा, चैत्य द्रव्य खाणे नही देणा. जो खायगा सो सोनेमे सोहगी माफक गल जाता हे. ज्ञानभंडारकी वृद्धि, पाठशालामें जैनग्रंथ लडकोंकों पढवाणा. उनोकों अन्न वस्त्रका सहाय देणा. जैनवर्ग नामंदरीके वास्ते नये मंदिर कराणे प्रमुख कर्त्तव्य में अभी तक वहोतसे रुपे खरचा करते हें, लेकिन् जैन धर्म वढणेकी असली जड जो पाठशाला उसमें विद्याभ्यासियोके वास्ते विरले पुण्यात्मा सहाय देतें होंगे. कारण जिन भक्ती ओर संघ ये मुख्य प्रवचनके आधार पर रहा हे. अनेक अन्यमतावलंबीयोने मदरसे खडे करके अनेक तरेकें कलाकौशल पेदा करके अपणे मतकी उन्नती करके श्रीमंत बणते हे. पूर्वाचार्योंके ग्रंथ देखणेसें प्रगट मालम देताहे के जैनकोम राज्यनीति ओर धर्मनीति व्यवहार ओर उद्यम करणेमें वडे साहसीक थे. श्रीमन्राज्येश्वरऽग्रेजो के प्रतापसें विद्यावृद्धिके अनेक छापखाने वगेरे प्रयत्न सरू हे, तथापि विना परिश्रम कीये इह भव ओर परभव नही सुधरता हे. छापेखाणेके प्रताप अलभ्य जैन ग्रंथ सहजमें मिलणे लगे. त्यागियोकों त्याग धर्म जबही सफल हे की जैन कोम वढणेका प्रयत्न करे. जिन २ बातोंसे जैन धर्म घटता जाता हे, उस बातोंके रोकणेका उपदेश करे. सभा कर २ के अच्छी रीती चलावे. जिसमें जैन कोम धनसें ओर जनसे वढके अपणी वृद्धिके पाये मजबूत करे. केवल अपणी शोभाके लिये गृहस्थो पास लाखो रुपें व्यर्थ खरच कराणेसें जैन धर्मकी उन्नती नहि कहलाती हे. फकत लाड्डू विदाम वांटणा यह साधर्मी वात्सल्य मांनके दिलमें फूलणा. यह साधर्मी वात्सल्य तीर्थंकरने एसा कहा हे जैन सम्यक्तीकी भक्ती साचवणा, बहुमान,

वस्त्र अन्नादिक विद्याभ्यास कराणा, गुणवानको कदर करणा, जैन धर्मका उपदेश कराके सच्चा तत्व प्रकास कराणा, उन लोकोके वास्ते सिदातेकुं सब किसमकी मदत करणा, कलाकोशल समयानुसार जैन कोमकुं सिखलाणा, सच्चा साधर्मी वात्सल्य इसकूं कहते हे. दादासाहिव श्रीजिनदत्तसूरिने एसें २ ग्रंथ बनाके श्रावक वर्गोसे सिखलाये थे, सो उनके अभ्यासी श्रावग प्रधान सेनापति आदि राज्याधिकारी वण गये थे, सो अबतक तो चला. अव तो जैन कोम वहोत लोक मारवाडमें शास्त्री अक्षर तक नही वांच जाणते, तो राज्यनीती तो दूर रही. अब राजाओनें राज्याधिकार कायस्थ खत्री मुसलमीन जो जो विद्याभ्यासी मिले उनोके सुप्रत करणा सरू करा. अर्हन्नीति विवेकविलास शकुनशास्त्र पंचवास्तुकशास्त्र इत्यादि सो ग्रंथ तो एसे २ दादासाहिवने रचे हे सो वांचणेसें मालम हो जाता हे. केइ २ ग्रंथ तो छापेद्वारा प्रकाश भये हे. ये पढके अमल करे तो कभी राज्याधिकार राजा लोक दुसरी कोमकों नही सोंपे, अर्हन्नीतिका कायदा विलकुल अंग्रेजोने इस वखत चला रख्खा हे. कोइ २ कायदे फेरफार अपणे तरीकेसें चलाया हे. इस वास्ते हे विवेकी लोको ज्ञान ओर ज्ञानीका संवंध हे, उनकी वात्सल्यता करोगे तो वडा लाभ होगा. क्यो दुसरा धर्मकी तरफ खयाल करते हो. इस सर्वज्ञके शास्त्रोमें सब तरेका इल्म हे, खोज करते रहो, मिले उसकूं वृद्धि करो.

सूचना—हे जैन वंधुओ आप लोकोंसें सविनय प्रार्थना हे कहां पर जैन ज्योतिष गणितशास्त्र पूर्वाचार्य रचित मिले तो मुझें पत्रद्वारा जरूर वाकब करणा वडा उपगार मांनूगा, कारण अन्य मतवलंवी कहते हे के जैनोके पास ज्योतिष वेद्यक ग्रंथ नही हे, सो मारे ग्रंथोसें काम चलाते हे, लेकिन् मिथ्यात्वीयोने एसी च

लाकी करी हे हमारा जैनका ज्योतिष ग्रंथ भुवनप्रदीप पद्मप्रभ सूरि कृत जिसका मंगलाचरण निकालके अपणा मंगलाचरण डालके छापा हे. यह प्रत्यक्षपणे चोरी हे. इस वजे इन लोकोने उन महाशयोका नाम २ निकाल २ अपणे नामसे ग्रंथ प्रकास करा हे. जैन लोकोंमे मदत कहा सो इस वातोकी गवेषणा करे. हमारे विद्वान एसे भये उनोने कोइ ग्रंथ रचणेमें कमी नही रख्खी हे. चौदेसें चम्मालीस प्रकरण हरिभद्रसूरिने बनाये, हेमचंद्र तो सब्दसमुद्रही था. यतः किंस्तौमः शब्दपाथोधे। हेमचंद्रमुनैर्मतं ॥ एकाकीनापिये नेदृग् । कृतं शब्दानुशासनं ॥ १ ॥ यह स्तवना कौमुदीकर्त्ता भट्टोजी दीक्षितने हेमचंद्रकी करी हे.

इस ग्रंथके छापणेमें सेठ सांव सुखा श्री जुहारमल समेरमलके मुनीम पा० माणकचंदजी वीकानेरवाला हाल मुकाम मुंबईमें मदत करी हे उनकु बडा लाभ हो.



अनुक्रमणिका.



सूचीपत्र.

हमारे पास इतने ग्रंथ छपे हे.

शोले चाणाक्य अर्थ स्वरोदय शकुनावलीवाला कि० १
दादा साहिब पूजा .... कि० ०।
सिद्ध मूर्ति विवेक विलास मूर्तिमंडनका अदभुत ग्रंथ कि० ०॥
श्रीजिन पूजा महोदधि .... कि० ४॥
श्रावक व्यवहारालंकार अनेक दृष्टांत समेत .... कि० १॥
श्रीपाल चरित्र हिंदुस्तानी भाषाका छपेगा
धर्मरत्न समुच्चय ग्रंथ छपेगा .... कि० ५

वीकानेर राजपुताना वडा उपासरा
परमोपगारी युक्तिवारिधीः उपाध्याय
श्रीरामलाल गणिःजीकी विद्याशाला
पुस्तक मिलणेका ठिकाणा.



॥ श्रीजिनाय नमः ॥ श्रीमद्गुरुभ्यो नमः ॥

॥ अथ ॥

॥ श्री जिन पूजा महोदधि ॥

मंगळाचरण—कवित.

श्रीजिनराज दयाळकी पूजन । मन शुद्ध कर भवि पाप विडारे ॥
ज्ञाता रायपसेणीमें आज्ञा । शुद्ध समकितधर काज सुधारे ॥
पुन्य उपार्जन होय यजनतें । श्रावक बारम स्वर्ग पधारे ॥
क्रमसें शिवसुख पार लहे जन । तातें पूजकी विधि विस्तारे ॥ १ ॥

॥ अथ श्रीजिनपूजापद्धति ॥

॥ प्रथम श्रीमज्जिनपूजा करनेंवाला अच्छे स्थानमें स्नान कर चोटीके केश बांधके शुद्ध वस्त्र पहिरकें उत्तरासंग कर मुखकोश बांधे, पीछे इन मंत्रोसें वास क्षेप तीन तीन वार मंत्रकें अष्टद्रव्य कों शुद्ध करे. सोही आचारदिनकरसें लिखते है ॥

॥ ॐ त्रसरूपोहं संसारिजीवः सुवासनः सुमेध एक चित्तो निरवद्यार्हत्पूजने निर्वृतो निष्पापो भूयासं, निरुपद्रवो भूयासं, मत् संश्रिता अन्येऽपि जीवा निरवद्यार्हत्पूजने निर्व्यथा निष्पापा भूयासुः स्वाहा ॥ यह मंत्र पढकें अपने ललाटमें तिलक करे ॥

॥ अथ जलमंत्रः ॥

॥ ॐ आपो अप्काया एकेंद्रिया जीवा निरवद्यार्हत्पूजायां निर्व्यथा निष्पापाः शुभगतयः संतु नमेऽस्तु संघट्टनहिंसापापमर्हद-र्चने स्वाहा ॥

॥ चंदनपुष्पधूपफलाक्षतशुद्धिमंत्रः ॥

॥ ॐ वनस्पतयो वनस्पतिकाया जीवा एकेंद्रिया निरवद्यार्हत्पूजायां निर्व्यथा निरपायाः शुभगतयः संतु न मेऽस्तु संघट्टनहिंसापापमर्हदर्चने स्वाहा ॥

॥ अग्नि और दीपक शुद्धिका मंत्र ॥

॥ ॐ अग्नयो अग्निकाया जीवा एकेंद्रिया निरवद्यार्हत्पूजायां निर्व्यथाः संतु निरपायाः संतु शुभगतयः संतु न मेऽस्तु संघट्टनहिंसापापमर्हदर्चने स्वाहा ॥

॥ श्रीदेवचंदजीकृत स्नात्रपुजा प्रारंभः ॥

॥ पांखडी गाथा ॥ ढाल पहेली ॥

॥ दोहा ॥ चउतीसे अतिसय जुओ, वचनातिसयेंजुत्त ॥ सो परमेसर देखि भवि, सिंघासण संपत्त ॥ १ ॥ ढाल ॥ सिंघासण बेठा जग भाण, देखी भवि जन गुणमणिखाण ॥ जे दीठे तुझ निरमल ज्ञाण, लहियें परम महोदय ठाण ॥ कुसुमांजलि मेलो आदिजिणंदा, तोरा चरणकमल सेवे चोसठइंदा ॥ कु० ॥ १ ॥ चोवीश वैरागी, चोवीश सोभागी, चोवीश जिणंदा ॥ कु० ॥ एम कही प्रभुना चरणे पूजा करीएं ॥ गाथा ॥ जो निय गुण पज्जव रम्यो, तसु अनुभव एगत्त ॥ सुह पुग्गल आरोपतां, जो तसु रंग निरत्त ॥ २ ॥ ढाल ॥ जो निज आतमगुण आणंदी, पुग्गल संगे जेह अफंदी ॥ जे परमेसर निजपद लीन, पूजो प्रणमो भव्य अदीन ॥ कुसुमांजलि मेलो शांति जिणंदा ॥ तो० ॥ कु० ॥२॥ एम कही प्रभुना जानुयें पूजा करीयें ॥ गाथा ॥ निम्मल नाण पयास कर, निम्मल गुण संपन्न ॥ निम्मल धम्मुवएसकर, सो परमप्पा धन्न ॥ ३ ॥ ढाल ॥ लोकालोक प्रकाशक नाणी, भवि

जन तारण जेहनी वाणी ॥ परमानंद तणी नीसाणी, तसु भगतें मुझ मति ठहराणी ॥ कुसुमांजलि मेलो नेम जिणंदा ॥ तो० ॥ कु० ॥ ३ ॥ एम कही प्रभुना बे हाथें पूजा करीयें ॥ गाथा ॥ जे सिझ्झा सिझ्झंति जे, सिझ्झसंति अणंत॥ जसु आलंबन ठविय मण, सो सेवो अरिहंत ॥ ४ ॥ ढाल ॥ शिव सुख कारण जेह त्रिकालें, सम परिणामें जगत निहाले ॥ उत्तम साधन मार्ग देखाले, इंद्रादिक जसु चरण पखाले ॥ कुसुमांजलि मेलो पास जिणंदा ॥तो० ॥ ४ ॥ कु० ॥ एम कही प्रभुना खंभाएं पूजा करीयें ॥ गाथा ॥ समदीठी देस जय, साहु साहुणी सार ॥ आचारिज उवज्झाय मुणि, जो निम्मल आधार ॥ ५ ॥ ढाल ॥ चउविह संघे जे मन धारयो, मोक्षतणुं कारण निरधारयो॥ विविह कुसुमवर जाति गहेवी, तसु चरणे प्रणमंत ठवेवी ॥५॥ कुसुमांजलि मेलो वीर जिणंदा ॥ तो०॥ एम कही प्रभुने मस्तकें पूजा करीएं ॥इति पांखडीगाथा ॥

॥ वस्तुछंद ॥ सयल जिनवर सयल जिनवर, नमिय मनरग॥ कल्याणक विहि संठविय, करि सुधम्म सुपवित्त सुंदर ॥ सय इग सित्तरि तित्थंकर, इग समय विहरंति महीयल ॥ चवण समय इगवीस जिण, जम्म समय इगवीस ॥ भत्तिय भावें पूजीया, करो संघ सुजगीस ॥ १ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ एक दिन अचिरा हुलरावती ॥ ए देशी ॥

॥ भव तीजे समकित गुण रम्या, जिन भक्ति प्रमुख गुण परिगम्या ॥ तजि इंद्रियसुख आशंसना, करी स्थानक वीशनी सेवना ॥ १ ॥ अति राग प्रशस्त प्रभावता, मन भावना एहवी भावता ॥ सवि जीव करुं शासन रसी, इसी भाव दया मन उलसी ॥ २ ॥ लही परिणाम एहवुं भलुं, निपजावी जिनपद निर्मलुं ॥ आयुबंध वेचें एक भव करी, श्रद्धा संवेग ते थिर धरी ॥३॥ त्यांथी चविय

लहे नर भव उदार, भरतें तेम ऐरवतेंज सार ॥ महाविदेहें विजयें प्रधान, मध्यखंडें अवतरे जिन निधान ॥ ४ ॥

॥ अथ सुपनानी ढाल त्रीजी ॥

॥ पुण्यें सुपनाहे देखे, मनमांहे हरष विशेषे ॥ गजवर उज्ज्वल सुंदर, निर्मल वृषभ मनोहर ॥१॥ निर्भय केसरी सिंह, लक्ष्मी अतिहि अबीह ॥ अनुपम फूलनी माल, निर्मल शशि सुकुमाल ॥२॥ तेज तरणि अति दीपे, इंद्रध्वजा जग जीपे ॥ पूरण कलश पडूर, पद्मसरोवर पूर ॥ ३ ॥ अगियारमे रयणायर, देखे माताजी गुण सायर ॥ बारमे भुवन विमान, तेरमे रत्ननिधान ॥ ४ ॥ अग्निशिखा निरधूम, देखे माताजी अनुपम ॥ हरखी रायने भाषे, राजा अरथ प्रकाशे ॥५॥ जगपति जिनवर सुखकर, होशे पुत्र मनोहर ॥ इंद्रादिक जसु नमशे, सकल मनोरथ फलशे ॥ ६ ॥

॥ वस्तु ॥ पुण्य उदय पुण्य उदय ऊपना जिननाह, माता तव रयणी समे, देखि सुपन हरखंति जागीय, सुपन कही निज कंतने॥ सुपन अरथ सांभलो सोभागीय, त्रिभुवन तिलक महागुणी, होशे पुत्र निधान, इंद्रादिक जसु पय नमी, करशे सिद्ध विधान ॥१॥

॥ ढाल चोथी ॥ चंद्रावलानी देशीमां ॥

॥ सोहमपति आसन कंपीयो, देइ अवधि मन आणंदीयो ॥ निज आतम निर्मल करण काज, भवजल तारण प्रगट्युं जिहाज ॥ १ ॥ भवअडवी पारग सथ्थवाह, केवल नाणाइय गुण अगाह ॥ शिव साधन गुण अंकूर जेह, कारण उलट्यो आषाढ मेह ॥ २ ॥ हरखें विकसे तव रोमराय, वलयादिकमां निज तनु नमाय ॥ सिंहासनथी उठ्यो सुरिंद, प्रणमंतो जिन आनंद कंद ॥ ३ ॥ सग अड पय साहमो आवी तथ्थ, करि अंजली प्रणमीय मथ्थ सथ्थ ॥ मुख भाषे ए क्षण आज सार, तिय

लोय पहु दीठो उदार ॥ ४ ॥ रे रे निसुणो सुर लोय देव, विष यानलतापित तनु समेव ॥ तसु शांति करण जलधर समान, मिथ्या विष चूरण गरुडवान ॥ ५ ॥ ते देव सकल तारण-समथ्थ, प्रगट्यो तसु प्रणमी हुवो सनथ्थ ॥ इम जंपी शक्रस्तव करेवि, तव देव देवी हरखें सुणेवि ॥ ६ ॥ गावे तव रंभा गीत गान, सुर लोक हुओ मंगल निधान ॥ नरक्षेत्रें आरज वंश ठाम, जिनराज वधे सुर हरख धाम ॥ ७ ॥ पिता माता घरे उच्छव अशेष, जिन शासन मंगल अति विशेष ॥ सुरपति देवादिक हरख संग, संयम अर्थी जनने उमंग ॥८॥ शुभवेला लगने तीर्थनाथ, जनम्या इंद्रादिक हरख साथ ॥ सुख पाम्या त्रिभुवन सर्व जीव, वधाई वधाई थइ अतीव ॥ ९ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ श्रीशांतिजिननो कलश कहिशुं, प्रेमसागर॥ए देशी ॥ श्रीतीर्थपतिनुं कलश मज्जन गाइयें सुखकार॥ नरखित्तमंडण दुहविहंडण, भविक मन आधार ॥ तिहां राव राणा हर्ष उच्छव, थयो जग जयकार ॥ दिशिकुमरी अवधि विशेष जाणी, लह्यो हर्ष अपार ॥१॥ निय अमर अमरी संग कुमरी, गावती गुण छंद ॥ जिन जननी पासे आवि पहोती, गहकती आणंद ॥ हे माय! तें जिनराज जायो, सुचि वधायो रम्म ॥ अम जम्म निम्मल करण कारण, करीश सूइअ कम्म ॥ २ ॥ तिहां भूमि शोधन दीप दर्पण, वाय वींजण धार ॥ तिहां करीय कदली गेह जिनवर, जननी मज्जनकार ॥ वरराखडी जिन पाणिबांधि, दिए इम आशीष ॥ जुग कोड कोडी चिरंजीवो, धर्मदायक ईश॥३॥

॥ ढाल छठी ॥ एकवीशानी ॥ जग नायकजी, त्रिभुवन जन हितकार ए ॥ परमातमजी, चिदानंद घन सार ए ॥ ए देशी ॥

॥ ढाल ॥ जिन रयणी जी, दश दिशि उज्ज्वलता धरे ॥ शुभ

लगने जी, ज्योतिषचक्र ते संचरे ॥ जिनजनम्या जी, जिण अवसर माता घरे ॥ तिण अवसरजी, इंद्रासन पण थरहरे ॥ त्रुटक ॥ थरहरे आसन इंद्र चिंते, कोण अवसर ए बन्यो ॥ जिन जन्म उत्सव काल जाणी, अतिहि आनंद ऊपनो ॥ निज सिद्धि संपति हेतु जिनवर, जाणि भक्तें ऊमह्यो ॥ विकसंत वदन प्रमोद वधते, देव नायक गहगह्यो ॥ १॥ ढाल ॥ तव सुरपति जी, घंटानाद कराव ए ॥ सुरलोकें जी, घोषणा एह दिराव ए ॥ नरक्षेत्रें जी, जिनवर जन्म हुओ अछे ॥ तसु भक्तें जी, सुरपति मंदरगिरि गच्छे ॥ त्रुटक ॥ गच्छे मंदिर शिखर उपर, भुवन जीवन जिन तणो ॥ जिन जन्म उत्सव करण कारण, आवजो सवि सुरगणो ॥ तुम शुद्ध समकित थाशे निर्मल, देवाधिदेव निहालतां ॥ आपणां पातक सर्व जाशे, नाथ चरण पखालतां ॥२॥ ढाल ॥ इम सांभली जी, सुरवर कोडि बहु मिली ॥ जिनवंदन जी, मंदिर गिरि साहमीं चली ॥ सोहमपति जी, जिन जननी घर आविया ॥ जिन माता जी, वंदी स्वामी वधाविया ॥त्रुटक॥ वधाविया जिनवर हर्ष बहुले, धन्य हुंकृत पुण्य ए ॥ त्रैलोक्य नायक देव दीठो, मुज समो कुण अन्य ए ॥ हे जगत जननी पुत्र तुमचो, मेरु मज्जन वर करी ॥ उच्छंग तुमचे वलिय थापिश, आतमां पुण्यें भरी ॥ ३ ॥ ढाल ॥ सुरनायक जी, जिन निज कर कमलें ठव्या ॥ पंच रूपें जी, अतिसय महिमाएं स्तव्या ॥ नाटक विधि जी, तव बत्तीश आगल वहे ॥ सुरकोडि जी, जिनदर्शनने उमहे ॥ त्रुटक ॥ सुर कोडि कोडी नाचती वली, नाथ शचि गुण गावती ॥ अप्सरा कोडी हाथ जोडी, हाव भाव देखावती ॥ जयो जयो तुं जिन राज जगगुरु, एम दे आशीष ए ॥ अह्म त्राण शरण आधार जीवन, एक तुं जगदीश ए ॥४॥ ढाल ॥ सुरगिरिवर जी, पांडुक वनमें चिहुं दिशें ॥ गि

रि शिलपर जी, सिंघासण सासय वसे ॥ तिहां आणी जी, शक्रें जिन खोले ग्रह्या॥ चोसठे जी, तिहां सुरपति आवी रह्या ॥त्रुटक॥ आविया सुरपति सर्व भगते, कलश श्रेणि वणाव ए ॥ सिद्धार्थ पमुहा तीर्थ औषधि, सर्व वस्तु अणाव ए ॥ अच्चुअपति तिहां हुकम कीनो, देव कोडाकोडिने ॥ जिन मज्जनारथ नीर लावो, सवे सुर कर जोडिने ॥ ५ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ शांतिने कारणें इंद्र कलशा भरे ॥ ए देशी ॥

॥ आत्मसाधन रसी देवकोडी हसी, उल्लसीने धसी खीर सागर दिशी ॥ पउमदह आदि दह गंगपमुहा नई, तीर्थजल अमल लेवा भणी ते गई ॥ १ ॥ जाति अड कलश करि सहस अठोत्तरा, छत्र चामर सिंघासण शुभतरा ॥ उपगरण पुप्फ चंगेरी पमुहा सवे,आगमें भासिया तेम आणी ठवे ॥ २ ॥ तीर्थजल भरिय कर कलस करि देवता, गावता भावता धर्म उन्नतिरता ॥ तिरिय नर अमरने हर्ष उपजावता, धन्य अम्ह शक्ति शुचि भक्ति इम भावता ॥ ३ ॥ समकितबीज निज आत्म आरोपता, कलसपाणीमिशें भक्तिजल सींचता ॥ मेरुसिहरोवरि सर्व आव्या वही, शक्र उत्संग जिन देखि मन गहगही ॥ ४ ॥

॥ वस्तु ॥ हंहो देवा हंहो देवा, अणाइ कालो अदिठपुव्वो, तिलोय तारणो तिलोय बंधु, मिच्छत्तमोह विद्धंसणो ॥ अणाइ तिण्ह विणासणो, देवाहिदेवो दिठव्वोहि अय कामेहिं ॥ ५ ॥

॥ ढाल तेहीज ॥ एम पभणंत वण भवण जोईसरा, देव वेमाणिया भत्ति धम्मायरा ॥ केवि कप्पाठिया केवि मित्ताणुगा, केवि वर रमणिवयणेण अइ उच्छुगा ॥ ६ ॥

॥ वस्तु ॥ तथ्य अच्चुय तथ्य अच्चुय इंद आदेश ॥ कर जोडि सवि देवगण, लेइ कलस आदेश पामिय ॥ अदभुत रूप

सरूप जुअ, कवण एह पुच्छंत सामिय ॥ इंद कहे जग तारणो, पारग अम परमेस॥नायक दायक धम्मनिहि, करियें तसु अभिसेस॥

॥ ढाल आठमी ॥ तीर्थकमलदल उदक भरीने पुस्कर सागर आवे ॥ ए देशी ॥

॥ पूरणकलश शुचि उदकनी धारा, जिनवर अंगें नामे ॥ आतम निरमल भाव करंतां, वधते शुभ परिणामें ॥ १ ॥ अच्चुत्तादिक सुरपतिमज्जन, लोकपाल लोकंत ॥ सामानिक इंद्राणी पमुहा, इम अभिषेक करंत ॥ २ ॥ गाहा ॥ तव ईसाण सुरिंदो, सक्कं पभणेइ करइ सुपसाओ ॥ तुम्ह अंके महनाहो, खिणमित्तं अम्ह अप्पेह ॥ ३ ॥ ता सक्किंदो पभणइ, साहमीय वच्छलंमि बहु लाहो ॥ आणा एवं तेणं, गिण्हह होउ कयथ्थाभो ॥ ४ ॥ एम कही सर्व स्नात्रीया कलश ढाले, अने मुखथी नीचे प्रमाणें कहे.

॥ ढाल तेहीज ॥ सोहम सुरपति वृषभ रूप करी, न्हवण करे प्रभुअंग ॥ करिय विलेपण पुप्फमाल ठवि, वर आभरण अभंग ॥ ५ ॥ तव सुरवर बहु जय जय रव करि, नच्चे धरि आणंद ॥ मोक्ष मार्ग सारथपति पाम्यो, भांजशुं हवे भवफंद ॥ ६ ॥ कोडि बत्तीस सोवन्न उवारी, वाजंते वर नाद ॥ सुरपति संघ अमर श्री प्रभुने, जननीने सुप्रसाद ॥ ७ ॥ आणी थापी एम पयंपे, अम निस्तरिया आज ॥ पुत्र तुमारो धणिय हमारो, तारण तरण जिहाज ॥ ८ ॥ मात जतन करी राखजो एहने, तुम सुत अम आधार ॥ सुरपति भगति सहित नंदीसर, करे जिनभक्ति उदार॥९॥ निय निय कप्प गया सवि निज्जर, कहेतां प्रभु गुणसार ॥ दीक्षा केवल ज्ञान कल्याणक, इच्छा चित्त मझार ॥ १० ॥ खरतरगच्छ जिन आणारंगी, राजसागर उवज्झाय॥ज्ञान धर्म दीपचंद सुपाठक,

सुगुरुतणे सुपसाय ॥ ११ ॥ देवचंद्र जिन भक्तें गायो, जन्म महोत्सव छंद ॥ बोध बीज अंकूरो उलस्यो, संघ सकल आनंद ॥ १२ ॥

॥ कलश ॥ राग वेलावल ॥ इम पूजा भगतें करो, आतम हितकाज ॥ तजिय विभाव निज भावमें, रमता शिवराज ॥ इम० ॥ १ ॥ काल अनंतें जे हुवा, होशे जेह जिणंद ॥ संपय सीमंधर प्रभु, केवळ नाणदिणंद ॥ इम० ॥ २ ॥ जन्म महोत्सव इणि परें, श्रावक रुचिवंत ॥ विरचे जिन प्रतिमा तणुं, अनुमोदन खंत ॥ इम० ॥ ३ ॥ देवचंद्र जिन पूजना, करतां भवपार ॥ जिनपडिमा जिनसारसी, कही सूत्र मझार ॥ इम० ॥ ४ ॥ इति पंडित श्रीदेवचंद्रजी कृत स्नात्र पूजा ॥ समाप्त ॥

॥ अथ पंडित श्रीदेवचंद्रजी कृत अष्ट प्रकारी पूजा लिख्यते ॥

॥ तत्र ॥

॥ प्रथम जलपूजा ॥

॥ दोहा ॥ गंगामागध क्षीरनिधि, ओषधमिश्रित सार ॥ कुसुमें वासित शुचिजलें ॥ करो जिन स्नात्र उदार ॥ १ ढाल ॥ मणि कनकादिक अडविध करी, भरी कलश सफार ॥ शुभ रुचि जे जिनवर नमे, तसु नही दुरित प्रचार ॥ मेरुशिखर जिम सुरवर जिनवर न्हवण अमान, करता वरता निज गुण समकित वृद्धि निधान ॥ २ ॥ छंद ॥ हर्ष भरी अप्सरावृंद आवे, स्नात्र करी इम आशीष भावे ॥ जिहां लगे सुरगिरि जंबुदीवो, अमतणा नाथ जीवो तुं जीवो ॥ ३ ॥

॥ विमल केवल भासनभास्करं, जगति जंतुमहोदयकारणं ॥ जिनवरं बहुमानजलौघतः, शुचि मनः स्नपयामि विशुद्धये ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं परम परमात्मने अनंतानंतज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेंद्राय जलं यजामहे स्वाहा ॥ १ ॥ इति जलपूजा॥

॥ अथ द्वितीय चंदनपूजा ॥

॥ दोहा ॥ बावना चंदन कुंकुमा, मृगमद ने घनसार ॥ जिन तनु लेपे तसु टले, मोह संताप विकार ॥१॥ ढाल ॥ सकलसंताप निवारण, ठारण सहु भविचित्त ॥ परम अनीहा अरिहा, तनु चरचो भवि नित्त॥ निज़ रूपें उपयोगी, धारी जिनगुण गेह ॥ भावचंदन सुह भावथी, टाले दुरित अछेह ॥ २ ॥ चाल ॥जिन तनु चरचतां सकल नाकी, कहे कुग्रहा उष्णता आज थाकी ॥ सकल अनिमेषता आज म्हांकी, भव्यता अम्ह तणी आज पाकी ॥ ३ ॥

॥ सकलमोहतमिस्त्रविनाशनं, परमशीतलभावयुतंजिनम् ॥ विनयकुंकुमदर्शनचंदनैः, सहजतत्त्वविकाशकृतेऽर्चये ॥२ ॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने अनंतानंतज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेंद्रायचंदनं यजामहे स्वाहा ॥ २ ॥ इति चंदनपूजा ॥

॥ अथ तृतीय पुष्पपूजा ॥

॥ दोहा ॥ शतपत्री वरमोगरा, चंपक जाइ गुलाब ॥ केतकि दमणो बोलसिरी, पूजो जिन भरि छाब ॥ १ ॥ ढाल ॥ अमल अखंडित विकसित, शुभसूमनी घणी जाति ॥ लाखीणो टोडर ठवो, अंगी रची बहु भांति ॥ गुणकुसूमें निज आतमा, मंडित करवा भव्य ॥ गुणरागी जडत्यागी, पुष्प चढावो नव्य ॥ २ ॥ चाल ॥ जगधणी पूजतां विविधफूलें, सुरवरा ते गणें क्षण अमूलें ॥ खांति धरि मानवा जिनप पूजे, तसु तणां पाप संताप ध्रजे ॥ ३ ॥

॥ विकचनिर्मलशुद्धमनोरमैं, विशदचेतनभावसमुद्भवैः ॥ सुपरिणामप्रसूनघनैर्नवैः, परमतत्त्वमयं हि यजाम्यहम् ॥३॥ ॐ ह्रीं

परमपरमात्मने अनंतानंतज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्री मज्जिनेंद्राय पुष्प यजामहे स्वाहा ॥ ३ ॥ इति पुष्पपूजा ॥

॥ अथ चतुर्थ धूपपूजा ॥

॥ दोहा ॥ कृष्णागरमृगमद तगर, अंबर तुरुक लोबान ॥ मेलि सुगंध घनसार घण, करो जिननें धुपधाण ॥ १ ॥ ढाल ॥ धूपघटी जिम महमहे, तिम दहे पातकवृन्द ॥ अरति अनादिनी जावे, पावे मन आणंद ॥ जे जिन पूजे धूपें, भव कूपें फिरि तेह ॥ नावे पावे ध्रुवघर, आवे सुख्ख अछेह ॥ २ ॥ चाल ॥ जिन घर वासतां धूपपूरे, मिच्छत्तदुर्गंधता जाइ दूरे ॥ धूप जिम सहज ऊर्द्धग स्वभावे, कारका उच्चगति भाव पावे ॥ ३ ॥

॥ सकलकर्ममहेंधनदाहनं, विमलसंवरभावसुधूपनम् ॥ अशुभपुद्गलसंगविवर्ज्जितं जिनपतेः पुरतोऽस्तु सुहर्षतः ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीँ परमपरमात्मने अनंतानंतज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्री मज्जिनेंद्राय धूपं यजामहे स्वाहा ॥ ५ ॥ इति धूपपूजा ॥

॥ अथ पंचमदीपकपूजाप्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ मणिमय रजत ताम्रना, पात्र करी घृतपूर ॥ वर्त्ती सूत्र कोसुंभनी, करो प्रदीप सनूर ॥ १ ॥ ढाल ॥ मंगलदीप व धावो गावो, जिन गुणगीत ॥ दीपतणी जिम आलिका मालिका, मंगलनीत ॥ दीपतणी शुभ ज्योती द्योती, जिनमुखचंद ॥ निरखी हरखो भविजन जिम, लहो पूर्णानंद ॥ २ ॥ चाल ॥ जिनगृहे दीपमाला प्रकासे, तेहथी तिमिर अज्ञान नासे ॥ निजवटे ज्ञानज्योति विकासे, तेहथी जगतना भाव भासे ॥ ३ ॥

॥ भविकनिर्मलबोधविकाशकं, जिनगृहे शुभदीपक दीपनम् ॥ सुगुणरागविशुद्धसमन्वितं, दधतु भावविकाशकृतेर्जना ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं परमपरमात्मने अनंतानंतज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेंद्राय दीपं यजामहे स्वाहा ॥५॥ इति दीपपूजा ॥

॥ अथ षष्ठाक्षत पूजा ॥

॥ दोहा ॥ अक्षत अक्षत पूरशुं, जे जिन आगें सार ॥ स्वस्तिक रचतां विस्तरे, निजगुण भर विस्तार ॥ १ ॥ ढाल ॥ उज्जल अमल अखंडित, मंडित अक्षतचंग ॥ पुंजत्रय करो स्वस्तिक, आस्तिक भावें रंग ॥ निज सत्ताने सन्मुख, उनमुख भावें जेह ॥ ज्ञानादिक गुण ठावे, भावे स्वस्तिक एह ॥ २ ॥ चाल ॥ स्वस्तिक पूरतां जिनप आगें, स्वस्ति श्रीभद्र कल्याण जागे ॥ जन्मजरामरणादि अशुभ भागे, नियत शिवशर्म रहे तासु आगें ॥ ३ ॥

॥ सकलमंगलकेलिनिकेतनं, परममंगलभावमयं जिनम् ॥ श्रयति भव्यजना इति दर्शयन्, दधतु नाथ पुरोऽक्षतस्वस्तिकम् ॥६॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने अनंतानंतज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेंद्राय अक्षतं यजामहे स्वाहा ॥६॥ इति अक्षतपूजा ॥

॥ अथ सप्तम नैवेद्यपूजा ॥

॥ दोहा ॥ सरस शुची पकवान भर, शालदाल घृतपूर ॥ धरे नैवेद्य जिन आगलें, क्षुधादोष तसु दूर ॥ १ ॥ ढाल ॥ लपनश्री वरघेवर, मृदुतर मोतीचूर ॥ सिंहकेसरीया सेविया, दालिया मोदक पूर ॥ साकर द्राख सिंगोडा, भक्तव्यंजन घृत सद्य ॥ करो नैवेद्य जिन आगलें, जिम मिले सुख अनवद्य ॥ २ ॥ चाल ॥ ढोवतां भोज्यपर भाव त्यागें, भविजना निजगुण भोज्य मांगे ॥ अम्ह भणा अम्हतणो सरूप भोज्य, आपजो तातजी जगतपूज्य ॥ ३ ॥

सकलपुद्गलसंगविवर्ज्जनं, सहजचेतनभावविलासकम् ॥ सरस भोजननव्यनिवेदनात्, परमनिर्वृतिभावमहं स्पृहे ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने अनंतानंतज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेंद्राय नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ॥ ७ ॥ इति नैवेद्यपूजा ॥

॥ अथाष्टमफलपूजा ॥

॥ दोहा ॥ पक्व विजोरुं जिन करे, ठवतां शिवपद देइ ॥ सरस मधुर शुभ फल घणां, इह जिन भेट करेइ ॥ १ ॥ ढाल ॥ श्रीफल कदली सुरंगा, नारंगी आंबां सार ॥ जंबीर अंजीर दाडिम, करणा पटवीज सफार ॥ मधुर सुस्वादिक उत्तम, लोक आनंदित जेह ॥ वरण गंधादिक रमणीक, बहुफल ढोवे तेह ॥ २ ॥ ॥ चाल ॥ फलभेरं पूजतां जगतस्वामी, मनुजगति वे लहे सफल पामी ॥ सकल मुनि ध्येयगत भेद रंगें, ध्यावतां फलसमाप्ति प्रसंगे ॥ ३ ॥

॥ कटुककर्मविपाकविनाशनं, सरसपक्वफलव्रजढोकनम् ॥ विहितमोक्षफलस्य प्रभोः पुरः, कुरुत सिद्धिफलाय महाजनाः ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने अनंतानंतज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेंद्राय फलं यजामहे स्वाहा ॥ ८ ॥ इति फलपूजा ॥

॥ अथ अर्घपूजा ॥

॥ दोहा ॥ इम अडविध जिनपूजना, विरचे जे थिरचित्त ॥ मानवभव सफलो करे, वाधे समकित वित्त ॥ १ ॥ ढाल ॥ अगणित गुणमणि आगर, नागर वंदित पाय ॥ श्रुतधारी उपगारी, ज्ञान सागर उवज्झाय ॥ तासु चरणकज सेवक, मधुकर पर लयलीन ॥ श्री जिनपूजा गाई, जिनवाणी रसपीन ॥ २ ॥ चाल ॥ संवत गुण युग अचल इंदु, हर्षभरि गाइयो श्री जिनेंदु ॥ तासु फल सुकृतथी सकल प्राणी, लहे ज्ञान उद्योत घन शिवनिशानी ॥ ३ ॥

॥ इति जिनवरवृंदं भक्तित· पूजयंति, परमसुखनिधानं देवचंद्र स्तुवंति ॥ प्रतिदिवसमनंतं तत्त्वमुद्भासयंति, परमसहजरूप मोक्ष सौख्यं श्रयंति ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं परमपरमात्मने अनंतानंतज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेंद्राय अर्घ यजामहे स्वाहा ॥ ९ ॥

॥ अथ वस्त्र पूजा ॥

॥ शक्रो यथा जिनपतेः सुरशैलचूला, सिंहासनोपरिगतः स्नपनावसाने ॥ दध्यक्षतैः कुसुमचंदनगंधधूपैः, कृत्वार्चनं तु विदधाति सुवस्त्रपूजाम् ॥ १ ॥ इति ॥

॥ तद्वत् श्रावकवर्ग एष विधिनालंकारवस्त्रादिकां, पूजां तीर्थकृतां करोति सततं शक्त्यातिभक्त्यादृतः ॥ नीरागस्य निरंजनस्य विजितारातेस्त्रिलोकीपतेः ॥ स्वस्यान्यस्य जनस्य निर्वृतिकृते क्लेशक्षयाकांक्षया ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ परमपरमात्मने अनंतानंतज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेंद्राय वस्त्रं यजामहे स्वाहा ॥ इति वस्त्र पूजा ॥

॥ अथ लूण उतारण गाथा ॥

॥ अह पडिभग्गापसरं, पयाहिणं मुणिवइ करि ऊणं ॥ पडइ सलूणत्तणल, ज्जियं च लूणं हु अवहरंती ॥ १ ॥ पिख्खेविणु सुह जिणवरह, दीहर नयण सलूण ॥ ण्हावइ गुरुमच्छर भरिय, जलण पईसइ लूण ॥ २ ॥ लूण उतारिह जिण वरह, तिन्नि पयाहिण देउ ॥ तडतड सद्द करंति यह, विज्जा विज्ज जलेण ॥ ३ ॥ जं जेण विज्ज विज्जइ, जलेण तं तहइ अथ्थ ससद्दं ॥ जिणरूवमच्छरेणवि, फुट्टइ लूणं तडतडस्स ॥ ४ ॥ ए गाथाओ कहीने लुणने अग्नि शरण करवुं. पछी वली प्रथमनी परें लूंण पाणी लइने मुखथी आवी रीतें गाथाओ कहवीः—

॥ एवं मुणिवइ जलणिजल, तंतह भमडइ पास ॥ अहवि कयं तस्सनिम्मलओ, निग्गुण बुद्धि पयास ॥ १ ॥ जलण अणे विणु जलणिहि पास, भरविकयज्जालि भावहि पास ॥ तिन्नि पयाहिण दिन्निय पास, जिम जिउ छुट्टइं भव दुह पास ॥२॥ जल निम्मल

कर कमलहि लेविणु, सुरवइ भावहि मुणिवइ सेवणु ॥ पभणइ जिणवर तुह पइ सरण, भय तुट्टइ लब्भइ सिद्धि गमणं ॥ ३ ॥ ए गाथाओ कही लूण पाणी उतारीने जल शरण करवुं. ॥ इति लुण उतारण गाथा ॥

॥ अथ श्रीजिननव अंग पुजनम् ॥

॥ दोहा ॥ जल भरि संपुट पत्रमां, जुगलिक नर पूजंत ॥ ऋषभचरण अंगुठडो, दायक भवजल अंत ॥ १ ॥ जानुवलें काउसग्ग रह्या, विचरया देश विदेश ॥ खडां खडां केवल लह्युं, पूजो जानु नरेश ॥ २ ॥ लोकांतिक वचनें करी, वरस्या वरसी दान ॥ कर कंडें प्रभु पूजना, पूजो भवि बहु मान ॥ ३ ॥ मान गयो दोय अंशथी, देखी वीर्य अनंत ॥ भुजावलें भवजल तरया, पूजो संध महंत ॥४॥ सिद्धशिला गुण उज्ज्वली, लोकांतें भगवंत ॥ वसिया तिण कारण भवि, शिरशिखा पूजंत ॥५॥ तीर्थंकरपद पुण्यथी, त्रिभुवन जन सेवंत ॥ त्रिभुवनातिलक समा प्रभु, भालतिलक जयवंत ॥ ६ ॥ शोल पोहोर प्रभुदेशना, कंठ विवर वर्तूल ॥ मधुर ध्वनि सुरनर सुणे, तिण गल तिलक अमूल ॥ ७ ॥ हृदय कमल उपशम वलें, वाल्या राग ने रोष ॥ हिम दहे वनखंडने, हृदयतिलक संतोष ॥ ८ ॥ रत्नत्रयी गुण उज्ज्वली, सकल सुगुण विशराम ॥ नाभिकमलनी पूजना, करतां अविचल धाम ॥ ९ ॥ उपदेशक नव तत्त्वना, तिण नव अग जिणंद ॥ पूजो बहु विध रागथी, कहे शुभवीर मुणिंद ॥ १० ॥ इति श्रीजिननवअंगपूजनं समाप्तम्

॥ अथ श्री देवचंदजी कृत स्नात्रपुजाविधि प्रारंभ ॥

॥ प्रथम निस्सही पूर्वक श्रीदेरासरमध्यें आवी अंग शुद्ध करी, नवीन वस्त्र पहेरी, स्वभाल तिलक करी, बाजोठनी स्थापना करी,

ते उपर बाजोठ मांडी, स्नात्र पीठ उपर थालनी स्थापना करवी, ते उपर तंदुलनी ढगली करवी, तेनी उपर रूपा नाणुं तथा नालीयर धरीने पछी स्नात्रीयायें पोताने हाथे मौलीसूत्र बांधवुं, तथा बीजा कलश प्रमुख स्थानकें मौलीसूत्र बंधन करी, कलशाने धूप दइ, दूध दधि, घृत, जल तथा शर्करा, ए पंचामृतथी कलश भरी राखवा, पछी मुखकोश बांधी मूल नायकजी आगल आवी नमस्कार करी अने धूपधाणुं हाथमां लइ धूप उखेववो, ते समयें मुखथी धूपावलीनी गाथा कहेवी, ते आ प्रमाणेः—

॥ असुरिंदसुरिंदाणं, किन्नरगंधव्वचंदसूराणं ॥ विज्झाहरासुराणं, सज्जोगसिद्धाण सिद्धाणं ॥ १ ॥ मुनिय परमथ्थ विथ्थर, गीयथ्थ विविह तव सोसियंगाणं ॥ सिद्धवह्रूनिभ्भरठ्ठं, ठियाण जोगीसराणं च ॥ २ ॥ जंपूयाय भगवओ, तिथ्थयरा राग रोस तम रहिया ॥ विणयपणएण तेसिं, सुसुद्धुओ मे इमे धूओ ॥ ३ ॥ तिथ्थंकरपडिमाणं, कंचण मणि रयण विद्दुमसयाणं ॥ तिहुयण विभूसगाणं, सासय सुरनर कयाणं च ॥ ४ ॥ सिद्धाण सूरि पाठग, साहूणं जाण जोग निरयाणं ॥ सुयदेवयमाईणं, सुसुद्धुओ मे इमे धूओ ॥५॥

॥ ए गाथाओ कह्या पछी प्रथम अक्षतने धोइ तेओने केशर तथा चंदन लगाडवुं, तथा पुष्पोने पण जलथी शुद्ध करी राखवां, तदनंतर ते अक्षत तथा फूलनी कुसुमांजलि हाथमां लइ, उभा थइने "नमो अरिहंताणं, नमोऽर्हत्सिद्ध०" ॥ एम पाठ कहेवो, अने पछी बे श्लोक पठन करवा, ते आ प्रमाणेः—

"श्रीमत्पुण्यं पवित्रं कृतविपुलफलं मंगलं लक्ष्म लक्ष्म्याः, क्षुण्णारिष्टोपसर्गग्रहगतिविकृतिस्वप्नमुत्पातघाति ॥ संकेतं कौतुकानां सकलसुखमुखं पर्व सर्वोत्सवानां, स्नात्रं पात्रं गुणानां गुरुगरिम गुरोर्वंचितायैर्न दृष्टम् ॥ १ ॥ अशेषभवनांतराश्रितसमाजखेदक्षमो,

न चापि रमणीयतामतिशयीत तस्यापरः ॥ प्रदेश इह मानतो निखिललोकसाधारणः, सुमेरुरिति तापितः स्नपनपीठभावं गतः ॥२॥

एम कह्या पछी स्नात्रपीठ संमुख कुसुमांजलि अर्पण करवी, तदनतर स्थापनपीठ पखाली लूंछीने कुंकुमनुं स्वस्तिक करवुं; धूप उखेववो; अने सर्व स्नात्रीयाओना हाथने धूपावली आपवी; पछी कपूर लगाडवो; अने एक नवकार कहीने स्नात्र पीठ उपर प्रतिमाजीनी स्थापना करवी. ते प्रतिमा प्रायें पंच तीर्थिक, अर्थपरिकर संयुक्त स्थापवी. तेना मुख आगल अक्षतोनी ढगली करवी. अने तेनी उपर पंचामृतनो एक कलश मूकवो. पछी हाथमां कुसुमांजलि लइने " मुक्तालंकार० ॥ " ए गाथा भणी कुसुमांजलि अर्पण करीने, प्रतिमाजीनां निर्माल्य उतारी प्रक्षालन करवुं. पछी अंगलूहणाथी प्रमार्जीने धूप उखेववो, अने केशर, चंदन, कपूर तथा कस्तूरी घसी ते पवित्र भाजनमां भरीने ते भाजन प्रतिमाजी आगल धरवुं. वली कुसुमांजलि हाथमां लइ उभा थइ " इच्छं नमो अरिहंताणं० ॥ नमोऽर्हत्सिद्ध० ॥ ' कहीने स्नात्र पूजानी पहेली पांखडी कहेवी. एम अनुक्रमे पांच पांखडी कही, कुसुमांजलि पूर्ण करीने हाथमां चामर लइने तेने भगवंतनी उपर ढोलतो ॥ वस्तु ॥ " सयल जिनवरथी मांडीने यावत् वधाइ वधाइ थइ अतीव " सुधीनो पाठ कहे, ते पूर्ण थया पछी चैत्यवंदन करवुं. शक्रस्तव कही " जयवीयराय " सुधी भणवुं पछी हाथ धोइ धूप कर्पूरादिक हाथने लगाडवां. त्यार केडें जे पूर्वे कलशोने धोइ धूप आपी कंठे मोलीसूत्र बांधी उपर स्वस्तिक करवुं, तेओमां पंचामृत भरी, अक्षतोना ढगलाओ उपर धारण करी, तेनी उपर अंग लूहणां ढांकी धूप उखेवी, तेओमांना मात्र बेज कलशोने आसपास जल धारा देइने राख्या होय. पछी स्नात्रीयाना हाथमां स्वस्तिको करी

सर्वे जणोए श्रेणिबद्ध उभा रहेवुं, अने प्रत्येक स्नात्रीयायें खमा समण देइ, पंचांग नमस्कार करवो. पछी प्रत्येक स्नात्रीयायें पोताना बे हाथमां कलशो लेवा, ते कलशधारक स्नात्रीयायें पोताना बन्ने हाथने विषे रहेला कलशने उत्तरासंग वस्त्रवडे ढांकी राखवा, अने पोतें उभा छतां मुखथी " श्रीतीर्थपतिनो कलश मज्जन०" इहांथी मांडीने संपूर्ण पूजा भणवी. त्यार पछी, प्रतीमाजी उपर कलशो ढोली, पखाल करी अंग लूहणाथी मज्जन करी, केशर चंदनथी अर्चन करीने फूल चढाववां. पछी थालमां स्वस्तिक करी बिंबनी स्थापना करवी; अने धूप करवो. ते समयें आ प्रमाणे पाठ भणवोः—

॥ अथ कलश ढालवा समयनुं स्तवन ॥

॥ इंद्र कलश भर ढाले, श्रीजिन पर ॥ इंद्र कल० ॥ हाथो हाथ अमरगण आनत, खीर विमल जल धारे ॥ श्रीजिन० ॥ १ ॥ सुर वनिता मली मंगल गावे, भावत भाव महा रे ॥ श्रीजिन० ॥२॥ किन्नर अरु गंधर्व महोरग, निरत नीर नित्य सारे ॥ श्रीजिन० ॥ ॥ ३ ॥ देव दुंदुभिधुनि गर्जत अति, शिरपर सुजस विथारे ॥ श्रीजिन० ॥ ४ ॥ परमानंद जिनराज जगतपद, जगजीवन हित कारे ॥ श्रीजिन० ॥ ५ ॥ इति कलश ढालवा समयनुं स्तवन ॥

पछी रकेबीमां लूण पाणी लइने आरतिनी परे करवुं. अने ते वखतें मुख थकी लूणउतारवानो गाथाओ कहवी.

॥ अथ पुष्पमाला पूजा गाथा ॥

॥ उन्नाय पय भत्तस्स, नियठाणे संठियं कुणं तस्स ॥ जिणपासे भमिय जिण, निय ठाणे संठियं तस्स ॥ (पाठांतरे) पिच्छतुह हुय वहे पडणं ॥ १ ॥ सव्वो जिणप्पभावो, सरिसा सरिसेसु जेण रच्चंति ॥ सव्वन्नूणमपासे, जडस्स भमणं ण संकमणं ॥२॥ अच्चंत

दुक्करं पिट्ठु, दुअवहनिवडे ण जडेण कयं ॥ आणा सव्वन्नूणं, न कया सुकयथ्थ मूलमिण ॥ ३ ॥ ए पाठ भणीने माला चडाववी, पछी हाथमां छूटां फूलो लेवां,ते वखतें गाथाओ कहवी, ते आ प्रमाणें:-

॥ अथ छूटां फूलपूजा गाथा ॥

॥ ऊसरणो जिणपुरओ, परिमल मिलियाउख्खिविह संगीया ॥ मुत्तामेरे हिवो कुणओ, परिमल मिलिया उख्खिविहस ॥१॥ उवणेउ मंगलं वो, जिणाण मुहलालि जाव संवलिया ॥ तिथ्थ पवत्तण समये, तियसे वि मुक्का कुसुमवुठ्ठी ॥२॥ ए पाठ कहीने प्रभुनी आगल फूलो उछालवां ॥ हवे आभरण तथा वस्त्रो लइने उभा छतां गाथाओ कहवी, ते आ प्रमाणें:-

॥ अथ वस्त्राभरण पूजा ॥

॥ श्लोकः ॥ शक्रो यथा जिनपतेः सुरशैलचूला, सिंहासनोपरिगतः स्नपनावसाने ॥ दध्यक्षतैः कुसुमचंदनगंधधूपैः, कृत्वार्चनं तु विदधाति सुवस्त्रपूजाम् ॥ १ ॥ तद्वत् श्रावकवर्ग एष विधिनालंकारवस्त्रादिकां, पूजां तीर्थकृतां करोति सततं शक्त्यातिभक्त्यादृतः ॥ नीरागस्य निरंजनस्य विजितारातेस्त्रिलोकीपतेः, स्वस्यान्यस्य जनस्य निर्वृतिकृते क्लेशक्षयाकांक्षया ॥ २ ॥ एम कही आभरण पूजा करवी ॥

॥ पछी ज्ञानपूजा करे, तेनी गाथाओ ॥

॥ नमंति सामंति महीवनाहं, देवा य पूयं सुजहेव पुव्वं ॥ भत्तीय चित्तं मण दामयेहि, मंदार पुप्फेहि सवेह नाणं ॥ १ ॥ तहेव सद्धामणमुत्तयेहिं, सुगंध पुप्फेह वरंसयेहिं ॥ पूयंति वंदंति नमति नाणं, नाणस्स लाभाय भवख्खयाय ॥ १ ॥ ए गाथाओ कहीने पुष्पोनी माला चढाववी, तथा रौप्यमुद्रा, सुवर्णमुद्रा, मणि, रत्न अने वस्त्र एओर्ये करी स्वशक्ति अनुसार ज्ञाननी पूजा करवी.

॥ पछी धूप करती वखतें आ गाथा कहवी ॥

॥ मीनकुरंगमुदारमसारं, सारसुगंधनिशाकरतारम् ॥ तारमिलन्मलयोत्थविकारं, लोकगुरोर्दह धूपमुदारम् ॥ १ ॥ एम कहीने धूप उखेववो. पछी मंगलदीपक करीने आ गाथाओ कहवीः—

॥ अथ मंगलदीपकपूजा ॥

॥ कोसंबीसंठियस्सवि, पयाहिणं कुणइ मउलियपईवो ॥ जिण सोमदंसणोदिण, यरूव तुह नाह मंगलपईवो ॥ १ ॥ भामीजंतो सुर सुंदरीहिं, तुह नाह मंगल पईवो ॥ कणयायलस्स निज्जिय, जाणुव्व पयाहिणं दिंतो ॥ २ ॥ मरगय सामल थाल धरेविणु, कोमल सरलिहिं करिहिं करेविणु ॥ जो उत्तारइ मंगल पइवो, सो नर होइ तिलोय पईवो ॥ ३ ॥ ए गाथा कहीने मंगलप्रदीप करवो. पछी रकेबीमां कर्पूर धरी, आरतीमां बत्ती सलगावीने मुख थकी आ गाथाओ कहेवीः—

॥ अथ आरती गाथा ॥

॥ जं मरगयमणिगडिय, विसालथाल माणिक्क मंडिय पइवो ॥ हण्वणयरकुरु खित्तं, भमओ जिण आरत्तियं तुम्हं ॥ १ ॥ आरत्तिअं नियच्छह, जिणस्स धूव किसणागरुच्छायं ॥ पासेसु भमउ निज्जिय, संगमय विभिन्न दिठ्ठिव्व ॥ २ ॥ पसमेयवो भवंतर, सम ज्जियं कम्मरेणु संघायं ॥ आरत्तिय मंगलग्गा, उच्छलंति सलिल धाराओ ॥ ३ ॥ एवी रीतें आरती करवी ॥ इति संक्षेप आरति विधि ॥

पछी उत्तरासंग करी, चैत्यवंदन करवुं, अने अष्ट प्रकारें पूजा करवी. कदाचित् अष्ट प्रकारें पूजा न कराय तो शेष फल फूल ने नैवेद्य जे होय, ते एमज चढावी देवुं. पछी गुणगीत करवां, जय जय शब्द उच्चारवा, साहामीवात्सल्य करवुं, तथा यथाशक्तिदान देवुं ॥ इति स्नात्रपूजाविधिः समाप्तः ॥

॥ अथ आरती, दीपक, लूणजलविधिः प्रारभ्यते ॥

प्रभुथी अंतरपट करी प्रभु संमुख वेसी आरती करनारने नव अंगे कुंकुमना तिलक करवां. पछी एक थालमां स्वस्तिक करी, तेमां आरती, मंगलदीपक, जमणी बाजू राखी, त्यां आरतिमां घृत थोडुं भरवुं. अने मंगल दीपकमां घृत पूर्ण भरवुं. पछी केसर, फूल, अने तंदुलें करी तेनी पूजा करवी. ऊपर कुंकुमना छांटा नाखी मंगलदीपक प्रगटाववो. अने कर्पूर सलगाववो. तेनो मंत्र कहे छेः– ॐ अर्हते पंचज्ञानमदाज्योतिर्मयाय, ध्वांतघातप्रद्यो तनाय, प्रतिमायै दीपोभूयात्सर्वहार्हते ॥ १ ॥ एम भणी मंगलदी पक प्रगटावीने पछी ते मंगलदीपकथी आरति प्रगटाववी. पछी दीवो नीचे मूकीने आरति उतारवी. तेवार पछी दीपक उतारवो. पछी लूणनी कांकरी लेइ " लूण उतारो जिनवर अंगें " इत्यादि पाठ कही लूणनी गाथा भणवी. पछी बृहच्छाति कहे, ते न आवडे तो त्रण्य नवकार गणी, आ प्रमाणे श्लोक कहे. ते श्लोक ॥ आज्ञा हीनं क्रियाहीनं, मंत्रहीन च यत्कृतम् ॥ तत्सर्वं क्षमया देव ! क्षमस्व परमेश्वर ॥ १ ॥ एम कही चैत्यवंदन करे ॥ इति आरति, दीपक, लूणजलविधिः ॥

॥ अथ आरती ॥

॥ जै जै आरति शांति तुह्मारी । तोरा चरण कमलकी में जाऊं बलि हारी ॥ जै० ॥१॥ विश्वसेन अचिराजीके नंदा । शांतिनाथ मुख पून मचंदा ॥ जै० ॥ २ ॥ चालीस धनुष सोवनमें काया । मृगलंछण प्रभुचरण सुहाया ॥ जै० ॥ ३ ॥ चक्रवर्त्ति प्रभु पचम सोहे । सो लम जिनवर सुर नर मोहे ॥ जै० ॥ ४ ॥ मंगल आरती भोरहि कीजे । जन्म जन्मको लाहो लीजे ॥ जै० ॥ ५ ॥ कर जोडी

सेवक गुण गावै । सो नरनारी अमरपद पावै ॥ जै० ॥ ६ ॥ इति श्रीआरती संपूर्णम् ॥

॥ अथ मंगल दीपक ॥

॥ दीवो रे दीवो मंगलिक दीवो, भुवनप्रकाशक जिन चिरं जीवो ॥ दी० ॥ १ ॥ चंद सूरज प्रभु तुम मुख केरां, लुंछण करतां दे नित फेरा ॥ दी० ॥ २ ॥ जिन तुझ आगल सुरनी अमरी, मंगलदीप करी दिये भमरी ॥ दी० ॥ ३ ॥ जिम जिम धुपघटी प्रगटावे, तिम तिम भवनां दुरित दझावे ॥ दी० ॥४॥ नीर अक्षत कुसुमंजलि चंदन, धुप दीप फल नेवेद्य वंदन ॥ दी० ॥ ५ ॥ इणि परें अष्ट प्रकारी किजें, पूजा स्नात्र महोत्सव भणीजें ॥ दी० ॥ ६ ॥ इ० मं० दी० ॥

॥ अथ श्रीशांतिकपूजा विधिः ॥

॥ श्री जिनायनमः ॥ ननु संघादीनां विघ्नोपद्रवशांत्यै शांतिविधिः क्रियते स शांतिविधिः कः कुत्र प्रतिपादितश्च उच्यते स विधिः ॥ कोपि प्राक्तनलिखितानुसारेण कोपि च मद्दवादौ विधिज्ञश्रावकक्रियमाणानुक्रमस्य स्वयं दर्शनेन च लिख्यते ॥ तथाहि ॥ शुभदिने शुभवेलायां शुभमुहूर्त्ते संघस्य कारकस्य वा चंद्रबले सति गुरूपदेशेन संघस्य समुदायं सर्वं मेलयित्वा देवगृहे समेत्य स्नात्रकरणानंतरं देवाग्रतः धौतं पवित्रं निश्चलं पट्टकं स्थापयित्वा तदुपरि केसरादितिलकपूर्वं ज्ञान १ दर्शन २ चारित्राणा ३ मनुक्रमेण तंदुलपुंजिकारूपा स्थापना क्रियते ॥ ततो मूलनायकस्य दक्षिणांगे इंद्रा १ ऽग्नि २ यम ३ नैऋत ४ वरुण ५ वायु ६ कुबेरे ७ शान ८ ब्रह्म ९ नागानां १० दशदिक्पालानां पूर्ववत् स्थापना क्रियते ॥ ततो मूलनायकवामांगे आदित्य १ सोम २ मंगल ३ बुध ४ बृहस्पति

५ शुक्र ६ शनि ७ राहु ८ केतु ९ नवग्रहस्थापना क्रियते ततस्त। द्दिश्येव चैत्यदेवता १ क्षेत्रदेवता २ देशदेवता ३ स्थापना त्रयं क्रियते ॥ एवं पंचविंशति पुंजिकानां स्थापना कार्या। तदनु सर्वासां पुंजिकानामुपरि वलिपुष्पधूपनैवेद्यवासादिप्रक्षेप· कार्यः ॥ ततः पुंजिकासु चये देवा, देव्योपि गुरुणो दिताः वलिपूजां प्रतीच्छंतु संतु संघस्य शांतये १ अनेन श्लोकेन सर्वासामुपरि अखंडजलधारादानं कार्यं ॥ ततः सर्वगृहागतपर्पटादिमिश्रभाजनं वृहत्तरं भृत्वा एकस्ये हस्ते दत्वा पूर्वदिगसंमुखं भूत्वा जलधारादानपूर्वं पूर्वदिशि वलिः प्रक्षिप्यते तत्र श्लोकश्चायं। ऐरावतसमारूढः, शक्रः पूर्वदिशि स्थितः; संघस्य शांतये सोस्तु, वलिपूजां प्रतीच्छतु १ एवं आग्नेय्यं दिशि अग्नेया विदिशःस्वामी, श्रीवह्निच्छागवाहनाः, संघ० २ एवं दक्षिणस्यां दिशि। दक्षिणस्या दिशः स्वामी,यमो महिषवाहन ॥संघ०३॥ एवं नैऋतदिशि। याम्यऽपरांतरालेसो, नैऋतः सत्ववाहनः ॥ संघ० ४॥ एवं पश्चिमदिशि। य· प्रतीच्यादिशो नाथो, वरुणो मकरस्थितः ॥संघ०५॥ एवं वायव्यदिशि। हरिणो वाहनं यस्य, वायव्याधिपतिम्मरुत् ॥ संघ० ६॥ एवमुत्तरदिशि। निधाननवकारुढ, उत्तरस्यादिश प्रभु· ॥ संघ०७ एवं ईशानदिशि। शितेवृषेविरूढःसन्नैशान्याविदिशः प्रभुः ॥ संघ० ॥ ८ ॥ एवमधोदिशि। पातालाधिपतिर्योस्ति, सर्वदापद्मवाहनः ॥ संघ० ९ ॥ एवमूर्ध्वदिशि। ब्रह्मलोकविभुर्योस्तु राजहंससमाश्रितः ॥ संघ० १० ॥ एवं दशस्वपि दिक्षु जलधारादानेन स्वस्वदिग्स्वामिश्लोकप्रतिपादनेन वलिः प्रक्षिप्यते प्रथमं प्रांते च श्लोकादौ नमोर्हत्सिद्धेति कथ्यते, एतस्मिन् विधौ कृते अत्र प्रस्तावे यदि संघसामुदायक शांतिस्तदादेवगृहसत्कः कलशोगृह्यते यद्येकः कोपि कारयति तदा शांतिकारकगृहात् चतुरंचलसधवसुंदरीशिरस्यारोप्य महुगीतगानतानमानदानयुक्तपचशब्दादिवादित्रे वाद्यमाने अं

तर्द्धवलितः पंचरत्नोपेतो मुखवेष्टितमुहलीसूत्रउपरि समाच्छादि क सुंभलवस्त्रः कलशः समानीय पूर्वकृतस्वस्तिकोपरि स्थाप्यते कलश मध्ये श्रीशांतिनाथप्रतिमानिश्चलासुसस्वं कृत्वा मोच्या कलशोपरि ष्टादूर्ध्वं तणीचतुष्कं मध्ये उपर्युपरि प्रोतखाजिलीपक्वान्नं बध्यते तणी मध्यतो महुलीदवरकोलंबमानस्तथा बध्यते यथाकलशोपरि मुखमध्य भागे तिष्ठति तत्र च संघसमुदायिको महुली कंदुको बध्यते कलशस्य पुष्पचंदनपूजा कार्या गुरुरपि वासक्षेपं करोति ॥ ततः कलशाग्रे कुसुमां जलि१ लवणपानीय २ परिधापनिका ३ आरात्रिका ४ मंगलप्रदीपाः क्रियंते मंगलप्रदीपश्च घृतमयः कसुंबलवृत्तिकश्च तादृकाविधेयो यथा एकयैववृत्त्या प्रक्षलन् संपूर्णशांतिघोषणादिकृत्यं यावत् न विध्याति पश्चाच्चतुर्विधसंघसहितो गुरुरीर्यापथिकीं प्रतिक्रम्य शक्रस्तवमातः कृ त्वा अष्टादशभिः स्तुतिभिर्देवादीन् वंदते आंतरणीदोषो न कर्त्तुं देयः ताश्च स्तुतयः इमाः ॥ यदंह्रिनमनादेवेत्पादयः ॥ ४ ॥ ततः श्रीशांतिनाथदेवाधिदेवआराधनार्थं करेमि काउसग्गं वंदण० अन्न० इत्यादि कथयित्वा एक नमस्कारस्य कायोत्सर्गं करोति पश्चादिदं स्तुतिः पठ्यते। रोगशोकादिभिर्दोषै, रजितायजितारये; नमः श्रीशांत ये तस्मै विहितानतशांतये ॥ ५ ॥ ततः श्रीशांतिदेवतानिमित्तं क० श्रीशांतिजिनभक्ताय भव्याय सुखसंपदं श्रीशांतिदेवता देया दशां तिमपनीयते ६॥ ततः श्रुतदेवतानिमित्तं क० सुवर्णशालिनीदेयाद्, द्वादशांगीजिनोद्भवा, श्रुतदेवीसदामह्य, मशेषश्रुतसंपदं ॥७॥ततः श्रीभुवनदेवतानिमित्तं क०चतुर्वर्णायसंघाय, देवीभुवनवासिनी; नि हत्यदुरितान्येषा, करोतुसुखमक्षतं ॥ ८॥ ततः क्षेत्रदेवतानिमित्तं क० यासां क्षेत्रगताःसंति, साधवः श्रावकादयः; जिनाज्ञांसाधयं तस्ता,रक्षं तुक्षेत्रदेवताः ॥ ९ ॥ ततः श्रीअंबिकादेवतानिमित्तं क० अंबानिह तडिंबा मे, सिद्धबुद्धसुतान्विताः सितेसिंहेस्थितागौरी, वितनोतु स

मोहितं ॥१०॥ ततः श्रीपद्मावतीदेवतानिमित्तं क० चंचच्चक्रधराचारु, प्रयालदलसन्निभाः चिरं चक्रेश्वरी देवी, नंदतादवताच्च मां ॥१२॥ ततः श्रीअच्छुप्तादेवतानिमित्तं क० सड्गखेटककोदंड, बाणपाणिस्त डिद्द्युतिः; तुरंगगमनाच्छुप्ता, कल्याणानि करोतु मे १३ ततः श्रीकुबेरादेवतानिमित्तं क० मथुरापुरिसूपार्श्व, श्रीपार्श्वस्तूपरक्षिका; श्रीकुबेरानरारूढा, सुतांकाऽवतु वो भयात् ॥ १४ ॥ ततः; श्रीब्रह्मशांतिदेवतानिमित्तं क० ब्रह्मशांतिः समांपाया दपायाद्वीरसेवकः श्रीमत्स त्यपुरेसत्या, येन कीर्त्तिः कृता निजा॥ १५ ॥ ततः श्रीगोत्रदेवता निमित्तं क० या गोत्रं पालयत्येव, सकलापायतः सदा; श्रीगोत्रदेवतारक्षां, सा करोतु नतांगिनां ॥ १६ ॥ ततः श्रीशक्रादिसमस्तदेवतानिमित्तं क० श्रीशक्रप्रमुखायक्षा, जिनशासनसंस्थिताः; देवादेव्यस्तदन्येपि, संघं रक्षंत्वपायतः ॥ १७ ॥ ततः सिद्धायका श्रीशासनदेवतानिमित्तं क० श्रीमद्विमानमारूढा, यक्षमातंगसेविता; सा मां सिद्धायका पातु चक्रचापेषु धारिणी ॥ १८ ॥ अस्मिन्कायोत्सर्गे लोगस्स ४ पारितेलोगस्स १ ततः उपविस्यनमस्कारशक्रस्तवादिकथनपूर्वं जयवीयरायपर्यंतं वाच्यं तत संपूर्णा गोपांगाः सभार्या मशीलाः सुपुत्राः समृद्धाः वद्धहस्तमहुलीदवरका गुणन् भणन् विचक्षणा अष्टो इंद्रस्थानीयाः परिहितधोतिका आकार्यंते तत्र द्वौ हस्तयोः कलशं गृहीत्वा तिष्ठतः एको धूपं ददाति एकः कुसुमचंदनवासक्षेपं करोति चत्वारो मधुरस्वरेण शांतिपूर्वकं सप्तस्मरणादि गुणयंति तथा द्वौ कलशधारकौ कुंडिकातः कलशान् भृत्वा सप्तनमस्कारपूर्वं मप्तजलधारा दत्तः पश्चान्नमोर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायेति पूर्वं अजितशांतिस्तवः पठ्यते पदे पदे जलधारादानं एवमग्रेतनस्मरणान्यपि भक्तामरशांतिकयादीन्यपि एवमन्योपि सर्वसंघः सप्तस्मरणादि गुणयति पश्चादभृते मूलकलशे पूर्व रक्षितश्रीपार्श्वनाथप्रक्षालन

पानीयमपि कलशमध्ये क्षिप्यते ततो मंगलप्रदीपं क्षामयित्वा वेलो त्क्षेपः पुष्पधूपादिदानैः संमान्य श्रीदिग्पतीनां विसर्गं कृत्वा शेषान् शेषदिव्यावताराान् प्राशानाऽरान् प्रेषयेत्साधिवासान् १ अर्हदभिषेक दर्शितः,सानिध्यनिरस्तकल्मषोल्लाघाः गच्छंतु यथास्थाने ये केचिदुपा गतादेवाः २ शक्राद्यालोकपाला दिशिविदिशिगताः शुद्धसद्धर्म्मश क्ताः, आयाताः स्नात्रकाले कलुषहृति कृते तीर्थनाथस्यभक्त्या; न्य स्ताशेषापदाद्याविहितशिवसुखाः स्वास्पदं सांप्रतं ते, स्नात्रेपूजामवा प्य स्वमपिकृतमुदो यांतु कल्याणभाजः ३ अनेनपद्यद्वयेन दिग्पा लविसर्जनं क्रियते पश्चात्सर्वोपि संघोदेवगृहे निकरादानपूर्वं शांति जलं कंदुकसत्कमदुलीसूत्रं च लाति मुदुलीसूत्रं हस्तादौ वध्यते कलशमध्याच्छांतिकजलं गृहीत्वा सर्वत्र गृहादौ प्रक्षिप्य ततः संघ मध्ये नगरमध्ये देशमध्ये सर्वत्र शांतिर्भवति ऋद्धिवृद्धिसिद्धिसंपदो भवंति आधिव्याधिरोगशोकक्षुद्रोपद्रवाश्च दूरतो यांति ॥ इतिश्रीशां तिकविधिः संपूर्णः ॥

॥ अथ सुगणचंद्रोपाध्याय कृत ॥
चवदे राजलोक पूजा.

॥ तत्र ॥

॥ प्रथम जल पूजा ॥

॥ दूहा ॥ पय प्रणमी जिनराजना, भाव धरी उछरंग ॥ लोक चवदनी वरणता, भाषूं हुं मन रंग ॥ १ ॥ स्वरग मृत्यु पातालमें, सास्वता जिनवर जेह ॥ त्रिकरण सुद्ध करी हिवे, वंदु हुं ससनेह ॥ २ ॥ सात राज नीचै कह्यो, अधोलोकनो भाव ॥ सात राज ऊरध कह्यो, तेहनो कहुं प्रस्ताव ॥ ३ ॥ अठारे सहस जोयण कह्यो, तिरछोलोक उदार ॥ द्वीप समुद्र असंख है, ते निसुनौ अधिकार

॥ ४ ॥ अवर द्वीप कूटादिकै, ते कहिये विस्तार ॥ सुणता लाभ हुवे घणो ॥ सफल हुवै अवतार ॥ ५ ॥ दीप अढीमें चिहुं दिसे, वंदु नित जिनराज ॥ ऋषभानन चंद्रानना, वारषेण महाराज ॥ ६ ॥ वरधमान चोथो सही, सासता श्री जिनराज ॥ भाव धरी पूजो सदा, पावो सुस समाज ॥ ७ ॥ सुद्धोदक लेई करी, पूजो दीन दयाल ॥ असुभ करम दूरें हुवे, फले मनोरथ माल ॥ ८ ॥

॥ ढाल ॥ आज आयेरे उछाह जिवडा नाच जिणंद आगे ॥ ए चाल ॥ भवि भाव धरी, जिनवर पूजन करीयेरे ॥ भ० पहिली रतन प्रभा ईम जाण, ईक लख अस्सी जोजन मान ॥ १ ॥ भ० ॥ धुर दस जोजन रेणू जाण, फेर असीमें व्यंतर मान ॥ भ० ॥ अणपन्नी पणपन्नी देव, आठ निकाय कही नित मेव ॥ २ ॥ भ०॥ दस जोयण वलि रेणू जाण ॥ ए सत जोजन लेखो आण ॥भ०॥ अठ सत जोयण मध्ये जाण, देवपिशाच कह्या जगभाण ॥ ३ ॥ भ० ॥ सो जोयण वलि पृथवी पिड, ईण पर सहस जोयणनो कंड ॥ भ० ॥ सहस जोजन ऊपरला ढाल, प्रथम प्रतरनो भेद निहाल ॥ ४ ॥ भ० ॥ तीन सहस ऊंचो परमांन, नारकी जीव रहे तिण ठाण ॥ भ० ॥ ईण परतेरे प्रतर सुजाण, तिण पर सहुणो छे परिमाण ॥ ५ ॥ भ० ॥ नारकी जीव रहे तिण ठाम, शास्त्र थकी अवधीनो मान ॥ भ० ॥प्रतर प्रतरको अंतर जोय, सहस इग्यारै पांचसे होय ॥ ६ ॥ भ० ॥ उपर तयासी जोजन धार, इण पर दाखे सहु गणधार ॥ भ० ॥ असुरादिक दस देव निकाय, भवन पति ए सहु कहवाय ॥ ७ ॥ भ० ॥ अंतरमांह रहे ए देव, इम भाषे जिनवर नितमेव ॥ भ० ॥ सात कोड ने बहुतर लाख, भवनपतीना भवन ए दाख ॥ ८ ॥ भ० ॥ सहस जोजन वलि नीचे जाण, नारकी रहित भविक मन आण ॥ भ० ॥ एक लाखने अ

सो हजार, प्रथम नरकनो पिंड विचार ॥ ९ ॥ भ० ॥ एकलाख बत्तीस हजार, दूजी नरक तणो अवधार ॥ भ० ॥ प्रतर इग्यारे कह्या जगदीस, गुरु मुखथी धारो निसदीस ॥ १० ॥ भ० ॥ एक लाख अठ्ठाइस हजार, वालुकपिंड कहे गणधार ॥ भ० ॥ पंक प्रभा नो पिंड विचार, एकलाख वलि वीस हजार ॥ ११ ॥ भ० ॥ पांचमी धूमप्रभानो पिंड, एकलाख अठारे कंड ॥ भ० ॥ एकलाख सोले हजार, छठी तमप्रभानो अवधार ॥ १२ ॥ भ० ॥ सहस अठारे ने वलि लाख, सातमी तमतमानो ए दाख ॥ भ० ॥ इन पर सातराजनो भेद, सतगुरु भाषै धार उमेद ॥ १३ ॥ भ० ॥ सास्वता चैत्य इहां जिन जाण, ते वंदो भवि गुणमणिखाण ॥ भ० ॥ सुमति सदा सेवो जिनराज, वंछित पूरण ए महाराज ॥ १४ ॥ भ० ॥ ॐ ह्रीं चतुर्दशरज्वात्मके सास्वता असास्वता जिनेंद्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति प्रथम जलपूजा ॥ १ ॥

॥ अथ दूजी चंदन पूजा ॥

॥ दूहा ॥ बावनचंदन कुमकुमा, मृगमद ने घनसार ॥ पूज करो जिनराजनी, उत्तम फल दातार ॥ १ ॥ हिवे जे तिरछालो कमें, नर तिरजंच विशेष ॥ भेद विचार सुणो तमे, तन मन कर सुभ लेश ॥ २ ॥ जंबू द्वीपे जे कह्या, साश्वता श्री जिन सार ॥ मेरू ऊपर सोभता, वंदो भवि सुखकार ॥ ३ ॥ कंचन गिरिपर सोभता, सास्वता जिनवर देव ॥ भाव धरी सेवो सदा, मन वंछित फल लेह ॥ ४ ॥ वलि गजदंता ऊपरै, सास्वता श्री जिनचंद ॥ वक्षस्कारे वलि नमुं, साश्वता श्री सुखकंद ॥ ५ ॥ जंबूवृक्षे वलि नमुं, भाव धरी मन रंग ॥ श्री वैताढ्य गिरंदना, वंदू धर उछरंग ॥ ६ ॥ नंदीसर रुचकादिकै, भाष्या श्री भगवंत ॥ भाव धरी मुनि वांदतां, पावै सुख अनंत ॥ ७ ॥ श्री मनुषोतर ऊपरै, चैत्य कह्या

जिनराज ॥ ते वंदे मुनि प्रेमसुं, निजगुण भक्ति समाज ॥ ८ ॥

॥ ढाल फागणी ॥ व्रज मंडल देस दिखावो रसिया ॥ चाल ॥

अब तिरछोलोक सुणो ग्यानी, अवतिर० ॥ तिरछैलोकमें द्वीप स मुद्रहै, असंख्याता कहै जाणी ॥ अब० ॥ १ ॥ जलचर थलचर जीव सवेही, रहै सदा कहै गुरुध्यानी ॥ अ० ॥ अणपन्नी पमुहा देवनकी, राजतहे जिहां राजधानी ॥ अ० ॥ २ ॥ नवसे जोजन ऊपर कहिये, जोतसीदेव महाग्यानी ॥ अ० ॥ ग्रहगण तारा सूरज चंदा, चरथिररूप भविक जाणी ॥ अ० ॥ ३ ॥ अरध भागमें अवर उदधिहे, आधे मांहि चरमपाणी ॥ अ० ॥ लवण समुद्रमें लवण सरीपो, मीठो चरम उदधि पाणी ॥ अ० ॥ ४ ॥ जिन प्रतिमा आकारे जलचर, देखी व्रत लहे बहु प्राणी ॥ अ० ॥ पहिलो जंबू द्वीप वखाणो, लाख जोजननो सुभथानी ॥ अ० ॥ ५ ॥ जगती वेदी करि अति सोभित, केलि करत जिहां सुरराणी ॥ अ० ॥ च्यारे पासे च्यार वरणना, विजयादिक सुर रहै जाणी ॥ अ० ॥ ६ ॥ दोय लाख लवणे करि वींट्यो, खारो जेहनो बहु पाणी ॥ अ० ॥ अनाढिय नामे देव तेहनो, मालक छे सुणो भवि प्राणी ॥ अ० ॥ ७ ॥ दूजो धातकीखंड कहीजे. च्यार लाखहै परमानी ॥ अ० ॥ अठ लख जोजन समुद वींटीयो, कालोदधि नाम सुणो ग्यानी ॥ अ० ॥ ८ ॥ सोले लख जोजन परमाणे, द्वीप पुष्करवर गुणखाणी ॥ अ० ॥ वीच माणुषोतर परबत कहिये, इतनी सीम मनुष्य जाणी ॥ अ० ॥ ९ ॥ तिणथी आगे द्वीप आठमो, तेरमो रुचक कहे ग्यानी ॥ अ० ॥ बत्तीस रतिकर सोले दधिमुख, च्यार अंजनगिर कहे जाणी ॥ अ० ॥ १० ॥ तसु विच मै है च्यार वावडी, कमल सुसोभित है पाणी ॥ अ० ॥ बावन मंदिर जिनवर दाख्या, ते वंदे मुनि सुभ ध्यानी ॥ अ० ॥ ११ ॥

साधू जंघा विद्याचारण, वंदे जिणवर सुखखाणी ॥ अ० ॥ इण पर एक द्वीपमे उदधी, असंख्यात तिरछे जाणी ॥ अ० ॥१२॥ इति

॥ ढाल दूजी पणिहारीरी चालमें ॥ जंबूद्वीपना भरतमें, सुखकारीरेलो ॥ खंड कह्या छव सार, वाहला जो ॥ मध्य खंड उत्तम कह्यो, सु० आरज देस प्रधान ॥ वा० ॥ साडापचवीस जिन कह्या, सु० जिहां जिन धरम सुजांण ॥ वा० ॥ १ ॥ जिनवर मुनिवर केवली, सु० विचरै जिहां मुनिराज ॥ वा० ॥ तपजप संजम आदरे, सु० सफल करै निज काज ॥ वा० ॥ २ ॥ तेसठ सिलाका जिहां कह्या, सु० ते निसुणो अधिकार ॥ वा० ॥ बारै चक्री जाणीये, सु० सबमें ए सिरदार ॥ वा० ॥ ३ ॥ वासुदेव नव महाबली, सु० सुर धीरज अवतार ॥ वा० ॥ प्रतिवासुदेव कह्या वालि, सु० नव संख्या यै धार ॥ वा० ॥ ४ ॥ तीर्थंकर चोवीस ए, सु० सुणज्यो धर सुभ भाव ॥ वा० ॥ ऋषभ अजित संभव नमो, सु० अभिनंदन महाराज ॥ वा० ॥ ५ ॥ सुमती पदम सुपासजी, सु० चंद्र प्रभु जिनराज ॥ वा० ॥ सुविधि सीतल जिन साहिबा, सु० सारो वंछित काज ॥ वा० ॥ ६ ॥ श्री श्रेयांस जिनेसरु, सु० वासुपूज्य जिनराज ॥ वा० ॥ विमल अनंत जिन धरमजी, सु० धरम तणा दातार ॥ वा० ॥ ७ ॥ सांति कुंथु अरनाथजी, सु० चिंता चूरणहार ॥ वा० ॥ मल्ली प्रभु उगणीसमा, सु० वीसमा सुव्रत देव ॥ वा० ॥ ८ ॥ नमि नेमी बावीसमा, सु० पारसनाथ सुसेव ॥ वा० ॥ चोइसमा श्री वीरजी, सु० देवे सुख नितमेव ॥ वा० ॥ ९ ॥ धरम विसाल दयालनो, सु० सुमति कहे मनरंग ॥ वा० ॥ ए जिन उत्तम जाणनें, सु० पूजो भाविक ऊमंग ॥ वा० ॥ १० ॥ ॐ ह्रीँ । परमात्मने चतुर्दशरज्वात्मकै सास्वता असास्वता जिनेंद्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति दूसरी चंदन पूजा

॥ अथ तीजी कुसुम पूजा ॥

॥ दूहा ॥ सतपत्री वर मोगरा, चंपक जाय गुलाब ॥ पुष्प लेई जिनराजनी, पूज करो सुभ भाव ॥ १ ॥ ऊर्द्धलोकमें जे अछै, सास्वता श्री जिनराज ॥ परम सुची हुय पूजिये, सफल हुवे सब काज ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ नेना सफल थई ॥ ए चाल ॥ दिलमें हरष धरी, भवि पूजो जिनवर सार ॥ दि० ॥ ऊर्द्धलोकमें जे अछेरे, सास्वता श्री जिनराज ॥ द्रव्य भाव पूजो सहुरे, पावो सुख समाज ॥ दि० ॥ १ ॥ पहिलो सुधरम नाम छे रे, दूजो छै ईशान ॥ तीजो सनतकुमार छे रे, चोथो माहेंद्र जान ॥ दि० ॥ २ ॥ बह्मलोक पंचम कह्यो रे, छठो लांतकदेव ॥ सातमो शुक्र सहु कहे रे, धारो दिल नितमेव ॥ दि० ॥ ३ ॥ सहसार नामे आठमो रे, देवलोकनो नाम ॥ तिरजंच जेहनी जे कही रे, इतनी गति अभिराम ॥ दि० ॥ ४ ॥ नवमो आनत जाणीये रे, प्रानत दसमो सार ॥ आरण नाम ईग्यारमो रे, बारमो अच्युत धार ॥ दि० ॥ ५ ॥ ए सहु देव जिणंदनी रे, आवे करिवा सेव ॥ कल्याणक उछव करे रे, पावै सुख नितमेव ॥ दि० ॥ ६ ॥ कल्पोत्पन्न कहीजियै रे, ए सगला सुरराय ॥ नव ग्रीवेकना जाणीये रे, कल्पातीत कहाय ॥ ॥ दि० ॥ ७ ॥ तिण पर पंचानुत्तरू रे, देव कह्या जगभाण ॥ विजय नाम पहिलो कह्यो रे, दूजो विजयंत जाण ॥ दि० ॥ ८ ॥ जयंत नाम तीजो सही रे, अपराजित अभिराम ॥ सर्वारथसिद्ध जाणीये रे, सव सुख केरो ठाम ॥ दि० ॥ ९ ॥ च्यार आठ वलि सोलनारे, चोसठ ने बत्तीस ॥ ईतने मनना सुंदरू रे, मोती कहे जगदीस ॥ दि० ॥ १० ॥ कल्पातीत छे ए सहु रे, भावे वंदे तेह ॥ एकावतारी ए सहु रे, भाषे प्रभु ससनेह ॥ दि० ॥ ११ ॥

लाख चोरासी ऊपरै रे, सहस सताणु सार ॥ उपर वलि तेवीस छै रे, भाषै इम गणधार ॥ दि० ॥ १२ ॥ इहां जे साश्वता जिनवरु रे, पूजो भवि सुखकार ॥ सुमति सदा जिनराजकूं रे, वंदे वारंवार ॥ दि० ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने चतुर्दशरज्वात्मके सिद्धादि समस्त जिनवरेभ्यो अष्टद्रव्यं यजामहेस्वाहा ॥ इति तीजी कुसुम पूजा.

॥ अथ चोथी धूप पूजा ॥

॥ दूहा ॥ धूप दशांग लेई करी, पूजो जग भरतार ॥ असुभ करम दूरे हुवे, प्रगटै सुख्ख अपार ॥ १ ॥ चवदे राज ऊपर रहै, सिद्ध महाजयकार ॥ तीनलोक सिरछत्रहै, करुणारस भंडार ॥२॥

॥ ढाल ॥ श्री चंद्राप्रभु जिनवर साहब ॥ ए चाल ॥ निरमल सिद्धसिलाने ऊपर, सिद्ध रहै सुखकारा ॥ मैं वारी जाऊं, सिद्ध रहै सु० ॥ निरमल जोत विराजे साहिब, निरमम निर हंकारा ॥ मे० नि० ॥ १ ॥ अनंत ज्ञान दरसन जग प्रगट्यो, मिट गये करम विकारा ॥ मैं० मि० ॥ अजर अमर अक्षय थित जेहनी, बोध बीज दातारा ॥ मैं० बो० नि० ॥२॥ राज चवदके ऊपर राजै, सिद्ध सिला जयकारा ॥ मे० सि० ॥ पैतालीस लख जोजन कहिये, फिटक रतन बहु सारा ॥ मैं० फि० नि० ॥३॥ आठ जोजनकी जाडी विचमें, छेहडे तनुक उदारा ॥ मैं० छे० ॥ उलटै छत्र आकारे दाखी, सूत्रे श्री गणधारा ॥ मैं० सू० नि० ॥ ४ ॥ घटारी मठारी छे अति सुंदर, कारण क्षेम उदारा ॥ मे० का० जनम मरण सब आधी व्याधी, दूर कीया दुख सारा ॥ मैं० दू० नि० ॥ ५ ॥ अष्ट करमको दूर करीने, विलसै सुख अविकारा ॥ मैं० वि० सादि अनंत थित जेहनी छाजै, सेवै सुरनरसारा ॥ मैं० से० नि० ॥ ६ ॥ जोगीसर तेरी गत जाणे, करुणारस भंडारा ॥ मैं० क० गुण इकतीस प्रगट भए जिनके, प्रगट्यो सुख अपारा ॥ मैं० प्र० नि० ॥ ७ ॥ लोकालो

फंका छाना परगट, देखे भाव उदारा ॥ में० दे० सुरनर मुनिवर सेव करत हैं, जय जय जग भरतारा ॥ में० ज० नि० ॥ ८ ॥ धरम विसाल दयालके नंदन, सुमति कहे सुखकारा ॥ में० सु० ॥ सिद्ध अनंतको सेवा करतां, सदा हुवे जयकारा ॥ में० स० नि० ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं अनंतानंतसिद्धपरमात्मने अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति चोथी धूप पूजा ॥

॥ अथ पांचमी दीप पूजा ॥

॥ दूहा ॥ दीपक पूजा पांचमी, करो भविक मन रंग ॥ दीपक जिम प्रगटे सही, केवल ज्ञान अभंग ॥ १ ॥ साश्वता श्री जिन चंदकुं, नमन करी सुख काज ॥ भाव धरी नित पूजतां, पावै सुख समाज ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ ऋषभानन जिन सेवोरे, मनवा ऋ० ॥ तारण तरण जिनेसर कहिये, देवै सुख नित्य मेवोरे ॥ म० ऋ० ॥ १ ॥ लोका लोक प्रकासक एही, एहना गुण नित गावोरे ॥ म० ऋ० ॥ सुर नर सबही पाय परतहे, एहनी आण धरावो रे ॥ म० ऋ० ॥ २ ॥ तारण तरण एही अलवेसर, लुल२ सीस नमावो रे ॥ म० ऋ० ॥ लोक अलोकको तूंहिज दरसी, तन मनसे गुण गावो रे ॥ म० ऋ० ॥ ३ ॥ परम पुरुष परमेसर साचो, ए देखी नित राचो रे ॥ म० ऋ० ॥ अवर देव तुम काहेको ध्यावो, वीतरागको जाचो रे ॥ म० ऋ० ॥४॥ इण सम अवर न को उपगारी, भव२ में सुख दायो रे ॥ म० ऋ० ॥ सुरनर मुनिवर सबही ध्यावे, सुरपति सीस नमा यो रे ॥ म० ऋ० ॥५॥ भविक कमल तुम दरसन करिकै, परम२ सुख पायो रे ॥ म० ऋ० ॥ आज हमारे हरख वधाई, आज आ णंद उछायो रे ॥ म० ऋ० ॥ ६ ॥ आज अमी घर मेहला वर स्या, आज अधिक सुख पायो रे ॥ म० ऋ० ॥ तारण तरण जिणे

सरजीकी, पूज रची वरदायो रे ॥ म० ऋ० ॥ ७ ॥ रायपसेणी जीवाभिगमें, एहनों फल दरसायो रे ॥ म० ऋ० ॥ अष्ट द्रव्य चंगेरी धरके, विधिपूर्वक मन लायो रे ॥म० ऋ० ॥ ८ ॥ धरम विसाल दयालके नंदन, सुमति प्रभु गुण गायो रे ॥ म० ऋ० ॥ ए जिनराजकी पूजन करतां, समकित सुद्ध उपायो रे ॥ म० ऋ० ॥ १० ॥ ॐ ह्रीँ सिद्धपरमात्मने चतुर्दशरज्वात्मके परिसंस्थिताय अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति दीपपूजा ॥

॥ अथ छठ्ठी अक्षत पूजा ॥

॥ दूहा ॥ अक्षत अमल अखंडले, पूजो दीन दयाल ॥ मंगल आठ करो बलि, प्रगटे मंगल माल ॥१॥ श्रीचंद्रानन जिनवरू, दूजा श्रीमहाराज ॥ सुरतरुसम सेवो सदा, वंछित पूरण काज ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ यात्रीडा जात्रानिवाणुं क० ॥ ए चाल ॥ सखीरी, ए जिन पूजन करिये रे ॥ जिन सेव्यां भवजल तरिये, स० ए० ॥ श्री चंद्रानन महाराजा रे, जगजीवन तुं जिनराजा रे, प्रभू तारण तरण जिहाजा ॥ स० ए० ॥ १ ॥ तुम वीतराग गुण राजारे, सुर नर सब पूजत काजा रे, आवे भगते ले सुभ साजा ॥ स० ए० ॥ २ ॥ ए करुणानिधि माहाराजा रे, प्रभु दोष रहित मुनिराजा रे, सेव्यां सफल हुवे सब काजा ॥ स० एं० ॥ ३ ॥ वर अष्ट द्रव्य सुभ लेई रे, पूजो जिनराज सनेही रे, जिम सफल हुवे निज देही ॥ स० ए० ॥ ४ ॥ इम साश्वता श्री जिनराजा रे, वलि तारण तरण जिहाजारे, जगजीवन छे सुखकाजा ॥ स० ए० ॥ ५ ॥ जिनराज समो नही देवा रे, सुरपति सारै नित सेवा रे, एतो देवै फल नित मेवा ॥ स० ए० ॥ ६ ॥ पूरव पुन्य विनां किम पावे रे, जिन सेव भली वडदावे रे, एतो ज्ञानी अरथ बतावे ॥ स० ए० ॥ ७ ॥ बहु अतिशय जेहना छाजै रे, गुण पेतीस वाणी

राजे रे, एतो जगतारक जिनराजे ॥ स० ए० ॥ ८ ॥ चवदे राज में ए जिणचंदा रे, समरयां होत सदा आणंदा रे, एतो जगजीवन सुखकंदा ॥ स० ए० ॥ ९ ॥ वलि आवे चोसठ इंदारे, दिस कुमरो हरख अमंदा रे, करे उछ्व श्रीजिनचंदा ॥ स० ए० ॥ १० ॥ जिन मेरुसिखर ले आवे रे, सोधरम सदा सुभ भावे रे, करि वृषभ रूप नवरावे ॥ स० ए० ॥ ११ ॥ यथाजोग वहु सुर भगती रे, करे निज२ भावे जगती रे, एतो सफल करे निज सगती ॥ स० ए० ॥ १२ ॥ सशि सम सीतल गुण सोहे रे, भवि देखीने मन मोहे रे, जसु रूप अधिक सहु होवे ॥ स० ए० ॥ १३ ॥ जिनराज समो नही कोई रे, देख्या देव अवर सव जोई रे, पिण दोष सहित सब होई ॥ स० ए० ॥ १४ ॥ प्रभु पाप करम सव धोइ रे, जसु आतम निरमल होई रे, कहे सुमति सदा गुण जोई, स० ए० ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीं चतुर्दशरज्वात्मके सास्वता जिनेंद्रेभ्यो अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति अक्षत पूजा ॥ ६ ॥

॥ अथ सातमी नैवेद्य पूजा ॥

॥ दूहा ॥ मोदक मोतीचूरना, सरस लेइ पकवान ॥ पूज करो जिनराजनी, पावो ज्युं सनमान ॥ १ ॥ वारिषेण जिन पूजिये, सातमी पूज प्रधान ॥ भय सगला दूरे हरे, प्रगटे सुख निधान ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ विगडी कोन सुधारे नाथ वि० ॥ ए चाल ॥ वारिषेण जिन अंतरजामी, पुन्ये सेवा पामी रे ॥ परम पुरुष परमेसर साचो, जगजीवन विसरामी रे ॥ वा० ॥ १ ॥ लोक अलोकको तुं हे दरसी, तुम सम अवरन स्वामी रे ॥ तुं प्रभु असरण सरण कहावे, तुं मुझ अंतरजामी रे ॥ वा० ॥ २ ॥ तुम गुणको कोइ पार न पावे, महिमा त्रिभुवन पामी रे ॥ वा० ॥ तेरी आण जगत सहु माने, करुणा रसनो धामी रे ॥ वा० ॥ ३ ॥ दीनदयाल दया

निधि कहिये, पुरषोत्तम हितकामी रे ॥ वा० ॥ तेरी सेवा नित२ सारे, तेतो नवनिध पामी रे ॥ वा० ॥ ४ ॥ जगजीवन आलो चन कहिये, परमारथ सब पामी रे ॥वा०॥ केवलज्ञान प्रगट भयो जिनके, क्षायक भाव सुनामी रे ॥ वा०॥५॥ वारिषेण जिण तीजो कहिये, उपगारी सुखधामी रे ॥ वा० ॥ सर्व देवनमें देव सिरो मणि, द्यो वंछित मुझ स्वामी रे ॥ वा० ॥ ६ ॥ सुमति कहे ए जि नकी सेवा, भव२में विसरामी रे ॥ वा० ॥ॐ ह्रूँ चतुर्दशरज्वात्मके सास्वता जिनेंद्रेभ्यो अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति नैवेद्य पूजा॥७॥

॥ अथ आठमी फल पूजा ॥

॥ दूहा ॥ फलपूजा जिनराजकी, करो भविक गुणवंत ॥ असुभ करम दूरे हरौ, पावो सुख अनंत ॥ १ ॥ वरधमान चोथो नमुं, केवलज्ञान दिनंद ॥ उपगारी सिर सेहरो, इम भाषे मुनिचंद ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ तुम विन दीनानाथ दयानिध को० ए चाल ॥ वर धमान जिन सेवो भविजन, ज्युं वंछित फल पावो रे॥ व० ॥ ऋष भानन चंद्रानन स्वामी, वारिषेण मन लावो रे ॥ व० ॥ वरधमान जिन पूजो भावे, वंछित फल तुम पावो रे ॥ व० ॥ १ ॥ चवदरा जमें ए जिन छाजे, एहनी भगति करावो रे ॥ व० ॥ सास्वत नामै ए जिन छाजै, गुरु मुखथी सुध पावो रे ॥ व० ॥२॥ भाव सहित ए जिनवर पूजै, दोष सकल मिट जावै रे ॥ व० ॥ तन मन सुचि सें जो जिन पूजै, लाभ अनंत उपावे रे ॥ व० ॥ ३ ॥ पंचमेरु ऊप र जिन छाजे, कंचन गिरिबली पावे रे ॥ व० ॥ पंच भरत वलि एर वत पंचे, पंच विदेह कहावे रे ॥ व० ॥ ४ ॥ मानुषोत्तर ऊपर वलि राजे, ते पिण मनमैं लावै रे ॥ व० ॥ गजदंता वलि परवत ऊपर, शाश्वता एहज पावे रे ॥ व० ॥ ५ ॥ जंबू धातकी पुस्कर वृक्षे, ए जिनराज कहावे रे ॥ व० ॥ इण विध सास्वता चैत्य नमीने, जनम

जनम सुख पावे रे ॥ व० ॥ ६ ॥ धरम विसाल दयालके नंदन, भाव सहित गुण गावे रे ॥ व० ॥ सुमति सदा ए जिनकी सेवा, जगमे सुजस उपावे रे ॥ व० ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं चतुर्दश रज्वात्मके सास्वता जिनेंद्रेभ्यो अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति फल पूजा ॥ ८ ॥

॥ अथ नवमी ध्वज पूजा ॥

॥ दूहा ॥ नवमी ध्वज पूजा करो, भाव धरी मतिवंत ॥ त्रिभुवनमे जय पामीये, प्रगटे सुख अनंत ॥ १ ॥ इंद्रध्वजा प्रभु आगले, सिणगारी मनरंग ॥ उछव कर लावो सही, होय सदा उछरंग ॥२॥ सुंदरि सब आवो सही, पहरी वस्त्र प्रधान ॥ ध्वजपूजन उछव करो, ज्युं पावो सनमान ॥ ३ ॥ कंचन वरण अति सोभता, पहरी नव सर हार ॥ परम शुची हुय तुम करो, पूजा श्रीजिन सार ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥ जिनगुण गावत सुर सुंदरी रे० ए चाल ॥ ध्वज पूजन भवि इण पर कर रे, ध्व० सहस जोजननो इंद्रध्वजाए, भाव सहित जिन आगल धरेर ॥ ध्व० ॥ १ ॥ पंच वरणकी झलहलकंती, मंगलरूप अमंगलहर रे ॥ध्व०॥ नवरंगी अरु धज बहु चंगी, फुरक रही असमानके घर रे ॥ ध्व० ॥२॥ कंचन थाल लेइ धज उत्तम, वर सुंदर ले मस्तक धर रे ॥ ध्व०॥ गाजे वाजे सब मिल गोरी, फिर लावत जिनवरके घर रे ॥ ध्व० ॥ ३ ॥ सझ सोले सिणगार कामनी, तीन प्रदक्षिणा दे जिनवर रे ॥ ध्व० ॥ उज्जल अमल अखंडित चावल, लेई स्वस्तिक आगलि कर रे ॥ ध्व०॥ ४ ॥ जिन गुण गावत हरष वधावत, तनको मैल अलग तुं कर रे ॥ ध्व० ॥ आज हमारे हरष वधाइ, आज है मंगल सब घरघर रे ॥ ध्व० ॥ ५ ॥ इंद्र धजा प्रभु आगलि सोभित, देखत भविजनको मनहर रे ॥ ध्व०॥ पाप नियाना दूर करीने, समकित शुद्ध सदा तुं वर रे ॥ ध्व०॥६॥ इण पर साश्वता जिनकी सेवा, भाव सहित भविजन अनुसर रे ॥

ध्व० ॥ सुमति कहे ए जिनकी आणा, अपणै सिरपर तुं नित धर रे ॥ ध्व० ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं चतुर्दशरज्वात्मके सास्वतजिनेंद्रेभ्यो अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहाः ॥ इति ध्वजपूजा ॥

॥ अथ दशमी नाटक पूजा ॥

॥ दूहा ॥ दशमी पूजा अवसरे, गावो गीत विशेष ॥ नृत्य करै प्रभु आगले, पावो लाभ असेष ॥ १ ॥ कुमार कुमरी आठ शत, रायपसेणी मांहे ॥ सूरीआभ रचना करी, भक्ति करै चित चाह ॥ २ ॥ रावणने मंदोदरी, सुणीयै शास्त्र मझार ॥ अष्टापदगिरि ऊपरै, नृत्य करे बहु सार ॥ ३ ॥ गोत्र तिर्थंकर बांधियो, भक्ति करी मतिवंत ॥ तिण परि तुम भक्ति करो, पावो लाभ अनंत ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥ नृत्य करै मिल सुर सुंदरी रे ॥नृ०॥ थेई२ तान करे प्रभु आगे, सुंदर सब सिणगार करी रे ॥नृ०॥ गल मोतियनको हार विराजे, वेसर मोती लाल जरी रे ॥ नृ० ॥ १ ॥ बांहे बाजू हीरा जडिया, विचमें चूनी लाल खरी रे ॥ नृ० ॥ कंचु कसिया हरख उल्हसीया, दीसै मोहनवेल परी रे ॥ नृ० ॥ २ ॥ हाथे चूडी सोहै रूडी, पग नेवर झणकार करी रे ॥ नृ० ॥ ठम ठम नाचत जिनगुण गावत, भावत नाचत सुरमहरी रे ॥ नृ० ॥ ३ ॥ आंखने मटके मुखने लटके, मोहै सुरनर देव नरी रे ॥ नृ० ॥ हीर चीर पाटंबर पहरी, प्रभु आगल गुण गाय खरी रे ॥ नृ० ॥ ४ ॥ गावत गीत मधुर धुन झीणा, वीणादिक सब साज करी रे ॥ नृ० ॥ धपमप धपमप मादल वाजै, चंग रंग नाचत किंन्नरी रे ॥ नृ० ॥ ५ ॥ मोहनगारी सब मिल नारी, देखत सुर नर चित्त हरी रे ॥नृ०॥ ससि सम वदनी कोयल वयणी, वरसत अमृत मेघ झरो रे ॥ नृ० ॥ ६ ॥ विध बत्तीसे नाटक करकै, निज गुण अपणो शुद्ध करी रे ॥ नृ० ॥ रावण राजा नार मंदोदरो, अष्टापद पर नृत्य करो रे ॥ ७ ॥ गोत्र तिर्थंकर बांध्यो भावै, तिण परि तुम भवि

भगत करी रे ॥ सुमति कहे सेवो भल भावे, श्रीजिन तारण तरण तरी रे ॥ नृ० ॥ ७ ॥ ॐ ह्रूँ चतुर्दश रज्वात्मके सास्वत जिनेंद्रेभ्यो अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति नाटक पूजा ॥

॥ अथ कलश ॥

॥ राग ॥ धन्यासिरी ॥ तेज तरण मुख राजे ॥ ए चाल ॥ इण विध पूजन करीये, चतुर नर ॥ इ०॥ सास्वता जिनवरराज चवदमें, इण नामे अवधरिये ॥ च० इ० ॥ १ ॥ द्वीप अढीमें जे जिन छाजे, ते वंदी अघ हरिये ॥ च० इ०॥ सहस सत्तावण लाख छपन-वलि, अष्ट कोड मन धरिये ॥ च० इ० ॥ २ ॥ चउसै छयाली चैत्य वंदीने, पाप करम सब हरिये ॥ च० इ० ॥ तीन लोकनी संख्या दाखी, भविजन ते उर धरिये ॥ च० इ० ॥ ३ ॥ सास्वता२ सहु जिनवरनी, सेव करो सुख करिये ॥ च० इ० ॥ अष्ट सिद्ध नवनिद्धना दायक, चरण करण गुण धरिये ॥ च० इ० ॥ ४ ॥ कामधेनु चिंतामणीथी ए, वांछित अधिकसुं करिये ॥ च०इ०॥ ऋषभानन चंद्रानन स्वामी, वारीषेण मन धरिये ॥ च० इ० ॥ ५ ॥ वर्द्धमान जिन सुखके दाता, पूजत अनुभव वरिये ॥ च० इ० ॥ मंगल कारण सब दुख वारण, भव्य सकल उर धरिये ॥ च० इ० ॥ ६ ॥ लोक चवदनो भेद वखाण्यो, गुरुमुखथी अवधरिये ॥ च० इ० ॥ ए पूजन जे भणसी गुणसी, तसु वांछित सब सरिये ॥ च० इ० ॥ ७ ॥ संवत सय उगणीसे तेपन, माधव सुद सुभ करिये ॥ च० इ० ॥ आखातीज दिवस सुखकारी, पूज रची गुण भरिये ॥ च इ० ॥ ८ ॥ श्री जिणचंद्र सूरि गुरु खरतर, तसु गुण गण उर धरिये ॥ च० इ० ॥ प्रीतसागर गणि शिष्य सुवाचक, अमृत धरमसु वरिये ॥ च० इ० ॥ ९ ॥ सीस क्षमा कल्याण सुपाठक, ज्ञान तणा

गुण दरिये ॥ च० इ० ॥ तसु सेवक मुनि धर्म विशाला, उपगारी सुख करीये ॥ च० इ० ॥ १० ॥ तसु सेवक मुनि सुमति कहत है, पूजो सुभ मन धरिये ॥ च० इ० ॥ हितवल्लभ गणिवरके आग्रह, पूज रची सुखकरिये ॥ च० इ० ॥ ११ ॥ वीकानेर नगर सुखकारी, संघ सकल हितकरिये ॥ च० इ० ॥ वंछित पूरण मंगल माला, सुजस सोभा नित वरिये ॥ च० इ० ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं चतुर्दशरज्वात्मके सास्वताजिनवरेभ्यो अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति श्री चवदेराजकी पूजा संपूर्णम् ॥

॥ अथ सुगणचंद्रोपाध्याय कृत ॥

॥ पंचपरमेष्टी पूजा ॥

॥ तत्र ॥

॥ प्रथम अरिहंतपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ ॐकार बीज आदें नमुं, गीर्वाणी सुखदाय ॥ तुं तूठो पंडित करे, पूजे सुरनर राय ॥ १ ॥ ॐनमो गुरु देवकुं, भाषा सरस बनाय ॥ पाहणथी पल्लव करे, उपगारी सिर राय ॥ २ ॥ प्रथम नमुं अरिहंतजी, दूजा सिद्ध अनंत ॥ तीजासूर सदा नमुं, उपगारी भगवंत ॥ ३ ॥ वलि उवझाया वंदिये, गुण पचवीस प्रधान ॥ द्वादश अंग परूपता, नही विकथा नहि मान ॥ ४ ॥ पंचम पद मुनिराजनो, वंदो भवि इक तार ॥ गुण सतवीसे सोभता, करुणा रस भंडार ॥ ५ ॥ पांचोको झींडो सुणो, मूरख लोक अजाण ॥ ए पांचू परमेष्टि है, अनुपम सुखकी खाण ॥ ६ ॥ उजल वरण विराजता, कुमति हरण सुभ लेश ॥ अरिहंत पद पूजा करो, सेवत सदा सुरेस ॥ ७ ॥ अष्ट द्रव्य लेइ करी, पूजो अरिहंत देव ॥ पूजत अनुभव रस मिले, पावो सुख नितमेव ॥ ८ ॥ प्रथम पद

थीकार है, अतिसय जास अनंत ॥ तीन लोकना राजवी, सेवे सुर नर संत ॥ ९ ॥

॥ ढाल होलीरी ॥ बलिहारी सुखकर जिनवरकी॥ सब देवनमें देव नगीनो, महिमा अधिकी मुनिवरकी ॥ ब० १ ॥ कोइ ध्यावे हरि हर ब्रह्मा, कोइ कहै मेरे वाला जी ॥ ब० ॥ कोइ नरसिंघ देव कुं ध्यावे, कोइ कहे मेरे ज्वाला जी ॥ ब०॥ २ ॥ मेरे परसन तुम ही आए, वीतराग गुण वाला जी ॥ ब० ॥ अवर देव सब काच कथीरा, तुम हो अमोलक हीरा जी ॥ ब० ॥ ३ ॥ राग द्वेष तुम पास नही हें, वाइस परिसह धीरा जी ॥ ब० ॥ तेरी सुरतकी बलि हारी, क्या कहु अजब अमीरा जी ॥ ब० ॥ ४ ॥ कोड देवता हाजर रहता, अणहुंते वडवीरा जी ॥ ब० ॥ जगजीवन जगलो चन कहिये, तुम सम अवर न धीरा जी ॥ ॥ ब० ॥ ५ ॥ तेरे गुणको पार न पायो, सुरनर राय वजीरा जी ॥ ब० ॥ ॥ बारे गुण प्रभु ऊपर सोहै, वृक्ष अशोक उदारा जी ॥ ब० ॥ ६ ॥ तीन छत्र भामंडल पूठै, ध्वजा फुरक रही सारा जी ॥ ब० ॥ पृथ्वी पी ठ सिहासन ऊपर, राजतहो वडवीरा जी ॥ ब० ॥ ७ ॥ पान फूल करके बहु सोभित, राजतहो गुण पूरा जी ॥ ब० ॥ सहस जोज ननो इंद्रध्वजा, प्रभु आगल चालत सारा जी ॥ ब० ॥ ८ ॥ महा गोप महामाहण कहिये, निर्यामिक सथवारा जी ॥ ब० ॥ ऐसे अरिहंतपदकी महिमा, सुणियो तुंम सब प्यारा जी ॥ ब० ॥ ९ ॥ तीनलोकमें इनका झींडा, पूजत है इकतारा जी ॥ ब० ॥ अ ष्ट द्रव्यसे पूजा करतां, सदा हुवै जयकारा जी ॥ ब० ॥ धरम वि शाल दयाल पसायै, सुमति कहे गुण सारा जी ॥ ॥ ब० ॥१०॥

ॐ ह्रूँ परमात्मने पंचपरमेष्टीमहामंत्रराजाय अरिहंतपदे अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति अरिहंतपद पूजा ॥

॥ अथ दूजी सिद्धपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ दूजी पूजा सिद्धनी, करो भविक गुणवंत ॥ धजा चढावो भावसुं, लालवरण मतिवंत ॥१॥ गुण इकतीस विराजता, तीनलोक सिर छत्र ॥ अनंत चतुष्टय धारता, जगजीवन जगमित्र ॥२॥

॥ढाल॥ ॥ भवि पनरम पद गुण गाण हो ॥ ए चाल ॥ भवि सिद्धपदके गुण गाना हो ॥भ०॥ पनरे भेदे सिद्ध विराजै, भवि तुम चित्तमे लाना हो ॥भ० सि० ॥ जिन२ तीरथ तीरथ कहीयें, अन्य सलिंग कहाना हो ॥ भ० सि० ॥१॥ स्त्री पुरुषादिक लिंगे जायै, कृत्य नपुंसक गाना हो ॥ भ० सि० ॥ प्रत्येक बुद्ध नें सहसंबुद्धा, बुद्ध बोधित सुप्रमाना हो ॥ भ० सि० ॥ २ ॥ एक अनेक और एक समयै, गुरु मुखथी सुद्ध पाना हो ॥भ० सि०॥ अष्ट सिद्धि नवनिधिके दाता, तुम हो देव निधाना हो ॥भ० सि०॥३॥ सादी अनंत तुम सुखके भोगी, जोगीसर लय लाना हो ॥भ० सि० शब्द रूप रस गंध फरसकुं, जीत भए मुनी माना हो ॥ भ० सि० ॥४॥ अव्याबाध सुखके तुम रसिये, भव्य सकल सुख दाना हो ॥ भ० सि० ॥ घाति अघाति दूर करीने, जोतमे जोत समाना हो ॥ भ० सि० ॥ ५ ॥ पेतालीस लख जोजन शिला, उज्जल वरण कहाना हो ॥ भ० सि० ॥ ऊपर जोजन भाग चोइसमे, सिद्ध प्रभु ठहराना हो ॥भ० सि०॥६॥ तिहां श्रीसिद्ध सदा जयवंता, परम गुरू परधाना हो ॥भ० सि० ॥ अनंत गुणाकर ज्ञान दिवाकर, इनके गुण नित गाना हो ॥ भ० सि० ॥ ७ ॥ लबधि रिद्धि सब सिद्धिके दाता, परम इष्ट सुखदाना हो ॥भ० सि०॥ धरम विशाल दयाल पसायें, सुमति कहै बुधवाना हो ॥ भ० सि० ॥८॥ ॐ ह्रीं सिद्ध परमात्मने अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति सिद्धपद पूजा २ ॥

॥ अथ तीजी आचार्य पद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ तीजे पदकुं नित नमुं, आचारज गुणवान ॥ गुण छत्तीस विराजता, जिनवरके परधान ॥ १ ॥ प्रतिरूपादिक गुण करी, राजे सूर समान ॥ जातिवंत कुलवंत हे, नहि विकथा नही मान ॥ २ ॥ भव्य सकलकुं तारवा, दे साचो उपदेश ॥ कुमति सदा दूरे करे, सुमती पाल हमेश ॥ ३ ॥ ऋध सिद्ध कारण पूजिये, पीले रंग प्रधान ॥ गणधारक गुरु गछपती, जुग परधान सुजान ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥ मल्ली जिनंद सुखकारी रे वाला ॥ ए चाल॥ आचारज सुखकारी रे, वाला ॥ आ० ॥ पंचाचार विराजत जगमणि, सहस किरण अवतारीरे ॥वा० आ० ॥ प्रतिरूपादिक गुण जसु छाजे, मोह माया परिहारी रे ॥ वा० आ० १ ॥ राग द्वेपकुं दूर निवारे, सुमता रस भंडारी रे ॥ वा० आ० ॥ क्रोध मान माया नहि जिनके, विकथा दूर निवारी रे ॥ वा० आ० २ ॥ तेज करी सूरज सम सोभित, मिथ्यातमके वारी रे ॥ वा० आ० ॥ क्षमा अधिक जगमे जसु राजे, विषय विकार निवारी रे ॥ वा० आ० ३ ॥ हृदय गंभीर महाजस निरमल, रूपाधिक मनुहारी रे ॥ वा० आ० ॥ देस जात कुल उत्तम जिनके, मोह्या सव नरनारी रे ॥ वा० आ० ४ ॥ सुरवर नरवर सेव करत हे, जय२ तुम सुख कारी रे ॥ वा० आ० ॥ मीठी अमृत वाणी बोले, सुणतां हरप अपारी रे ॥ वा० आ० ॥ ५ ॥ पूरव चवद भण्या श्रुत सागर, लवध अट्ठाइस धारी रे ॥ वा० आ० ॥ द्रव्यानुजोगी चरणानु जोगी, करणानुजोगके धारी रे ॥ वा० आ० ॥ ६ ॥ गणतानु जोगरु धरमानुजोगी, जाणे आगम सारी रे ॥ वा० आ० ॥ धर्म प्रभावक एह कही जै, सूर मंत्रके धारी रे ॥ वा० आ० ॥७॥

गणधारी गच्छभार धुरंधर, सारण वारणकारी रे ॥ वा० आ० ॥ ज्ञान उजागर विद्यासागर, वारी जाऊं वार हजारी रे ॥ वा० आ० ॥ ८ ॥ धरम विशाल दयाल पसाये, सुमति कहे जयकारी रे ॥ वा० आ०॥ ऐसे गौतमस्वामी कहिये, पूजो कर इकतारी रे ॥ वा० आ० ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने आचार्यपदे अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति आचार्यपद पूजा ॥ ३ ॥

॥ अथ चोथी श्रीउवज्झायपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ श्री उवज्झाया वंदिये, प्रेम धरी मन रंग ॥ चोथे पदमें सोभता, पूजो धर उछरंग ॥ १ ॥ नील वरण ध्वज सुंदरु, धर लावो सुभ थाल ॥ अष्ट द्रव्य लेइ करी, सेवो दीन दयाल ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ जिन गुण गाना श्रुत अमृतं ॥ ए चाल ॥ श्री उवज्झाया भय हरणं, भय हरणं रे देवा भय हरणं ॥ श्री० ॥ परिहर विषय विकार प्रकारं, ए गुरु हे असरण सरणं ॥ श्री० ॥ १ ॥ गुण पचवीस बिराजत सुंदर, देखत सबको मन हरणं ॥ श्री० ॥ तेज पुंज रवि शशि सम दीपत, मिथ्या तम दूरे करणं ॥ श्री० ॥ २॥ सूत्र अर्थ दाता जगमांहे, मुनि मानसमे जय करणं ॥श्री०॥ सारण वायण चोयण करता, पडिचोयण वलि आचरणं ॥ श्री० ३॥ द्वादश अंग पढ्या श्रुत सागर, सुमतीधर कुमती हरणं ॥ श्री० ॥ अतिसय विद्या चूरण जोगे, जिन सासन उन्नत करणं ॥ श्री० ॥ ४ ॥ धरम प्रभावक है उपगारी, ऐसे गुरु तारण तरणं ॥ श्री०॥ तप जप आदिकनी खप करता, भव्य सकलकुं निसतरणं ॥ श्री० ॥ ५ ॥ नवविध ब्रह्मचरजके धारक, दसविध विनय सदा करणं ॥ श्री० ॥ माया ममता दूर निवारी, द्वादस भेदे तप धरणं ॥ श्री० ॥ ६ ॥ शिष्य वरगकुं ज्ञान दान दे, मूरखथी पंडित करणं ॥ श्री० ॥ जगजीवन केहो प्रतिपालक, तुम विन अवर न आभ

रणं ॥ श्री० ॥ ७ ॥ विन कारण जगमें उपगारी, धन२ तुमरी आचरणं ॥ श्री० ॥ पंच परमेष्टी महामंत्रको, इष्ट सदा दिलमें धरणं ॥ श्री० ॥ ८ ॥ धरम विशाल दयाल पसाये, सुमति करे तुम नित वरणं ॥ श्री० ॥ नवनिध अडसिध मंगलमाला, पूजत जगमें जस वरणं ॥ श्री० ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने सकलपाठकरा जाय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति पाठकपदपूजा ॥ ४ ॥

॥ अथ साधुपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ पंचम पदमे सोभता, साधु सकल गुणवंत ॥ गुण सतवीस विराजता, महिमावंत महंत ॥१॥ स्याम वरण मुनिवर कह्या, तप करवा अति सूर ॥ भविक कमल प्रतिवोधता, धरता निरमल नूर ॥२॥

॥ ढाल ॥ सदा सहाइ कुसलसू० ॥चाल॥ सदा सहाइ वीर पटोधर, सुणियो भविक उदार ॥ भलाजी गुरु, सु०॥ सुधरमस्वामी अंतरजामी, तसु नंदन सुखकार॥ भ० ॥ जंबू आदिक गुणके सागर, ते प्रणमुं हितकार ॥ भ० स० ॥१॥ प्रभवादिक सय पांच उदारा, प्रतिवोध्या सुखकार ॥भ०॥ सिज्जंभव आदिक जे सूरी, तेहना शिष्य सुविचार ॥भ०॥ स०॥२॥ थूलभद्र मोटो ब्रह्मचारी, दुक्कर दुक्करकार ॥भ० ॥ सिंह गुफा वासी जे मुनिवर, भाषे दुक्करकार ॥भ० स० ॥३॥ वज्रकुमार वडे उपगारी, प्रतिवोध्या नर नार ॥भ०॥ श्रीसिद्धसेन दिवाकर स्वामी, राखी जगमें कार ॥भ०॥ स० ॥४॥ विक्रम आदिक नृप अठारे, प्रतिवोध्या सुखकार॥ भ० ॥ एक तीरथकुं परगट करके, गुरु चरणां व्रतधार ॥भ०॥ स० ॥५॥ देवढी गणी ए सवमें मोटा, राख्यो ज्ञानज सार ॥ भ० ॥ सूत्र ताडपत्रे धर राख्यो, जेसलमेर मझार ॥भ०॥ स० ॥६॥ अभयदेव सूरी उपगारी, नव अंग टीकाकार ॥भ०॥ हेमाचारज हे वडभागी, जिण

कीनो हेमनो पुंज ॥भ०॥ स०॥७॥ कुमारपालने जिण प्रतिबोध्यो, भाषी धरमनो गुंझ॥भ०॥ श्रीजिनदत्त सुरीसर मोटा, कीना श्राव क लाख, भ०॥ स०॥८॥ रतनप्रभु सूरी उपगारी, ओस्यानगरनी साख ॥भ०॥ जिहांथी जैन धरम विसतरियो, मोटो कीयो उपगार ॥भ०॥ स०॥९॥ इत्यादिक गुण गणके दरिया, सेवो भविक उदार ॥ ॥भ०॥ ढंढण आदिक महा तपसूरा, नाम लियां जयकार ॥भ० ॥ स० ॥१०॥ गजसुकमाल महामुनि वंदु, भाव करी इकतार ॥भ०॥ धन धन्ना अरू सालभद्रजी, कीनी करणीसार ॥भ०॥ स० ॥११॥ खंधकसूरीना सिष्य पांचसै, सूरवीर व्रतधार ॥भ०॥ पंचम पदमे ए मुनि पूजो, सदा हुवै सुखकार ॥भ०॥स० ॥१२॥ पंचम आरे छेहडे होसी, दुपसह सूर दयाल ॥भ०॥ इत्यादिक ए द्वीप अढीमें, वंदु साधु कृपाल ॥भ०॥ स० ॥१३ धरम विशाल दयाल पसायै, पूज रची सुखदाय ॥भ०॥ सुमति कहै ए पंच परमेष्टी, कामधेनु कहवाय ॥भ०॥ स० ॥१४॥

॥ ढाल दूजी ॥ चाल पणिहारीकी ॥ सुण प्याराजी, सुणतां आसीस्वाद ॥ प्याराजी, धरम सनेही साधुजी ॥ सु० ॥ करता पर उपगार ॥ प्या० ॥ लालच लोभ न जेहने, सु० ॥ नही राखे द्वेष लगार ॥ प्या० ॥ ममता माया छोडने, सु० ॥ धारै व्रत सु खकार ॥ प्या० ॥ १ ॥ गाम नगर पुर पाटणे, सु० ॥ करता धरम व्यापार ॥ प्या० ॥ राग द्वेष मुनिराजने, सु० ॥ नही कोई विषय विकार ॥ प्या० ॥ २ ॥ उपगारी सिर सेहरो, सु० ॥ कुम ति करे परिहार ॥ प्या० ॥ विन कारण मुनिराजजी, सु० ॥ भव्य जीव हितकार ॥ प्या० ॥ ३ ॥ ज्ञानी ध्यानी सूरमा, सु० ॥ महमा करत नरेस ॥प्या०॥ वाणी अमृत सारसी,सु०॥ सुणतां हरष हमेस ॥ प्या० ॥ ४ ॥ अनेक जीव प्रतिबूझीया, सु० ॥ धरम तणा पर

धान ॥ प्या० ॥ माया न करे साधुजी, सु० ॥ नही विकथा नही मान ॥ प्या० ॥ ५ ॥ पंच महाव्रत धारता, सु० ॥ ऐसे दीन दयाल ॥ प्या० ॥ सुमति धारक पांच छै, सु० ॥ गुपतीना रखवाल ॥ प्या० ॥ ६ ॥ उद्देसक आदे करी, सु० ॥ कृतकडने वलि दूत ॥ प्या० ॥ सिज्यातर राय पिडकुं, सु० ॥ नही धारै अवधूत ॥ प्या० ॥ ७ ॥ कुवचन केहनो सांभली, सु० ॥ न धरै मनमें क्रोध ॥ प्या० ॥ मधुकरनी परे मालता, सु० ॥ ऊंच नीच कुलसोध ॥ प्या० ॥ ८ ॥ लाधे भाडो दै देहनै, सु० ॥ अणलाधै तप धार ॥ प्या० ॥ ओसर मोसर देखने, सु० ॥ रस लंपट नहि होय ॥ प्या० ॥ किरिया करतां साधुजी, सु० ॥ आलस न करे कोय ॥ प्या० ९ ॥ परिसह जीते आकरा, सु० ॥ करम हुवै सब दूर ॥ प्या० ॥ मुनिवर मधुकर सम कह्या, सु० ॥ दिन२ वधते नूर ॥ प्या० ॥ १० ॥ जंगम तीरथ सारखा, सु० ॥ धरम तणा आधार ॥ प्या० ॥ एहवा मुनिवर पूजतां, सु० ॥ पावै वंछित सार ॥ प्या० ॥ ११ ॥ धरम विशाल दयालनो, सु० ॥ सुमति कहै करजोड ॥ प्या० ॥ एहवा श्रीमुनिराजजी, सु० ॥ मुझ माथैका मोड ॥ प्या० ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने सर्वसाधुभ्यो अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥

अथ कलसकी पूजा ॥

॥ दूहा ॥ अब पूजा हे कलसकी, सुणीयो तुम नर नार ॥ सांभळतां सुख पामसो, सफल हुसी अवतार ॥ १ ॥ ऐसी डारुं मोहनी, सभा सहु हरखाय ॥ सेवो जगतकी मोहनी, ए जग सार कहाय ॥ २ ॥ मंत्र मांह सिरदार है, पंचपरमेष्टी एह ॥ सरवारथ सिद्धी कह्यो, गणधर गोतम जेह ॥ ३ ॥ जेहने एहनी आसता, तेहने एह सहाय ॥ भागहीन निरबुद्धकुं, होत नही फलदाय ॥ ४ ॥

॥ ढाल प्रश्न तथा उत्तर ॥ चंगीमे चंगी कोन जगतकी मोहनी, चंगीमे चंगी जांन जिणंदपद मोहनी ॥ १ ॥ सुखी जगतमें कोन कहो मन भावना, सुखी वोही संसार परमपद भावना ॥ २ ॥ सब देवनमें देव वडो कुण जाणना, सब देवनमें देव वडो जिन जांणना । ३ । सबमें मोटो ध्यान कहो कोंन साजना, सबमें मोटो ध्यान सुकल तुम जाणना ॥ ४ ॥ धरम वडो जगमांह कहो कुंण साजना, दया धरम जगमांह वडो हे साजना ॥ ५ ॥ शिव रमणीको नाथ कहो कुंण साजना, शिव रमणीको नाथ सरव सिद्ध जांणना ॥ ६ ॥ धरममें मोटो कौण कहो मेरे साजना, धरममांह सुभ भाव सुणो मेरे साजना ॥ ७ ॥ दाता कहियै कोन कहो मन भावना, गुरू बडे दातार धरम धन पावना ॥ ८ ॥ मीठी जगमें कोन कहो मन भावना, मीठी जिन की बाण धरो चित चाहना ॥ ९ ॥ मीठी दाख खजूर के मीठी चाहनी, जिणसे अधिकी होय बाणी जिनरायनी ॥ १० ॥ सब व्रतमें कुण सार कहो मेरे साजना, सब व्रतमें व्रत सार चोथो व्रत जांणना ॥ ११ ॥ खरतर गच्छपति चंदसूरीश्वर सोहता, सकल विमल गुण गेह भविक मन मोहता ॥ १२ ॥ प्रीत सागर गणि सीस सकल गुण राजता, अम्रत धर्म उदार वाचक पद छाजता ॥ १३ ॥ पाठकमें परधान क्षमा गुण सारता, तसु सुत धरम विशाल मुनिव्रत धारता ॥ १४ ॥ सुमति कहे गुण सार भविक मन सोहता, वीकानेर मझार सकल मन मोहता ॥ १५ ॥ संघ सकल सुखदाय सेवो प्रभु भावसुं, पूजरची चित लाय अधिक भल दावसुं ॥ १६ ॥ संवत सय उगणीसक तेपन जाणीये, माहा सुद चवदस वार मंगल मन आणिये ॥ १७ ॥ भणतां गुणतां एह सदा सुख पामसे, घरघर मंगल माल हुवै जिन नामसै ॥ १८ ॥

इति पंचपरमेष्टी पूजा संपूर्णम् ॥

॥ अथ सुगणचंद्रोपाध्याय कृत ॥
॥ जंवूद्वीप पूजा ॥

॥ तत्र ॥

॥ प्रथम जल पूजा ॥

॥ दूहा ॥ सुख संपत दायक सदा, चोवीसे जिनराज ॥ प्रणमा सुध मन भावसुं, सदगुरु चरण जिहाज ॥ १ ॥ जंबूद्वीपे जाणिये, जंबूवृक्ष महंत ॥ देव अणाढिय नाम ए, नायक ते मतिवंत ॥ २ ॥ चिहुं दिस शाखा च्यार पर, चैत्य विराजे च्यार ॥ मध्य एक जिन राजनो, चैत्य वडो अवधार ॥ ३ ॥ चैत्य चैत्य प्रति सोभता, कंच न वरण प्रधान ॥ विंव एकसो आठ छे, पूजो सुभ धर ध्यान॥ ४॥ सुचि सुगंध जल लेयने, पूजो श्रीजिनराज ॥ पूजत सुख संपत मि लै, पावे सुजस समाज ॥ ५ ॥

॥ ढाल पणहारीनी ॥ जंबूद्वीपे जाणिये, सुखकारी रे लोय ॥ जंबूवृक्ष सुरंग, वारूजी ॥ देव अणाढिय नाम छे, सु० ॥ सेव करे नित चंग ॥ वा० ॥ १ ॥ एकसो आठ वीजा वली, सु० ॥ तेहनो छे परिवार ॥ वा० ॥ च्यार शाख छे जेहनी, सु० ॥ रतनमइ अवधार ॥ वा० ॥२॥ ते ऊपर जिनराजना, सु०॥ चैत्य विराजे च्यार ॥वा०॥ मध्यभाग जिनराजनो, सु० ॥ चैत्य वडो विस्तार ॥ वा० ॥ ३ ॥ चैत्य चैत्य जिनराजना, सु० ॥ अडशत विंव उदार ॥ वा० ॥ कंचन वरण छे साश्वता, सु० ॥ सेवे सुरपति सार ॥ वा० ॥ ४ ॥ पान फूल करि सोभता, सु० ॥ सोगंभ अधिक अपार ॥ वा० ॥ पंखीगण सहु आयने, सु० ॥ केल करे सुखकार ॥ वा० ॥ ५ ॥ साश्वतो ए जिन दासीयो, सु० ॥ ए तरु सव सिरदार ॥ वा० ॥ अष्ट द्रव्य लेइ करी, सु० ॥ पूजो जिन इकतार ॥ वा० ॥ ६ ॥ धरम विशाल दया

॥ ढाल प्रश्न तथा उत्तर ॥ चंगीमे चंगी कोन जगतकी मोहनी, चंगीमे चंगी जांन जिणंदपद मोह्नी ॥ १ ॥ सुखी जगतमें कोन कहो मन भावना, सुखी वोही संसार परमपद भावना ॥ २ ॥ सब देवनमें देव वडो कुण जाणना, सब देवनमें देव वडो जिन जांणना । ३ । सबमें मोटो ध्यान कहो कोंन साजना, सबमें मोटो ध्यान सुकल तुम जाणना ॥ ४ ॥ धरम वडो जगमांह कहो कुंण साजना, दया धरम जगमांह वडो हे साजना ॥ ५ ॥ शिव रमणीको नाथ कहो कुंण साजना, शिव रमणीको नाथ सरव सिद्ध जांणना ॥ ६ ॥ धरममें मोटो कौण कहो मेरे साजना, धरममांह सुभ भाव सुणो मेरे साजना ॥ ७ ॥ दाता कहियै कोन कहो मन भावना, गुरू बडे दातार धरम धन पावना ॥ ८ ॥ मीठी जगमें कोन कहो मन भावना, मीठी जिन की बाण धरो चित चाह्ना ॥ ९ ॥ मीठी दाख खजूर के मीठी चाहनी, जिणसे अधिकी होय बाणी जिनरायनी ॥ १० ॥ सब व्रतमें कुण सार कहो मेरे साजना, सब व्रतमें व्रत सार चोथो व्रत जांणना ॥ ११ ॥ खरतर गच्छपति चंदसूरीश्वर सोहता, सकल विमल गुण गेह भविक मन मोहता ॥ १२ ॥ प्रीत सागर गणि सीस सकल गुण राजता, अम्रत धर्म उदार वाचक पद छाजता ॥ १३ ॥ पाठकमें परधान क्षमा गुण सारता, तसु सुत धरम विशाल मुनिव्रत धारता ॥ १४ ॥ सुमति कहे गुण सार भविक मन सोहता, वीकानेर मझार सकल मन मोहता ॥ १५ ॥ संघ सकल सुखदाय सेवो प्रभु भावसुं, पूजरची चित लाय अधिक भल दावसुं ॥ १६ ॥ संवत सय उगणीसक तेपन जाणीये, माहा सुद चवदस वार मंगल मन आणिये ॥ १७ ॥ भणतां गुणतां एह सदा सुख पामसे, घरघर मंगल माल हुवै जिन नामसै ॥ १८ ॥ इति पंचपरमेष्ठी पूजा संपूर्णम् ॥

॥ अथ सुगणचंद्रोपाध्याय कृत ॥
॥ जंबूद्वीप पूजा ॥

॥ तत्र ॥

॥ प्रथम जल पूजा ॥

॥ दूहा ॥ सुख संपत दायक सदा, चोवीसें जिनराज ॥ प्रणमा सुध मन भावसुं, सदगुरु चरण जिहाज ॥ १ ॥ जंबूद्वीपे जाणिये, जंबूवृक्ष महंत ॥ देव अणाढिय नाम ए, नायक ते मतिवंत ॥ २ ॥ चिहुं दिस शाखा च्यार पर, चैत्य विराजे च्यार॥ मध्य एक जिन राजनो, चैत्य वडो अवधार ॥ ३ ॥ चैत्य चैत्य प्रति सोभता, कंचन वरण प्रधान ॥ बिंब एकसो आठ छे, पूजो सुभ धर ध्यान॥४॥ सुचि सुगंध जल लेयने, पूजो श्रीजिनराज ॥ पूजत सुख संपत मिलै, पावै सुजस समाज ॥ ५ ॥

॥ ढाल पणहारीनी ॥ जंबूद्वीपै जाणिये, सुखकारी रे लोय ॥ जंबूवृक्ष सुरंग, वारूजी ॥ देव अणाढिय नाम छे, सु० ॥ सेव करे चित चंग ॥ वा० ॥ १ ॥ एकसो आठ बीजा वली, सु० ॥ तेहनो छे परिवार ॥ वा० ॥ च्यार शाख छे जेहनी, सु० ॥ रतनमइ अवधार ॥ वा० ॥२॥ ते ऊपर जिनराजना, सु०॥ चैत्य विराजे च्यार ॥वा०॥ मध्यभाग जिनराजनो, सु० ॥ चैत्य वडो विस्तार ॥ वा० ॥ ३ ॥ चैत्य चैत्य जिनराजना, सु० ॥ अडशत बिंब उदार ॥ वा० ॥ कंचन वरण छै साश्वता, सु० ॥ सेवै सुरपति सार ॥ वा० ॥ ४ ॥ पान फूल करि सोभता, सु० ॥ सोरंभ अधिक अपार ॥ वा० ॥ पंखीगण सहु आयने, सु० ॥ केल करे सुखकार ॥ वा० ॥ ५ ॥ साश्वतो ए जिन दाखीयो, सु० ॥ ए तरु सब सिरदार ॥ वा० ॥ अष्ट द्रव्य लेइ करी, सु० ॥ पूजो जिन इकतार ॥ वा० ॥ ६ ॥ धरम विशाल दया

लनो, सु० ॥ सुमति कहै मन रंग ॥ वा० ॥ सेवो तन मन भाव सुं, जिम थाये उछरंग ॥ वा० ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीसास्वत जिनेंद्राय जंबूवृक्षोपरिस्थिताय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति प्रथम पूजा ॥ १ ॥

॥ अथ बीजी चंदन पूजा ॥

॥ दूहा ॥ दूजी पूजा साचवे, बावन चंदन सार ॥ मृगमद भेली भावसुं, पूजो जग भरतार ॥ १ ॥ ऋषभानन चंद्रानना, वारिषेण वर्द्धमान ॥ च्यार तिर्थंकर साश्वता, पूजो शुभ धर ध्यान ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ ऋषभानन जिन सेवो भवि रसिया, ऋ० ॥ तारण तरण तूंही परमेसर, तीनलोककै तूं मन वसिया ॥ ऋ० ॥ आज हमारे हरष वधाइ, आज आनंद घन मेघ वरसिया ॥ ऋ० ॥ १ ॥ सकल जीवकुं सुखके कारक, अमृत सम शुभ धरम दरसिया ॥ ऋ० ॥ केवल दरसण अतिसय सोभित, सुरपति आदिकपाद फरसिया ॥ ऋ० ॥ २ ॥ मृगमद चंदन कुंकम घोली, पूज करो प्रभुकी सुख रसिया ॥ ऋ० ॥ साश्वता जिनकी पूजन करतां, पाप करम सहु जाय तरसिया ॥ ऋ० ॥ ३ ॥ पांचसें धनुष विराजत काया, कंचन वरण सबी मन वसिया ॥ ऋ० ॥ चोसठ सुरपति भगत करणकुं, आवत है बहु हरख उलसिया ॥ ऋ० ॥ ४ ॥ इंद्राणी मिल भगत करत है, नाटक विधि बहु भांत दरसिया ॥ ऋ० ॥ वंछित दायक सब गुण लायक, कांम कुंभ समदान वरसिया ॥ ऋ० ॥ ५ ॥ धरम विशाल दयाल पसाये, सुमति सदाए ज्ञान दरसिया ॥ ऋ० ॥ बावन चंदन सें जिन पूजित, अशुभ करम सब दूरै घसिया ॥ ऋ० ॥ ६ ॥ अष्ट द्रव्यसें पूज रचावत, समकित शुद्ध उपावतरसिया ॥ ऋ० ॥ विजयसुरै जिन भगत करीनै, अनुपम सुख्ख लहै गुण रसिया ॥ ऋ० ॥ ७ ॥ द्रौपदी श्रीजिन भक्ति करीने, बोधबीजकुं पावतरसिया ॥ ऋ० ॥

इत्यादिक वहु जीव भगतसें, परमानंद लहे भवि रसिया ॥ऋ०॥८॥ ॐ ह्रीं श्रीऋषभाननजिनेंद्राय चंदनं यजामहे स्वाहा ॥ इति दूजी पूजा ॥ २ ॥

॥ अथ तीजी पुष्प पूजा ॥

॥ दूहा ॥ पुष्प सुगंधी लेयने, गुंथो माल सुरंग ॥ वोध लता निरमल हुवै, पावै सुजस अभंग ॥ १ ॥ चंद्रानन जिनरायनी, सेव करो चित लाय ॥ वंछित पूरण सुरतरू ॥ भव्य सकल सुख दाय ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ चंद्रानन जिन सेवो म्हारा राजिदा, ॥ चं० ॥ सकल विमल गुण आगर जगमें, तुम सम अवर न देवौ ॥ म्हा० चं० ॥ तुंहि निरंजन तुं भय भंजन, तुं जग सार कहावै ॥ म्हा० चं ॥ १ ॥ चंद्रानन जिन पर उपगारी, देखतही सुख पावै ॥ म्हा० चं० ॥ मोह तिमरकुं दूर करीने, वोध लता उपजावे ॥ म्हा० चं० ॥ २ ॥ तुम हिज जगके अंतरजामी, त्रिभुवन पति कहलावे ॥ म्हा० चं० ॥ जगजीवन जग वच्छल कहियै, वीत राग पद ध्यावे ॥ म्हा० चं० ॥ ३ ॥ परम पुरुष परमेसर पूजी, परम परम सुख लेवो ॥ म्हा० चं० ॥ तुमहिज तारक नाम धरावै, जग दीपक जिन देवो ॥ म्हा० चं० ॥ ४ ॥ तीन लोकको भासक तुंहो, सुरमणि सम नित मेवो ॥ म्हा० चं० ॥ इंद्राणी मिल भगतै जुगतै, लुल लुल सीस नमावे ॥ म्हा० चं० ॥ ५ ॥ जय२ शब्द करै प्रभु आगल, सुर पति नित गुण गावे ॥ म्हा० चं० ॥ तुमकु जो नर पूजे ध्यावै, वंछित सकल लहावै ॥ म्हा० चं० ॥ ६ ॥ आज हमारे हरष वधाइ, आणंद अंग न मावै ॥ म्हा० चं० ॥ सुरतरु सम जिन दरसण पायो, भव दुख दूर गमायो ॥ म्हा० चं० ॥ ७ ॥ चितामणि सम ए जिन लाधो, परमानंद उपायो ॥ म्हा० चं० ॥ रागादिक सव दूर करीने, वी

तराग पद पावै ॥ म्हा० चं० ॥ ८ ॥ शिवरमणीकै नाथ कहीजै, जोगीसर नित ध्यावै ॥ म्हा० चं० ॥ पंच वरण फूलनकी माला, प्रभु कंठै पधरावै ॥ म्हा० चं० ॥ ९ ॥ भक्ति सहित जिनराज चरणकी, पूजनसें सुख पावै ॥म्हा० चं०॥ धरम विशाल दयाल पसायै, सुमतिसदा गुण गावै ॥म्हा० चं० ॥१०॥ ॐ ह्रीँ चंद्राननजिनेंद्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥इति ॥ तीजी पूजा ॥३॥

॥ अथ चोथी धूपदीप पूजा ॥

॥ दूहा ॥ वारिषेण जिनराजनी, सेव करो शुभ भाव ॥ सुख संपतलेवा तणो, एहिज परम उपाव ॥ १ ॥ धूप दीप लेइ करी, पूजो श्रीजिनराज ॥ पूजत अनुभव गुण लहो, प्रगटै सुख्ख समाज॥२॥

॥ ढाल ॥ वारिषेण जिन अंतरजामी, तुम हो दीन दयाला मैं० वा०॥ परमातम परमेसर तुम हो, तीन लोक प्रतिपाला ॥ मैं० वा० ॥ अनंत गुणाकर सुखके सागर, जनम मरण भय वारा ॥मैं० वा०॥ १ ॥ निरमल जोत विराजै भानू, बोध बीज दातारा ॥ मैं० वा०॥ करम सबल दल दूर करीने, भए जोगी अविकारा ॥ मैं० वा० ॥ लोक चवदकै पार किनारै, सिद्धि वधु भरतारा ॥ मैं० वा० ॥ सादि अनंत थिति जेहनी कहीयै, अजरामर पद धारा ॥ मैं० वा० ॥३॥ तुम गुणको कोइ पार न पावै, सहस जीभ विसतारा ॥ मैं० वा०॥ तारण तरण तूंही परमेसर, अंतर प्राण आधारा ॥मैं० वा० ॥४॥ धरम विशाल दयाल पसायै, सुमति कहै गुण सारा ॥ मैं० वा० बोध बीज दीजै मुझ स्वामी, तुम हो पर उपगारा ॥ मैं० वा० ॥ ॥५॥ ॐ ह्रीँ वारिषेण जिनेंद्राय अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति चोथी पूजा ॥ ४ ॥

॥ अथ पांचमी पूजा ॥

॥ दूहा ॥ वर्द्धमान जिनचंदकुं, नमन करी चित चाह ॥ ऋध

सिद्ध वंछित दीजीये, नित प्रति हरप उछाह ॥१॥ अष्ट द्रव्य सुचि लेयने, पूजो श्री जिनराज ॥ पूजत सुख संपत मिलै, प्रगटै सुख्ख समाज ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ तुम विन दीना० ए चाल ॥ वर्द्धमान जिन अंतरजामी, पुन्ये सेवा पामी रे ॥ व० महिमावंत महंत कहीजे, परम पुरुष गुण धामी रे ॥ व० ॥ तीन लोकको तुं हित वच्छल, परम दयानिध स्वामी रे ॥ व० ॥ १ ॥ तेरी महिमा अजब कहीजे, संख्या किणहीन पामी रे ॥ व० ॥ महा गोप महामाहण कहिये, निर्यामक गुण धामी रे ॥ व० २ ॥ तुम सरषो कोइ अवर न देवा, सब जीवन हितकामी रे ॥ व० ॥ परमातम परमेसर तुम हो, वंछित सगला पामी रे ॥ व० ॥ ३ ॥ परमानंद भये तुम निरखत, तुं प्रभु जग विसरामी रे ॥ व० ॥ भव२ तुम चरणांकी सेवा, दीजे अंतर जामी रे ॥ व० ॥ ४ ॥ साश्वता ए जिनराज कहावै, प्रणमीजै सिर नामी रे ॥ व० ॥ धरम विशालनो सुमति सदाए, गुण गावे हित कामी रे ॥ व० ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं सास्वत जिनेंद्राय वर्द्धमानाय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति पांचमी पूजा ॥ ५ ॥

॥ अथ छठी नाटक पूजा ॥

(इस पूजामें रावण मंदोदरीका नृत्य करावणा पट आगे रखणा)

॥ दूहा ॥ श्री अष्टापद ऊपरे, नृत्य करे शुभ भाव ॥ रावणनें मंदोदरी, ते सुणजो प्रस्ताव ॥ १ ॥ दश मुख वीस भुजा करी, साज वाजकर सार ॥ प्रभु भक्ति करवा भणी, आवै लइ परिवार ॥२॥

॥ ढाल ॥ नृत्य करे शुद्ध भाव धरी रे ॥ नृ० ॥ रावण राजा तीन खंडकौ नायक, राज करे ए लंकपुरी रे ॥ नृ० ॥ १ ॥ सुंदर नारी सब सिणगारी, मंदोदरी कर वीण धरी रे ॥ नृ० ॥ थेइ थेइ

नाचत तान मिलावत, ठम ठम ठमके पाव धरी रे ॥ नृ० ॥ २ ॥
कंचू कसिया हरष उलसिया, रमझम घुघर नाद करी रे ॥ नृ० ॥
हाथे चूडी दीसे रूडी, बांह बाजुकी छिब सखरी रे ॥ नृ० ॥ ३ ॥
रतन जडतकी मुंदडी सोहै, कटिमेखल मणि रतन जरी रे ॥ नृ० ॥
हीर चीर पाटंबर पहरी, वेसर मोती लाल खरी रे ॥ नृ० ॥ ४ ॥
रूप अनूपम सुंदर सोहै, जाणे अनोपम देव परी रे ॥ नृ० ॥ हाव
भाव दिखलावत सबही, देखत सबको चित्त हरी रे ॥ नृ० ॥ ५ ॥
जय२ तूं जिनराज जगत गुरु, तारण तरण हे तूंही वरी रे ॥ नृ० ॥
तूंही जिनेसर तूंहि दिनेसर, तूंही प्रीतम सुख्ख करी रे ॥ नृ० ॥६॥
आंखने मटके मुखने लटके, मोह्या सुर सहु पाय परी रे ॥ नृ० ॥
अनंत गुणाकर ज्ञान दिवाकर, गुण गावत सब सुर महरी रे
॥ नृ० ॥ ७ ॥ धरम विशाल दयालनो नंदन, सुमति कहे चित्त
चाह खरी रे ॥ नृ० ॥ भव भवमें प्रभु तुमरी सेवा, दीजे जिनवर
महर करी रे ॥ नृ० ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीँ सास्वत जिनचंद्राय अष्टद्रव्यं य
जामहे स्वाहा ॥ इति छठी पूजा ॥ ६ ॥

॥ अथ सातमी पूजा ॥

॥ दूहा ॥ प्रतिहारज पूजा करो, सरधा सुध मतिवंत ॥ तेज पुं
ज निरमल लहो, प्रगटे ज्ञान अनंत ॥ १ ॥ अष्टद्रव्य लेइ करी,
पूजो दीन दयाल ॥ पूजत सुख संपत लहो, पामो भोग रसाल ॥२॥

॥ ढाल ॥ राग सोरठ ॥ जाकै काम क्रोध भए न्यारा रे,
तुम देव सकल जयकारा ॥ जा० ॥ परम दयाके नायक तुमहो,
अंतर प्राण आधारा ॥ सुरपति सेव करे नित हरखे, जय जय मोह
नगारा रे ॥ तु० ॥ १ ॥ रूप अनोपम प्रभुको सोहे, कोइ न लहे
पारा ॥ प्रतिहारज जसु आठ विराजत, देव करै जयकारा रे
॥ तु० ॥ २ ॥ चामर छत्र शिरोपर शोहे, धरम चक्र मनुहारा ॥

सहस जोजननो इंद्रध्वजाए, चाले अधिक उदारा रे ॥ तु० ॥ ३ ॥ रतन जडतको आसन सोहे, कंचनमय सुखकारा ॥ देव दुंदुभी शब्द अनूपम, गाजे गगन मझारा रे ॥ तु० ॥ ४ ॥ पूठ भामंडल तेज विराजे, देखे लोक हजारा ॥ कंचन वरण सरीर सुहावै, सेवे सुरपति सारा रे ॥ तु० ॥ ५ ॥ तुम गुणको कोई पार न पावे, सहस जीभ विस्तारा ॥ देशना अमृतधार करीने, मोह्या भविजन प्यारा रे ॥ तु० ॥ ६ ॥ संजम सत्तर प्रकार आराधी, भए जोगी अविकारा ॥ क्रोधादिक अरि दूर करीने, परमातम पद धारा रे ॥ तु० ॥ ७ ॥ करम सवल दल जीत्या प्रभुजी, भए सिद्ध वधू भरतारा ॥ लोक चवदके पार किनारे, सादि अनंत थिति धारा रे ॥ तु० ॥ ८ ॥ एहिज जंबुद्वीप कहा वै, लाख जोजन विसतारा ॥ देवकुरुमें वृक्ष विराजै, जंबू नाम उदारा रे ॥ तु० ॥ ९ ॥ साश्वता जिनवर एह विराजै, पूजो कर इकतारा ॥ वंछित पूरण सुरतरु सम है, भाषे जिनवर सारा रे ॥ तु० ॥ १० ॥ सव देवनमें देव अनोपम, सेवो हरष अपारा, धरम विशालनो सुमति कहै इम, प्रभु तुम प्राण आधारा रे ॥ तु० ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं सास्वत जिनेभ्योः अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति सप्तमी पूजा ॥ ७ ॥

॥ अथ आठमी अष्ट मंगलनी पूजा ॥

॥ दूहा ॥-अष्ट मंगल प्रभु आगलै, करियै विविध प्रकार ॥ प्रभु आगल ऊभा रही, गावै गीत उदार ॥ १ ॥ मधुरै सुर आलाप कर, गावै प्रभु गुण माल ॥ तिर्थंकर पद पामीये, करिये भगत रसाल ॥२॥

॥ ढाल ॥ जिनंदवा मिल गयो रे० ॥ ए चाल ॥ मेरो मन मिल गयो रे, तुम सूरतकुं देख, अधिक मन गहगह्यो रे ॥ मे० ॥ ज्ञाता ज्ञेय अनंतनो रे, भासक छो मतिवंत ॥

दरसी छों तिहु लोकना रे, सेवे सुरनर संत, परम सुख लहलह्यो रे ॥ तु० ॥ १ ॥ तुम सरीपो जग को नही रे, केवलज्ञान अनंत ॥ भासक धरम तणो सही रे, अतिसय जास अनंत, सोभा जग ले रह्यो रे ॥ तु० ॥ २ ॥ आतम वीर्य उल्लासते रे ॥ कर्म अरीकर दूर ॥ केवल कमला भोगवी रे, पावै सुख भरपूर, जगतमे जस लह्यो रे ॥ तु० ॥ ३ ॥ आज आनंदघन उमह्यो रे, वूठो अमृत धार ॥ साश्वत जिन सेवा करी रे, लीधो लाभ अपार, धरममें लह लह्यो रे ॥ तु० ॥ ४ ॥ दाता दीनदयाल छो रे ॥ अंतर प्राण आधार ॥ भव जल तारक पोत छो रे, तुम गुण अंत न पार, सुखोमें झिल रह्यो रे ॥ तु० ॥ ५ ॥ तुम सेवत संपत मिलै रे, दुख सब दूरें जाय ॥ भोग अनंता भोगवौ रे, परम सुखी कहवाय, मेरो मन गहगह्यो रे ॥ तु० ॥ ६ ॥ काम कुंभ चिंतामणी रे, जगजीवन प्रतिपाल ॥ तुम दरसण दीजे प्रभूरे, तुंम हो दीनदयाल, आणंदमें झिल रह्यौ रे ॥ तु० ॥ ७ ॥ धरम विशाल दयालनो रे, सुमति कहे मनरंग ॥ प्रभुपद पंकज पूजतां रे, बहुत हुवे उछरंग, मेरो मन गहगह्यो रे ॥ तुं० ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्रीपर०

॥ ढाल ॥ राग आसाउरी ॥ आज आनंद वधाइ, हमारे माइ ॥ आ० ॥ ऋषभानन चंद्रानन वारिषेण, वरधमान वरदाइ ॥ ह० आ० ॥ १ ॥ लाख जोजननो द्वीप कहीजे, जंबू वृक्ष कहाइ ॥ ह० आ० ॥ २ ॥ ते उपर जिनराज तणाए, पांच प्रासाद कहाइ ॥ ह० आ० ॥ जंबू वृक्ष वडो ए कहिये, सेव करै सुरराई ॥ ह० आ० ॥ ३ ॥ पान फूल ध्वजा करि सोभत, पंखी केल कराई ॥ ह० आ० ॥ च्यार शाख पर ए जिन राजा, रतनमई सुखदाई ॥ ह० आ० ॥ ४ ॥ देव अणाढियनो इहां थानक, पूजत होत सहाइ ॥ ह० आ० खरतर गच्छपति कीर्त्ति सूरी

सर, राजत राज सवाई ॥ ह० आ० ॥ ५ ॥ शील संतोप क्षमा गुण सागर, संघ सदा वरदाई ॥ ह०आ० ॥ प्रीतसागर गणि शिष्य सुवाचक, अमृत धर्म कहाई ॥ ह० आ० ॥६॥ सीस क्षमा कल्याण सुपाठक, सदगुरु नाम धराइ ॥ ह० आ० ॥ धरम विशाल दयाल पसाये, सुमति सदा गुण गाई ॥ ह० आ० ॥ ७॥ वीकानेर नगर अति सुंदर, राजत धर्म सदाई ॥ ह० आ० ॥ सय उगणीसे वरस अट्ठावन, द्वितिय सावण मन भाई ॥ ह० आ० ॥ ८ ॥ दशमी दिन जिनराज कृपातें, गुण गाए सुख दाई ॥ ह०आ०॥ जंबूद्वीपपन्नत्ती मांहे, एहनो भेद लहाई ॥ ह० आ० ॥ ९ ॥ जंबूवृक्ष तणी ए पूजा, भणतां ऋद्ध सवाई ॥ह० आ०॥ संघ सहु ए पजन करतां, अनुपम दोलत पाई ॥ आ० ॥ १० ॥ कल्याण निधान गणि परवरकी, प्रेरण या सुख दाइ ॥ ह० आ०॥ धरम मित्र मुनि सुकनचंद ए, प्रेम सहित गुण गाई ॥ ह० आ० ॥ ११ ॥ इति श्री जंबूवृक्षनी पूजा ॥

॥ अथ सुगुणचंद्रोपाध्याय कृत ॥
॥ सिद्धाचलजीकी पूजा ॥

॥ तत्र ॥

॥ प्रथम ध्वज पूजा ॥

॥ श्री ऋपभायनमः ॥ दूहा ॥ ऋपभादिक जिनवर नमी, प्रणमी सदगुरु पाय ॥ पुंडरीक गिररायनी, पूज करूं सुखदाय ॥१॥ सजल सिखर गिरवर सरस, फरस्यां पाप पुलाय ॥ कनकाचल सहु शिरतिलो, वंद्यां सहु दुख जाय ॥ २ ॥ नाम लियां सुख संपजे, घर बैठां सुभ भाव ॥ सफल जनम जात्रा करे, भव जल तारन नाव ॥ ३ ॥ भव२ भमता मानवी, पामे दुक्ख अनंत ॥

पुंडरगिर भेटे तिके, तुरत लहै भव अंत ॥ ४ ॥ कल्पवृक्ष चिंता मणी, जंत्र मंत्र जग जोय ॥ ए महिमा सहु कारमी, गिरवर सम नहिं कोय ॥ ५ ॥ प्रथम ध्वजा लेई करी, चाढो गिरवर शृंग ॥ विजय सदा जगमें हुवे, दिन२ अधिक सुरंग ॥ ६ ॥

॥ ढाल ॥ चित्त हरख धरी, अनुभव रंगे, वीस परम पद सेविये ॥ ए चाल ॥ गिरराज जयो, श्रीसिद्धाचल तीरथ, रयणे पूजीयै ॥ माहाराज जयो, श्रीरिसहेसर, भविजन भावे पूजीये ॥ वर मोहन ध्वज पूजा करीये, चित चोखे जगमैं जस चरिये, जिनराज सरण भवि अनु सरियै ॥ गि० ॥ १ ॥ इहां पुंडरिक गणधर आया छै, तिण पुंडरिक नाम कहाया छै, सिद्धक्षेत्र नमी सुख पाया छै ॥ गि० ॥ २ ॥ विमलाचल गुण मणि दरियो छै, सुरगिर माहागिरि गुण भरियो छै, वलि पुन्यरास मन धरियो छै ॥ गि० ॥ ३ ॥ वलि श्रीपत परवत सुखकारी, वलि इंद्रप्रकास ते चित्त धारी, सास्वत ए गिरवर बलिहारी ॥ गि० ॥ ४ ॥ दृढसक्ति मुक्तिनिलो कहियै, अरु पुष्फदंत मन सरदहियै, महापद्म सुठाम सदा कहीये ॥ गि० ॥ ५ ॥ वलि पृथ्वीपीठ सुभद्र वारु, कैलासगिर कहियै सुखकारु, पातालमूल भवि हे तारु ॥ गि० ॥ ६ ॥ वलि अकरम नामै एह जाणो, सर्व कांमद वलि मनमें आणो, गिर गुण गातां मन हुलसाणो ॥ गि० ॥ ७ ॥ ए इकवीस गिरंद नामा, ध्यावो भविजन तुमे सुख कामा, कहै सुमति सदाए अभिरामा ॥ गि० ॥ ८ ॥ इति ॥ काव्यं ॥ देवासुरेंद्रनरनागरमर्चितेभ्यः,पापः प्रणासकरभव्यमनोहरेभ्यः। घंटाध्वजादि परिवारविभूषितेभ्यः, नित्यं नमो सिद्धगिरींद्रजिनालयेभ्यः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीपरमात्मने अनंतानंतज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीविमलाचलतीर्थस्थितजिनेंद्राय ध्वजां यजामहे स्वाहा ॥ इति ध्वज पूजा ॥ १ ॥

॥ अथ बीजी जल पूजा ॥

॥ दूहा ॥ निर्मल जल कलसा भरी, पूजो श्रीजिनराय ॥ पूजत अनुभव गुण लहे, पाप पंक मल जाय ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ आज आयोरे उछाह, जीवडा नाच जिणंद आगै ॥ ए चाल ॥ आज हरख धरी, गिरवर पूजन करिये रे, आ० ॥ कलस अठोतर सो मनरंग, निरमल जल भरियै अति चंग ॥ आ० गंगादिक तीरथना जाण, अवर सुजल पूजो जगभाण ॥आ०॥१ इण पर न्हवण करो जिनराज, भवियण सारो वंछितकाज ॥ आ० ॥ इण गिर ऊपर ऋषभ जिणंद, समवसरया भवियण सुखकंद ॥ आ० ॥ २ ॥ महियल मोटो ए गिर जाण, भवियण भेटो सुखनी खाण ॥ आ० ॥ कंकर२ साधु अनंत, सिद्ध थया भाख्यो भगवंत ॥ आ० ॥ ३॥ हिव सुणज्यो सगलो अधिकार, चित थिर राखी करो गुण धार ॥ आ० ॥ मन तन उलसे सुणतां एह, तत खिण पावै करमनो छेह ॥ आ० ॥ ४ ॥ पातिक टाली पूजो देव, जिम सुख पावो नित्य अछेह ॥ आ० ॥ महियल मोटो ए गिरराय, श्रीमुख भाखे श्रीजिनराय ॥ आ० ॥ ५ ॥ प्रथम अजित सोलम प्रभू ध्यान, करकै पूजो गिरराजान ॥ आ० ॥ इण पर सुमति कहे हित आण, जिनपद सेव्यां कोड कल्याण ॥ आ० ॥ ६ ॥ इति ॥ काव्यं ॥ देवासुरेंद्रनरनागरमर्चितेभ्यः, पापः प्रणासकरभव्यमनोहरेभ्यः । घंटाध्वजादिपरिवारविभूषितेभ्य', नित्यंनमोसिद्धगिरींद्रजिनालयेभ्यः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीपरमात्मने अनंतानंतज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीविमलाचलतीर्थाय जलं यजामहे स्वाहा ॥ इति जल पूजा ॥ २ ॥

॥ अथ तीजी चंदन पूजा ॥

॥ दूहा ॥ निरमल चंदन चंदसे, पूजो श्रीजगदीस ॥ प्रेम धरी

पजा करो, सुख पावो निस दीस ॥ १ ॥ नगर अजोध्यानो धणी, श्रीजितसत्रु नरेस ॥ विजया राणी शीलनी, सोभा कैरे सुरेस ॥ २ ॥ जिण जायो सुत जग धणी, जीत्या रिपु दल जास ॥ अजित कुंवर राजा कीयो, नाम जिसो परकास ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥ श्रीचंद्राप्रभु जिनवर साहिब, सुणियो अरज हमारी ॥ में वारीजाऊं सु० ॥ ए चाल ॥ अजित जिनेसर जग परमेसर, तुम हो पर उपगारा ॥ में वारीजाउं तु० ॥ बावनचंदन केसर घोली, कस्तुरी घनसारा ॥ में० ॥ भाव भगतसुं प्रभु गुण गावों, पूजो जग भरतारा ॥ में० अ० ॥ १ ॥ मिथ्या तम भर दूर निवारी, सेवो प्रभु अविकारा ॥ में० ॥ राज राजेसर जगपति जिनवर, चक्री अजित उदारा ॥ में० अ० ॥ २ ॥ पर उपगारी तुं परमेसर, भेट्यां जय जयकारा ॥ में० ॥ जिम२ परमल पसरै तेहथी, सोभा अधिक उदारा ॥ में० अ० ॥ ३ ॥ भूमंडल विचरंता प्रभुजी, बहु चेतन समझाया ॥ में० ॥ पुंडरीक पर अजित जिनेसर, चौमासै तिहां आया ॥ में० आ० ॥ ४ ॥ सिंहसेनादिक गणधर थापी, पंचाणू हितकारा ॥ में० ॥ एक लाख मुनि मुद्राधारी, भरीया गुण मणि धारा ॥ में० अ० ॥ ५ ॥ चौथा आरानै मध्यज भागै, अजित हुवा अविकारा ॥ में० ॥ बोहत्तर लख पूरबनो आऊ, कीधा जग जयकारा ॥ में० अ० ॥ ६ ॥ सोलम जिनवर शांति जिनेसर, अचिरा नंद उदारा ॥ में० ॥ विमल गिरंद पर कर चौमासो, करम कलंक निवारा ॥ में० अ० ॥ ७ ॥ विश्वसेन कुल भाण विराजै, जगजीवन हितकारा ॥ में० ॥ श्रीहथणापुर मंडण स्वामी, सुमति सदा दातारा ॥ में० अ० ॥ ८ ॥ इति ॥ काव्यं ॥ देवासुरेंद्रनरनागरमर्चितेभ्य, पापः प्रणासकरभव्यमनोहरेभ्यः । घंटाध्वजादि परिवार विभूषितेभ्यः, नित्यंनमोसिद्धगिरींद्रजिनालयेभ्यः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीप

रमात्मने अनंतानंतज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीविम लाचलतीर्थाय चंदनं यजामहे स्वाहा ॥ इति चंदन पूजा ॥ ३ ॥

॥ अथ चोथी पुष्प पूजा ॥

॥ दूहा ॥ पूज चतुर्थी इण परें, कुसुम सुगंधसु जोय ॥ भव्य मनोरथ पूरवै, घर घर मंगल होय ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ जिनराज नाम तेरा ॥ हो महाराज नाम तेरा ॥ हो रा०॥ ए चाल ॥ विमल गिरिनाम तेरा, हो कनक गिरिनाम तेरा ॥ हो सेवो रे, उजल गिरि रसमें ॥ हो०उ०॥ मचकुंद कुंद जाणो, चंपो गुलाव आणो, पूजो जिनंद भाणो ॥ हो०उ० ॥१॥ विमला वसीजु राजे, जिनविंव वहोत छाजे, जोतां मिथ्यात भाजे ॥ हो०उ०॥२॥ मोती वसीजु हारो, मन कामना जुसारो, दिलमां है एहि धारो ॥ हो० उ० ॥३॥ वाला वसी जिणंदा, निरख्यांहि सुख्खकंदा, अदार चैत्य सोहंदा ॥ हो० उ० ॥ ४ ॥ पेमा वसीजु प्यारा, भेटो जिनंद सा रा, वंद्यांथी सुख्खकारा ॥ हो० उ० ॥ ५ ॥ हेमावसीजु वंदो, अ जितादि सुख्खकंदो, सेवो जिनंद चंदो ॥ हो० उ० ॥ ६ ॥ उजुं वसीजु राजे, नंदीश्वर भाव छाजे, सेवो थे सुख्ख काजे ॥ हो० उ० ॥ ७ ॥ साकर वसीजु भावे, भेट्यांसुं पाप जावे, देख्यांसुं सुख्ख थावे ॥ हो० उ० ॥ ८ ॥ छीपा वसीजु ध्यावो, वंछित सुख्ख पावो, मनमांहि भाव लावो ॥ हो० उ० ॥ ९ ॥ खरतर वसीजु सोहे, जिनराज मन्न मोहै, निरख्यांसुं सुख होवै ॥ हो० उ० ॥ १० ॥ इत्यादि भाव जाणो, गुरु ज्ञान मन्न आणो, संकादि चित्त नांणो ॥ हो० उ० ॥ ११ ॥ सुमतादि ध्याने ध्यावो, गुण नाथनाजु गावो, मन भाव एहि भावो ॥ हो० उ० ॥ १२ ॥ इति ॥ काव्यं ॥ देवासुरेंद्रनरनागरमर्चितेभ्यः, पापः प्रणासकरभव्यमनोहरेभ्यः । घंटाध्वजादिपरिवार विभूषितेभ्यः,

नित्यं नमो सिद्धगिरींद्रजिनालयेभ्यः ॥१॥ ॐ ह्रीँ श्री परमात्मने अनंतानंतज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीविमलाचलतीर्थाय पुष्पं यजामहे स्वाहा ॥ इति पुष्प पूजा ॥ ४ ॥

॥ अथ पांचमी धूप पूजा ॥

॥ दूहा ॥ धूप पूज ए पंचमी, करतां भवि सुखदाय ॥ धूप घटी जिम महमहे, तिम तिम पातिक जाय ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ जात्रा जिनाणुं करियै विमलगिर, जात्रा० ॥ ए चाल ॥ इण विध पूजन करिये, विमलगिर ॥ इ० ॥ कृष्णागरने मृगमद अंबर, गंध वटी अनुसरियै ॥ वि० इ० ॥ १ ॥ चीड सेल्हा रस तुरक भलेरो, इण विण धूपज करियै ॥ वि० इ० ॥ केसर चंदन मृगमद कुंकम, भाव भलै अनुसरियै ॥ वि० इ० २ ॥ उज्जल अमल अखंडित तंदुल, दीप अखंड ज धरिये ॥ वि० इ० ॥ पुष्प सुगंध गुलाबना लेइ, पुजो इण गिरवरियै ॥ वि० इ० ॥ ३ ॥ साधु साहमी भगत करीनै, आतम निरमल करियै ॥ वि० इ० ॥ पांचै पांडव इण गिरपूजो, नवनारद मुनिवरियै ॥ वि० इ० ॥ ४ ॥ गिरवर ऊपर पांचे ठामे, पूज करी अघ हरियै ॥ वि० इ० ॥ कलस अठोतरसो लेइने, न्हवण भली विध करियै ॥ वि० इ० ॥ ५ ॥ मूलनायक श्री आद जिनेसर, इन गिरपर समोसरियै ॥ वि० इ० ॥ भाव भगत सुं जिननी पूजा, करतां सहु सुख वरियै ॥ वि० इ० ॥ ६ ॥ लहि अवतार ए गिरनहि फरसे, तो किम भवजल तरियै ॥ वि० इ० ॥ पुंडर गिरनो ध्यान धरीने, पुन्य खजानो भरियै ॥ वि० इ० ॥ ७ ॥ ए गिरनी आसातन टाली, जात्र करी निसतरियै ॥ वि० इ० ॥ सगत छतां जो संघ लेइनैं, आवै इण गिरवरियै ॥ वि० इ० ॥ ८ ॥ द्रव्य भावसुं पूजन करिनै, पाप पंक अपहरियै ॥ वि० इ० ॥ सुमति कहे धन धन ए गिरवर, पूजौ भवि सुख करियै ॥ वि० इ० ॥ ९ ॥

इति ॥ काव्यं ॥ देवासुरेंद्रनरनागरमर्चितेभ्य, पापः प्रणासकरभ व्यमनोहरेभ्यः । घंटाध्वजादिपरिवार विभूषितेभ्यः, नित्यंनमो सिद्ध गिरिंद्र जिनालयेभ्यः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीपरमात्मने अनंतानंत ज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणायश्रीविमलाचलतीर्थाय धूपं यजामहे स्वाहा ॥ इति धूप पूजा ॥ ५ ॥

॥ अथ छठी दीप पूजा ॥

॥ दूहा ॥ छट्ठी पूजा दीपनी, करो भविक सुखकार ॥ विमल बोध पावो तुमें, ज्ञान दीप सुविचार ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ पास जिनंदा प्रभु मेरे मन वसिया ॥ पा० ॥ ए चाल ॥ आदि जिनंदा प्रभु सेवो सुखकारी ॥ आ० ॥ निरमल बोध विकासक दीपक, दिन२ जोत अधिक सुखकारी ॥ आ० ॥ १ ॥ अनुभव दीपक प्रगट भयो है, सकल चराचर भाव विचारी ॥ आ० ॥ केवल ज्ञानी प्रथम तीर्थंकर, समोवसरया भवियण हितकारी ॥ आ० ॥ २ ॥ फागण सुदि आठमने दिवसे, ऋषभदेव आया सुविचारी ॥ आ० ॥ भरथपुत्र चैत्री पुनम दिन, इण गिर आया भवि मनधारी ॥ आ० ॥ ३ ॥ नमि विनमी राजा विद्याधर, पुंडरगिर सेवै इकतारी ॥ आ० ॥ पोतरा प्रथम तीर्थंकर केरा, द्रावड ने वारखील्ल विचारी ॥ आ० ॥ ४ ॥ काती सुद पूनम दिन सीधा, दस कोडी मुनि साथ उदारी ॥ आ० ॥ पांचे पांडव इण गिर सीधा, नव नारद निज काज सुधारी ॥ आ० ॥ ५ ॥ संब प्रद्युन्न गया इहां मुगतै, आठ करम दल दूर निवारी ॥ आ० ॥ नेम विना तेवीस तीर्थंकर, समवसरया भवियण उपगारी ॥ आ० ॥ ६ ॥ ए गिरराजना गुण गण गातां, सफल हुवै आतम सुविचारी ॥ आ० ॥ ए गिरराजनी पूजा जगमें, भव जल पार उतारण हारी ॥ आ० ॥ ७ ॥ द्रव्य भावसुं पूजन करियै, कु

मति कुटलता दूर निवारी ॥ आ० ॥ कहै सुमति सेवो इकतारी, इ ण तीरथनी जाऊं बलिहारी ॥ आ० ॥ ८ ॥ इति ॥ काव्यं ॥ देवा सुरेंद्रनरनागसमर्चितेभ्यः, पापः प्रणासकर भव्यमनोहरेभ्यः घंटाध्व जादिपरिवारविभूषितेभ्यः, नित्यंनमो सिद्धगिरींद्रजिनालयेभ्यः ॥१ ॥ ॐ ह्रीं श्रीपरमात्मने अनंतानंतज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवा रणाय श्रीविमलाचलतीर्थाय दीपंयजामहे स्वाहा ॥ इति दीप पूजा॥६॥

॥ अथ सातमी अक्षत पूजा ॥

॥ दूहा ॥ उज्जल तंदुल लेयनै, पूजो दीन दयाल ॥ स्वस्तिक करतां विस्तरै, घरघर मंगल माल ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ तुम विन दीनानाथ दयानिध कोंन खबर ले मेरी रे॥ ए चाल ॥ गिरिवर भेटण भविजन आवे, मन वंछित फल पा वै रे ॥ उज्जल तंदुल थाल भरीने, वधावो गिरिराया रे॥ अष्टमंगल प्रभु आगल धरियै, निरमल सुद्ध सुहाया रे॥ गि०॥ २॥ ए गि र महिमा जिन मुख सुणके, चक्री मन हुलसावै रे ॥ भरथराय षट्खंडको नायक, संघ लेइ इहां आवै रे ॥ गि० ॥ २ ॥ सोनानो प्रासाद करावै, रयणनी मूरत ठावै रे॥ भाव भगतसुं पूज रचावै, प्रभु चरणे चित्त लावै रे ॥ गि० ॥ ३ ॥ भरत तणें अष्टम पट सोहे, दंड विरज महाराजा रे ॥ संघ लेई उद्धार करावै, संचे सुभ फल ताजा रे ॥ गि० ॥ ४ ॥ इसानेंद्र करायो तीजो, चोथो माहेंद्र करावै रे ॥ पांचमो उद्धार ब्रह्मइंद्रनो सुरनर मिलजस गावै रे ॥गि० ॥ ५ ॥ छठो उद्धार भवनपतीनो, सातमो सगरनो जाणो रे ॥ आठमो व्यंतर इंद्र करावे, भविजन मनमें आणो रे ॥ गि० ॥ ६ ॥ चंद्रजस राय उद्धार करावे, नवमो भवि सुखकंदा रे ॥ संतनाथ सुत दसमो भावै, उद्धार रचै आनंदा रे ॥ गि० ॥ ७ ॥ दसरथ राय सुतन गुण आगर, रामचंद भल भावै रे ॥ उद्धार इग्यारमो

एह करायो, बारमो पांडु करावे रे ॥ गि० ॥ ८ ॥ तेरमो उद्धार जावडसाहनो, चवदमो बाहड देहनो रे ॥ समरैसाह करायो भावे, पनरमो सहु सुख दैनो रे ॥ गि० ॥ ९ ॥ संवत सतेरैसै सित्यासै, वैशाख वदि सुभ वारो रे ॥ करमे डोसी करायो भावे, ए सोलम उद्धारी रे ॥ गि० १० ॥ तिण कारण ए तरिथ मोटो, सहु तीरथ सिर राजा रे ॥ कहै सुमति पूजो भल भावै, पावो ज्युं सुख पाजा रे ॥ ११ ॥ इति ॥ काव्यं ॥ देवासुरेंद्रनरनागर मर्चितेभ्यः, पापः प्रणासकरभव्यमनोहरेभ्यः; घंटाध्वजादि परिवार विभूषितेभ्यः नित्यं नमो सिद्धगिरींद्र जिनालयेभ्य. ॐ ह्रीं परमात्मने अनंतानंत ज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीविमलाचलतीर्थाय अक्षतं यजामहे स्वाहा ॥ इति अक्षत पूजा ॥ ७ ॥

॥ अथ आठमी नैवेद्य पूजा ॥

॥ दूहा ॥ मोदक मोतीचूरना, सींहकेसरीया सार ॥ इत्यादिक नैवद्य ले, पूज करो सुखकार ॥ १ ॥

॥ दाल ॥ सिद्धचक्र पद वंदो रे भविका ॥ ए चाल ॥ श्रीसिद्धाचल पूजो रे, भविका ॥ इण सम गिर नहीं दूजो रे, भविका रे ॥ श्री० ॥ मोदक मोतीचूरना लेइ, नेवेद्य पूजा करिये रे ॥ भ० सिहकेसरिया दालीया केइ, मोदक इण विध धरिये रे ॥ जा० ॥ श्री० ॥ १ ॥ ललित सरोवर पेखो भावे, वलि सत्तानी वाव रे ॥ भ० तिहां विसरामो भविजन लेवे, वडनै चोतरे आव रे ॥ भ० श्री० ॥ २ ॥ सेत्रुंजानी पाजे चढतां, आणंद अंग न मावे रे ॥ भ० दूरथकी सेत्रुंजी दीसे, सूंदर रूप सुहावे रे ॥ भ० श्री० ॥ ३ ॥ हिंगुलाजहडे चढके पूजो, कलिकुंड पास कुमार रे ॥ भ० वारीमांहि पेसी भविजन, भेटो आदि दीदार रे ॥ भ० श्री० ॥ ४ ॥ मरुदेवी टुंक मनोहर दीसै, गजपर बेठा सोहै रे ॥ भ० ॥ संतनाथ सोलम उप

गारी, भविजनना मन मोहे रे ॥ भ० श्री० ॥ ५ ॥ वंस पुरवाडे जगत वदीतो, सोमजीसाह मल्हार रे ॥ भ० ॥ रूपजीसाह करायो भावे, चोमुख मूल उद्धार रे ॥ भ० श्री० ॥ ६ ॥ नेमनाथ चवरी देखीने, देखो धरम दुवार रे ॥ भ० ॥ आदीसरना चरण पखाली, पूजो विविध प्रकार रे ॥ भ० श्री० ॥ ७ ॥ भमनीमांहे बिंब बिरा जै, कहतां नावै पार रे ॥ भ० ॥ पुंडरीक गणधर गुरु पूजो, शांति नाथ सुखकार रे ॥ भ० श्री० ॥ ८ ॥ चेलण तलाइ सिद्धसिलाने, सिधवड जूनो कहिये रे ॥ भ० ॥ पुंडर गिरनी भमतीमांहे, एह सहू सरदहिये रे ॥ भ० श्री० ॥ ९ ॥ उलकाझोल ने भाटव डुंगर, भेट्यां सहु सुख लहिये रे ॥ भ० श्री० ॥ १० ॥ घर बेठां जो भाव करीने, मन सुध भावना भावे रे ॥ भ० ॥ सुमति कहे ते धन धन कहिये, जात्रानो फल पावै रे ॥ भ० श्री० ॥ ११ ॥ इति ॥ काव्यं ॥ देवासुरेंद्रनरनागरमर्चितेभ्यः, पापः प्रणासकरभव्यमनोहरेभ्यः; घंटाध्व जादि परिवारविभूषितेभ्यः, नित्यंनमोसिद्धगिरींद्रजिनालयेभ्यः ॥१॥ ॐ ह्रीं श्रीपरमात्मने अनंतानंतज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणा य श्रीविमलाचलतीर्थाय नैवेद्यं यजामहेस्वाहा ॥ इति नैवेद्य पूजा ॥८॥

॥ अथ नवमी फल पूजा ॥

॥ दूहा ॥ निर्मल फल पूजा करो, उत्तम फल सुख काज ॥ भ विजन पूजो भावसुं, सरै सहु सुभ काज ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ रामत रमवा मैं गइथी, मोरी सहीयर के० ॥ ए चा ल ॥ आदिसर पूजा करो, एतो सिद्धगिरीनो रायो हे माय ॥ सद गुरुने परसादथी, एतो दरसण देवनो पायो हे माय ॥ आ० ॥१॥ आंबा दाडिम लेयनै, एतो फल पूजा इम कीजे हे माय ॥ श्रीफल पुंगी फल भला, एतो भेट करी फल लीजै हे माय ॥ आ० ॥ ॥२॥ कुगुरु कुदेव कुधरमनी, एतो सेवाथी चित लायो हे माय ॥ मिथ्या

मत राचे थके, एतो काल अनंत गमायो हे माय ॥ आ० ॥ ३ ॥ हिव सेवा प्रभु ताहरी, एतो चाहुं देव सवायो हे माय ॥ सिद्धा च ल गिरिरायनो, एतो मंडण आदि कहायो हे माय ॥ आ० ॥ ४ ॥ धन्न दिवस धन ते घडी, एतो धन मरुदेवी जायो हे माय ॥ पूरव निनाणु समोसरया, एतो आदीसर महारायो हे माय ॥ आ० ॥५॥ अष्टोत्तर सत नाम छै, एतो शास्त्र थकी ते जाणो हे माय ॥ ए स हु नाम जप्यां थकां, एतो प्रगटै परमकल्याणो हे माय ॥ आ० ॥ ६ ॥ सुकराजा इहां आयनै, एतो ध्यान धरे षटमासी हे माय ॥ चंद नृपत गिरि भेटतां, एतो पाम्यो सुखनी रासी हे माय ॥ गिरि वर दरसण देखतां, एतो मोहे सहु नर नारी हे माय ॥ आ० ॥८॥ धन धन ए गिरिरायना, एतो गुण गावो सुख दायो हे माय ॥ सु मति कहे जिनराजनी, एतो सेवाथी सुख पायो हे माय ॥ आ० ॥ ९ ॥ इति ॥ काव्यं ॥ देवासुरेंद्रनरनागरमर्चितेभ्य, पापः प्रणास करभव्यमनोहरेभ्यः, घंटाध्वजादिपरिवारविभूषितेभ्यः,नित्यंनमोसिद्ध गिरींद्रजिनालयेभ्यः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीपरमात्मने अनंतानंतज्ञानश क्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीविमलाचलतीथार्य फलंयजामहे स्वाहा ॥ इति फल पूजा ॥ ९ ॥

॥ अथ दशमी गुलाबजल पूजा ॥

॥ दूहा ॥ निर्मल जल कुसुमै करी, वासित सरस सुगंध ॥ पू जो जिनवर जगधणी, दूर करो दूख धंध ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ सिद्धचक्र पद वंदो रे, भविका ॥ ए चाल ॥ श्री विमलाचल पूजो रे भविका ॥ तीरथ एहवो न दूजो रे, भविका ॥ श्री० ॥ सुरभि गंधोदक लेई भावे, छिडको जिनवर अंग रे ॥ भ० ॥ कुसुमे वासित उत्तम जलनी, वृष्टि करो मनरंग रे ॥ भ० श्री० १ ॥ आदीसरना चरण पखाली, पूजो उठ परभात रे

॥ भ० ॥ गुणनो लख नवकार गुणी जै, दोय अठम छठ सात रे ॥ भ० श्री० ॥ २ ॥ रथ जात्रा परदक्षणा दीजै, पूजा विविध प्रकार रे ॥ भ० ॥ धूप दीप फल नेवद्य मुंकी, नमीयै नाम हजार रे ॥ भ० श्री० ॥ ३ ॥ आठ अधिक शत टुंक भलेरी, मोटी तिहां इकवीस रे ॥ भ० ॥ सेत्रुंजय गिर ढुंक ए पहेलुं, नाम नमो निसदीस रे ॥ भ० श्री० ॥ ४ ॥ सहस अधिक अठ मुनिवर साथे, बाहुवली शिव ठाम रे ॥ भ० ॥ तिण कारण ए गिरवर कहियै, त्रीजो मरु देवी नाम रे ॥ भ० श्री० ॥ ५ ॥ पुंडरीक गिरि नाम ए चोथुं, पांच कोड मुनि सिद्ध रे ॥ भ० ॥ पांचमी टूंक रेवत गिर कहियै, तिण ए नाम प्रसिद्ध रे ॥ भ० श्री० ॥ ६ ॥ विमलाचल सिद्ध राज भगीरथ, प्रणमी जै सिद्ध क्षेत्र रे ॥ भ ० ॥ छहरी पाली इण गिर भेटो, करिये जनम पवित्र रे ॥ भ० श्री० ॥ ७ ॥ पूजा करी प्रभुना गुण गावो, साधो काम अनेक रे ॥ भ० ॥ पुंडरगिरना गुण गण गातां, निरमल आत्मविवेक रे ॥ भ० श्री० ॥ ८ ॥ देवकी नंदन पूजो भावै, थूलभद्र मुनिराय रे ॥ भ० ॥ सुमति मंडण जिनराज पसायै, दिन दिन आनंद थाय रे ॥ भ० श्री० ॥९॥ इति ॥ काव्यं ॥ देवासुरेंद्रनरनागरमर्चितेभ्यः पापः प्रणासकर भव्य मनोहरेभ्यः; घंटाध्वजादिपरिवारविभूषितेभ्यः, नित्यंनमो सिद्धगिरींद्रजिनालयेभ्यः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीपरमात्मनेअनंनानं तज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीविमलाचलतीर्थाय सुंगधोदकं यजामहे स्वाहा ॥ इति गुलाब जल पूजा ॥ १० ॥

॥ अथ इग्यारमी वस्त्रयुगल पूजा ॥

॥ दूहा ॥ प्रभु पूजो इग्यारमी, क्षोम युगल लेई सार ॥ निरमल गुण धारी करी, पूजो जग भरतार ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ राग घाटो ॥ मेरो मन वस कर लीनो, जिनवर प्र

भू पास ॥ ए चाल ॥ गिरवर मंडण आद, मुझ मन थासुं लागो ॥मु०॥ विमलाचल तीरथ राजे, तीन भुवन आल्हाद ॥ मु० १ ॥सूरत मोहनी लागे, जागे प्रीत अनाद ॥ मु० ॥ सुरनर वंदन आवै, पावै प्रभु पर साद ॥ मु० ॥ २ ॥ देस देसका जात्री आवे, पावे हरष अपार ॥ मु० ॥ मरु देवि नंदन वंदो, गावो गुण गण सार ॥मु०॥३॥ हेमनि चोरी कीनी, ए आलोयण तास ॥ मु० ॥ चढ चैत्रि पूनम भावै, करै इक उप वास ॥ मु० ॥ ४ ॥ वस्त्रनी चोरी रे जेणे, किनी भोलै भाव ॥ मु० ॥ वर सात आंबल करीयै, भवियण सुभ मन भाव ॥ मु० ॥५ ॥ रतननी चोरी कीनी, ते जन सुध इम होय ॥ मु० ॥ गिरपर तप स्या कीजे, आतम निरमल होय ॥ मु० ॥ ६ ॥ पितलादि चोरी कीनी, ते सुद्ध थाये केम ॥ मु० ॥ पुरमढ सात जु करीयै, धरीयै मनमै प्रेम ॥ मु० ॥ ७ ॥ मोतीनी चोरी जु कीनी, आंबल कर भवि तीन ॥ मु० ॥ धानादि चोरी कीनी, दै ते वस्तु प्रवीण ॥मु० ॥ ८ ॥ दैवादिधन जो वंछे, ते सुध थायै एम ॥ मु० ॥ अधक वि त्त जो खरचे, मुनि पोषै बहु प्रेम ॥मु० ॥ ९ ॥ चौपद चोरी कीनी, दै ते वस्तु दान ॥ मु० ॥ सरधासुं तपस्या कीजै, दीजै मुनि सनमा न ॥ मु० ॥ १० ॥ पुस्तक पारका देखी, लिखे जो आपणो नाम ॥ मु० ॥ षट्मासी तपस्या कीजे, सामायक तिण ठाम ॥ मु० ॥ ११ ॥ कन्या परिव्राजका जाणो, सधव अधव गुरु नार ॥ मु० ॥ तिन संग व्रत जो भांजे, छ मासी तप सार ॥ मु० ॥ १२ ॥ गो स्त्री बालक ऋषनी, आसातन जे कीन ॥ मु० ॥ वस्त्र पात्र मुनि ने दीजे, भाव धरी लय लीन ॥ मु० ॥ १३ ॥ श्रीजिनपूजन कीजै, क्षोम जुगल अति चंग ॥ मु० ॥ इण विध पूज रचावो, सुम ति कहै मन रंग ॥ मु० ॥ १४ ॥ इति ॥ काव्यं ॥ देवासुरेंद्रनरना गरमर्चितेभ्यः, पापप्रणासकरभव्यमनोहरेभ्यः, घंटाध्वजादिपरिवार

विभूषितेभ्यः नित्यंनमोसिद्धगिरींद्रजिनालयेभ्यः ॥ १० ॥ ॐ ह्रूँ ह्रीं परमात्मने अनंतानंतज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनि० श्रीजिनेंद्रेभ्यः वस्त्रं यजामहे स्वाहा ॥ ११ ॥

॥ अथ कलश ॥

॥ राग धन्यासिरी ॥ तेजतरण मुख राजे ॥ या चाल ॥ प्रभुजी की पूज रची सुख काजे, हां ओ सुख काजे ॥ श्रीसिद्धाचल गिरवर ऊपर, मंडण आदि विराजै, नाभ नृपति मरुदेविके नंदन, दरसण सुं दुख भाजै ॥ हां० प्र० ॥ १ ॥ वीकानेर नगर अति सुंदर, मरु धर देस विराजै, श्रीजिनसौभाग्य सूरि पटोधर, सकल गुणै करी गाजै ॥ हां० प्र० ॥ २ ॥ श्रीजिनहंस सूरि खरतर पति, गुण गिरवा गुरु राजै ॥ प्रीतसागर गणि सिष्य सुवाचक, अमृत धर्म सु छाजै ॥ हां० प्र० ॥ ३ ॥ तसु सेवक पाठक पद सोहै, क्षमा अधिक गणिराजै ॥ तसु चरणांबुज सेवक अहनिस, धर्म विसाल विराजै ॥ हां० प्र० ॥ ४ ॥ सुमति मंडण ए गिरनी पूजा, रचीय संघ सुख काजै ॥ कुशल निधान सुनि परवरकी, प्रेरणयासु समाजै ॥ हां० प्र० ॥ ५ ॥ चूंप धरी चोखे चित चाहै, लिखी सकल सुभ काजै ॥ संबत सय उगणीस तीसमें, पूज रची हित काजै ॥ हां० प्र० ॥ ६ ॥ जेठ सुदी तेरस रविवारै, सुणतां सहु दुख भाजै ॥ भाव धरी गिरना गुण गाया, दिन दिन अधिक दिवाजै ॥ हां० प्र० ॥ ७ ॥ इति श्री सिद्धगिरी पूजा संपूर्णम् ॥

॥ अथ सुगणचंद्रोपाध्याय कृत ॥
॥ आवुजीकी पूजा ॥

॥ तत्र ॥

॥ प्रथम जळ पूजा ॥

॥ दूहा ॥ श्रीजिनवर आराधिये, धरिये हियडे ध्यान ॥ ऋषभ जिणंद दिणंद सम, दिन दिन चढते वांन ॥ १ ॥ आबू गिरिपूजन रचुं, महियल मोटो ठाम ॥ देस देसका संघवी, आवी करे प्रणाम ॥ २ ॥ आबू अचलगढ दीपतो, महियल जाण सुमेर ॥ देवलवाडो अति दीपतो, महिमा थइ चिहुं फेर ॥ ३ ॥ विमलसाह मंत्री थयो, मोटो पुन्य पसाय ॥ पातसाह वारे भणी, वस करिया सुख दाय ॥ ४ ॥ तिण ए तीरथ थापियो, आबू गिरि सिरदार ॥ चैत्य कराया भावसुं, खरची द्रव्य अपार ॥ ५ ॥ सुद्धोदक लेइ करी, पूजो आद जिणंद ॥ स्नात्र करी जिनराजनी, पावो परमानंद ॥ ६ ॥

॥ ढाल ॥ राग० ॥ इक सुण लै नाथ अरज मेरी ॥ इ० ॥ ए चाल ॥ बलिहारी आबू गिरवरकी, ब० ॥ आबू गिरपर अदभुत सोहै, मूरत आद जिनेसरकी ॥ ब० ॥ आसपास बहु झाडी झंगी, मांहि गुफा जोगीसरकी ॥ ब० ॥ १ ॥ देस देसके जात्री आवै, पूज रचे परमेसरकी ॥ ब० ॥ विमलै मंत्री वस कर लीनी, पातसाही बारे घरकी ॥ ब० ॥ २ ॥ तिण ए बिंब भराया भावै, महिमा आदि जिनेसरकी ॥ ब० ॥ आठसे बहुतर जिनवर छाजे, नदियां नीर सजल भरकी ॥ ब० ॥ ३ ॥ कोरणी खूब बणी अति सुंदर, दिल भर दरसण सुसकरकी ॥ ब० ॥ देरांणी जेठाणीरा आला, कोरणी करी हद बेसरकी ॥ ब० ॥ ४ ॥ अंगी चंगी अजब बणी है, सोवन वरण रतनवरकी ॥ ब० ॥ सुमति कहै ए तीरथ उत्तम, इनकुं ओपम

सुरगिरकी । ब० ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं श्री आबूगिरेंद्राय श्री आदीश्वराय तीर्थ शिरोमणाय जलादि अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति प्रथम जल पूजा ॥ १ ॥

॥ अथ बीजी चंदन पूजा ॥

॥ दूहा ॥ बावन चंदन चंदसें, पूजो श्री गिरिराज ॥ पूजत अनुभव गुण लहै, तारण तरण जिहाज ॥ १ ॥ अचल गढै जिनराजनो, अति उत्तंग प्रसाद ॥ देख भविक हरखित हुवै, पावै परम आल्हाद ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ राग सोरठ ॥ कुंद किरण ससि उजलो रे देवा ॥ ए चाल ॥ आबू तीरथ पूजियै रे, वाल्हा ॥ तीरथ महिमा वंतो रे, आछौ ॥ जिनवर सहू भवि सेवियै रे, वा० ॥ आणी भाव अनंतो रे आछौ ॥ आ० ॥ १ वस्तपाल तेजपालजी रे, वा० लीनो लिखमी लाहोरे आछौ ॥ मुद्रा बहु खरची करी रे,वा० जस लीनो जगमांहे रे आछौ ॥ आ० ॥ २ ॥ कोरणी झीणी सुंदरु रे, वा० ॥ कीधी धर मन रंगै रे आछौ ॥ सुरगुरु पिण नहि कही सकै रे, वा० महिमा अधिक सुरंगै रे आछौ ॥ आ० ॥ ३ ॥ बारै कोड ऊपर सही रे, वा० ॥ लागा तेपन लाखो रे आछौ ॥ इतनो धन खरच्यो सही रे, वा० ॥ श्रीसंघ कैरी साखो रे आछौ ॥ आ० ॥ ४ ॥ मूलनायक नेमीसरू रे, वा० ॥ ब्रह्मचारी सिरदारो रे आछौ ॥ च्यारसै अडसठ सुंदरू रे, वा० ॥ जिनवर बिंब उदारो रे आछौ ॥ आ० ॥ ५ ॥ सुमति सदा इम वीनवे रे, वा० ॥ तीरथनी बलिहारी रे आछौ ॥ मन वंछित सगला फलै रे, वा० ॥ पूजत गिर सिरदारी रे आछौ ॥ आ० ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं आबूगिरेंद्रा० श्रीआदि० तीर्थशि० जलादिअष्टद्रव्यं० ॥ इति चंदन पूजा ॥ २ ॥

॥ अथ तीजी पुष्प पूजा ॥

॥ दूहा ॥ ब्रह्मचारी जोगीसरु, जगपति नेम जिणंद ॥ बावीसम जिन पूजतां, नित प्रति होत आणंद ॥१॥ चंपक केतकि केवडो, व उलसिरी मचकुंद ॥ मोगर मालति कुसमसें, पूजो भवि सुखकंद ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ राग ॥ सेत्रुंजानो वासी प्यारो लागे, म्हारा राजिंदा ॥ए चाल ॥ आबू तीरथ भेटो, मोरा राजिदा ॥ भे० आ०॥ इण स म तीरथ ओर न कोइ, मिथ्यातम सब मेटौ ॥ मो०॥ अमीझरो मा हाराज कहावै, देख्यां अति सुख पावै ॥ मो० ॥ आ० ॥ १ ॥ मन सुद्ध जात्र करो भवि प्राणी, सुर नर मुनि गुण गावै ॥ मो० सुंदर सूरत मूरत सोहे, देख्यां प्रीत लगावे ॥ मो० आ० ॥ २ ॥ अवर अ नेक जिन बिंब कहावे, दरस करत दुख जावै ॥ मो०॥ ए गिरि सहु सिरदार कहावै, जोगीसर बहु ध्यावै ॥ मो० ॥ आ० ॥ ३ ॥ दूर थ की ए गिरिवर निरखी, मोतियन थाल भरावे ॥ मो० ॥ दानमान सनमान करीनै, तीरथ महिमा गावै ॥ मो० आ० ॥ ४ ॥ विधसेती गिरिवर नित पूजै, लाभ अनंत उपावे ॥ मो० ॥ संघपती संघ ले कै जावे, धन२ तेह कहावै ॥ मो० आ० ॥ ५ ॥ पुष्पमाल गुंथी भवि भावै, जिनवर पूज रचावे ॥ मो० ॥ सुमति कहै गिरिराजकुं ध्यावै, वंछित सफल लहावै ॥ मो० आ० ॥ ६ ॥ ॐ ह्रूं । आबुगि रिंद्राय तीर्थसीरो म० श्रीआदीश्वराय पुष्पं यजामहे स्वाहा ॥ इति पुष्प पूजा ॥ ३ ॥

॥ अथ चोथी धूप पूजा ॥

॥ दूहा ॥ धूप दशांग लेइ करी, पूजो तीरथ राय ॥ सुरभि सुगं धी महमहे, इम भाखे जिनराय ॥ १ ॥ विमल अस्व वाहन धरी, सेव करे जिनराज ॥ अंबादेवी पूजतां, सफल करै सब काज ॥२॥

॥ ढाल ॥ राग ॥ में निरख्या गुरु माहाराज, छतीया ह० ॥ ए

चाल ॥ दिलमें हरख धरी, भवि पूजो गिरिवर सार ॥ दि० ॥ टेर ॥ धूप दशांग लेइ करी रे, पूजो जग भरतार ॥ बोध बीज निरमल करो रे, सफल करो अवतार ॥ दि० भ० ॥ १ ॥ संघ करी संघवी घणा रे, भेटै श्रीगिरि सार ॥ अष्ट द्रव्य लेइ करी रे, पूजै जिन इकतार ॥ दि० भ० ॥ २ ॥ अचलगढै जिनराजना रे, मोहन मंदिर च्यार ॥ विमलैसाह कराविया रे, धन धन तसु अवतार ॥ दि० भ० ॥ ३ ॥ सुंदर मूरत गुण भरी रे, चौमुख प्रतिमा च्यार ॥ साजन म्हारा थे सुणो रे, भाखुं गिरि गुणधार ॥ दि० भ० ॥ ४ ॥ चवदैसै चौमालनी रे, मूरत गुण भंडार ॥ हेममई जिनराजनी रे, सोभै अधिक दीदार ॥ दि० भ० ॥ ५ ॥ धन जेहनी माता पिता रे, धन जेहनो कुल सार ॥ द्रव्य प्रबल खरची करी रे, लीनो लाभ अपार ॥ दि० भ० ॥ ६ ॥ इणपर ए गिरिरायनी रे, महिमा अधिक अपार ॥ सुमति सदा करजोडने रे, प्रणमें वारंवार ॥ दि० भ० ॥ ७॥ ॐ ह्रूँ आबूगिरींद्राय तीर्थशिरोमणाय श्रीआदीश्वराय धूपं यजामहे स्वाहा ॥ इति धूप पूजा ॥ ४ ॥

॥ अथ पांचमी दीपक पूजा ॥

॥ दूहा ॥ दीपक पूजा पांचमी, करो भविक गुणवंत ॥ दीपक सम गुण पामी यै, केवल ज्ञान अनंत ॥ १ ॥ तीरथनी महिमा करो, भाव धरी मतिवंत ॥ द्रव्य भाव बिहुं भेदसुं, पूजो भवि विकसंत ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ तुम बिन दीनानाथ दयानिधि, कौन खबर लै मेरी रे ॥ ए चाल ॥ आबू गिरिपर आद जिनेसर, दरसणकी बलिहारी रे ॥ आ० ॥ नगर सिरोही नाम कहावै, जिनवर बिंब जुहारी रे ॥ तिहांथी द्वादश गाऊ निरख्यौ, हणादरो सुखकारी रे ॥ आ० २ ॥ आबू गिरिनी पाजै चढतां, पाप सकल परि

हारी रे ॥ ए गिर देखी सुरनर मोहे, महिमा अधिक उदारी रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ आसपास बहु झाडी सोहे, विच मंदिर मनुहारी रे ॥ नाभरायके नंदन कहियै, मरुदेवी मात मल्हारी रे ॥ आ० ४॥ जुगला धर्म निवारण स्वामी, त्रिभुवन जन हितकारी रे ॥ नगर अजोध्या आप विराजो, आदनाथ उपगारी रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ आदीसर अलवेसर कहियै, सबको तुं अवतारी रे ॥ सब जोगीसर तुमकुं ध्यावै, अदभुत कीरत थारी रे ॥ आ० ॥ ६ ॥ तुं भय भंजन तुंहि निरंजन, लोकालोक विहारी रे ॥ जोगीसर जिनराज जगत गुरु, नेमीसर ब्रह्मचारी रे ॥ आ० ॥ ७ ॥ तारण तरण दयानिध स्वामी, सेवक जन साधारी रे ॥ सुमति कहै भवि निरमल भावै, सेवो प्रभु सुखकारी रे ॥ आ० ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं आबू गिरींद्राय तीर्थशिरोमणाय श्रीआदीश्वराय दीपं यजामहे स्वाहा ॥ इति दीपक पूजा ॥ ५ ॥

॥ अथ छठी अक्षत पूजा ॥

॥ दूहा ॥ अक्षत पूजा साचवै, भविजन मंगल काज ॥ तीन पुंज प्रभु आगलै, करो भविक सुख साज ॥ १ ॥ मंगल आठ करो सही, प्रभु आगे धर प्रेम ॥ अडसिध नवनिध संपजै, सुजस हुवै नित तेम ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ तुम तो भले विराजो जी, सांवलिया माहाराज, ए चाल सिखरपर भले विराजो जी, आबूके सिरदार, सिखर पर भले विराजो जी ॥ तु० ॥ नाभरायके नंदन कहियै, तीन भवन विसरामी, केसर चंदन मृगमद घोली, पूजो अंतरजामी ॥ तु० ॥ १ ॥ विखम पहाडां विचमें राजै, साहिब तुं सिरनामी ॥ आदीसर जोगीसर पूजी, वंछित सगला पामी ॥ तु० ॥ २ ॥ द्रव्य भावसें पूज रचावो, मनमें आणंद पावो ॥ भर मुगताफल थाल वधावो, तीरथ महि

मा गावौ ॥ तु०॥३॥ आबू गिरिको ध्यान धरावो, तपस्यासें फल पावो ॥ घर सारू वलि दान दिरावो, संघ भगत करवावो ॥ तु०॥ ४ ॥ अचलगढ़ जिन दरसण करवा, संघ सकल मिल आवै ॥ आदीसर नेमीसर पूजी, मन वंछित सब पावै ॥ तुं० ॥ ५ ॥ तीरथ महिमा भविजन करियै, दिलमें भावज धरियै ॥ सुमति कहे तन मन कर उज्जल, पून्य खजानो भरीयें ॥ तु० ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीँ आबूगिरींद्राय तीर्थशिरोमणाय श्रीआदीश्वराय अक्षतं यजामहे स्वाहा ॥ इति अक्षत पूजा ॥ ६ ॥

॥ अथ सातमी नैवेद्य पूजा ॥

॥ दूहा ॥ मोदक मोती चूरना, ओर सुगंध रसाल ॥ पूजो तीरथरायने, भाव करी गुण माल ॥ १ ॥ नैवेद्य पूजा सातमी, करो भविक धर प्रेम ॥ तरिथनी महिमा करो, गुण गावो धर नेम ॥२॥

॥ ढाल ॥ श्रीचंद्राप्रभु जिनवर साहिब, सुणियै अरज हमारी ॥ मैं वा० ॥ ए चाल ॥ श्रीआदीसर जिनवर साहिब, तुम पर जाउं बलिहारा ॥ मैं वारी जाउं तु० ॥ आबु गिरि पर आप विराजो, साहिब पर उपगारा ॥ मैं० श्री० ॥ १ ॥ तुंहि जिनेसर तुं परमेसर, अंतर प्राण आधारा ॥ मैं० ॥ जोगीसर तेरी लय जाणै, परमातम अविकारा ॥ मै० श्री० ॥ २ ॥ मनमोहन तुं नाथ निरंजन, जग जीवन हितकारा ॥ मै० ॥ सुरनर किन्नर सेव करतहै, जय२ जग भरतारा ॥ मै० श्री० ॥३॥ तेरी महिमा अधिक विराजै, सब जीवन सुखकारा ॥ मै० ॥ अनंत ज्ञान दरसणको स्वामी, मनमोहन सब प्यारा ॥ मै० श्री० ॥ ४ ॥ लोक उचित व्यवहार प्रवर्त्यों, बोध बीज दातारा ॥ मै० तुमकुं जो तन मनसै ध्यावै, पावै वंछित सारा ॥ मै० श्री० ॥ ५ ॥ भविक लोककौ तुंम उपगारी, मिथ्यातम घन वारा ॥ मै० सुमति कहै गिर पूज रचावो, ए गिरि

सव सिरदारा ॥ मै० श्री० ॥६॥ ॐ ह्रीं आबूगिरींद्राय तीर्थशिरोम णाय श्रीआदीश्वराय नैवेद्यंयजामहे स्वाहा इति नैवेद्य पूजा ॥७॥

॥ अथ आठमी ध्वजा, फल, अष्टमंगल पूजा ॥

॥ दूहा ॥ प्रभु पूजा ए आठमी, मंगल आठ कराय ॥ पंच वर ण ध्वज मोहनी, पूज करो सुखदाय ॥ १ ॥ आंबा दाडम आददे, विविध भात मनरंग ॥ प्रभु आगल ढोवो सही, भाव धरी उछरंग ॥ २ ॥ सव सुंदर आवो सही, सज सोलै सिणगार, रतन जडत कंचुक धरी, पेहरी नवसर हार ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥ पनरम पद गुण गाना हो, ॥ भ० प० ॥ ए चाल॥ जिनगुण मंगल गाना हो भवि, जि० ॥ फल पूजा ए गिरकी कर के, जगमें सुजस वधाना हो ॥ भ० ॥ मंगल आठ रचौ प्रभु आ गल, चंदमुखी मन भाना हो ॥ भ० जि० ॥ १ ॥ पंच वरणकी ध्वजवर कहियै, हित चितसै करवाना हो ॥ भ० ॥ सुंदर नारी स व सिणगारी, प्रेम धरी सव आना हो ॥ भ० जि० ॥२॥ कंचू क सिआ हरख उलसिआ, आभूपण पहराना हो ॥ भ० ॥ रतन ज डत सव सुंदर चूडी, हाथे वाहु सोभाना हो ॥भ० जि०३॥ थेई थेई तान करे प्रभु आगल, मधुर स्वरै गुण गाना हो ॥ भ० ॥ इंद्राणी मिल मंगल गावै, तिम तुमे भगत कराना हो ॥ भ० जि० ॥ ४ ॥ इत्यादिक गुण जिनके गावत, वोधि वीज उपजाना हो ॥ भ० ॥ सुमति कहै भवि पूजन करियै, मन वंछित फल दाना हो ॥ भ० जि० ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं आबू गिरींद्राय तीर्थशिरोमणाय श्रीआदी श्वराय फलं ध्वजं अष्टमंगलं यजामहे स्वाहा ॥ इति ध्वजा, फल अने अष्ट मंगल पूजा ॥ ८ ॥

॥ अथ नवमी वस्त्रयुगल पूजा ॥

॥ दूहा ॥ वस्त्रयुगल लेइ करी, पूजो दीनदयाल ॥ सुजस सुगं

धी विसतरे, बोध बीज गुण माल ॥ १ ॥ रथयात्रा प्रभुनी करो, महिमा भगत कराय ॥ लाभ अनंतो ऊपजै, समकित निरमल थाय ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ दरसणके लोभी नैना हो दर० ॥ ए चाल ॥ हो पूजनके लोभी सैणा, लोभी० हो पू० ॥ पूजनकुं जिया नित२ चाहै, कुगुरु वचन तज देना ॥ हो पु० ॥ १ ॥ या पूजा समकितकी करणी, सुगुरु वचन सुण लेना ॥ हो० ॥ गिरिवर गढ गिरनार विराजै, नेमकुमर सुख दैना ॥ हो० ॥ २ ॥ वस्त्र युगलकी पूजन करियै, तन मन उज्जल वैना ॥ हो ॥ मिथ्या तम सब दूर निवारी, सुमति रमण संग रैहना ॥ हो० ॥ ३ ॥ सरधा कैसर रंग घोलकैं, जिन आतम रंग लैना ॥ हो० ॥ विमल गिरी अष्टापद पूजो, आदीसर सुख दैना ॥ हो० ॥ ४ ॥ सिखर समेत वडो जगमांहे, वीस प्रभु हित दैना ॥ हो० ॥ आबू गिरकी महिमा अदभुत, मानो हमारा कैना ॥ हो० ॥ ५ ॥ रथजात्रा जिनवरकी करकै, पाप पडल हर लेना ॥ हो० ॥ कुगुरु कुमतिको संग छोडकै, जिन गुणमैं दिल दैना ॥ हो० ॥ ६ ॥ आदीसर अलवेसर कहीयै, जग तारक जगसैना ॥ हो० ॥ सुमति सदा प्रभुकै गुण गावत. बोध बीज मुझ दैना ॥ हो० ॥ ७ ॥ ॐ ह्रूँ आबूगिरींद्राय तीर्थशिरोमणाय श्रीआदीश्वराय वस्त्रं यजामहे स्वाहा ॥ इति वस्त्रयुगल पूजा ॥ ९ ॥

॥ अथ दसमी गुलाबजल पूजा ॥

॥ दूहा ॥ समकित निरमल कारणे, सुरभी सुगंधी लेह, छिरको श्री गिरिराजकुं, भाव धरी गुण गेह ॥ १ ॥ गिरिवर भावै भेटियै, दीजै वंछित दान ॥ गीत गान भल गाइयै, ज्युं पावो बहुमान ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ थारी गइरे अनादि नींद, जरा ढुंक जोवो तो सही

॥ जोवो० ॥ ए चाल ॥ तुम करो रे सुमतिकौ संग, रंगीला सेवो तो सही, सेवो तो सही ॥ म्हारा चेतन, सेवो तो सही॥ सेवो० म्हा० तु०॥ मुनिवरकी करणी हितवरणी, लेवो तो सही ॥ मिथ्या तम करणी दूर हियामैं, देखो तो सही॥ दे० म्हा० तु० ॥ १ ॥ आ तम कर निज गुण धरणी. देवो तो सही ॥ तुं कह्यो रे हमारो मान सुज्ञानी, वे वो तो सही ॥ वे० म्हा० तु० ॥ २ ॥ समकित सुध करणी भव हरणी, लेवो तो सही ॥ द्रौपदि जिम जिनराज भगतकर, सेवो तो सही ॥ म्हा० तु० ॥ ३ ॥ राग कतरणी जग जस भरणी, जोवो तो सही ॥ अकलंकित गुण होय भरम सब, धोवो तो सही ॥ धो० म्हा० तु० ॥ ४ ॥ सब मन हरणी गुणमणि धरणी, पावो तो सही ॥ कूड कपट कर दूर हियामै, लावो तो सही ॥ ला० म्हा० तु० ॥ ५ ॥ आबू गिरिनी पूजन करणी, ध्यावो तो सही ॥ तनमन प्रीत लगाय जिणंद गुण, गावो तो सही ॥ गा० म्हा० तु० ॥ ६ ॥ अनुपम सुख करणी अघ हरणी, भावो तो सही ॥ तुम करो रे सुगंधी पूज, भविक सुख पावो तो सही पा० म्हा० तु० ॥ ७ ॥ इम गुण वरणी पूजन करणी, गावो तो सही॥ सुमति रंगीला सैण हियामै, लावो तो सही ॥ ला० म्हा० तु० ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीँ आबुगिरीद्राय तीर्थसिरो० श्रीआदीश्वराय सुगंधिजलं ढोकयामिः॥॥ इति गुलाबजल पूजा १०

॥ अथ इग्यारमी वाजित्र पूजा ॥

॥ दूहा ॥ नंदीघोप वजावतां, थाये लाभ अनंत ॥ विविध प्रकारैं पूजतां, बोध बीज विकसंत ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ चाल अंगरेजी वाजेकी ॥ पूज पूज जिनराज, काज सार तुं ॥ का० ॥ ए चाल ॥ सार सार जिनराज, तार तार तुं ॥ ता० भलां हे ता० ॥ जग जस धार सार, जयकार तुं ॥ सरणाइ

मृदंग चंग, सार सार तुं ॥ सा० भ० सा० ॥ २ ॥ तुंहि है जिनं द चंद, आदकार तुं ॥ जगत उधार सार, अविकार तुं ॥ अ० भ० सा० ॥ ३ ॥ समकित धार सार, सुखकार तुं ॥ गुणकौ निधान सार, भरतार तुं ॥ भ० भ० सा० ॥ ४ ॥ सुरनर देव सार, किर तार तुं ॥ आबूकै जिनंद चंद, मुनि सार तुं ॥ मु० भ० सा० ॥५॥ परम आधार सार, जिन तार तुं ॥ सुमति विचार धार, सुख्खकार तुं ॥ सु० भ० सा० ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं आबू गिरींद्राय तीर्थसिरोम णाय आदीश्वराय वाजित्र गुण वरणन पूजा ॥ १२ ॥

॥ अथ बारमी नृत्य पूजा ॥

॥ दूहा ॥ सुर सुंदर हरखै करी, सज सोलै सिणगार, ताल मृ दंग हि लैयनै, भगत करे बहु सार ॥ १ ॥ भाव धरी प्रभु आगले, अष्टापद गिरि सार ॥ रावणने मंदोदरी, नृत्य करे गुण धार ॥२॥

॥ ढाल ॥ जिन गुण गावत सुर सुंदरी रे ॥ ए चाल ॥ भगत करे मिल सुर सुंदरी रे ॥ भ० ॥ सुर सुंदरी रे देवा, सु० भ० हीर चीर पाटंबर पहरी, रमझम घुघर नाद करी२ ॥ भ० सु० ॥ १ ॥ चंद वदन मनमोहनगहरी, मृग नैनी श्रृंगार धरी रे ॥ भ० बांह बाजू बंध कंचन चूडी, वैसर मोती लाल जरी रे ॥ भ० सु० ॥ २ ॥ चंपक वरणी मन वसकरणी, प्रभु आगे गुण गावै खरी रे ॥ भ० सु० ॥ ३ ॥ जिन गुण गावत हरख वधावत, थेई थेई नाचत भा व धरी रे ॥ भ० ॥ असरण सरण तुंहिं जग दीपक, तुंही निरंजन सुखकरी रे ॥ भ० सु० ॥ ४ ॥ भविजन ध्यावत हरख उपावत, गा वत गुण सुभ राग करी रे ॥ भ० ॥ गजगत गामनी सब मिल भामनी, ठम ठम नाचत सुर महरी रे ॥ भ० सु० ॥ ५ ॥ अष्टाप द गिर रावण राजा, मंदोदरी जिम भगत करी रे ॥ भ०॥ सुम ति सदा जिनके गुण गावत, लुल२ जिनजीके पाय परी रे ॥ भ०

सु० ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं आबूगिरींद्राय तीर्थशिरोमणाय आदीश्वराय गीत गुण वर्णन पूजा ॥ १२ ॥

॥ अथ कलस ॥

॥ राग रेखता ॥ जिनंद जस आज मैं गायो ॥ ए चाल ॥ गिरींद जस आज मैं गायो, भेटतां रख अति पायो ॥ गि० ॥ आबू गिरींद सुख दायो, सघन घन रुंखसैं छायो ॥ खरा जिनचंद सूरिराजा, तपै जग भाण ज्युं ताजा ॥ गि० ॥ १ ॥ क्षमाकल्याणके पाजा, विविध गुण ज्ञान के भाजा ॥ धर्म विशाल तसु नंदा, कहै युं सुमति सुखकंदा ॥ गि० ॥ २ ॥ संवत उगणीस चालीसै, प्रेम धर अधिक सुजगीसै ॥ भजो तुम देव जगदीसै, फलै सब आस निस दीसै ॥ गि० ॥ ३ ॥ देवांके देव मन भाया, पूजतां संपदा पाया ॥ विकांणै सहरमैं राजै, जगत जस ताहरो गाजै ॥ गि० ॥ ४ ॥ आद जिन पूज सुख काजै, नमत प्रभु पाप सहु भाजै ॥ कुशल मुनि भावसैं ध्यावै, सकल जन प्रेमसें गावै गि० ॥ ५ ॥ इति श्रीआबुगिरि आदीश्वर जिन गुण महिमा वर्णन पूजा संपूर्णम्॥

॥ अथ सुगणचंद्रोपाध्याय कृत ॥
॥ पांच ज्ञाननी पूजा ॥

॥ तत्र ॥

॥ प्रथम मति ज्ञान अष्टद्रव्य पूजा ॥

॥ दूहा ॥ वर्द्धमान जिनचंदकूं, नमन करी मनरंग ॥ पूज रचूं भवि प्रेमसें, सांभलजो उछरंग ॥ १ ॥ पांच ज्ञान जिनवर कह्या, मति श्रुत अवधि प्रधान ॥ मनपर्यव केवल वडो, दिनकर जोत समान ॥ २ ॥ ज्ञान वडो संसारमें, गुरु बिन ज्ञान न होय ॥ ज्ञान सहित गुरु वंदिये, सुचि कर तनमन दोय ॥ ३ ॥ वीर जिणंद

करा ॥ नि० ॥ ८ ॥ प्रश्नविचार कह्या जिन दशमें, अंगुष्टादिक सुभ तरा ॥ अंग इग्यारमें जिनवर दाखे, कर्मविपाक विविध परा ॥ नि० ॥ ९ ॥ बारमो अंग जिणंद वखाणे, अतिशय गुण विद्याधरा ॥ अक्षर श्रुत वलि सन्नी कहिये, सम्यक् भेद अधिक तरा ॥ नि० ॥ १० ॥ सादि भेद सपरजव लहिये, गम्यक् भेद सुणो नरा ॥ अंग प्रविष्ट कहे जिनवरजी, भेद चवद सुणजो खरा ॥ नि० ॥ ११ ॥ इम जो श्रीश्रुतज्ञान आराधे, भावभगत कर बहु परा ॥ सुमति कहे गुरू ज्ञान आराधो, वंछित पूरण सुरतरा ॥ नि० ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीपर० श्रीश्रुतज्ञानधारकेभ्यः अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति चंदन पूजा ॥ २ ॥

॥ अथ तीजी अवधिज्ञान अष्टद्रव्य पूजा ॥

॥ दूहा ॥ अगर सेल्हारस धूपसें, पूजो अवधि उदार ॥ बोध बीज निरमल हुवे, प्रगटे सुख्ख अपार ॥ १ ॥ नवल नगीने सारखो, ज्ञान वडो संसार ॥ सुरनर पूजे भावसुं, महियल ज्ञान उदार ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ निरमल हुय भज ले प्रभु प्यारा, सब० ॥ ए चाल ॥ अवधिज्ञानको पूजन कर ले, ज्यूं पावो भव पार सलुणा ॥ अ० ॥ ज्ञान वडो सुख देण जगतमें, उपगारी सिरदार सलूणा ॥ अ० ॥ १ भेद असंख कहे जिनवरजी, मूल भेद छव सार, स० ॥ अ० ॥ वद्धमांन हियमांन वखाणे, सूत्रे श्रीगणधार, स० ॥ अ० ॥ २ ॥ सुर नर तिरि सहु अवधि प्रमाणे, देखे द्रव्य उदार, स० ॥ अवधि सहित जिनवर सहु आवे, थाये जग भरतार, स० ॥ अ० ॥ ३ ॥ ज्ञान विना नर मूढ कहावे, ढोर समो अवतार, स० ॥ ज्ञानी दीपक समजग मांहे, पूजे सहु नर नार, स० ॥ अ० ॥ ४ ॥ ज्ञान तणी महिमा जगमांहे, दिन२ अधकी सार, स० ॥ मूल मंत्र जग

वस करवाको, ए हिज परम आधार, स० ॥ अ० ॥ ५ ॥ ज्ञाननी पूजा अहनिस करिये, लीजे वंछित सार, स० ॥ ज्ञानने वंदी बोध उपावो, करम कलंक निवार, स० ॥ अ० ॥ ६ ॥ इत्यादिक महिमा भवि सुणके, पूजो अवधि उदार, स० ॥ सुमति कहे भवि भाव धरीने, सेवो ज्ञान अपार स० ॥ अ० ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं परमा० श्रीअवधिज्ञान धारकेभ्यः अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति तीजी पूजा ॥ ३ ॥

॥ अथ चोथी मनपर्यवज्ञान अष्टद्रव्य पूजा ॥

॥ दूहा ॥ केतकी दमणो मालती, अवर गुलाब सुगंध ॥ भाव धरी पूजन करो, हरे कुमति दुरगंध ॥ १ ॥ मनपर्यव पूजा करो, विविध कुसुम मनरंग, महके परिमल चिहुं दिसे पांमे सुजस अभंग ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ सेत्रुंजानो वासी प्यारो लागे मोरा राजिंदा ॥ से० ॥ ए चाल ॥ जिनजीरो ज्ञान सुहावे, म्हारा राजिंदा ॥ जि० ॥ जिन जीरो ज्ञान अनंतो सोहे, कहतां पार न आवे ॥ म्हा० जि० ॥ १ ॥ सन्नी नर मन परजय जाणे ते मुनि ज्ञान कहावे ॥ म्हा० ॥ विपुलमती ने ऋजुमती कहिये, ए दुय भेद लहावे ॥ म्हा० जि० ॥ २ ॥ अंगुल अढिए ऊणो देखे, ते ऋजु नाम धरावे ॥ म्हा० ॥ संपूरण मानव मन जाणे, तेही विपुल कहावे ॥ म्हा० ॥ मनगत भाव सकल ए भापे, ते चोथो मन भावे ॥ म्हा० ॥ एहनी महिमा नित२ कीजे, तिम भवि नाम धरावे ॥ म्हा० जि० ॥ ४ ॥ जगजीवन जगलोचन कहिये, मुनिजन ए नित ध्यावे ॥ म्हा० ॥ दीक्षा ले जिनवर उपगारी, चोथो ज्ञान उपावे ॥ म्हा० जि० ॥ ५ ॥ मनका संसा दूर करत हे, सुणतां आण मनावे ॥ म्हा० ॥ तन मन सुचिकर पूजन करले, जनम२ सुख पावे ॥ म्हा० जि० ॥ ६ ॥ विविध कुसमसें पूजा करतां, बोध लता उपजावे ॥ म्हा० ॥ सुमति कहे भवि ज्ञान आराधो, श्रीजिन देव बतावे ॥ म्हा० जि०

॥ ७ ॥ ॐ ह्रीँ श्री परम० श्री मनपर्यवज्ञानधारकेभ्यः अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति चोथी पूजा ॥ ४ ॥

॥ अथ पांचमी केवलज्ञान अष्टद्रव्य पूजा ॥

॥ दूहा ॥ प्रभु पुजो ए पंचमी, पंचमज्ञान प्रधान ॥ सकल भाव दीपक सदा, पूजो केवल ज्ञान ॥ १ ॥ फल दीपक अक्षत धरी, नैवेद्य सुरभि उदार ॥ भाव धरी पूजन करो, पावो ज्ञान अपार॥२॥

॥ ढाल ॥ तुम बिन दीनानाथ दयानिध कोन खबर ले० ॥ ए चाल ॥ तूं चिदरूप अनूप जिनेसर, दरसणकी बलिहारी रे ॥तुं०॥ निरमल केवल पूरण प्रगट्यो, लोकालोक विहारी रे ॥ केवल ज्ञान अनंत विराजे, क्षायक भाव विचारी रे ॥तुं०॥१॥ ज्योत सरूपी जगदानंदी, अनुपम शिव सुख धारी रे ॥ जगत भाव परकाशक भानू, निज गुण रूप सुधारी रे ॥ तु० ॥ २ ॥ सकल विमल गुण धारक जगमें, सेवत सब नरनारी रे, आतम सुद्ध सरूपी भविजन गुण मणिरयण भंडारी रे ॥ तुं० ॥ ३ ॥ केवल केवलज्ञान विराजे, दूजो भेद न धारी रे ॥ आतम भावे भविजन सेवो, जगजीवन हितकारी रे ॥ तुं० ॥४॥ अवर ज्ञान सब सेश कहावे ,केवल सरव विहारी रे ॥ सर्व प्रदेशी जिनवर भाखे, साखे श्रीगणधारी रे ॥ तुं ॥५॥ भए अयोगी गुणके धारक, श्रेण चढो सुखकारी रे ॥ अष्ट कर्मदल दूर करीने, परमातम पद धारी रे ॥ तुं० ॥ ६ ॥ एसें ज्ञान वडो जगमांहे, सेवो सुद्ध आचारी रे ॥ सुमति कहे भविजन सुभ भावे, पूजो कर इकतारी रे ॥ तुं० ॥ ७ ॥ फल अक्षत दीपक नैवेद्यसें, पूजो ज्ञान उदारी रे ॥ पूजत अनुभव सत्ता प्रगटे, विलसे सुख ब्रह्मचारी रे ॥ तु०॥ ८ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीपरमात्म० श्रीकेवलज्ञानधारकेभ्यः अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥

॥ अथ कलश ॥

॥ केसरियाने जिहाजको लोक तिरायो ॥ ए चाल ॥ असरण सरण कहायो, प्रभु थारो ज्ञान अनंत सुहायो ॥ अ० ॥ मति श्रुति अवधि अने मनपर्यव, केवल अधिक कहायो ॥ भव्य सकल उपगार करतहे, श्रीजिनराज वतायो ॥ प्र० ॥ १ ॥ खरतर गच्छपति चंद्रसूरीश्वर, राजत राज सवायो ॥ तेजपुंज रवि शशि सम सोहे, देखत दिल उलसायो ॥ प्र० ॥ २ ॥ प्रीतसागर गणि शिष्य सुवाचक, अमृत धर्म सुपायो ॥ सीश क्षमाकल्याण सुपाठक, सद्गुरु नाम धरायो ॥ प्र० ॥ ३ ॥ धरम विशाल दयाल जगतमें, ज्ञान दिवाकर ध्यायो ॥ ज्ञान क्रियानो मूल जे कहीये ॥ तत्वरमण मन भायो ॥ प्र० ॥ ४ ॥ वीकानेर नगर अति सुंदर, संघ सकल सुख दायो ॥ सुद्धमति जिन धर्म आराधक, भगत करे मुनिरायो ॥ प्र० ॥ ५ ॥ उगणीसे चालीसे वरसे, आसु सुदि वरदायो ॥ ज्ञान विजयकारक सब जगमें, नित प्रति होत सहायो ॥ प्र० ॥ ५ ॥ सुमति सदाजिन राज कृपासें, ज्ञांन अधिक जस गायो ॥ कुशल निधान मोहनमुनि भावे, ज्ञांन तणो गुण गायो ॥ प्र० ॥ ७ ॥ इति श्री पांचज्ञान पूजा संपूर्णम् ॥

॥ अथ पूजा विधि ॥

बाजोट पर पांच साथिया कीजे, उसपर चावलोका साथिया करणा, रु ५) श्रीफल ५ थापना करणी, पीछे स्नात्र पढाणी. नालेर नंग ७, अंगलुहणा ३, चावल मिटाइ, फल, बिदाम, सुपारी, पुष्प मोली, कंकुं. केशर, अंगी, घी, रोक टका वगेरे विशेष विधि गुरु मुखसे जाणना.

॥ अथ सुगणचंद्रोपाध्याय कृत ॥
॥ सहस्रकूट पूजा ॥
॥ तत्र ॥
॥ प्रथम जल पूजा ॥

॥ दूहा ॥ श्रीजिनवर प्रणमी करी, भाव धरी भरपूर ॥ अनुभव गुण निरमल करी, वंदू जिनवर सूर ॥ १ ॥ ओघे श्रीजिनरायनी, संख्या आगम जेह ॥ गुरु मुख जे इम सांभळी, ते सुणजो धर नेह ॥ २ ॥ सहसकूटनी थापना, करिये विधि विस्तार ॥ पूज रचावो नवनवी, अष्ट दिवस सुविचार ॥ ३ ॥ श्रीसेत्रुंजा ऊपरे, सहसकूटनो भाव ॥ ते देखी भवि उर धरो, सेवो जिनवर पाव ॥ ४ ॥ अष्ट द्रव्य लेइ करी, तन मन उज्जल भाव ॥ गीत नृत्य प्रभु आगले, कर पूजन गुण गाव ॥ ५ ॥ सधव सुहागण सुंदरी, सझ सोले सिणगार ॥ प्रभु आगे मंगल करे, पावे हरख अपार ॥ ६ ॥ निरमल जल कलशा भरी, स्नात्र करे भवि सार ॥ सहसकूट जिनराजनी, महिमा अधिक उदार ॥ ७ ॥ (जलादिक अष्ट द्रव्य लेणा)

॥ ढाल ॥ आज आयोरे उछाह जीवडा नाच जिणंद आगे ॥ ए चाल ॥ आज हरख अपार, जिनवर पूजन करियेरे ॥ आ० ॥ पंच भरत वलि ऐरवत पंच, इण दस क्षेत्र तणा जिन संच ॥ आ० ॥ दक्षण उत्तर भरते जाण, अतीत अनागत ने वर्त्तमान ॥ आ० ॥१॥ इण पर गिणतां जिनवर थाय, सातसें वीस अधिक कहवाय ॥ आ० ॥ तीस चोवीसी वंदू एह, तारण तरण भविक गुण गेह ॥ आ० ॥ २ ॥ परमातम परमेसर जांण, एहनी आंण करो परमांण ॥ आ० ॥ जिन सम अवर न दजो देव, सुरवर मुनिवर करता सेव ॥ आ० ३ ॥ अतिसयवंत महंत उदार, सुर नर मोहे देख दीदार ॥ आ० ॥ वारी जाउं एहनी वार हजार, मुझ प्रीतम एहिज अवधार ॥ आ०

४ ॥ करता भूमंडल उपगार, जगनायक जिनवर जयकार ॥ आ० ॥ भाव धरी वंदूं जगसार, सुमति सदा दीजे किरतार ॥ आ० ५॥ ॐ ह्रूँ। परमात्मने० सहस्रकूटजिनेंद्राय जलादि अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ १ ॥ इति प्रथम पूजा ॥

॥ अथ बीजी चंदन पूजा ॥

॥ अष्ट प्रकारी थाली लेके खडा रहे ॥ दूहा ॥ वर्त्तमान जिन वंदिये, तीन चोवीसी मांह ॥ ऋषभादिक जिन पूजतां, दिन२ हरख उछाह ॥ १ ॥ कुंकुम चंदन मृगमदे, अंबर सुगंध विशाल ॥ श्रीजिनवर पूजन करो, भाव धरी गुणमाल ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ अबतो उधारयो मोह चहिये, जिनंदराय ॥ ए चाल ॥ वर्त्तमान जिन पूजन करके, तन मनको सब पाप हरो रे ॥ व० ॥ ऋषभ अजित संभव अभिनंदन, सुमति सदा जिनराज खरो रे ॥ व० ॥ १ ॥ पद्म सुपास जिनंदसु सेवो, चंद्र प्रभु चित चाह धरो रे॥ सुविध शीतल जिन अंतरजामी, श्रीश्रेयांस जिनंद वरो रे ॥व० ॥ २ ॥ बारमो वासुपूज्य जिन नमने, मिथ्यातम सब दूर करो रे॥ विमल अनंत धर्म जिन नमतां, ऋद्ध सिद्धको भंडार भरो रे ॥ व० ॥ ३ ॥ सांति कुंथु अरि मल्लि जिनेसर, मुनिसुव्रत दिल ध्यान करो रे ॥ नमि नेमी श्रीपास जिनेसर, वीर सदा मुझ नाथ खरो रे ॥ व० ॥ ४ ॥ ए चोवीसे जिन गुण गावत, संपद सुखकी सेज वरो रे॥ सुमति सदा जिन पूजन करके, लुळ२ जिनजीके पाय परो रे व० ॥ ५ ॥ ॐ ह्रूँ। परमा० सहस्रकूट जिनेंद्राय अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति दूसरी पूजा ॥ २ ॥

॥ अथ तीजी पुष्प पूजा ॥

॥ अष्टद्रव्य ले खडा रहे ॥ दूहा ॥ पुष्पमाल गूंथी करी, कंठ ठवो जिनराज ॥ सुमति सुगंधी विस्तरे, लाभ अनंत समाज ॥ १ ॥

अतीत चोवीसी वंदिये, आंणी भाव प्रधान ॥ मन वंछित पूरण सदा, परतिख कल्प समान ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ श्रीचंद्राप्रभु जिनवर साहिब, सुणियो अरज० ॥ ए चाल ॥ केवलज्ञांनी ने निरवाणी, सागर महा जसकारा ॥ में वारी० ॥ विमलनाथ निरमल गुणधारक, सर्वानुभूत उदारा ॥ में० स० के० ॥ १ ॥ श्रीधर दत्त जिनवर उपगारी, दामोदर अविकारा ॥ में० दा० ॥ अधिक सुतेज जिनेसर स्वामी, मुनिसुव्रत गुणकारा ॥ में० मु० के० ॥ २ ॥ श्रीसुमति शिवगति जिन पूजो, अस्तग नमी मुनि प्यारा ॥ में० अ० ॥ अनिल यशोधर जिनवर सेवो, किरतारथ मनुहारा ॥ में० की० के० ॥ ३ ॥ श्रीजिनराज जिनेसर वंदो, सुद्धमती शिवकारा ॥ में० सु० ॥ स्पंदन संप्रति जिन चोवीसे, सुमति सदा सुखकारा ॥ में० सु० के० ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं परमात्म० श्रीसहस्त्रकूटजिनेंद्राय जलादिअष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति तीसरी पूजा ॥ ३ ॥

॥ अथ चोथी धूप पूजा ॥

॥ दूहा ॥ भावी जिनवर वंदिये, द्रव्यभाव सुविचार ॥ पद्मनाभ आदिक प्रभु, वंदू वारंवार ॥ १ ॥ कृश्नागर मृगमद तगर, अंबर तुरक लोबान ॥ धूप करो जिनराजने, पावो सुख असमान ॥२॥

॥ ढाल ॥ संभव जिन सुखकारी रे वाल्हा ॥ ए चाल ॥ पदमनाभ सुखकारी रे वाल्हा, प० ॥ हां हो रे वाल्हा, वारी जाउं वार हजारी रे वाल्हा ॥ प० ॥ सूरदेव जिन वंदू भावे, सुपारस ब्रह्मचारी रे ॥ वा० प० ॥ १ ॥ श्वयंप्रभु जिन अंतरजामी, सर्वानुभूत उदारी ॥ देवश्रुती जिन पर उपगारी, उदयपेढाल विचारी रे ॥ वा० प० ॥ २ ॥ पोट्टिल जिन शतकीर्त्ति कहिये, सुव्रत जिन हितकारी ॥ अमम जिनेसर बारमो कहीये, निष्कषाय गुण

धारो रे ॥ वा० प० ॥ ३ ॥ निष्पुलाक जिन पनरमो सेवो, महिमा अधिक तुमारी ॥ सोलम निरमम जिनवर भावे, सेव करो इकतारी रे ॥ वा० प० ॥ ४ ॥ चित्रगुप्ति चित चाह धरीने, समाधि सेवो सुविचारी ॥ संवर जिन गुण मणिके आगर, जस्सोधर जसधारी रे ॥ वा० प० ॥ ५ ॥ विजय मल्लिदेव जिनवर पूजो, अनंतवीरज सुभचारी ॥ भाव करी भद्रंकर सेवो, एहिज निज गुण धारी रे ॥ वा० प० ॥ ६ ॥ भावी जिनवर उत्तम कहिये, चरण कमल बलिहारी ॥ सुमति कहे तन मन कर उज्जल, सेवो जिन इकतारी रे ॥ वा० प० ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीँ परमात्म० सहस्रकूटजिनेंद्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति चवथी पूजा ॥ ४ ॥

॥ अथ पांचमी दीप पूजा ॥

॥ दूहा ॥ दीपक कंचनमय करी, पूजो जग भरतार ॥ धातकी पूरव खंडमें, भरत तणां जिनसार ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ तुम विन दीनानाथ दयानिध, को० ॥ ए चाल ॥ धातकी खंडे पूरव भरते, अतीत चोवीसी वंदो रे ॥ धा० ॥ रतनप्रभुने अमल प्रभूजी, असंभव जिनचंदो रे ॥ धा० ॥ १ ॥ श्री अकलंक चंदा प्रभु प्रणमुं, सुभंकर सुख कंदो रे ॥ संपतनाथ जिन सुंदर भावे, नाथ पुरंदर इंदो रे ॥ धा० ॥ २ ॥ श्रीस्वामी जिन देवदत्तजी, वासवदत्त सुनंदो रे ॥ श्रीश्रेयांस जिनेसर वंदो, वीर स्वरूप आनंदो रे ॥ धा० ॥ ३ ॥ श्रीतपतेज दिवाकर सेवो, श्रीपति बोध सुदेवो रे ॥ श्रीसिद्धारथ जिनवर पूजो, स्पंदन जिन गुण देवो रे ॥ धा० ॥ ४ ॥ अमलनाथ देवेंद्रसु पूजो, प्रवचननाथ सुचंदो रे ॥ विश्वानन जिनदेव सुवंदो, मेघ अधिक गुण वृंदो रे ॥ धा० ॥ ५ ॥ श्रीसर्वज्ञ जिनेसर वंदो, चोवीसम मुनिचंदो रे ॥ धातकी खंडे पूरव भरते, अनागत जिन वृंदो रे ॥ धा० ॥ ६ ॥ इम

हिज धातकी पूरब भरते, वर्त्तमान सुखकंदो रे ॥ सुमति सदा जिनराज कृपासें, लहे सदा आनंदो रे ॥ धा० ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं परमा० सहस्रकूट जिनेंद्राय दीपं यजामहे स्वाहा ॥

॥ अथ छठी अक्षत पूजा ॥

॥ दूहा ॥ पछिम धातकी खंडमें, भरते जिनवर सार ॥ अतीत चोवीसीए कहूं, सांभलजो सुविचार ॥ १ उज्जल तंदुल लेयने, मंगल कर भविसार ॥ निरमल गुण प्रगटे सही, पूजत जग भरतार ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ पास जिनंदा प्रभु मेरे मन वसिया ॥ पा० ॥ ए चाल ॥ अतीत चोवीसी सेवो भवि रसिया ॥ अ० से० ॥ पछिम धातकी भरते सोहे, ए जिनराज सकल मन वसिया ॥ स० अ० ॥ वृषभनाथ महाराज विराजे, श्रीप्रियमित्र अधिक गुण रसिया ॥ अ० ॥ १ ॥ शांति जिनेसर जग उपगारी, समुद्रनाथ सेवो भवि रसिया ॥ से० ॥ अजित जिनेसर जग जयकारी, श्रीअव्यक्त सकल सुख रसिया ॥ अ० ॥ २ ॥ कलासित जिन जगके दीपक, सरबजीत जिन अधिक दरसिया ॥ अ० ॥ प्रबुद्ध जिनेसर नवमो कहिये, दशमो प्रव्रजित अधिक उलसिया ॥ अ० ॥ ३ ॥ श्री सोधरम जिनेसर वंदो, तमोधिदीप ए नाम दरसिया ॥ अ० ॥ वज्रसेन श्री बुद्ध जिनेसर, प्रबंधनाथ जगके दुख घासिया ॥ अ० ॥ ४ ॥ अजित प्रमुख पल्योपम वंदो, अकोप जिनंद सब पाप तरसिया ॥ अ० ॥ निष्टित जिन मृगनाभसु सेवो, देवेंद्रनाथ मुझ मनमें वसिया ॥ अ० ॥ ५ ॥ प्रायच्छित जिन वंदू उपगारी, चोवीसम जिननाथ छे रसिया ॥ अ० ॥ पच्छिम भरते धातकी खंडे, वर्त्तमान अनागत रसिया ॥ अ० ॥ ६ ॥ इण विध जो भवि पूज करत हे, तसु मन वंछित मेघ वरसिया ॥ अ० ॥ तीन चोवीसीए नित वंदो, सुमति सदा ए ज्ञांन दरसिया ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं परमा० जलादि अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति छठी पूजा ॥ ६ ॥

॥ अथ सातमी फल नैवेद्य पूजा ॥

॥ दूहा ॥ सातमी पूजा साचवे, फल नैवेद्य सुखकार ॥ उत्तम फल पूजा करो, पावोसुख अपार ॥ १ ॥ पुष्कर द्वीपे वंदिये, अतीत चोवीसी जेह ॥ सास्त्र थकी सुणजो सदा, अनुपम गुणको गेह ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ जात्रा निनाणुं करिये विमलगिरि ॥ जा० ॥ ए चाल ॥ पुष्कर द्वीप सुवंदो रे, भविजन पु० ॥ पूरव भरते अतीत चोवीसी, सेवत भवि चिरनंदो रे ॥ भ० पु० ॥ पदमचंद्र रक्तांग अजोगिक, सरवारथ सुखकंदो रे ॥ भ० पु० ॥ १ ॥ ऋषीनाथ हरिभद्र सुहंकर, गणाधिप मुनि इंदो रे ॥ भ० ॥ पारत्रक जिनकुंभ वि वंदो, ब्रह्मचारी सुखकंदो रे० भ०॥२॥ दीपक जिन वलि राज ऋषी सर विशाख प्रभु जिनचंदो रे ॥ भ० ॥ अचित रवि श्रीसोम जिनेसर, जय श्री मोक्ष जिनंदो रे ॥ भ०पु० ॥ ३ ॥ अग्निभानु धनुससु वंदो, सेमांचित चिरनंदो रे ॥ भ० ॥ प्रसिद्धनाथ श्री जिनवर इंदो, वंदी पाप निकंदो रे ॥ भ० पु० ॥ ४ ॥ इमहिज वरतमान जिन पूजी, अनागत जिन वंदो रे ॥ भ० ॥ सुमति कहे जो जिनवर पूजे, तेहिज जग मणि चंदो रे ॥ भ० ॥ ॐ ह्रीँ परमा० सहस्त्रकूट जिनेंद्राय अष्टद्रव्यंयजामहे स्वाहा ॥ इति सातमी पूजा ॥ ७ ॥

॥ अथ आठमी वस्त्र युगल पूजा ॥

॥ दूहा ॥ वस्त्र युगल प्रभु आगले, ढोवो भविक उदार ॥ जंबू एरवत क्षेत्रमें, पूजो जिनवर सार ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ आज हुं गइथी समवमरणमें, वाणी सुधारस पीना रे ॥ ए चाल ॥ जंबूद्वीपे एरवरतमें, इमहिज जिनवर छाजे री ॥ वारी इ० जं० ॥ तीन चोवीसी गिणतां भविजन, बहुत्तर जिनपति राजे री ॥ वा० ब० जं० ॥ १ ॥ गुरु मुखथी अवधारो भविजन, प

रमातम गुण साजे री ॥ वा० प० जं० ॥ भाव धरी पूजन भवि करतां, कुमति कुटलता लाजे री ॥ वा० कु० जं० ॥ २ ॥ इमहिज धातकी पूरब मांहे, एरवत क्षेत्र सुकाजे री ॥ वा० ए० जं० ॥ तीन चोवीसी नित२ नमिये, बोधलता गुण वाजे री ॥ वा० बो० जं० ॥ ॥ ३ ॥ इमहिज धातकी पश्चिम सोहे, एरवत क्षेत्र सु छाजे री ॥ वा० ए० जं ॥ इण संक्षाये गिणतां भवि जन, सातसें वीस समाजे री ॥ वा० सा० जं० ॥ ४ ॥ जगत जंतु करुणा निधि स्वामी, अमृत वाणसु गाजेरी ॥ वा० अ० जं ॥ सुमति कहे ए जिनवर पूजो, उपगारी शिरताजे री ॥ वा० उ० जं० ॥ ५ ॥ ॐ ह्रूँ परमा० सहस्त्रकूट जिनेंद्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति आठमी पूजा ॥ ८ ॥

॥ अथ नवमी ध्वज पूजा ॥

॥ दूहा ॥ वीस जिनेसर साश्वता, पंच विदेह मझार ॥ सीमंधर आदे करी, प्रणमूं वार हजार ॥ १ ॥ गगन वीच अदभुत वणी, पंच वरण विकसंत ॥ नवमी ध्वज पूजा करी, लेवो लाभ अनंत ॥२॥

॥ ढाल ॥ सेत्रुंजानो वासी प्यारो लागे म्हारा राजिंदा ॥ ए चाल ॥ विहरमान भवि ध्यावो, म्हारा राजिंदा, वि० ॥ सीमंधर स्वामुंधिर स्वामी, बाहु सुबाहु सुहावे ॥ म्हा० ॥ श्रीसुजात स्वयंभू से सेवो, ऋषभानन मन भावे ॥ म्हा० वि० ॥ १ ॥ अनंत वीरज श्री सूरप्रभूजी, दशमो विशाल कहावे ॥ म्हा० ॥ वज्रधर जिनभवि सेवो जुगते, बोध बीज उपजावे ॥ म्हा० वि० ॥ २ ॥ चंद्रानन जिन चंद्र बाहुजी, भुजंग इसर सुख पावे ॥ म्हा० ॥ नेम प्रभु जिन गुणमणि दरियो, वीरसेन मुनिरावे ॥ म्हा० वि० ॥ ३ ॥ अठारम महाभद्रसु सेवो, देवजसा नित ध्यावे ॥ म्हा० ॥ अजित वीरज जिन वीसमो ध्यावो, देख्यां हरख नमावे ॥ म्हा० वि०

॥ ४ ॥ पंच विदेहे ए जिन सोहे, सोवन वरण लहावे ॥ चोराशी लख पूरव आयु, साश्वता एहिज पावे ॥ म्हा० वि० ५ ॥ परम पुरुष ए वीस जिनेसर, ए जग सार कहावे ॥ म्हा० ॥ सुमति कहे ए जिनवर, पूजो, निज गुण ज्युं भवि आवे ॥ म्हा० वि० ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं परमा० सहस्त्रकूट जिनेंद्राय ध्वजं यजामहे स्वाहा ॥ इति नवमी ध्वज पूजा ॥ ९ ॥

॥ अथ दशमी नाटक अष्टमंगल पूजा ॥

॥ नाटक तथा अष्टमंगलीकका रु १) ॥ दूहा ॥ पंच विदेहे साश्वता, एकसो साठ जिनंद, कल्याणक जिनराजना, पूजो अधिक आनंद ॥ १ ॥ सधव मिली प्रभु आगले, मंगल आठ करंत ॥ तन मन उज्जल भावसें, हृदय कमल विकसंत ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ हांहो रे देवा बावन चंदन घस कुमकुमा ॥ ए चाल ॥ हांहो रे देवा, पंचविदेह विराजता, उत्कृष्टा सहु जिन राज ए ॥ हांहो० ॥ एकसो साठ सुहकरा, जगबंधव जग सिरताज ए ॥ १ ॥ हां० जनम समे त्रिहुं लोकमें, हरखित हुवे सहु सुरराज ए ॥ हां० चोसठ सुरपति भावसुं, उच्छव करे हितसुख काज ए ॥ २ ॥ हां० च्यवन जन्म दिक्षा सही, केवल सदा मोक्ष सुभराज ए ॥ हां० चोवीसे जिनराजना, कल्याणक वलि सुसमाज ए ॥ ३ ॥ हां० पंच पंच गिणती करयां, एकसो वीस भये सुभछाज ए ॥ हां० च्यार जिनेसर साश्वता, ऋषभानन जिन गुणराज ए ॥ ४ ॥ हां० चंद्रानन बीजो नमुं, वारखेण तीजो महाराज ए ॥ हां० वरधमान नित वंदिये, ए च्यार सुभ गुण पाज ए ॥ ५ ॥ हां० द्रव्य भाव पूजन करो, भव जलनिध तारण जीहाज ए ॥ हां० सुमति सदा जिनराजना, पद वंदे हित सुख काज ए ॥६॥ ॐ ह्रीं परमा० सहस्त्रकूट० अष्टमंगलंजलादि अष्टद्रव्यंयजामहे स्वाहा ॥ इति दशमी पूजा ॥१०॥

॥ अथ इग्यारमी गीतनृत्य पूजा ॥

॥ दूहा ॥ गीत नृत्य गुण गावतां, थाये लाभ अनंत ॥ भव्य सदा सेवन करे, हृदय कमल विकसंत ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ थारी गई रे अनादि नींद, जरा टुक जोवो तो सही ॥ ए चाल ॥ तने देवे रे सुज्ञानी सीख, जिनंद पद सेवो तो सही ॥ से० म्हा० से० त० ॥ जिनवरकी वरणी दुख हरणी, जोवो तो सही ॥ म्हा०जो० ॥ रायपसेणी मांहि हियामें, पोवो तो सही ॥ पो० म्हा० त० ॥ १ ॥ भवोदधिकी तरणी सुख करणी, लेवो तो सही ॥ म्हा० ले० ॥ तूं रुल्यो रे अनंते काल अज्ञानी, वेवो तो सही ॥ वो० म्हा० त० ॥ २ ॥ समकितकी करणी मन हरणी, सेवो तो सही ॥ म्हा० से० ॥ परहर मांन गुमांन जगत जस, लेवो तो सही ॥ ले० म्हा० त० ॥ ३ ॥ भविजनकी करणी जस भरणी, वोवो तो सही ॥ म्हा० वे० ॥ अजर अमर गुण होय करम मल, धोवो तो सही ॥ धो० म्हा० त० ॥ ४ ॥ इत्यादिक गुण गण जिनवरणी, भावो तो सही ॥ म्हा० भा० ॥ गीत ज्ञांन सुभ भाव हियामें, ध्यावो तो सही ॥ म्हा० ध्या० त० ॥ ५ ॥ मुनिवरकी वरणी चित धरणी, पावो तो सही ॥म्हा० उ० सुमति कहे गुरु ज्ञान हियामें, लावो तो सही ॥ ला० म्हा० त० ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीँ परमा० सहस्त्रकूट जिनेंद्राय गीत नृत्य पूजनं ॥इति इग्यारमी पुजा ॥ ११ ॥

॥ अथ बारमी नाटक वाजित्र पुजा ॥

॥ दूहा ॥ ताल मृदंग सझी करी, प्रभु पुजो धर भाव ॥ भगत करो जिनराजनी, समकित सुद्ध उपाव ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ जिन गुण गावत सुर सुंदरी रे ॥ ए चाल ॥ निरत करे मिल सुर सुंदरी रे ॥ जि० सु० ॥ थेई २ तान करे प्रभु आगे, गावत देवी सुर मधुरी रे ॥ जि० ॥ कंचू कसिया हरख उलसिया,

उमर२ नाचत कवल करी रे ॥ क० नि० ॥ १ ॥ ताल कंसाल वि शाल अनोपम, गावत राग छत्तीस करी रे ॥ नि० ॥ जिन गुण गावत हरख वधावत, पावत निज गुण हरख भरी रे ॥ ह० नि०॥ २ ॥ तीन लोकको नाथ निरंजन, धर्म धुरंधर तूं जिनरी रे॥नि० भव दुख भंजन तन मन रंजन, असरण सरण आनंद करी रे ॥ आ० नि० ॥३॥ अनंत गुणाकर सब सुखसागर, सेवत आपद दूर टरी रे ॥ नि०॥ जग दीपक जग लोचन तूंही, तूंहि जगत पिया महरी रे॥ पि० नि० ॥ ४ ॥ इण विध नृत्य करी प्रभु आगल, समकित सुद्ध उपाय खरी रे ॥ सुमति कहे भविजन जिन पूजो, सफल जनम ए सफल घरी रे ॥ नि० ॥ ५ ॥ ॐ ह्रूँ परमा० सहस्र० ॥ इति बारमी नाटक वाजित्र पूजा ॥ १२ ॥

॥ अथ तेरमी गुलाबजल पूजा ॥

॥ दूहा ॥ विविध सुगंध लेई करी, पूजन कर जिनराज ॥ सुजस सुगंधी विस्तरे, प्रगटे पून्य समाज ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ चाल अंगरेजो बाजेकी ॥ आनंदकंद पूजतां, जिनंद चंदहूं ॥ ए चाल ॥ पूज२ जिनराज, काज सार तुं, भला हे का० पू० ॥ जग जस धार सार सुखकार तूं, अनंत ज्ञान तूहि भांन हि तकार तूं ॥ हि० पू० ॥ १ ॥ केतकी गुलाब फूल चाढ सार तूं, मो गरो अबीर लाल अविकार तूं ॥ अ० पू० ॥ २ ॥ तूंहि जग मात तात भरतार तूं, अतर सुगंध गंध भवि ठार तूं ॥ भ० पू० ॥ ३ ॥ केवडो चंपेल तेल अविकार तूं, परम आनंद चंद जिन सार तूं ॥ जि० पू० ॥ ४ ॥ भगत उधार सार किरतार तूं, में तो हूं आचार हीन मुनि तार तूं, ॥मु० पू० ॥५॥ मुनिंद चंद पूजतां पाप टार तूं, एही हे जिनंद देव भवि धार तूं ॥ भ० पू० ॥ ६ ॥ तूंही हे मुनीश इस गुणकार तूं, सुमति आधार सार जयकार तूं ॥ ज० पू०॥७॥ ॐ ह्रूँ परमा० सहस्रकूट जिनेंद्राय सुगंधजलं यजामहे स्वाहा ॥१३॥

॥ अथ कलश ॥

॥ तेज तरण मुख राजे ॥ ए चाल ॥ तेज अधिक जग गाजे, हो प्रभु थारो तेज० ॥ सहस्त्रकूट जिनवर सब पूजत, पुण्य अनंत सुकाजे ॥ अतिशयवंत महंत जिनेसर, सुरतरु सम प्रभु छाजे, हो प्र० ते० ॥१॥ रूप अनूप करी सुर मोहे, देखत सहु दुख भाजे ॥ खरतर गच्छपति चंद्र सूरीश्वर, तेज अधिक गुण गाजे, हो प्र० ते० ॥ २ ॥ प्रीतसागर गणी शिष्य सुवाचक, अम्रत धर्म सुराजे ॥ सीश क्षमाकल्याण सुपाठक, अमृत सम गुण राजे, हो प्र० ते० ॥३॥ धरम विशाल मुनि गुरु दीवो, तसु नंदन हित काजे, सुमति कहे भवि भाव धरीने, पूजो श्रीजिनराजे, हो प्र० ते० ॥ ४ ॥ वीकानेर नगर अति सुंदर, संघ सदा गुण राजे ॥ प्रेमधरी पूजन ए करिये, वंछित हित सुख काजे, हो प्र० ते० ॥ ५ ॥ उगणीसे चालीसे मिगसर, सुदि पंचमी सुभ राजे, कुशल निधान मोहन मुनि गावे, निज गुण निरमल काजे, हो प्र० ते० ॥ ६ ॥ इति सहस्त्रकूट जिन पूजा संपूर्णम् ॥ १३ ॥

॥ अथ पूजा विधि ॥

रु ७) चहीये थापनामें, १) ज्ञान पूजाको, १। अंगी, १७ नालेर, ।) चावल, ।।।) मिठाइ, ॥) फल, ॥) अंगलूणा, ॥) ध्वजाका) ॥) पान निछरावल आरती, १) अष्टमंगलका, १) धजाका केशर धूप, चंदन कुंकुं मोली लोंग ऽथवा पुष्प घृत पंचामृत, क्षेत्रपाल पूजाकुं तेल सिंदूर वरक या मील पन्ना गुलाबजल अतर इत्यादि चीजे इस पूजनमें चाहिये ॥ विस्तार विधि कराणी होय तो एक हजार चोवीस२ सब चीज सुपारी बिदामादिक लेणा ॥ विशेष गुरु मुखसें जाणना ॥

॥ अथ सुगणचंद्रोपाध्याय कृत ॥
॥ अष्ट प्रवचनमाता पूजा ॥

॥ तत्र ॥

॥ प्रथम जल पूजा ॥

॥ दूहा ॥ सुख संपति कारक सदा, अष्टम श्रीजिन चंद ॥ अष्ट प्रकारै पूजतां, दिन२ अधिक आणंद ॥ १ ॥ पंच सुमति तोने गुपत, कहियै प्रवचन मात ॥ श्रीजिनवर इम उपदिसै, आगममांहि विख्यात ॥ २ ॥ प्रथम भेद जिनवर कहै, इरिया सुमति प्रधान ॥ जो मुनि पालै भावसुं, ते पावै बहु मान ॥ ३ ॥ निरमल गंगोदक भरी, कंचन कलश उदार ॥ स्नात्र करी जिनराजनी, पूजो विविध प्रकार ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥ राग सोरठी ॥ कुंद किरण ससि उजलोजी देवा ॥ ए चाल ॥ प्रथम सुमति नित पालतारे वाला, जगजीवन हित कारो रे आछौ ॥ सुंदर जिनवर भाषियो रे वाला, धर्म सकल सुखकारो रे आछौ ॥ प्र० ॥ १ ॥ इरजा सुमति सोधता रे वाला, जीव दया प्रतिपालै रे आछौ ॥ पृथ्वी अप तेऊ तणी रे वाला, जयणा करकर चालै रे आछौ ॥ प्र० ॥ २ ॥ पवन ॥ तरुवर जीवनी रे वाला, करुणा मनमें आणो रे आछौ ॥ सद्गुरुने संजोगसुं रे वाला, भेद सहूए जाणो रे आछौ ॥ प्र० ॥ ३ ॥ ए छव काय, विराधतां रे वाला, इरिया सुमति न थायै रे आछौ ॥ जिन आणा नहि मानतो रे वाला, बहु संसारी थायै रे आछौ ॥ प्र० ॥ ४ ॥ मेघ कुमर हाथी भवे रे वाला, जीव दया दिल आणी रे आछौ ॥ तेह तणे परभावथी रे वाला, श्रीश्रेणिक सुत जाणी रे आछौ ॥ प्र० ॥ ५ ॥ वीर वचन चित धारने रे वाला, संजम लै सुखदाई रे आछौ ॥ तप जप संजम खप करी रे वाला, मुगतिव

धू वित लाई रे आछौ ॥ प्र० ॥ ६ ॥ ज्ञाता प्रथम अध्ययनमै रे वाला, मेघकुमर अधिकारो रे आछौ ॥ ते निसुणी भवि प्राणिया रे वाला, जीव दया व्रत धारो रे आछौ ॥ प्र० ॥ ७ ॥ जयणा करकर चालियै रे वाला, दूर करी परमादो रे आछौ ॥ इण पर सुमती पालता रे वाला, न रहै करमनौ कादो रे आछौ ॥प्र०॥८॥ श्रीजिनवर पद पूजतां रे वाला, करम कलंक निवारो रे आछौ ॥ पूजत अनुभव रस लहो रे वाला, भव्य सकल सुखकारो रे आछौ ॥ प्र० ॥ ९ ॥ बारै गुणो प्रभु ऊपरै रे वाला, कलपतरु सम सोहै रे आछौ ॥ रूप अधिक जिनराजनौ रे वाला, देख भविक मन मोहै रे आछौ ॥ प्र० ॥ १०॥ धरम तरू मन भावियो रे वाला, शोक रहित वडभागे रे आछौ ॥ भव्य सकल मन रंजवा रे वाला, ढोवो तरु प्रभू आगै रे आछौ ॥ प्र० ॥ ११ ॥ ए व्रत सुमति सेवियै रे वाला, सुमति कहै मन रंगै रे आछौ ॥ उज्जल सुरभि गंधोदकै रे वाला, पूज करो चित चंगै रे आछौ ॥ प्र० ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीपरमात्मने अनंतानंतज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्यु निवारणाय श्रीमत्जिनेंद्राय इरिजासुमतिधारकेभ्यो जलंयजामहे स्वाहा ॥ इति जल पूजा ॥ १ ॥

॥ अथ बीजी चंदन पूजा ॥

॥ केसरको प्यालो लीजे ॥ दूहा ॥ भाषासुमती पूजीये, प्रवचन भाखी जेम ॥ कुंकम चंदन मृगमदें, पूजो धर बहु प्रेम ॥१॥ दशवीकालिक भाखियो, वलि पन्नवणामांहि ॥ च्यार भेद जिनवर कहे, आणी अधिक उच्छाह ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ जात्रा निनाणुं करियै, भविक जन जात्रा ॥ नि० ॥ ए चाल० ॥ वचन सुमति इम करियै, भविक जन वच० ॥ सत्य वचन-जगमें अधिकेरो, वीर वचन उर धरिये ॥ भ० व० ॥ १ ॥

प्रथम भेद जिनवर इम दाखे, सत्य सदा भवि चरिये ॥ सत्य थकी वसुपाल नरेसर, अधर सिहासण धरियै ॥ भ० व० ॥ २ ॥ वंकचूल नें विक्रमराजा, सत्य थकी निसतरियै ॥ कुमर नरिंद थयो वडभागी, श्रावक गुण पर वरियै ॥ भ० व० ॥ ३ ॥ सेठ सुदरसण शील पसायै, देव सिहासण करियै ॥ वचन सुमति जो पाले मुनिवर, कटुकवचन परिहरियै ॥ भ० व० ४ ॥ मधुर वचन सवकुं सुख दाई, ते मुनिजन अनुसरियै ॥ दूजै भेदै झूठ न बोलै, झूठ थकी गुण हरियै ॥ भ० व० ॥ ५ ॥ झूठानो परसंग करीनै, कुमति कुटलता वरियै ॥ तीजे मिश्र वचन नवि बोले, निज गुण आतम भरियै ॥ भ० व० ॥ ६ ॥ चौथै साच न झूठन जिनमै, ते मुनि भवजल तरियै ॥ इम भाषा सुमति जे पालै, तन मन उज्जल करियै ॥ भ० व० ॥ ७ ॥ दिन२ तेहनी कीरत वाधै, जग जस कमला वरियै ॥ अंवड श्रावक श्रेणक राजा, समकित सुध मन धरियै ॥ भ० व० ॥ ८ ॥ वीरजिणंदे श्रीमुख भाष्यो, भविक सदा सुभ भरियै ॥ इण विध पूजन सुमती कीजै, मिथ्या तम अपहरियै ॥ भ० व० ॥ ९॥ समकित सुद्ध करण जिन भाष्यो, भव जल पार उतरियै ॥ श्री जिन शासन कुमति विनाशन, प्रवहण सम भरदरियै ॥ भ० व० ॥ १० ॥ जे प्राणी सुभ भाव धरीनै, पूजै तारण तरियै ॥ दूजी प्रवचन पूजा दाखी, भव्य सकल हित करियै ॥ भ० व० ॥ ११ ॥ ज्ञान विमल प्रगटै जसु पूरण, अजर अमर गुण वरियै, सत्य वचनथी सुरनर मोहे, पाप सकल परिहरियै ॥ भ० व० ॥ १२ ॥ कुमति कुटलता जावै दूरै, वंछित सगला सरियै ॥ इणपर महिमा सांभल प्राणी, वचनसुमति मन धरियै ॥ भ० व० ॥ १३ ॥ ते प्राणी संसार तरीनै, अनुपम लीला वरियै ॥ वाणी अमृत [illegible]ळै, कटुक सदा परिहरियै ॥ भ० व० ॥ १४ ॥ जगत [illegible]नेध स्वामी. 'सब जीव

न सुख करियै ॥ इत्यादिक महिमाना धारक, साधु सकल परिवरियै ॥ भ० व० ॥ १५ ॥ भूमंडल उपगार करंता, आतम गुण गण धरियै ॥ सुमति कहै जो जिनवर पूजै, तसु मन वंछित सरियै ॥ भ० व ॥ १६ ॥ ॐ ह्रूँ श्रीपरमात्मने अनंतानंतज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमत् जिनेंद्राय भाषासुमतिधारकेभ्यो चंदनं केसरं यजामहे स्वाहा ॥ इति केसर चंदन पूजा ॥ २ ॥

॥ अथ तीजी पुष्पमाल पूजा ॥

॥ फूलांरीमाला लीजे ॥ दूहा ॥ तृतिय सुमति पूजन करो, पुष्पमाल सुखकार ॥ असनादिक विध संग्रहे, धन२ ते अणगार ॥१॥ दोष बयालीस टालने, लेवे सुद्ध आहार ॥ २ ॥ सुमति गुपति नित साचवे, भावै भावन बार ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ आद जिणंदा, प्रभू मेरे मन वसिया ॥ मे० ॥ ए चाल ॥ तृतिय सुमति इम पालौ भवि रसिआ ॥ तृ० ॥ आधाकरम उद्देसिक कहिये, पूति कर्म टालो मुनि रसिआ ॥ मिश्रजात वलि थापक कहियै, प्राभृत दोष कहै जिन रसिआ ॥ तृ० ॥ १ ॥ प्रादूकरनै मोलज आणै ते टालै मुनि गुणगण रसिआ ॥ पाडोसीसैं ले कै देवै, नवम दोख एही छै रसिआ ॥ तृ० ॥ २ ॥ परिवर्त्तित अभिहड वलि कहियै, भिन्नमाल हत दोख छै रसिआ ॥ अच्छेद्य दोष जिनवर इम दाखै, अनुसिठ दोस पनरमो रसिआ ॥ तृ० ॥ ३ ॥ अज्झोयर दोष जिनेसर भाख्यो, सोलमैं एही नाम छै रसिआ ॥ धात्री दोषनै दूती कहियै, तीजै निमित्त करै नही रसिआ ॥ तृ० ॥ ४ ॥ आजीवक नीपक तेगच्छक, क्रोध मान माया नही रसिआ ॥ लोभ दोष दशमैं नही लावै, इण पर मुनिवर ज्ञान वरसिआ ॥ तृ० ॥ ५ ॥ पहली पीछै स्तवना करकै, विद्या मंत्र करी गुण सिआ ॥ चूर्ण जोग इत्यादिक कलकै, लै नहि मुनि जिन आण

फरसिआ ॥ तृ० ॥ ६ ॥ इण विध दोष बत्तीसे दाख्या, हिव दोतुं कर जाणो भवि रसिआ ॥ संकित मंखित निखत कहिये, पिहित दोष जाणो मुनि रसिआ ॥ तृ० ॥ ७ ॥ साहर दायक मिश्रक कहिये, अपरिणय दोष कह्यो जिन रसिआ ॥ लिप्त दोष नवमे जिन भाख्यो, दशमो छर्दित दोष छै रसिआ ॥ तृ० ॥ ८ ॥ ए दस एषणा दोषज कहिये, तीजी सुमतें जाणो मुनि रसिआ ॥ तृ० ॥ इण विध दोष बयालिस टालै, ते मुनिवर मुझ मनमें वसिया ॥ तृ० ॥ ९ ॥ त्रिकरण सुद्ध करी मुनिवंदन, पाप पंक सब दूरै घसिआ॥जिम अलि केतकी रस ले जावे, तिम पीडा देवे नही रसिआ ॥ तृ० ॥ १० ॥ जिम मुनि गोचरी जावै जुगतें, आहार करी सुख पावै मेरे रसिआ ॥ इण विध श्रीजिनराज वखांणे, ए सुमती पालो भवि रसिआ ॥ तृ० ॥ ११ ॥ सकल सुरासुर सेवत जाकुं, लुल२ जिनवर पाय फरसिआ ॥ पुष्प मालसें पूजन करतां, आतम अनुभव ज्ञान वरसिआ ॥ तृ० ॥ ॥ १२ ॥ सुमति कहे ए एषण सुमती, पूजो भवि तुमे अधिक उलसिआ ॥ तृ० ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीपरमात्मने अनंतानंतज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीम० एषणासुमतीधारकेभ्यः पुष्पमालं यजामहे स्वाहा ॥ इति पुष्पमाल पूजा ॥ ३ ॥

॥ अथ चोथी धूप दीप पूजा ॥

॥ दूहा ॥ चोथी पूजा अवसरे, धूप दीप सुखकार ॥ मिथ्या तम दूरे करी, प्रगटे ज्ञान अपार ॥ १ ॥ हिव चोथी सुमती तणो, पूजन विध विसतार ॥ कहूं भगत मन रंजवा, सास्त्र थकी सुविचार ॥ २ ॥ ग्रहण निखेपण कारणे, सुमति धरे मुनिराज ॥ ते जुगतें पाले सदा, भवसायरनी पाज ॥२॥

॥ दाल ॥ श्रीचंद्रप्रभु जिनवर माहिब, सुणियो अरज हमारी ॥

मैंवारी जाउं ॥ सु० ॥ ए चाल ॥ सुमती चोथी इणपर सेवो, भव्य सकल हितकारा ॥ मैं वारिजाउं ॥ भ० सु० ॥ भंडमात्र निक्षेपन काजे, सुमति धरे अणगारा ॥ में० सु०॥ जयणा कर चाले मुनिवरजी, निरमल मन अविकारा ॥ में० नि० सु० ॥ १ ॥ वस्त्र पात्र उपधि जयणासें, पडिलेहै मुनि सारा ॥ में० प० ॥ इरजा सुमति सोधन करता, विचरै पर उपगारा ॥ में० वि० सु० ॥ २ ॥ भव्य सकल उपगार करंता, निरमल गुण भंडारा ॥ में० नि० ॥ गाम नगर पुर पट्टण विचरै, प्रतिबोधै भवि सारा ॥ में० प्र० सु० ॥ ३ ॥ ग्रहण आसेवन शिख्या धरकै, निज आतम सुखकारा ॥ में० नि० ॥ राग द्वेष अभ्यंतर ग्रंथी, दूर करै भवि प्यारा ॥ में० दू० सु० ॥ ४ ॥ क्रोध मान माया नहि जिनकै, सो साधु मनुहारा ॥ में० सो० ॥ पंच सुमति अरु तीन गुपतकुं, पालै निरतीचारा ॥ में० पा० सु० ॥ ५ ॥ दस विध साधु धर्म आराधै, पालै पंच आचारा ॥ में० पा० ॥ सतरै भेदे संजम पालैं, बोलै बोल विचारा ॥ में० बो० सु० ॥ ६ ॥ सावज्ज किरिया मूल न सेवै, सो मुनि जग जयकारा ॥ में०सो०॥ हास्यादिक सब दूर करीने निरमम निरहंकारा ॥ में० नि० सु० ॥ ६ ॥ इत्यादिक मुनिवर गुण गावो, पूजो जग भरतारा ॥ में० पू० ॥ ग्रहण निखेपण सुमती सेवो, पावो बोध उदारा ॥ में० पा० सु० ॥ ८ ॥ सुद्धातम गुण जबही प्रगटे, सुमति कहे गुणधारा ॥ में० सु ॥ धूप दीपसें पूजन करके, करियै निज गुण सारा ॥ में० क० सु० ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं श्रीपरमात्मने अनंतानंतज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीम० आदानभंडनिक्षेपण सुमतिधारकेभ्योः दीपं धूपं यजामहे ॥ इति धूप दीप पुजा ॥ ४ ॥

॥ अथ पांचमी अक्षत पुजा ॥

॥ दूहा ॥ अक्षत पूजा पंचमी, कंचन थाल विशाल ॥ पूज करो प्रभू आगले, फले मनोरथ माल ॥ १ ॥ प्रभू पूजा ए पंचमी, पंच हरी परमाद ॥ पंच सुमत गुण धारता, पावे परम आल्हाद॥२॥

॥ ढाल ॥ आज आयो रे उछाह, जिवडा नाच जिणंद आगे॥ ए चाल ॥ आज अधिक उछाह, जिनवर पूजन करिये रे ॥ आ० ॥ आंकणी ॥ पंचमी सुमति है परधान, सुभ मन धरिये एहसुं घ्यान ॥ लघुवडनीत परठवा काज, मुनिवर पाले सुमती साज ॥ आ० ॥ जि० ॥ १ ॥ उच्चार पसवण सुमती जाण, खेल सुमति पालो मुनि भाण ॥ तप जप संजमपालणहार, नहि निद्या नहिं विकथा च्यार ॥ आ० जि० ॥ २ ॥ जिम शशि सोहै गगन मझार, तिम मुनि सोहै जग जयकार ॥ करता भूमंडल उपगार, धरता वरता निज ण सार ॥ आ० जि० ॥ ३ ॥ धन्य दिवस धन वेला जांण, ऐसा साधु मिले गुण खाण ॥ धन धन्ना ने शालकुमार, वीर वचन निज चितमें धार ॥ आ० जि० ॥ ४ ॥ माया ममता कर परिहार, थया जोगीसर अधिक उदार ॥ पंच सुमति पाले वडवीर, शालकुमर ने धन्नो धीर ॥ आ० जि०॥५॥ इत्यादिक मुनि गुणके धार, करम कलंक सव दूर निवार ॥ वीर वचन पाले निस दीस, एहवा साधु नमुं जगदीस॥ आ० जि० ॥ ६ ॥ इण विध दान देवो श्रीकार, जिनवर भाखे कर उपगार॥ इण पर सुमती साध महंत, चरण करण गुण भरिया दंत ॥ आ० जि० ॥७॥ इण पर सुमती पंचमी जाण, सूत्रे दाखी श्रीजगभाण ॥ सांभलजो तुम नर ने नार, अक्षत पूज करो भविसार ॥ आ० जि० ॥ ८ ॥ पंचमी पूजा अधिक उदार ॥ भावसुं लहियें लाभ अपार ॥ तन मन सुचिसे पूजो देव, सुमनि करे प्रभुनी नित सेव

॥ आ० जि० ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीपरमात्मने अनं० जन्मज० श्री म० उच्चारपासवण खेलजल्लसंघाणपरिष्ठावनसुमतिधारकेभ्यः अक्षतं यजामहे स्वाहा ॥ इति अक्षत पूजा ॥ ५ ॥

॥ अथ छठी नैवेद्य फल पूजा ॥

॥ दूहा ॥ छठ्ठी पूजा साचवे, श्रावक सुभ मतिवंत ॥ उत्तम फल नैवेद्यसुं, पूजे श्री भगवंत ॥ १ ॥ प्रथम गुपति पूजा करो, भाव धरी भगवंत ॥ असुभ करम दूरे करो, पांमो सुख्ख अनंत ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ सो जोगी गुरु मेरा रे ॥ अबधु, सो० ए चाल ॥ ए गुपती नित धरिये रे, सुमती ॥ एगु० ॥ ए गुप्ती है करमनी लुप्ती, समझ२ तुं भोरा ॥ अष्ट करमको फंद रच्यो है, सद्गुरु करत निहोरा रे, सु० ॥ ए० ॥ १ ॥ राग द्वेषकी गांठ लगी है, मोहनी देत झकोरा ॥ जेती लहर समंदकी छाजै, तेती मनकी दोरा रे, सु० ॥ ए० ॥ २ ॥ अवर काम सब दूर करत है, ए मन चंचल चोरा ॥ एहने जीते सो जग जींते, सोही सदगुरु मोरा रे, सु० ॥ ए० ॥ ३ ॥ कबही गयण पयाले जावै, कबही पारस चाहै, कबही जोग भोग में रमतो, कबहु भूप सराहै रे, सु० ॥ ए० ॥ ४ ॥ कबहुं चाहै काच कथीरा, कबहुक हीरा भावै, कबहु चाहै कांसी पीतल, कबहु देव मनावै रे, सु० ॥ ए० ॥ ५ ॥ कबहु करम धरम नवि जाणे, मूरख नाम धरावे ॥ कबहु ज्ञान विज्ञान विचारे, कबहु ध्यान लगावे रे, सु० ॥ ए० ॥ ६ ॥ कबहु माणक मोती चाहै, कबहु सोना तोलौ ॥ ए मनराजा सो वस आणै, सोही साधु अमोलौ रे, सु० ॥ ए० ॥ ७ ॥ भाव धरी गुपती ए सेवो, भविकसदा चिरनंदो ॥ सोवन वरण सिंहासण बैठे, जगनायक जिनचंदो रे, सु० ॥ ए० ॥ ८ ॥ छठ्ठी नेवज पूजा करिये, भाव सहित सुखकारा ॥ अनुपम मोतीचूर मगदना, मोदक विविध प्रकारा रे, सु० ॥ ए० ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं श्रीपरमात्मने अनंता० जन्म० श्रीम० मनोगुप्तिधारकेभ्यो नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति नैवद्य फल पूजा ॥ ६ ॥

॥ अथ सातमी भामंडल नृत्यनाटक पूजा ॥

॥ दूहा ॥ वचन गुपति नित पालता, जगजीवन प्रतिपाल ॥ भविक सदा प्रति बोधता, मोटा साधु दयाल ॥ १ ॥ नृत्य करो प्रभु आगले, भाव धरी मन मांहि, रावण नैं मंदोदरी, अधिक धरी उच्छाह ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ पनरम पद गुण गाना हो भवि ॥ पनर० ॥ ए चाल ॥ जिनजीकी पूज सवाई हो भवि ॥ जि० ॥ गोत्र तिर्थंकर छिन में बांध्यो, श्रीजिनराज कहाई हो भ० ॥ जि० ॥ पूठ भामंडल अधिक विराजत, झिलकत जिम दिनराई हो भ० ॥ जि० ॥ १ ॥ मिथ्या तम सब दूर करत है, प्रगटे ज्ञान अमाई हो भ० ॥ जि० ॥ सब सखियन मिल मंगल गावत, सब शृंगार बनाइ हो भ० ॥ जि० ॥ २ ॥ परम पुरुष परमेसर देखी, आनंद होत सवाई हो भ० ॥ जि० ॥ इंद्राणी सब भगते जुगते, श्रीजिन पूज रचाई हो भ० ॥ जि० ॥ ३ ॥ कर वंदन सबही सुर रामा, राग छत्तीस सुणाई हो भ० ॥ जि० ॥ क्षोम जुगल प्रभु आगे धरके, लुल२ सीस नमाई हो भ० ॥ जि० ॥ ४ ॥ तीन लोकको नाथ निरंजन, मंजन पाप सिलाई हो भ० ॥ जि० ॥ चोसठ इंद्र करे मिल उच्छव, बांटत हरख वधाई हो भ० ॥ जि० ॥ ५ ॥ थेई थेई नाच करे प्रभु आगल, ताल मृदंग वजाई हो भ० ॥ जि० ॥ धपमप धपमप चंग वजत है, गावत गुण सुरराई हो भ० ॥ जि० ॥ ६ ॥ जिन गुण गावत हरख वधावत, धन२ सफल कमाई हो भ० ॥ जि० ॥ तीन लोक जाकुं नित ध्यावे, तारण तरण सदाई हो भ० ॥ जि० ॥ ७ ॥ नृत्य करत अरु भ्रमरि देत है, हाव भाव दिखलाई हो

भ० ॥ जि० ॥ ठमठम नाचत वजत घुघरिआ, रमझम नाद सुहाई हो ॥ भ० जि० ॥ ८ ॥ इत्यादिक नाटक विध करके, समकित सुद्ध उपाई हो भ० ॥ जि० ॥ सुमति कहे ए जिनवर सेती, साची प्रीत वधाई हो भ० ॥ जि० ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं श्रीपरमात्मने अनंता० जन्मजरामृ० श्रीमत्० वचनगुप्तिधारकेभ्यो नाटकं भामंडलं यजामहे स्वाहा ॥ इति भामंडल नाटक पूजा ॥ ७ ॥

॥ अथ आठमी ध्वजा अष्टमंगल पूजा ॥

॥ दूहा ॥ ध्वज पूजा ए आठमी, करो भविक गुणवंत ॥ अष्टमंगल आगे धरो, इम भाखे भगवंत ॥१॥ सुर सुंदर हरखे करी, सव श्रृंगारसजंत ॥ सुंदर ध्वज पूजन करे, हृदयकमल विकसंत ॥ २॥ काय गुपति पाले सदा, सूधा साधु महंत ॥ पूजो हित धर भावसुं, ज्युं पावो सुख संत ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥ राग वरवो ॥ अबतो उधारयो मोहि चहिये, जिनंद राय राखुं० ॥ ए चाल ॥ आज भविक तुम्ह पूजन करके, जनम मरण दुख दूर हरो रे ॥ आ०॥ उज्जल अमल अखंडित तंदुल, प्रभु आगे मंगलीक करो रे ॥ सव श्रृंगार सजी सुर सुंदर, चंद्रमुखी प्रभू पाय परो रे ॥ आ०१॥ वाजित ताल मृदंग वंसरी, धपमप धूं धूं कार करो रे ॥ किटतिंगिगडदं,२ धूधूकिट धूटनट नाद करो रे ॥ आ० ॥ २ ॥ वेणू वीणा मुरज दुंदुभि सुरणाइ वलि झांझ खरो रे॥ और अनेक ताल स्वर करके, प्रभुजीका गुण ग्राम करो रे ॥ आ०॥३॥ इंद्रादिक जिन भक्ती करके, जय२ तुं जगनाथ खरो रे ॥हाथ जोडकर अरज करतहुं, भव दुख सबही दूर हरो रे ॥ आ०४॥ पंच वरण ध्वजकी मनमोहन,पूजन कर प्रभु पाय परो रे॥जनम२ सुख पावो भवि जन, प्रभूजीको दिल ध्यान धरो रे ॥ आ० ॥५॥ निरमल ज्योत अखंड विराजे, जिनपति आंण अखंड करो रे ॥ इण विध पूजन

जिनकी करतां, सुमति सदा गुणरास वरो रे ॥ आ० ॥ ॐ ह्रीं श्रीपरमात्मने अनंता० जन्मज० श्रीमत्० काय गुप्तिधारकेभ्यो ध्वजा अष्टमंगलं यजामहे स्वहा ॥ इति ॥

॥ अथ कलश ॥

॥ तेज तरण मुख राजे हो, प्रभु थारो ते० ॥ ए चाल ॥ निरख२ गुण गाया हो, प्रभु थारा नि० ॥ प्रवचन मातकी पूजन करके, भव्य सकल सुख पाया हो ॥ प्र० नि० ॥ १ ॥ द्रव्य भाव विहुं भेदे करने, भविय भगत हित दाया हो ॥ परम पुरुष परमेसर पूजो, आनंद होत सवाया हो ॥ प्र० नि० ॥ २ ॥ भाव धरी तन मन कर उज्जल, भक्ति सहित गुण गाया हो ॥ वीकानेर नगर अति सुंदर, राजत संघ सवाया हो ॥ प्र० नि० ॥ ३ ॥ खरतर गछपति चंद सूरीसर, संप्रति राज सुहाया हो ॥ प्रीतसागर गणि शिष्य सुवाचक, अमृत धरमसु पाया हो ॥ प्र० नि० ॥ ४ ॥ सुद्ध क्षमा कल्याण सुपाठक, धर्म त्रिशालमें पाया हो ॥ तसु नंदन गणि सुमति भावसें, पूजन एह वणाया हो ॥ प्र० नि० ॥ ५ ॥ उगणीसें चालीसे सावण, सुद तेरस वरदाया हो ॥ निरमल गुण गण परमल महके, देख दरस हुलसाया हो ॥ प्र० नि० ॥ ६ ॥ कुशल निधान मोहन मुनिवरकी, प्रेरणया मन भाया हो ॥ श्रीजिनराज चरण कज सेवत, मंगल होत सवाया हो ॥ प्र० नि० ॥७॥ इति अष्टप्रवचन माताकी पूजा संपूर्णम् ॥

॥ अथ प्रवचन मात पूजा विधि ॥

॥ जल, केसर मासा ५, फूलांरी माला १, धुप, घीरत, अक्षत, मिठाई, भामंडल १, धजा १, अष्ट मंगलीक १, सिनात्रकी थाली १, रोकडा रु० ४), ज्ञान पुजारो १, चावल, नालेर नंग ६, लोंग १, अंगलुहणा नंग २, कुंकुं, मोली, विदाम, मेवो, सुपार्यां, पंचामृत,

अशोकवृक्ष, कल्पवृक्ष, सासन देवी चकेसरी, अंगी, खेत्रपाल, पूजा ॥ विशेष विधि गुरू मुख जाणना. १) कलसमें १) भामंडल १) धजा १) अष्ट मंगलीक १) सिनात्र थापना १) अशोकवृक्षरो धजा साथ अंगीसारु ११)

॥ अथ सुगणचंद्रोपाध्याय कृत ॥
॥ इग्यारे गणधरकी पूजा ॥

॥ तत्र ॥

॥ प्रथम जल पूजा ॥

॥ दूहा ॥ इंद्रभुति आदे नमुं, अग्निभूत उदार ॥ वायूभूत मनोहरू व्यक्त सुधर्मा सार ॥ १ ॥ मंडित मोरियपुत्रजी, सदा नमुं सुखकार ॥ अकंपित वलि आठमो, अनुपम सुख दातार ॥ २ ॥ अचल भ्राता नवमो नमुं, मेतारज सिरदार ॥ प्रभास इग्यारम वंदिये, संघ सदा जयकार ॥ ३ ॥ जेष्ट पुत्र श्रीवीरना, दया तणा भंडार ॥ गौतम गोत्रे दीपता, पृथवी मात मल्हार ॥ ४ ॥ धणवर गुव्वर गाम है, श्रीवसुभूत उदार ॥ तसु कुलदीपक चंद ज्युं, करता भवि उपगार ॥ ५ ॥ कंचन कलश लेई करी, पुजो गुरूके पाय ॥ पूजत पावो संपदा, लछिछ मिले घर आय ॥ ६ ॥ कंचन कमल विराजता, शासनना सिणगार ॥ सेवो गोतम गणधरू, ऋध सिध दायक सार ॥ ७ ॥

॥ ढाल ॥ बलिहारी गोतम गणधरकी ॥ ब० ॥ गोतम गणधर सब जन सुखकर, महिमा अधकी मुनिवरकी ॥ ब० ॥ कामधेनु गो शब्द थकी हे, ततें ओपम सुरतरुकी ॥ ब० ॥ १ ॥ मम्मै मणि चिंतामण कहिये, ऐसी ओपम सदगुरुकी ॥ ब० ॥ १ ॥ लबध अठ्ठाइसके गुरु धारक, ऋद्ध सिद्ध दायक बहुतरकी ॥ ब० ॥ २ ॥

गोतम गोतम ध्यान धरंतां, ऋद्धि लहे अलवेसरकी ॥ व० ॥ ३ ॥ व० ॥ पृथवी मात पिता वसुभूति, ओपम कहिये सुरगिरकी ॥ व० ॥ ३ ॥ अष्ट सिद्ध नव निधके दाता, कहुं महमा ऐसी गण धरकी ॥ व० ॥ कंचन कमल विराजे सदगुरु, देशना दे हदवेसर की ॥ व०॥४॥ ऐसे गणधर गोतमस्वामी, पूज करो गुरु अघ हर की ॥ व० ॥ धरम विशाल दयाल पसाये, सुमती सोभा मुनिव रकी ॥ व० ॥ ॐ ह्रीं श्रीसकलसुखदायकेभ्यो गौतमगणधरेभ्यो अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति प्रथम इंद्रभुती गौतम गणधर जल पूजा ॥ १ ॥

॥ अथ बीजी चंदननी पूजा ॥

॥ दूहा ॥ अग्नी भुत दूजा नमुं, गोतम गोत्र उदार ॥ वीर च रण सेवा करे, लवघ तणा भंडार ॥ १ ॥ अष्ट द्रव्य लेई करी, पू जो श्रीगणधार ॥ पूजत पावो संपदा, ज्ञान तणा दातार ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ श्रुत अतिह भलो ॥ ए चाल ॥ गुरु ज्ञान जयो, स कलागमना भासक गणधर देव कह्यो ॥ गु० ॥ वलि अग्नीभूत दूजो कहिये, सुभ गोतम गोत्रे सरदहिये, गुरु ध्यान सदा दि लमें चहिये ॥ गु० स० ॥ १ ॥ जसु पांचसें शिष्य सदा कहिये, गुण आगर सागर ज्युं लहिये, जसु कीरत जगमें महमहिये ॥ गु० स० ॥ २ ॥ जसु सेव करे बहु नर नारी, विद्या गुणमें गुरु अति भारी, सब देखत हरखे नर नारी ॥ गु० स० ॥ ३ ॥ तारा विच चंद विराजे छे, जिम अंवर मेहला गाजे छे, तिम ए गुरु गणधर छाजे छे ॥ गु० स० ॥ ४ ॥ प्रभु पासे त्रिप दी लेवे छे, गुरु ज्ञान सदा जन देवे छे, गुरु वीरचरण नित सेवे छे ॥ गु० स० ॥ ५ ॥ गुरु पूजन कर तन मन सेती, एकादश दे वो वलि जैती, जिम भाग वधे बहु धन सेती ॥ गु० स० ॥ ६ ॥

अमृत सम गुरुनी वाणी छे, जग सगले मांह वखाणी छे, धन जे नर एहने जाणी छे ॥ गु० स० ॥ ७ ॥ गुरु रूप मनोहर दीपे छे, वलि कुमति कदाग्रह जीपे छे, गुरु कर्म जाणी नहीं छीपे छे ॥ गु० स० ॥ ८ ॥ गुरु सुरतकी जाउं बलिहारी, सहु देखत हरखे नर नारी, गुरु वीरनी आज्ञा अवधारी ॥ गु० स० ॥ ९ ॥ गुरु वंछित पूरण सुखकारी, इम सुमति कहें गुरु जयकारी, नित वंदो गणधर जसधारी ॥ गु० स० ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीअग्निभूतगणधरेभ्यो अष्टद्रव्यं यजामहे ॥ इति बीजी अग्नीभुती गणधर चंदन पूजा ॥ २ ॥

॥ अथ त्रीजी पुष्प पूजा ॥

॥ दूहा ॥ अष्टद्रव्य लेइ करी, पूज रचो श्रीकार ॥ पंचवरण पुष्पे करी, पूजो विविध प्रकार ॥ १ ॥ तीजा गणधर नित नमुं, भाव धरी मतिवंत ॥ वायुभूति नामे भलो, गुणनिध ज्ञान अनंत ॥ २ ॥ गोतम गोत्रे दीपता, जाणे पूनम चंद ॥ पांचसें शिष्यसुं परिवरया, सोहे अधिक मुनिंद ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥ दरसणके लोभी नैना ॥ ए चाल ॥ गुरु ज्ञान सदा मुझ देना हो, गु० ॥ हे मानो हमारा कहना हो ॥ गु० ॥ गुरु दरसण जिया नित नित चाहे, सफल हुवे निज नैना हो ॥ गु० ॥ तुम विन अवर न को उपगारी, भव भवमें सुख दैना हो ॥ गु०॥ १ ॥ पूरव चवद रच्या श्रुतसागर, नित मुजरा मुझ लैना हो ॥ गु० ॥ अतिसय विद्याधारक तुम हो, जगजीवन जग सेना हो ॥ गु० ॥२॥ ज्ञान दान देता उपगारी, भव्य सकल सुख देना हो ॥ गु० ॥ कामधेनु चिंतामणी तरुको, ओपमा इनकुं देना हो ॥ गु० ॥ ३ ॥ मै हुं दास तुमारो सदगुरु, दया हमारी लेना हो ॥ गु० ॥ उपगारी उपगार करत हे, पलटत नांही वैना हो ॥ ग० ॥ ४ ॥ वेर वेर में अरज करतहुं, मुझकुं वंछित दैना हो ॥ गु० ॥ धरम विशाल दयाल

के नंदन, सुमति कहे सुभ वेना हो ॥ गु० ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीतृतीयगणधरेभ्यो अष्टद्रव्यं यजा० ॥ इति तीजी वायुभती गणधर पुष्प पूजा ॥ ३ ॥

॥ अथ चोथी धूप पूजा ॥

॥ दूहा ॥ अष्ट द्रव्यसुं पुजिये, चोथा गणधर सार ॥ धूपादिक विधसुं करो, उत्तम भावसु धार ॥ १ ॥ व्यक्त प्रभुजी वंदिये, ज्ञान प्रगट दातार ॥ ऋद्ध सिद्ध दायक गणिवरा, भव्य सकल सुखकार ॥ २ ॥ भाग्द्वायन गोत्र हे, पांचसें शिष्य प्रधान ॥ वीर चरण सेवा करे, कला वहुत्तर जान ॥ ३ ॥

॥ दाल ॥ जिनजीसें नेह लगावो रे मनवा ॥ ए चाल ॥ व्यक्त दयानिध गावो रे, भवियां ॥ व्य० ॥ ए गुरुदेव सदा वंदिने, पापको मेल गमावो रे ॥ भ० व्य० ॥ १ ॥ अतिसयवंत महा उपगारी, वंदी बोध उपावो रे ॥ भ० व्य० ॥ एहनी महिमा नित नित करिये, ज्युं जग शोभा पावो रे ॥ भ० व्य० ॥ २ ॥ तप करवा जे महा वलवंता, भवि गुण सुण मन लावो रे ॥ भ० व्य० ॥ लबध अट्ठाइस जिनके कहिये, ऐसा गुरु नित ध्यावो रे ॥ भ० व्य० ॥ ३ ॥ मृगमद अंबर चंदन लेइ, मांह बरास मिलावो रे ॥ भ० व्य० ॥ पूजन कर गणधर सब ध्यावो, ज्युं लिखमी बहुली पावो रे ॥ भ० व्य० ॥ ४ ॥ पूरव चवद वखाणे सदगुरु, द्वादश अंग दिखावो रे ॥ भ० व्य० ॥ धरम विशाल दयाल पसाये. सुमति सदा गुण गावो रे ॥ भ० व्य० ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं चतुर्थगणधरेभ्यो अष्टद्रव्यं० यजामहे ॥ इति चोथी व्यक्त गणधर धूप पूजा ॥ ४ ॥

॥ अथ पांचमी दीपक पूजा ॥

॥ दूहा ॥ दीपक पूजा पंचमी, करो भविक गुणवंत ॥ दीपक ज्युं प्रगटे सही. केवल ज्ञान अनंत ॥ १ ॥ अष्ट द्रव्य लेई करी, पू

ज रचावो सार ॥ पंचम गणधर पूजतां, सदा हुवे जयकार ॥ २ ॥ अग्नीवेश्यायन गोत्रहे, पांचसें चेला जाण ॥ जास सुधरमा नाम हे, सब गुणकी हे खाण ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥ गढ गीरनारकी तलहटी ॥ ए चाल ॥ तनकर मन कर पूजिये, गुण गिरवा मोहन गणधार ॥ त० म० ॥ रूप मदन हरावता, सहू निरखी मोहे नर नार ॥ त० म० ॥ १ ॥ वाणी अमृत वरसती, सहु लागे मीठी बहु सार ॥ त० म० ॥ धम्मिल कुलमणि दीवलो, जसु माता भद्दिलाऽवधार ॥ त० म० ॥ २ ॥ कोलागपुरमें सोभता, जसु चेला पांचसें जयकार ॥ त० म० ॥ पूरब चवद परूपता, सहु करता जगमें उपगार ॥ त० म० ॥ ३ ॥ द्वादश अंग वखाणता, करुणानिध कहिये भंडार ॥ त० म० ॥ मान नही माया नही, नहि निंद्या नहि लोभ प्रचार ॥ त० म० ॥ ४ ॥ एसे सद्गुरु पूजतां, ऋद्ध लहिये सगली सुखकार ॥ त० म० ॥ विनय विवेक विद्या घणी, गुरु सेवा करता इकतार ॥ त० म० ॥ ५ ॥ विकथा न करे केहनी, गुरु राजे जैसा दिनकार ॥ त० म० ॥ महिमा जगमें हुय रहि, जिम महके केतकी गुलझार ॥ त० म० ॥ ६ ॥ एसा पंचमा गणधरु, सोधरमास्वामी अवधार ॥ त० म० ॥ जे नर पूजे भावसुं, ते पामे वंछित सब सार ॥ त० म० ॥ ७ ॥ आज कलप तरू मुझ फल्यो, आज वूठा अमृत जलधार ॥ त० म० ॥ श्रीगणधर गुरुरायना, गुण गाया मन हरष अपार ॥ त० म० ॥ ८ ॥ धरम विशाल दयालनो, कहे सुमति गुरु गुण मनुहार ॥ त० म० ॥ द्रव्य भाव कर पूजता, सुख लहिये अविचल अवधार ॥ त० म० ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीपंचमगणधरेभ्यो अष्टद्रव्यं यजा० ॥ इति पांचमी सुधरमागणधर दीपक पूजा ॥ ५ ॥

॥ अथ छठी अक्षत पूजा ॥

॥ दूहा ॥ छठा गणधर पूजीये, भाव धरी मतिवंत ॥ अष्टद्रव्य लेई करी, पूज करो बुधवंत ॥ १ ॥ गिरवा मंडित गणधरु, विजया सुत अवधार ॥ धनदेव कुल दीवलो, जाणे सहु संसार ॥ २ ॥

॥ ढाल पिणहारीनी ॥ मंडित गणधर पूजिये, सुखकारी रे लोय ॥ भाव धरी मन रंग, वाला जो ॥ विजया कुखे अवतर्या, सु० ॥ करता जग उपगार ॥ वा० ॥ १ ॥ संजम सतर प्रकारनो, सु० ॥ पाले निरतीचार ॥ वा० ॥ वीर आणा सिर धारता, सु० ॥ करता धरम व्यापार ॥ वा० ॥ २ ॥ माया ममता छोडने, सु० ॥ भये मुनिवर अविकार ॥ वा० ॥ परमारथरे कारणे ॥ सु० ॥ भाखे ज्ञान उदार ॥ वा० ॥ ३ ॥ लवध अठाइसना धणी ॥ स० ॥ अतिसय जास अपार ॥ वा० ॥ वीर पास त्रिपदी लही, ॥ सु० ॥ सूत्र रचे हितकार ॥ वा० ॥ ४ ॥ ऐसे मंडित स्वामकुं ॥ सु० ॥ पूजो थे गुण गेह ॥ वा० ॥ ऋद्ध सिद्ध दायक ए सही, सु० धरिये परम सनेह ॥ वा० ॥ ५ ॥ धरम विशाल दयालनो, सु० ॥ सुमति कहे करजोड ॥ वा० ॥ निसदिन श्रीगणरायने, सु० ॥ वंद्यां संपत कोड ॥ वा० ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीछठामंडितगणधरेभ्यो अष्टद्रव्यं ॥ इति छठी मंडित गणधर अक्षत पूजा ॥ ६ ॥

॥ अथ सातमी नैवेद्य पूजा ॥

॥ दूहा ॥ मोदक मोतीचूरना, सिंहकेसरीया सार ॥ अष्ट द्रव्य लेई करी, पूज करो मनुहार ॥ १ ॥ श्रीधनदेव विजया सुतन, सातमा गणधर सार ॥ बलिहारी गुरु नामनी, वंछित पूरण कार ॥२॥ मोरियै नगरे दीपतो, मोरियपुत्र उदार ॥ भाव धरी नित वांदतां, पावो सुख श्रीकार ॥ ३ ॥

॥ ढाल ल्हअरनी ॥ मोरियै नगरे दीपतो, मोरियपुत्र उदारो हे

माय ॥ मो० ॥ विजया माता जेहनी, जिण जायो सुत मनुहारो हे माय ॥ मो० ॥ १ ॥ मोरियपुत्र चिरंजयो, ए सातमा मुनि भानो हे माय ॥ कला बहुत्तर जाण छे, वालि वीर तणा सुलता नो हे माय ॥ मो० ॥ २ ॥ वीर तणी वाणी सुणी, लीनो संयम भारो हे माय ॥ सिह तणी पर पालता, दुक्कर व्रत मनुहारो हे माय ॥ मो० ॥३॥ क्षमा करीने राजता, जिम मेरु परै अवधीरो हे माय ॥ चेला साढी तीनसें, जसु पाले आण उदारो हे माय ॥ मो० ॥४॥ कूड कपट नही जेहने, नही कोई विषय विकारो हे माय ॥ चवदे पूरव जाण छे, वलि सुमतारस भंडारो हे माय ॥ मो० ॥५॥ पर उपगारी एहवा, नही दूजो जग अवधारो हे माय ॥ सुरनर सहू सेवा करे, ज्यारी महिमा जग विसतारो हे माय ॥ मो० ॥ ६ ॥ वंछित पूरण सुरतरु, ए सातमा श्रीगणधारो हे माय ॥ सुमति सदा भल भावसुं, प्रणमे वारंवारो हे माय ॥ मो० ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं श्री मोरियपुत्रगणधरेभ्यो अष्टद्रव्यं० यजा० ॥ इति सातमी मोरियपुत्र गणधर नैवेद्य पूजा ॥ ७ ॥

॥ अथ आठमी फल पूजा ॥

॥ दूहा ॥ फल पूजा गुरुदेवकी, करो भविक गुणवंत ॥ उत्तम फल आरोपिये, भाव धरी जसवंत ॥ १ ॥ वसुनंदा कुल दीवलो, अष्टम गणधर एह ॥ अष्ट द्रव्य आगल धरो, पावो सुख नित मेव २॥

॥ ढाल सिद्धचक्रनी ॥ वसुनंदा सुत वंदो रे, भविजन ॥ व० ॥ वंदित होत आनंदो रे, भ० व० ॥ मथुला नगरमें स्वाम विराजे, जाणै पुनम चंदो ॥ वीर चरण सेवा नित सारे, जाणे सहु मुनि वृंदो रे ॥ भ० व० ॥ १ ॥ पुन्यवंत महाबुध सागर, पाले आण अखंडो ॥ विनय विवेक विद्याके सागर, जाणे सहु ब्रह्मंडो रे ॥ भ० व० ॥ तीनसें शिष्य तणे परवारे, दीष्या लै जसधारी, लहि त्रिपदी

जिनराजने पासे, सूत्र रचे सुखकारी रे ॥ भ० व० ॥ ३ ॥ तप जप संयम पालण सूरा, लबध तणा भंडारी ॥ भव्य सकलकुं ज्ञान दान दे, प्रतिबोधै उपगारी रे ॥ भ० व० ४ ॥ रूप अनूपम दीपे जगमें, मोह्या सब नरनारी ॥ सुरपति नरपति सेव करत हे, जय२ जग हितकारी रे ॥ भ० व० ॥ ५ ॥ वीर पटोधर आठमा सोहे, ममता मोहने मारी ॥ ऋद्ध सिद्ध दाता जसधारी, सुरतरु जिम सुखकारी रे ॥ भ० व ॥ ६ ॥ दिनकर जिम त्रिभुवन उपगारी, महिमा गुण भंडारी ॥ धरम विशाल पसाय करीने, सुमति सदा जयकारी रे ॥ भ० व० ॥ ७ ॥ ॐ ह्रूँ श्रीअष्टमगणधरेभ्यो अष्टद्रव्यं यजामहे० इति आठमीऽकंपित गणधर फल पूजा ॥ ८ ॥

॥ अथ नवमी ध्वज पूजा ॥

॥ दूहा ॥ नवमा गणधर पूजीये, नवनिध दायक जेह ॥ अष्ट द्रव्य लेई करी, पूजो धर ससनेह ॥ १ ॥ कोशलगामे दीपतो, अमर नरिंद प्रधान ॥ वसुनंदा सुत गुण निलो, अचलभ्राता अभिधान ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ सुंदर नारी सब सिणगारी, धज पूजन हरषंती रे ॥ पंच वरणकी धज लहकंती, गुरु भगत करो विकसंती रे ॥ सुं० ॥ १ ॥ गुरु दीपक गुरु सूरज कहिये, गुरु सम अवर न हुंती रे॥ उपगारी गुरुदेव जगतमें, उत्तम जेहनी खंती रे ॥ सुं० ॥ २ ॥ तन मन सेती पूज रचावो, ज्युं पावो सुख संती रे ॥ सारण वारण कारक जगमें, महमा जास अनंती रे ॥ सुं० ॥ ३ ॥ विनय विवेक विद्याके सागर, क्रोध तणी नही पंती रे ॥ ऐसे गुरुकी पूजन करतां, दुख सब दूरे जंती रे ॥ सुं० ॥ ४ ॥ वीर प्रभुके गणधर नवमा, पूजो तज मन भ्रंती रे ॥ धरम विशाल दयाल पसाये, सुमति लहे जस कंती रे ॥ सुं० ॥ ५ ॥ नवमा गणधर पूजत भ

विजन, संपद सकल लहंती रे ॥ प्रह ऊठी नित ध्यान धरंतां, प्रगटे ऋद्ध अनंती रे ॥ सुं० ॥ ६ ॥ ॐ ह्रूँ श्रीनवमागणधरेभ्यो अष्टद्रव्यं यजा० ॥ इति नवमी अचलभ्राता गणधर ध्वजपूजा ॥ ९ ॥

॥ अथ दशमी कमल पूजा ॥

॥ दूहा ॥ कमल ठवो गुरु आगले, कंचनमय सुखकार ॥ दिन२ चढते भावसुं, ढोवो हरष अपार ॥ १ ॥ मेतारज गणधर नमुं, दत्त विप्र कुल हंस ॥ देवी वरुणा उर धर्यो, अधिक वधारण वंस ॥ २ ॥ कोडिन्न गोत्रे दीपतो, तुंगिया नगर मझार ॥ आऊ बासठ वरसनो, समर्यां जयजयकार ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥ नेंना सफल भई ॥ ए चाल ॥ सुणजो हरख धरी, वारी हरख० गुरु गुण अधिक उदार ॥ सु० ॥ पंच महाव्रत पालता रे, तप करवा अति सूर ॥ विनय विवेक विद्या घणी रे, ध्यान धरे भरपूर ॥ सु० गु० ॥ १ ॥ ममता न धरे केहनी रे, मोटा मेरु सरीस ॥ जगजीवन प्रतिपालवा रे, जाणो विसवा वीस ॥ सु०गु० ॥ २ ॥ दोष बयालिस टालता रे, न धरे केहसुं द्वेष ॥ विन कारण गुरुदेवजी रे, भाषै धरम विशेष ॥ सु० गु० ॥ ३ ॥ दुखियाने सुखिया करे रे, निरधनकुं धनवंत ॥ मूरखकुं पंडित करे रे, ऐसा गुरुजी महंत ॥ सु० गु० ॥ ४ ॥ ओजस्वी वलि तेजनो रे, पार न पायो कोय ॥ गुण अनेक गुरुराजमें रे, सेव करे सब लोय ॥ सु० गु० ॥ ५ ॥ वार२ श्रीवीरनी रे, आंण धरे गुण गेह ॥ लबध तणा सागर सहू रे, पाले परम सनेह ॥ सु० गु० ॥ ६ ॥ वीर वचन चित धारने रे, व्रत लीनो सुखकार ॥ अतिसय रूप उदारता रे, ऋद्ध तणा दातार ॥ सु० गु० ॥ ७ ॥ वार२ श्रीवीरजी रे, बोले मधुरी वाण ॥ सुण गोतम इण सूत्रनो रे, एह अरथनुं जाण ॥ सु० गु० ॥ ८ ॥ धरम विशाल दयालनो रे, सुमति कहे मनरंग ॥ एहवा

श्रीगुरुराजनी रे, सेव करो चित चंग ॥ सु० गु० ॥ ९ ॥ ॐ ह्रूं श्रीदशमागणधरेभ्यो अष्टद्रव्यं यजाम० ॥ इति दशमी मेतारज गणधर कमल पूजा ॥ १० ॥

॥ अथ इग्यारमी वस्त्र पूजा ॥

॥ दूहा ॥ वस्त्र पूज गणरायनी, करिये विधि विस्तार ॥ सुद्ध वस्त्र लेई करी, चाढो हरख अपार ॥ १ ॥ राजगृही नगरी वसे, गणधर नाम प्रभास ॥ बल अजिता सुत वंदिये, भाव धरी सुविलास ॥२॥

॥ ढाल ॥ श्रीचंद्राप्रभु जिनवर साहब, सुणियो अरज हमारी ॥ ए चाल ॥ धन गणि चंदा, करत आनंदा, सदा भजो सिव चंदा ॥ में वारी जाउं सदा० ॥ घरघर मगल हरख वधाई, प्रगटे सुजस अमंदा ॥ में० ॥ १ ॥ गजवर घोडा घुंमे द्वारे, सोभा अधिक उदारा ॥ में० ॥ भोजन मिष्ट मिले नित मेवा, ऋद्ध मिले सुखकारा ॥ में० ॥ २ ॥ दुक्कर तप जप संजम धारक, लवध तणा भंडारा ॥ में० ॥ सूर वीर महाबुधसागर, जाणे आगम सारा ॥में०॥ ३ ॥ गाम नगर पुर पट्टण विचरे, वरसे अम्रतधारा ॥ में० ॥ पर उपगार करंता विचरे, हाथी सम मनुहारा ॥ में० ॥४ ॥ ऋद्ध सिद्ध दायक गणनायक, सुख दायक इग्यारा ॥ में० ॥ वीर प्रभुके नंदन थुणतां, सदा हुवे जयकारा ॥ में० ॥ ५ ॥ देश जात कुल उत्तम जिनके, राजहंस अवतारा ॥ में० ॥ राग द्वेष सब दूर निवारी, सुमतीना दातारा ॥ में० ॥ ६ ॥ कामधेन चितामण लाधो, सेवो भविक उदारा ॥ में० ॥ अन धन लिछमी दोडी आवे, नवनिध प्रगटे सारा ॥ में ॥ ७ ॥ राजा परजा पाय परे नित, रहे अखूट भंडारा ॥ में० ॥ विविध भोग नित नवला प्रगटे, पावे सुजस अपारा ॥ में० ॥ ८ ॥ धरम विशाल दयाल पसाये, सुमति कहे जस सारा ॥ में० ॥८॥ श्रीगणराजनी पूजा करतां, पामे सब सुख प्यारा

॥ मे० ॥ ९ ॥ ॐ ह्रूँ श्री इग्यारमगणधरेभ्यो अष्टद्रव्यं यजा० ॥ इति प्रभासगणधर पूजा ॥

॥ अथ कलश पूजा ॥

॥ चाल रेखता ॥ आज गुरुराज गुण गायो, पूजतां हरख बहु पायो ॥ वीर प्रभु शिष्य पटधारी, भए गुरु परम गुणधारी॥ आ० ॥ १ ॥ महिमा अधिक मुनिवरकी, पारस सम एह गणधरकी ॥ मिले सब थोक मन भाया, गुरु कृपा अधिक सुखदाया ॥ आ० ॥ २ ॥ वीकाणो सहर सुखदायो, संघ सहु भगत मन भायो ॥ प्रीत सागर शिष्य सुखदाई, अमृत सम धर्म वरदाई ॥ आ० ॥ ३ ॥ क्षमाकल्याण तसु नंदा, धरम विशाल सुखकंदा ॥ वरस उगणीसे पचपन्ने, फागण वदी तेरसी दिन्ने ॥ आ० ४ ॥ हितवल्लभ गणीह सुखदाइ, सुमति सदा एह मन भाइ ॥ करीए पूज सुखकारी, सदा गुरु एह जयकारी ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति श्री इग्यार गणधर पूजा संपूर्णम् ॥ ११ ॥

॥ अथ वाचक अमरसिंधुर कृत ॥
॥ निन्नाणुं प्रकारकी पूजा ॥

॥ तत्र ॥

॥ प्रथम पूजा ॥

॥ दूहा ॥ स्वस्ति श्री दायक सदा, प्रणमीं प्रथम जिणंद ॥ श्री सिद्धगिरि गिर सेहरो, सेवो सुरतरु कंद ॥ १ ॥ भूरमणी सझीया भला, सहु तीरथ सिणगार ॥ पिण ए तीरथ सिर तिलक, राजे श्री गिरि सार ॥ २ ॥ सै मुख सीमंधर वदे, धन तीरथ धर्म धाम ॥ भावे ए गिर भेटतां, कोड सुधरे काम ॥ ३ ॥ जात्रा निनाणुं जे करे, जुगत भगत धर जेह ॥ सात आठ भवमें सही, शिव सुख पामे तेह ॥४॥

पृज निनाणूं प्रकारनी, आठ भेद विध आण ॥ कंचन कलश नवे करी, वार इग्यारे जाण ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ राग रामगिरी ॥ गात्रलु हे जिन मनरंगसुं रे देवा, सखर० ॥ ए चाल ॥ जात्र निनाणुं कीजीये रे देवा, नर भव लाहो लीजीये ॥ दीजीये, हांरे देवा दी० दान सुपात्र सलहीजीये ॥ जा० ॥ १ ॥ छहरी पालतां चालीये रे देवा, कलमल पंक पखालीये ॥ टालीये, हांरे देवा टा० कुविसन नवि संभालिये ॥ जा० ॥ २ ॥ चोथ छठ अठम करी रे देवा, आलोयण विध सुध करी ॥ हित धरी, हांरे० हि० प्रथम पवित्र अंग कीजीये ॥ जा० ॥ ३ ॥ उज्जल अंबर धारीये रे देवा, विनय विवेक विचारीये ॥ संभारीये, हांरे देवा सं० भगत जुगत भल कीजीये ॥ जा० ॥ ४ ॥ प्रथम जिणंद पूजा करो रे देवा, तातें भव सायर तरो ॥ धर्म धरो, हांरे देवा ध० लख नवकार गुणो सही ॥ जा० ॥ ५ ॥ सितअड टुंक अलंकर्यो रे देवा, विमलाचल ए गुण भर्यो ॥ शिव वर्यो, हांरे देवा शि० अनंत कोडी मुनि गिरिवरे ॥ जा० ॥ ६ ॥ पांच सिनात्र प्रथम करो रे देवा, नाम ठाम मनमें धरो ॥ दुख हरो, सुख वरो, हांरे देवा सु० सासय शिवमंदिर तणां ॥ जा० ॥ ७ ॥ मूलनायक पूजो सदा रे देवा, मात मरुदेवा मन मुदा ॥ नित तदा, हांरे० नि० अजित शांति पुंडरगणी ॥ जा० ॥ ८ ॥ पांच कोडी मुनि परवर्या रे देवा, सिद्धगिरी शिव रमणी वर्या ॥ इम तर्या, गुण भर्या, हांरे० गु० भव भय दूर जिणे कर्या ॥ जा० ॥ ९ ॥ काव्य ॥ कलशकंचननीरवरैर्भृतं । करधृतंसुभभावयुतैस्तथा ॥ स्नपवयामियुगादिजिनेश्वरं । सिद्धशैलगिरिराजगुणान्वितं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीयुगादिदेवाय संसारांबुधतारकाय अक्षयसुखदायकाय अष्टविधिपूजनं यजामहेस्वाहा ॥ १ ॥

॥ अथ बीजी पूजा ॥

॥ दूहा ॥ इक इक जे डगलो भरे, शेत्रुंज साम्हो जेह ॥ ऋषभ कहे भव कोडनां, पाप गमावे तेह ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ राग केदारो ॥ पूर्व मुख सावनं, दरिदसन पावनं ॥ अ० ॥ ए चाल ॥ ऋषभ जिनराज महाराज प्रणमी मुदा, प्रहसमे पूजीये सुख निधानं रे ॥ अई० सुख० ॥ दुरित भव ताप संताप मेटण जलध, ऊलस्यो जाण श्रावण समानं रे ॥ अ० व० ॥ १ ॥ एह गिरि भलो त्रिहुं जगे सिर तिलो, बार जोजन अछे अति विशालं रे ॥ अ० अति० ॥ टुंक ढंकादिकं बहुल बनरायकं, राजते ओषधी अति रसालं रे ॥ अ० अ० ॥ २ ॥ बहुल गिरि तरु लता सिखर पर सोभता, मोहता मन्न हरखित अपारं रे ॥ अ० अ० ॥ रतननी खाण सुप्रमाण इण गिरिवरे, रस तणी कुंपिका अति उदारं रे ॥ अ० अ० ॥ ३ ॥ भाग जोगे लहे सुगुरु सै मुख कहे, सकल गिरि मुकटमणि एह सारं रे ॥ अ० ए० ॥ सुरभि फल फूल छाजत छत्र छांह जिम, फबै भू रमण गल फुलमालं रे ॥ अ० फु० ॥ ४ ॥ एह पुन्यखेत्र फरसंत पातिक पुलै, मिलै सुख संपदा अति उदारं रे ॥ अ० अ० ॥ पाय पंथे पुलै कर्म अरियण लुंणै, ध्यान धर्म सुकल मन मांहिं धारं रे ॥ अ० म० ॥ ५ ॥ जात्र कर साधु पडला भतां लाभ बहु, कोडि दस सिंघनी भक्ति सारं रे ॥ अ० भ० ॥ तेहथी अधिक गुरु भक्ति करतां अमल, फल लहे तेह वंछित रसालं रे ॥ अ० वं० ॥ ६ ॥ श्रीऋषभसेन महसेन आदिक जिना, अनंत जिनराज इण गिरि पधारे रे ॥ अ० गि० ॥ अनंत मुनि कोडि कर्म तोडि मुगते गया, तेह त्रिहुंकाल प्रणमुं उदारे रे ॥ अ० प्र० ॥ ७ ॥

काव्य ॥ कलशकंचननीरवरैर्भृतं । करधृतंसुभभावयुतैस्तथा ॥ स्नपयामियुगादिजिनेश्वरं । सिद्धशैलगिरिराजगुणान्वितं ॥ १ ॥ ॐ ह्रूँ श्री

श्रीयुगादिदेवाय संसारांबुधतारकाय अक्षयसुखदायकाय अष्टविधिपू
जनं यजामहे स्वाहा ॥ इति ॥ २ ॥

॥ अथ त्रीजी पूजा ॥

॥ दूहा ॥ बावीसम जिनवर विना, तेवीसे जगतात ॥ इण गि
रि आवि समोसर्या, बहुश्रुत कहे ए वात ॥ १ ॥ रायणरुंख स
मोसर्या, पूरव निनाणुं वार, स्वामी श्रीरिसहेसरु, नमो सदा नर
नार ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ राग आसाउरि ॥ पंच पीरोजा नीलु लसणीया, हां
ए मोति माणक लाल० ॥ ए चाल ॥ असीय सितर साठ तिम
सही, हां ए पंचास वार संख्या लही ॥ कर सात रे, विख्यात रे,
छावीस वीस सोल दश कह्यो हे ॥ छा० ॥ इक योजन उंचपणे
लह्यो, च्यार हाथ रे अखियात रे ॥ १ ॥ साश्वतो तीरथ ए सही हे,
सा० ॥ सुरगिरिनी ओपम इण लही, जात्र कीजे रे, फल लीजे रे,
शेत्रुंज वाटे चालतां हे ॥ शे० ॥ पाय पंथ छए विध पालतां ॥
ब्रह्मचारी रे, भूमिसंथारी रे ॥२॥ पडकमणा दोय कीजीये, हे० ॥ परि
हार सचितनो कीजीये, इक भत्तरे, तनु सत्त रे, करणी इम यात्रा करे ॥
हे० ॥ दुरभव सायर ते तरे, वीर बोले रे, गिर तोले रे ॥ ३ ॥ परसंतां पा
तिक हरे, हे० ॥ वंछित जय लच्छि ते वरे ॥ गुण गावो रे. जात्री आवो
रे, घन२ जे नर जगधरा ॥ हे० ॥ भेटे गिरिराज सुहंकरा, पुन्यवंत
रे, गुणवंत रे ॥ ४ ॥ जिण तीरथ भेट्यो नहीं, हे० ॥ ते गरभावास
आव्या सही ॥ जाणे ढोर रे, भला मोर रे, जे इण गिर वासो वसे,
हे० ॥ गिरिवर देखी मन उल्हसे, सुख साज रे, पुन्य पाज रे ॥ ५ ॥ से
त्रुंज महातमथी सही ॥ हे० नामांकित जेती थ्यो सही, प्रथमेस रे,
जिनेस रे आठ अधिक परदक्षणां ॥ हे० ॥ शित संख्या श्रीमद्गुरु
भण्या, गुरु सेवा रे. नित मेवा रे ॥ ६ ॥ काव्य ॥ कलशकंचननीरगंभीरं

थामियुगादिजिनेश्वरं, सिद्धशैलगिरिराजगुणैर्युतं ॥ ॐ ह्रीं श्रीयुगादिदेवाय संसारांबुधतारकाय अक्षयसुखदायकाय अष्टविधिपूजनं यजामहे स्वाहा ॥ इति ॥ ५ ॥

॥ अथ छठ्ठी पूजा ॥

॥ दूहा ॥ अवचल पद ए गिरिवरे, कर्म अरिगण बहु तोडि, सिद्धवधू स्वयंवर वरी, साधु अनंती कोडि ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ राग जंगलेरी ठुंमरी ॥ तुम विन दीनानाथ दयानिध, कोन खबर ले मेरी ॥ ए चाल ॥ कंचनमय प्रासाद करायो, भरतेसर मनरंग री ॥ भलां० ॥ रतन तणी प्रतिमा तनु मानें, थापी अतिह सुचंग री ॥ भ० कं० ॥ १ ॥ पचास लाख सागर जब वीता, चक्री सगर तिवार री ॥ बिंब भंडार्यो तेह भंडारे, सुर सेवे अणपार री ॥ भ० कं० ॥२॥ ते प्रतिमा प्रथमेस जिणंदनी, सुंदर अति सकलाप री ॥ देव देवी वंदे बहु भावे, जावे पाप संतापरी ॥ भ० कं० ॥ ३ ॥ अठोतरसत्त पूज अनोपम, करतां जनम पवित्र री ॥ बत्रीसबद्ध नाटक वाजित्र विध, तताथेई तांन विचित्र री ॥ भ० कं० ॥ ४ ॥ वाजित्र वीणा मृदंग मनोहर, ताल स्वर ग्रही ग्राम री ॥ हस्त भावादि दिखावत हरखित, तरल लोचना तांम री ॥ भ० कं० ॥ ५ ॥ गुणगण गावे ताल वजावे, सुर मिल एकण छंद री ॥ इम जे भविजन जिन गुण गावे, प्रगटे परमानंद री ॥ भ० कं० ॥ ६ ॥ काव्य ॥ कलशकंचननोरवरैर्भृतं । करधृतंसुभभावयुतैस्तथा ॥ स्नपयथामियुगादिजिनेश्वरं । सिद्धशैलगिरिराजगुणान्वितं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीयुगादिदेवाय । संसारांबुधतारकाय अक्षयसुखदायकाय । अष्टविधपूजनं यजामहे स्वाहा इति ॥ ६ ॥

॥ अथ सातमी पूजा ॥

॥ दूहा ॥ नमि विनमी विद्याधरु, च्यार कोड मुनि चंग ॥ सुमता सागर शिववधू, वरीया रंग तरंग ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ विगडी कोन सुधारे, नाथ विन विग० ॥ ए चाल॥ आज आनदा भेटे वारी, श्रीजिन आद जिणंदा री ॥ आज०॥ नमिराजा चोसठ पुत्रीनां, उल्हसे मन मकरंदा री ॥ आ० ॥ १ ॥ प्रभू पाय वंदे भाव अमदे, पामेजी परम आणंदा री ॥ उलट आणी सांभल वाणी, विकसे मुख छवि चंदा री ॥ आ० ॥ २ ॥ कर दोय जोडी मननी कोडी, अरज करे आणंदा री ॥ नमि विनमी निज सुतकुं तारै, दूर हरै दुख दंदा री ॥ आ० ॥ ३ ॥ तिम प्रभू हम कुंभी तारो, फेडोजी दुरगत फंदा री ॥ आद जिणेसर जग परमेसर, मनरंग महिर समंदा री ॥ आ० ॥ ४ ॥ दीधी दीक्षा गृही गुरू शिक्षा, करणी सुद्ध करंदा री ॥ महाव्रत पाले दोखण टाले, शील धरे सानंदा री ॥ आ०॥ ५ ॥ कलमल टाली पंक पखाली, गहि निज गुणके कंदा री ॥ तप जप खप करणी सुद्ध करतां, काटै कर्मके कंदा री ॥ आ० ॥ ६ ॥ केवल वरीयो सिव सुख दरीयो, सिद्ध गिरेस लहंदा री ॥ चैत्र वदी चौदस दिन याको, पद निरवाण कहंदा री ॥ आ० ॥ ७ ॥ भविजन मिल२ भावन भावो, गावो गुणमणि वृंदा री ॥ आपद टलत मिलत सिव संपद, अमर भणत सानंदा री ॥ आ०॥ ८ ॥ काव्य ॥ कलशकंचननीरवरैर्भृतं । करधृतं सुभभावयुतेस्तथा ॥ स्नपवयामियुगादिजिनेश्वरं । सिद्धशैलगिरिराजगुणान्वितं ॥ १ ॥ ॐ ह्रूं श्रीयुगादिदेवाय । संसारांबुधतारकाय ॥ अक्षयसुखदायकाय । अष्टविधिपूजनंयजामहे स्वाहा ॥ इति॥७॥

॥ अथ आठमी पूजा ॥

॥ दूहा ॥ वरतमान चोवीसिये, मुनिवर जे मनरंग ॥ शेत्रुंजे शिव सुख वरया, कर्मनां तोडी कंद ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ राग सारंग ॥ हांहो रे देवा बावनचंदन घस कुमकुमा ॥ ए चाल ॥ हांहो रे देवा पुंडरीक पांच कोडसुं, शिव वरी

या सिधगिरि ठाण ए ॥ हांहो० भरतचक्री पांच कोडसुं, पद पा म्यो वलि निरवाण ए ॥१॥ हांहो० इक लख मुनिसें परवर्या, श्री सूरजसा सुखदाय ए ॥ हांहो० असंख पाट आदिनाथना, सिव प हुता सार्यां काज ए ॥ २ ॥ हांहो० सागर मुनि इक कोडसुं, सिद्धगिरि सीधी सुप्रसिद्ध ए ॥ हांहो० सागर शिवरमणी वरी, सात कोडि मुनी गुण वृंद ए ॥३॥ हांहो० अजित तीरथ वारे भ ला, शिवसुंदर लही सुख कंद ए ॥ हांहो० सतर कोडि साधु पर वर्या, श्रीअजितसेन आणंद ए ॥ ४ ॥ हांहो० अजित शांति इण गिरवरे, चौमास रह्या चितचंद ए ॥ हांहो० अमरकेतु खेमंकरा, शितपत्र लही शिव चंग ए ॥ ५ ॥ हांहो० कंडूऋषि कर्म अरि ह णी, केवल वरीयो उल्हास ए ॥ हांहो० इम इण गिरि मुगते गया, मेट्या जिण पाप संताप ए ॥ ६ ॥ हांहो० कीरतध्वज उपगारथी, सकोसले सार्यां काज ए ॥ हांहो० वाघण गात्र विलूरीयो, पहुता शिवपुरनी पाज ए ॥ ७ ॥ काव्य ॥ कलशकंचननीरवरैर्भृतं । कर धृतंसुभभावयुतैस्तथा ॥ स्नपवयामियुगादिजिनेश्वरं । सिद्धशैलगिरि राजगुणान्वितं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीयुगादिदेवाय । संसारांबुधतारका य ॥ अष्टविधिपूजनं यजामहे स्वाहा ॥ इति ॥ ८ ॥

॥ अथ नवमी पूजा ॥

॥ दूहा ॥ इण चोवीसी इण गिरे, सीधा साधु अनेक ॥ अवर साधु अवधान भल, सुणो सही सुविवेक ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ राग कामोद ॥ केतकि चंपक मालती ए ॥ हां० ॥ ए चाल ॥ राम भरत त्रिहुं कोडसुं ए, शिव पद लह्योरी आणंद हे ॥ वीस कोडसें परवर्या, पांडव मुनि सुखकंद ॥ १ ॥ सोमज सा जग जस लही ए, आठ कोडि मुनि संग हे ॥ शेत्रुंजे शिव पद लह्यो, जीता सुभट अनंग ॥ २ ॥ निवाणुं लख निग्रंथसुं ए,

नारदरिख निरभीक हे ॥ राणी वसुदेव रायनी, पैंतीस सहस तह तीक ॥ ३ ॥ एक कोडि मुनिवर भला ए, लाख बावन विचार हे ॥ सहस पचास पिचितरा, सातसें वलि मन धार ॥ ४ ॥ शांतीसर शेत्रुंज गिरे ए, चोमासे चित चंग हे ॥ साधु संगाते विहरता ए, आव्या इण गिरिशृंग ॥ ५ ॥ दमितारी मुनि दीपता ए, चवद स हस सुप्रमाण हे ॥ गिर एणे मुगते गया, ऊलट अंगे आण ॥ ६ ॥ पांचसें साधुसें परवरया ए, सेलग साधु चंग हे ॥ सिधगिरि शिवरमणी वरी, पंथग वचन प्रसंग ॥ ७ ॥ संब प्रद्युम्न सुहंकरा ए, सुमति गुपति गुणधार हे ॥ श्रीशेले सिवपुर लह्यो, शिवरमणी सिणगार ॥ ८ ॥ सहस च्यार सित सातसे ए, श्रमणी सुगुण भंडार हे ॥ वे दरभी संगे सही, पाम्यो भवनो पार ॥ ९ ॥ देवकी सुत पद् बंधवा ए, जाल मयाल कुमार हे ॥ उवयाली त्रिण ए सही, ए वसुदेव सुत सार ॥ १० ॥ इम उवसप्पिणि इण गिरे ए, करुणानिधनी कोडि हे ॥ का या मन वचने करी, वंदुं बे कर जोडि ॥ ११ ॥ काव्य ॥ कलश कंचननीरवरैभृतं। करधृतंसुभभावयुतेस्तथा॥ श्रपवयामियुगादिजि नेश्वरं। सिद्धशेलगिरिराजगुणान्वितं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीयुगादिदे वाय। संसारांबुधतारकाय ॥ अक्षय सु० अष्टविध० यजामहे० स्वाहा ॥ इति ॥ ९

॥ अथ दशमी पूजा ॥

॥ दूहा ॥ गत चोवोसी इण गिरे, कारम गिरि इण नाम ॥ सांप्रति जिननां ए सही, सिद्धगिरे हित ठांम ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ राग केरवो ॥ पास जिणंदा प्रभु मेरे मन वशीया ॥ पा० ॥ ए चाल ॥ चलो री भविक जन, सिधगिरि जईये ॥ च० विमल गिरि जईये ॥ च० ॥ एक कोडि अणगार संगाते, कंडू ऋ षिवरनां गुण गाईये ॥ च० ॥ थावचा गणधर संप्रतिके, प्रणमीने

भविजन सुख पाईये ॥ च० ॥ १ ॥ सहस साधुसें मुगत सिधाए, गिरुआ गुण जाके पार न पाइये ॥ च० ॥ इण गिरि साधु अनंता सिधा, इक जीहै करि केता कहीये ॥ च० ॥ २ ॥ मणधर मोर तिरि ए गिर सेवित, वाघण केरा भव दुख हरीये ॥ च० ॥ आठम देवलोक अति सुंदर, सुर सुख पामे ते सरदहीये ॥ च० ॥ ३ ॥ सात हित्याकारक महापापी, पतित जीव ते इहां ऊधरीये ॥ च ०॥ भवसायर मझ पाज प्रसीधी, सिद्धवधू तिहां स्वयंवर वरीयें ॥ च० ॥ ४ ॥ सिद्धगिरि समो नही को तीरथ, प्रवहण जिम तारै भरदरीये ॥ च० ॥ दिस जात्रा ए सनमुख करतां, लाभ अनंत ते ततखिण लहीये ॥ च० ॥ ५ ॥ सोनां रुपानां फूलडे वधावो, पेखीने दृग पावन करीये ॥ च० ॥ महिमा ए गिरवरनी मोटी, सुरगुरु मुखसें पार न लहीये ॥ च० ॥ ६ ॥ अलप बुद्धि ए पंचम आरे, तीरथ नां गुण किण परि तवीये ॥ च० ॥ अधिक उल्हास हीये बहु आंणी, जुगत भगत जिनराजनी करीये ॥ च० ॥७॥ धन धन जे नर तीरथ भेटे, तेहनी नित बलिहारी जईये ॥ च० ॥ सफल दिवस गिणीये सो लेखे, दरसण कर पातिक वन दहीये ॥ च० ॥ ८ ॥ भावन भल भावंतां भविजन, अजर अमर सासय सुख लहीये ॥ च० ॥ ९ ॥ काव्य ॥ कलशकंचननीरवरैभृतं । करधृतंसुभभावयुतैस्तथा ॥ श्रपवयामियुगादिजिनेश्वरं । सिद्धशैलगिरिराजगुणान्वितं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीयुगादिदेवाय । संसारांबुधतारकाय ॥ अक्षयसुखदायकाय । अष्ट विधिपूजनं यजामहे स्वाहा ॥ इति ॥ १० ॥

॥ अथ इग्यारमी पूजा ॥

॥ दूहा ॥ मिथ्या मोह अज्ञान वस, अविरत अवधि प्रमाद ॥ काम वसे जीव जे करे, अधिक पाप उनमाद ॥ १ ॥ कठन करम बंध जाणिने, गुरु मुखथी लहि ज्ञान ॥ विमलाचल आवे वही, धरतो मन सुभ ध्यान ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ जात्रा निनाणुं करिये शेत्रुंजे गिरि ॥ ए चाल ॥ पाप आलोयण लीजे, भविकजन, पाप आलो० ॥ तन मन वचन करी इक तांने, मिच्छामि दुक्कडं दीजे ॥ भ० पा० ॥ १ ॥ सोना रूपा जिण नर चोरया, आलोयण सलहीजे ॥ चैत्री पुनिम गिरिवर चढि ने, इक उपवास करीजे ॥ भ० पा० ॥ २ ॥ मोती माणक नग नर चोरया, पूजा आंबिल कीजे ॥ वस्तुतणी चोरी वलि करतां, सात आंबिल सलहीजे ॥ भ० पा० ॥ ३ ॥ हरया वस्त्र आभरण जिणे वली, ते तीरथे चढी दीजे ॥ कांसी पीतलनी करी चोरी, पुरमढ सात थुणीजे ॥ भ० पा० ॥ ४ ॥ गुरु देव द्रव्य हरण जिणे कीधो, अधिको तिहां खरची जे॥ धांन पाणी रस फल वलि चोरया, दान शेत्रुंजे दीजे ॥ भ० पा० ॥ ५ ॥ पुस्तक देहरा जेण पराया, तिहां निज नाम ठविजे ॥ छूटे पाप छमासी तप कर, गुणनौ लाख गु णीजे ॥ भ० पा० ॥ ६ ॥ सधव अधव गुरु नार कुंवारी, तिणसे व्रत भांजिजे ॥ पाप ताप छम्मासी छूटे, लख नवकार गुणीजे ॥ भ० पा० ॥ ७ ॥ गो विप्र स्त्री बालक ऋषि कुलनी, पाट घाव जिण कीजे ॥ ए हित्याकारक गिर आवी, छम्मासी तिम कीजे ॥ भ० पा० ॥ ८ ॥ इग बि ति चौ पंचेंद्री पातक, जिवहंसा जिण कीधी ॥ इंद्रीने परमाणे पोषध, आलोयण गुरु दीधी ॥ भ० पा० ॥ ९ ॥ देव गुरु धरमतणां जे निदक, लख नवकार गुणीजे ॥ वृद्ध जिव पंचेद्री पातक, मास पांच तप कीजे ॥ भ० पा० ॥ १० ॥ गुरुहि सक प्रतिमानो भंजक, तसु मुख नवि निरखीजे ॥ आलोयण अ ठम पर आंबिल ॥ बार वरस तप कीजे ॥ भ० पा० ॥ ११ ॥ पु स्तक गाल्या बाल्या जे जन, अनंत अभक्ष भखीजे ॥ व्रत लेइ खं डित जिण कीधा, छम्मासी पभणिजे ॥ भ० पा० ॥ १२ ॥ इम आलोयण त्रिविध२ कर, श्रीगुरु साखे लीजे ॥ पाप संताप तो तत

॥ अथ ॥

॥ बालचंद्रोपाध्याय कृत समेतशिखरगिरि पूजा ॥

॥ तत्र ॥

॥ प्रथम पूजा ॥

॥ दूहा ॥ चोवीसे जिनवरतणा, प्रणमी भावे पाय ॥ समेतशिशर गिरिरायनी, पूज करु मन लाय ॥ १ ॥ शिखर समेत सिरोमणी, ए गिरवर केलास ॥ अति उत्तंग मनोहरु, ए जोगींद्र विलास ॥ २ ॥ वीस प्रभु मुगते गया, कर अणसण इह ठोर॥ तातें सुर किन्नर सवे, वंदत हे कर जोर ॥ ३॥ महिमा जाकी महियले, कह न शके कवि कोय ॥ मुक्ति महलनी श्रेणिकी, ए तीरथ जग होय ॥ ४ ॥ मिथ्या मत राची रह्या, तिनकुं ए न सुहाय ॥ घूकतणे मन किम गमे, दिनकर सब सुखदाय ॥ ५ ॥ अजित जिणंद दिनंद सम, दुखम सुखमा काल ॥ कुशल करण भव भय हरण, प्रगट भए प्रतिपाल ॥ ६ ॥

॥ ढाल ॥ हां हो रे देवा, बावनचंदन घस कुमकुमा ॥ए चाल॥ हां हो रे देवा, समेतशिखर गिररायना, गुण गावो मन धर प्रेम ए ॥ हां हो० सुरगुरु पिण ए गिरतणी, बहु महिमा वरणे केम ए ॥ १ ॥ हां हो० वीस प्रभु मुगते गया, अजितादिक श्रीजिनचंद ए ॥ हां हो० इण कारण ए गिरवरू, निश्रेयस सुरतरु कंद ए ॥ २ ॥ हां हो० कोडाकोडी मुनिवरू, सीधा बहु इण गिर आय ए ॥ हां हो० ए गिर फरस्यां भावथी, पापो पिण पावन थाय ए ॥ ३ ॥ हां हो० श्रावक सुध समकित धरे, ते विधि पूर्वक धरे प्रेम ए ॥४॥ इति

॥ ढाल बीजी राग देशाख ॥ पूर्व मुख सावनं, करि दशन पावनं ॥ ए चाल ॥ अजित जिनचंद्र सुर वृंद सेवित सदा, सुभगपत्कज तणी सेवना ए ॥ हां रे अइयो से० ॥ जगत दुर्लभ मणी

रत्न पर जीवकुं, पूजिये चरण जिन देवना ॥ हांरे अ० दे० ॥ १ ॥ तरण तारण भवोदधि भविक जीव केइ, परम उपगार कर नीस्ता र्या ॥ हांरे अ० नि० ॥२॥ अष्ट विध पूजना द्रव्य भावे करे, भाव मन सौच धर जे नरा ॥ हांरे अ० जे० ॥३॥ ते सिखर तीर्थ शिव सौख्य संपद वरे, बाल जिन भक्त वत्सल करा ॥ हांरे अ० व० ॥ ४ ॥ इति ॥ ॐ ह्रीं श्रीपरमा० श्रीअजितजिनेंद्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति प्रथम पूजा ॥ १ ॥

॥ अथ बीजी पूजा ॥

॥ दूहा ॥ श्रीसंभव भव दव अनल, जलधरसम जिनराज ॥ पर उपगारी परम गुरु, भए भविक सुख काज ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ राग वेलाउल ॥ विलेपन कीजे श्रीजिनवर अंगे ॥ ए चाल ॥ पूजिये जिन मन रंगे, जिनेसर ॥ पू० ॥ जल कुंकुमाक्षत धूप दीप करि, नेवज फल मन चंगे ॥ जि० पू० ॥ १ ॥ सेना मात जितारी तात सुत, श्रीसंभव जिन अंग ॥ हार मुगट कुंडल वर भूषण, चाढो भवि सुभ ढंग ॥ जि० पू० ॥ २ ॥ शिखर२ पर शिखर भए हे, अनंत चतुष्क सुरंगे, बालचंद्र प्रभु अधम उधारन, प्रभुता परम प्रसंगे ॥ जि० पू० ॥ ३ ॥ इति ॥ ॐ ह्रीं श्रीप० संभवजिनेंद्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति दूजी पूजा ॥ २ ॥

॥ अथ तीजी पूजा ॥

॥ दूहा ॥ अभिनंदन जिनचंदकी, महिमा वरणी न जाय ॥ परम रूप परमातमा, सदानंद सुखदाय ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ राग सारंग ॥ सांझ समे जिन वंदो ॥ ए चाल ॥ अभिनंदन जिन वंदो, भविजन अ० ॥ संवर तात सिद्धारथ माता, जाके कुल नभ चंदो ॥ भ० अ० ॥ १ ॥ अधम उधारन भव दुख वारण, शिव सुरतरुनो कंदो ॥ इंद्र चंद्र असुरेंद्र नमे नित, वंदित नुर

नर वृंदो ॥ भ० अ० ॥ २ ॥ समेत शिखर पर शिव सुख पायो, मिट गयो भव भय फंदो ॥ बालचंद्र प्रभु तरण तारणको, पूजन करी चिरनंदो ॥ भ० अ० ॥३ इति॥ ॐ ह्रूँ। श्रीपरम० श्रीअभिनंदनजिनेंद्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा॥ इति तीसरी पूजा ॥ ३ ॥

॥ अथ चोथी पूजा ॥

॥ दूहा ॥ सुमतीनाथ सम संपदा, सदा सुमती दातार ॥ सेवे सुरनर अमर सहु, चरण सरण चित धार ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ राग सारंग ॥ चरणकी२ चरणकी, वारीजाउं में गुरु राय च० ॥ ए चाल ॥ वलिजाउं में सुमति जिणंदकी, व० ॥ पूरण ब्रह्म भए परमातम, मेवकुला वर चंदकी ॥ व० ॥ १ ॥ भवि कुल कमल विकास करणकुं, प्रगट प्रताप दिणंदकी ॥ सब गुण लायक वंछित दायक ॥ शासन सुरतरु कंदकी ॥ व० ॥ २ ॥ करण सुसेवा खचर अमर नर, मात सुमंगला नंदकी ॥ बालचंद्र प्रभु पतित उधारन, सब गुण रतन समंदकी ॥ व० ॥ ३ ॥ ॐ ह्रूँ। परम० श्रीसुमतिजिनेंद्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति चोथी पूजा ॥ ४ ॥

॥ अथ पांचमी पूजा॥

॥ दूहा ॥ पदमप्रभु पद पद्मकी, सरण गही सुखदाय ॥ दर्शन विन अन देवको, संग कबू न सुहाय ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ राग सोरठ मल्हार ॥ अणियारे नेण जिणके, सखि मुनि संग वालक किणके ॥ ए चाल॥ प्रभु सेती प्रीत लागी, मेरी भाग्यदशा अब जागी रे ॥ प्र० ॥ पद्म प्रभुजिके दरसण अंतर, आगल अब मेरी भागी रे ॥ प्र० ॥१॥ प्रभु परमातम में बहिरातम, अनुभव आतम सागी ॥ प्रगट प्रताप प्रभू प्रभुता लख, अब में भयो अनुरागी रे ॥ प्र० ॥२ ॥ अंतरगतकी वेहीज बूझे, क्या बूझे

जो दागी ॥ बालचंद्र निज नाथ निहारत, कुमति कुटलता त्यागी रे ॥ प्र० ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं परम० श्रीपद्मप्रभुजिनेंद्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति पांचमी पूजा ॥ ५ ॥

॥ अथ छठी पूजा ॥

॥ दूहा ॥ लोह धातु सम आतमा, परमातम चिद्रूप ॥ कंचन रुप करे प्रगट, श्रीसुपास जिन भूप ॥ १ ॥ श्रीसुपास जग जीवके, पारस सम जिनराज ॥ अणघड आतम लोहकूं, कंचन करे सुकाज ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ राग वसंत ॥ दादा कुसल सुरिंद, तुम दरसणतें परमानंद ॥ दा० ॥ ए चाल ॥ भवि पूजो सुपास, सहुनी वंछित पूरे आस ॥ भ० ॥ जाको कमल सम सुगंध सास, आहार नीहार अदृश्य हे जास ॥ भ० ॥ १ ॥ न घटे न वधे नख केश पास, मांसासृग् उज्वल वर्ण तास ॥ भ० ॥ अतिसय चोतीस तणो प्रकास, तरणतारण जग जस सुवास ॥ भ० ॥ २ ॥ समेतशिखर पर करके निवास, प्रभु पायो मुक्ति महल सुवास ॥ भ० ॥ प्रभुके समरणसें कर्म नास, बाल कहे में प्रभुको दास ॥भ०॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं परम० श्रीसुपार्श्वजिनेंद्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति छठी पूजा॥६॥

॥ अथ सातमी पूजा ॥

॥ दूहा ॥ चंदाप्रभुकी चंद्र सम, मुख शोभा मनुहार॥ देखत दृग आनंद लहे, सूरत अति सुखकार ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ राग ॥ मल्लि मनोहर तुज ठकुराइ ॥ म० ॥ ए चाल ॥ श्रीचंद्राप्रभु अरज सुणीजे ॥ श्रीचं० ॥ त्रिभुवन नाथ गरीबके ऊपर, दीनदयाल निवाजस कीजे ॥ श्रीचं० ॥ १ ॥ अधम उधारण विरुद तुमारो, मोसो अधम न ओर कहीजे ॥ श्रीचं०॥ इह संसार अपार अगाधमें, साहिब सरणागत रख लीजे ॥ श्रीचं० ॥ २ ॥

मो पतितनकुं पार उतारो, निज निर्यामक विरुद वहीजे ॥श्रीचं०॥ बालचंद प्रभु शिवसुख दायक, आतम संपद अब मोहि दीजे ॥ श्रीचं ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं पर० श्रीचंद्राप्रभुजिनेंद्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति सातमी पूजा ॥ ७ ॥

॥ अथ आठमी पूजा ॥

॥ दूहा ॥ सुविध जिनंद दिनंद सम, जगजीवन हितकार ॥ मिथ्या मोह अज्ञान तम, दूर हरण दिनकार ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ राग ॥ जिया चतुरसुजाण नवपदके गुण गाय रे ॥ ए चाल ॥ भेटो भविक सुजाण, सुविध जिणंद सुभ भाव रे ॥ भे० ॥ उत्तम कुल नरभव तें पायो, फिर एसो नही दाव रे ॥ भे० ॥ १ ॥ भक्त उधारण भवि निस्तारण, भव सागरकी नाव रे ॥ भे० ॥ तन मन वस कर निज आतमकुं, प्रभु समरण लय लाव रे ॥ भे० ॥ २ ॥ द्रव्य भावयुत पूजन करिये, मन धर अधिक उच्छाह रे ॥ भे० ॥ बालचंद्र प्रभु पतित उधारन, मिल गए पुन्य पसाय रे ॥ भे० ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं पर० श्रीसुविधजिनेंद्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति आठमी पूजा ॥ ८ ॥

॥ अथ नवमी पूजा ॥

॥ दूहा ॥ श्रीशीतल मुनिंद्रकी, महिमा अजब अपार ॥ ज्ञानानलथी जिण दिया, कर्म अष्टेंधन जार ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ सिद्धाचल गिरि भेट्या रे धन भाग्य हमारा ॥ सि० ॥ ए चाल ॥ श्रीशीतल जिन वंदो रे, भवि जन सुखकारा ॥ श्रीशी० ॥ पतित उधारण दुरगति वारण, दायक शिव सुख सारा रे ॥ भ० श्रीशी० ॥ १ ॥ भक्त भविक भव भय अपहारी, ए प्रभु परम सुप्यारा रे ॥ भ० ॥ मिथ्या ग्रीषम ताप निवारण, प्रभु चंदन अनुकारा रे ॥ भ० श्रीशी० ॥ २ ॥ पर उपगारी परम महागुरु,

परमातम अविकारा रे ॥ भ० ॥ वाल कहे प्रभुको भव भवमें, चरण सरण मन धारा रे ॥ भ० श्रीशी० ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीँ परमा० श्रीशीतलजिनेंद्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति नवमी पूजा ॥ ९॥

॥ अथ दशमी पूजा ॥

॥ दूहा ॥ श्रीश्रेयांस जिणंदना, चरण सरण सुखकार ॥ पुन्य प्रसाद मिल्यो मुझे, भव२ सुख दातार ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ दादा चिरंजयो, सेवक जन सुखदाई, दरसण सदा दियो ॥ ए चाल ॥ भवि भाव धरी, श्रीश्रेयांस जिनेसर पूजो मन रली ॥ भ० ॥ ए प्रभु सम अवर न को देवा, जाकी चोसठ इंद्र करे सेवा, ते लहे सुरसुख शिवसुख मेवा ॥ भ० ॥ १ ॥ प्रभु परतिख सुरतरु सम स्वामी, जाकी पुन्य प्रसाद सेवा पामी, प्रभु जगजीवन अंतरजामी ॥ भ० ॥ २ ॥ प्रभु दीनदयाल परम दाता, जग वत्सल जगबंधव त्राता, कहे वाल सकल दायक साता ॥भ०॥ ३॥ ॐ ह्रीँ श्रीपरमात्मने अ० श्रीश्रेयांसजिनेंद्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति दशमी पूजा ॥ १० ॥

॥ अथ इग्यारमी पूजा ॥

॥ दूहा ॥ परमातम परमेसरू, श्री तेरम जिनराज॥ ध्यावो सेवो भविक जन, ज्युं पावो सुख साज ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ राग कनडा ॥ मेरी लागी लगन जिन चरणे, हो मे० ॥ ए चाल ॥ मन मोह्यो री मेरो जिन चरणे, हो मन० ॥ दुख दोहग सब हरणे, हो मन० ॥ विमल जिणंदकी अदभुत तनु छवी, सोभत सोवन वरणे ॥ हो म० ॥ १ ॥ दीन दयाल दयानिध दाता, सब जीवन सुख करणे ॥ हो म० ॥ परमातम प्रभु परम२ गुरु, प्रभु भए तारण तरणे ॥ हो मन० ॥ २ ॥ पुन्य प्रसाद लह्यो प्रभु दरसन, शाश्वत शिव सुख[illegible] ॥ हो मन० ॥ वाल कहे

क जाणी. रख लीजे मोह सरणे ॥ हो मन० ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं परमा० श्रीविमलजिनेंद्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति इग्यारमी पूजा ॥ ११ ॥

॥ अथ बारमी पूजा ॥

॥ दूहा ॥ श्रीअनंत जिनदेवकी, सेव करो मन लाय ॥ मनवंछित सुख जिम लहे, दुरगति दूर पुलाय ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ राग मालवी गौडी ॥ सब अरति मथन मुदार धूपं करतगं० ॥ ए चाल ॥ ध्यावो सेवो भविजन भक्ते, अनंत जिनंद महाराजरे देवा ॥ अनं० ए सुरतरु सम जगमें जिनवर, तारणतरण जिहाजरे देवा ॥ ता० ध्या० ॥ १ ॥ कृपासिंधु भगवान परम गुरु, तीन भुवन सिरताजरे देवा ॥ ती० ॥ जिन सेवातें शिवसुख पामे, सफल हुय सब काजरे देवा ॥ स० ध्या० ॥ २ ॥ इह संसार असार भजन विन, केसें रहे निज लाजरे देवा ॥ के० ॥ बालचंद्र प्रभु पर उपगारी, दायक अविचल राजरे देवा ॥ दा० ध्या० ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं परमा० श्रीअनंतजिनेंद्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति बारमी पूजा ॥ १२ ॥

॥ अथ तेरमी पूजा ॥

॥ दूहा ॥ धर्म जिनेसर परम गुरु, परउपगारी देव ॥ परमातम प्रभु चरणकी, कीजे नित प्रति सेव ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ राग भेरवी ॥ पांच वरणी अंगी रची कुसुमकी जाती ॥ ए चाल ॥ सुखकारीरे देवा सु० ॥ धर्म जिनंद सेवो सुखकारी ॥ ध० ॥ तीन भुवनके स्वामी शिरोमणी, सब जिवनको हे हितकारी ॥ हि० देवा० ध० ॥ १ ॥ जगजीवन जगबंधव जगगुरु, परम पुरुष प्रभु उपगारी ॥ अकल सकल अघहर पर अनुपम, अचल अविकारी ॥ अ० देवा० ध० ॥ २ ॥ भव संताप निवारण

तारण, जिनसेवा मोहि अति प्यारी ॥ सुरतरु सम प्रभु चरण सरण की, वालचंद्र कहे वलिहारी ॥ व० देवा० ध० ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं पर मा० श्रीधर्मजिनेंद्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति तेरमी पूजा ॥ १३ ॥

॥ अथ चौदमी पूजा ॥

॥ दूहा ॥ शांतिकरण सव दुख हरण, शांति जपो सुखकार ॥ शिवसुख दायक जगतगुरु, परमातम अविकार ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ राग गोडी ॥ केसरीयाने जिहाजको लोक तिरायो ॥ ए चाल ॥ शांति जिनेसर ध्यावो, भविजन शां० ॥ तरण तारण भव सागर जिनको, तीन जगत् जस चावो ॥ शां० ॥१॥ शांति सुधारस नाम प्रभू को, समरण कर मन भावो ॥ कर्म कोट सत खंड हुवे तव, सुद्ध सरुपी थावो ॥ भ० शां० ॥ २ ॥ भक्ति करो मन सुध भगवंतकी, मन सुध प्रभु गुण गावो ॥ वाल कहे प्रभुके सेवनसें, मन वंछित फल पावो ॥ भ० शां० ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीपरमात्मने० श्रीशांति जिनेंद्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति चवदमी पूजा ॥ १४ ॥

॥ अथ पनरमी पूजा ॥

॥ दूहा सोरठा ॥ कुंथु जिनेसर देव, भविजन पूजो भावथी ॥ चरण कमलकी सेव, इंद्रादिक नित प्रति करे ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ राग सोरठ ॥ कुंद किरण शसि उजलो जी देवा ॥ ए चाल ॥ चंद्र किरण जेसो उजलो रे देवा, जग जस प्रभु विस्तारो जी आछो ॥ अनंत गुणे करी सोभता रे देवा, कुंथु जिनंद जग सारो जी आछो ॥१॥ कामित दायक सुरतरु रे देवा, सर्व जीवन प्रतिपालो जी आछो ॥ भविजन पूजो भावथी रे देवा, ए प्रभु परम आधारो जी आछो ॥२॥ शिवसुख दायक साहिवा रे देवा, पतित उधारण हारो जी आछो ॥ वालचद्र जिनचंदनो रे देवा, सरण गह्यो सुख

कारो जी आछो ॥ चं० ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीपरमात्मने अनंता० श्रीकुंथुजिनेंद्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति पनरमी पूजा ॥१५॥

॥ अथ सोलमी पूजा ॥

॥ दूहा ॥ श्री अरनाथ जिनंदनी, पूजा अष्ट प्रकार ॥ करिये मन सुध भावसो, भव२ सुख दातार ॥ १ ॥

॥ ढाल राग कालिंगडो ॥ मना रे जिन चरणां चित लावो ॥ मना रे जि० ॥ ए चाल ॥ श्रीअरनाथकुं ध्यावो, मनारे श्री० ॥ त्रिभुवनपति गुण गावो, मनारे त्रि० ॥ एसो अवर न देव जगतमें, जाको जग जस चावो ॥ म० त्रि० ॥ १ ॥ सूर नरेसर नंदन प्रभुजी, मात प्रभावती छावो ॥ तन मन लगन लगावो प्रभुसें, नरक निगोद न जावो ॥ म० त्रि० २ ॥ परम पुरुष परमेसर प्रभुको, चरण सरण मन भावो, दीनदयाल दयानिधि पूजत, बाल परम सुख पावो ॥ म० त्रि० ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीपरमा० अरनाथजिनेंद्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति सोलमी पूजा ।१६।

॥ अथ सतरमी पूजा ॥

॥ दूहा ॥ कुंभ समुद्भव जगधणी, मल्लि जिनेसर देव ॥ जसु पद पंकजकी करे, इंद्र चंद्र नित सेव ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ राग कल्याण ॥ तेरी पूजा वणी ते रसमें ॥ ते० ॥ ए चाल ॥ मेरी लगन लगी जिन चरणे ॥ हो मे० ॥ मल्लि जिणंद सुख करणे ॥ हो मेरो० ॥ त्रिभुवन नायक सब सुख दायक, ए प्रभु असरण सरणे ॥ हो मे० ॥ १ ॥ अनूपम रूप विराजित प्रभुजी, सोभत सोवन वरणे ॥ हो मे० ॥ अकल अगोचर प्रभु उपगारी, ध्यावो सब दुख हरणे ॥ हो मे० ॥ २ ॥ जो निज आतमकुं सुख चाहो, लावो चित समरणे ॥ हो मे० ॥ बाल कहे प्रभु अधम उधारण, रख लिजे मोहि सरणे ॥ हो मे० ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं परमा०

श्रीमल्लिजिनेंद्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति सतरमी पूजा ॥ १७ ॥

॥ अथ अढारमी पूजा ॥

॥ दूहा ॥ विशतितम जिनवर नमुं, मुनिसुव्रत जिनचद ॥ भावे भविजन भेटिये, दूर टले भव फंद ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ राग मल्हार ॥ चिहुं ओर वदरिया वरसे ॥ ए चाल ॥ मुनिसुव्रत स्वामी दरसे, आज आनंदघन वरसे हो ॥ मु० ॥ समेत शिखर पर प्रभु पद पंकज, पुन्य प्रसादे फरसे हो ॥ मु० ॥१॥ प्रभु दरसन घनघोर घटा लख, मोर नयनयुग तरसे हो ॥ मु० ॥ भविजन चात्रक प्रभु गुण गावत, भावत भावन झरसे हो ॥मु० ॥ २ ॥ धर्म ध्यान जाके उपजत खेती, कर्म निरस होय निरसेहो ॥ मु० ॥ वाल प्रसाद प्रभुजीके आतम, परमातम प्रभु सरसे हो॥ मु० ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीपरमा० श्रीमुनिसुव्रतजिनेंद्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति अढारमी पूजा ॥ १८ ॥

॥ अथ ओगणीसमी पूजा ॥

॥ दूहा ॥ नमी जिन पुजो भावसों, भविक भक्ति मन लाय ॥ भाव सुद्ध जिन पूजतां, दुरगति दूर पलाय ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ राग मालवी गौडी ॥ सब अरती मथन मुदार धूपं ॥ ए चाल ॥ नमि जिनेसर जग दिनेसर, पूजो भविजन भाव रे ॥ जगतपति जिनराज साहिब, भव समुद्रनो नाव रे ॥ न० ॥१॥ इंद्र चंद्र सुरेंद्र नर सुर, पूजनको जसु चाव रे ॥ तरण तारण कृपा सागर, सेवनको अव दाव रे ॥ न० ॥ २ ॥ पुन्य उदय प्रभु दरस पायो, आनंदकंद सुभ भाव रे ॥ वाल कहे प्रभुके चरणकी, सरण मोहि सुहाव रे ॥ न० ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीपरमा० श्रीनमिजिनेंद्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति उगणसमी ॥ पूजा ॥१९॥

॥ राग सरपदो ॥ जोति सकल जगदीसनी ॥ हांरे जगदीसनी ए ॥ चार निक्षेप प्रमाण ॥ नाम जिनादिक जिन कह्या, आगम मांहि प्रधान ॥ ३ ॥

॥ गाथा ॥ नाम जिणाजिण नामा, ठवण जिणाओ जिणंद प डिमाओ ॥ दव्वजिणा जिण जीवा, भावजिणा समवसरणथ्था ॥१॥

॥ ढाल तेहीज ॥ विन कारण कारज नही, हां रे का०ए ॥ ए सब लोक प्रसिद्ध ॥ भाव निक्षेप प्रधानता, कारज रूपें सिद्ध ॥१॥ विण आकारें द्रव्यनो ॥ हां० ॥ द्र० ए ॥ नं हुवे थापन सिद्ध ॥ नामविना आकारनो, प्रगटपणे नवि बुद्ध ॥ २ ॥ नामादिक कार ण सही ॥ हां० ॥ का०ए ॥ इन विन भाव न होय ॥ भाव विशु द्धं जिनतणी, पूज करो सहु कोय ॥ ३ ॥ विवहारें निश्चय लहे ॥ हां० ॥ नि०ए ॥ कारण कारज होय ॥ पावड शाला क्रम करी, सौध चढे सहु कोय ॥ ४ ॥

॥ दूहा ॥ ज्ञानकला कलितातमा, लोकालोक प्रकाश ॥ व्याप कभावें थिर रह्यो, शुद्ध विकास विलास ॥ १ ॥

॥ राग सारंग ॥ हांहो रे देवा जोति सकल जिनराजनी, सहु लोकालोक प्रकाश ए ॥ हांहो रे देवा राजत श्रीजिनराजजी, वा णी प्रवचन शुभवास ए ॥ १ ॥ हांहो रे देवा मात नमुं नित शारदा, गुरु पंच कल्याणक सार ए ॥ हांहो रे देवा तीर्थंकरना वर णवुं, गुण शास्त्र परंपर धार ए ॥ २ ॥

॥ दूहा ॥ शासन नायक जग धणी, त्रिभुवन पति परमेस ॥ पर उपगारी प्रभु तणा, गुण गावत सहु वेस ॥ १ ॥

॥ ढाल तेहीज ॥ हांहो रे देवा वीश थानक करि सेवना, बां ध्युं जिन नाम प्रधान ए ॥ हांहो० दिव्य अमर सुख अनुभवे, प्रा ये प्रभु पुण्य प्रमाण ए ॥१॥ हांहो० निरमलतर वर ज्ञानना, धारक

कारक शुभयोग ए॥ हांहो॰ ॥ शब्द वरण रस गंधना, शुभ फरस तणा वर भोग ए ॥ २ ॥ हांहो॰ शाश्वत सिद्धायण तणा, नित उत्सव करत सुरंग ए ॥ हांहो॰ बालचंद्र पाठक कहे, नित मंगल होत सुचंग ए ॥ ३ ॥

॥ दूहा ॥ पुण्य पूर्व भव प्रभु तणो, प्रगट्यो प्रगट प्रभाव ॥ सुरकुमरी नित प्रति करे, नाटक नवनव भाव ॥ १ ॥

॥ पूर्व मुख सावनं ॥ ए देशी ॥

॥ शुद्ध निज दर्शनें, करिय गुणकर्षना, जिनचरण सेवना विविधकारी ॥ हे अईयो विविधकारी ॥ ए आं॰ ॥ एक जिनधर्ममय परम लय लीनता, दीनता सकल तज, रज निवारी॥हे अई॰॥ र॰॥१॥ आत्मगुण अंतरातमपणे वृत्तिता, तजिय बहिरात्मजिन, आण धारी ॥ हे अ॰ ॥ आ॰ ॥ २ ॥ शुद्ध सम्यक्तगुण, संपदा निज लही, सहीय शुद्ध धर्म रुचि, भास सारी ॥ हे अ॰ ॥ भा॰ ॥ ३ ॥ विविधमणि रत्नी, जोति झगमग जगे, चंद्रिका भासभासित करारी ॥ हे अ॰ ॥ भा॰ ॥ ४ ॥ प्रवर कुल शुद्ध, राजन्य प्रमुखें मुदा, आयुकर बंध, नर भव सुधारी ॥ हे अ॰ ॥ न॰ ॥ गर्भ अवतार, निज मात उदरें लहे, बाल शुभ लग्न शुभ योगचारी ॥ हे अ॰ ॥ शु॰ ॥ ५ ॥ सुपारी ५ पान ५ पुष्प अतर चढावे ॥

॥ दूहा ॥ शुभदिन शुभ मुहूरत घडी, शुभ उच्च ग्रह चार ॥ देवलोक चवि प्रभु लहे, मातु उदर अवतार ॥ १ ॥ सुंदरवर प्रासाद महि, मध्यनिशा जिनमात ॥ स्वप्न देख सुख सेजमें, जाग्रत अति हरखात ॥ २ ॥

॥ राग काफी ॥ जिनजी भजो भवि प्यारा, यातें आनंद अधिक अपारा ॥ जि॰ ॥ १ ॥ सूख सेज सूती जिन माता, देखे सुपना मनभाता ॥ चित्त हरखित हुय तिण वारा ॥ जि॰ ॥२॥ गज

वृषभसिंह सुरदेवी, वर पुष्प चंद्र रवि सेवी ॥ ध्वज कुंभ पद्मसर सारा ॥ जि० ॥ ३ ॥ वर क्षीर समुद्र विमानं, रयणोच्चय मेरु समानं निर्धूम पावक सुखकारा ॥ जि० ॥४॥ शिवधान्य मंगल श्रियकारी, जाणी अर्थ हृदय क्रमधारी, शुभसूचक पुण्य संभारा ॥जि० ५ ॥ सुंदर वर सखियन संगें, करिधर्म जागरिकारंगें, निशि शेष गई तिणवारा ॥ जि० ॥ ६ ॥ ए भणी एकज पुष्पमाला चढावियें ॥

॥ दूहा ॥ परम पुरुष परमातमा, भावी भगवन भास ॥ प्रवचन प्रगटकरण प्रभु, पुण्य तणे सुप्रकाश ॥ १ ॥

॥ पूजा सतर प्रकारी ॥ ए देशी ॥

॥ आज आनंद वधाई, भई त्रिभुवनमें ॥ चौद सुपन सूचित गुण जेहनां, अवतरे माता उदरनमें ॥ आ० ॥ १ ॥ नृपति सदन बहु सुपन शास्त्र विद, अर्थ विचार करि निज गनमें ॥ पुत्र रतन फल वदत नृपति कुल, परम कल्याण होत जननमें ॥ आ० ॥ २ ॥ प्रफुल्लित हरख भरत हिय उलसत, जिन जननी तात सुनी तनमें ॥ दिन दिन बढत प्रवर धन जन मन, अधिक उत्साह घर घरनमें ॥ आ० ॥ ३ ॥ रूप्य रजत मणि माणक मोतियें, शंख प्रवाल शिल वरसनमें ॥ धनद धनद सुरइंद्र हुकमतें, भरत भंडार नृपसदनमें ॥ आ० ॥ ४ ॥ ताल कंसाल मधु वीण बजावत, गीत गात तननमें ॥ दुन्दुभि मुरज मृदंग घन गरजत, गरज गरज मानुं जैसे घनमें ॥ आ० ॥ ५ ॥ सुर नर लोक मांहे अधिक उत्साह वाह, निशिदिन होत जन जनपदनमें ॥ इंद्र इंद्राणी नृप दोहद पूरत, मनोरथ होत जो जो मातु मनमें ॥ आ० ॥ ६ ॥ परम कल्याण शुभ योग संयोग भयो, शुभ घरि शुभ ग्रह शुभ दिनमें ॥ वरण सके न ताहि कवि अवसरकों, आनंद छायो तीन भुवनमें ॥आ०॥७॥ इति श्रीच्यवणकल्याणके ॐ ह्रीं श्री परमात्मभ्योऽनंतानंतज्ञान

शक्तिभ्यो जन्मजरामृत्युनिवारणकारणेभ्योऽष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति प्रथम च्यवन पूजा ॥ १ ॥

॥ हीरा चढावे पुष्प गुलावजल वर्षा करे ॥

॥ अथ द्वितीय जन्मकल्याणक पूजा ॥

॥ दूहा ॥ प्रगटे पावन पतित प्रभु, अधम उधारन काज ॥ नृपकुलमांहे अवतरे, त्रिभुवनके शिरताज ॥ १ ॥

॥ राग सोरठी ॥ आज अधिक आनंद भयो रे वाला, आज सुरंग वधाई रे ॥ जगपति जिनवर जनमिया रे वाला, सुरवधु वन मिल आई रे ॥ १ ॥ आछो आज आनंदघन उलट्यो रे देवा, दिशि कुमरी हरखाई रे ॥ आछो दशदिश निर्मलता थई रे देवा, फूल रही वनराई रे ॥ २ ॥ फूलें फली वनलता रे वाला, मधु मालती महकाई रे ॥ शालि प्रमुख सहु धान्यनी रे वाला, निपजी राशि सवाई रे ॥ ३ ॥ नारकी जीवें नरकमां रे वाला, क्षण इक शाता पाई रे ॥ सव जन मन हरषित भयो रे वाला, भूमंडल छवि छाई रे ॥ ४ ॥ शुभदिन शुभमुहूरत घडी रे वाला, शुभ ग्रह शुभ पल आई रे ॥ जन्म थयो जिनराजनो रे वाला, प्रगटी पूर्व पुण्याई रे ॥ ५ ॥ ए भणी पुष्प तथा गुलावजलनी वर्षा करे ॥

॥ सोरठो ॥ त्रिभुवन मांहि सुरूप, जन्मसमय जिनराजनें ॥ वाजित्र वजत अनूप, सुरनर कृत उत्सव हुवे ॥ १ ॥

॥ रावण निरत वणावे हो भलां ॥ ए देशी ॥

॥ आज आनंद वधाई रे, देखो आज आनंद वधाई ॥ जयजयकार भयो जिनशासन, सुरकुमरी हरखाई रे ॥ दे० ॥ १ ॥ घरघर गोरी मंगल गावत, मोतियन चोक पुराई रे ॥ ईति उपद्रव भय सव भागे, खार समुद्र जाई रे ॥ दे० ॥ २ ॥ आज सनाथ भयो हे त्रि

भुवन, जिनवर जनम्या भाई रे ॥ आज अधिक जग हर्ष भयो हे, धनधन मात कहाई रे ॥ दे० ॥ ३ ॥ जन्म महोत्सव करननकुं सब, दिशिकुमरी मिल आई रे ॥ करि कदलीगृह सुंदर रचना, पावन कर झर लाई रे ॥ दे० ॥ ४ ॥ जिनजननी जिनवर पय प्रणमी, मस्तक आण चढाई रे ॥ स्नान करावत उभय शरीरें, तैलाभ्यंग कराई रे ॥ दे० ॥ ५ ॥ भूषण भूषित अंग विलेपन, देवदूष्य पहराई रे ॥ दर्प्पण ले मंगल घट थापी, चामर जुगल ढुलाई रे ॥ दे० ॥ ६ ॥ पंच वरनके फूल सुगंधित, सुरकुमरी वरखाई रे ॥ होम करी रक्षापोटरिया, जिनवर करे बंधाई रे ॥ दे० ॥ ७ ॥ मंगल गावत जिन जग जननी, निजगृह मांहे ठाई रे ॥ सफल भयो निज आतम जाणी, दिशिकुमरी घर आई रे ॥ दे० ॥ ८ ॥ स्वस्तिक करे चमर ढोले इंद्र वणे २। तथा ४ ॥

॥ दूहा ॥ अतिहि अधिक उत्सव करी, गइ कुमरी निज थान ॥ इंद्र हवे उत्सव करे, जन्म समय जिन जाण ॥ १ ॥

॥ राग गोडी ॥ सांझ समे जिन वंदो ॥ ए देशी ॥

॥ आज उच्छव मन भायो रे देखो माई ॥ जगजननी जिन जायो रे ॥ दे० ॥ आ० ॥ त्रिभुवन मांहि प्रकाश भयो हे, इंद्रासन थररायो रे ॥ दे० ॥ आ० ॥ १ ॥ अवधिज्ञानधर जिनजीकुं निरखत, हृदय कमल उलसायो रे ॥ हरिणगमेषी इंद्र हुकमतें, घंट सुघोष घुरायो रे ॥ दे० ॥ आ० ॥ २ ॥ बनठन नवनवरूप मनोहर, सुरसमुदय मन भायो रे ॥ सुरकुमरी वरभूषण भूषित, अद्भुत रूप बनायो रे ॥ दे० ॥ आ० ॥ ३ ॥ नव नव यानवाहन रच सुरवर, सुरगिरि शिखरें आयो रे ॥ चौसठ इंद्र करत अति उत्सव, मनु घटा घररायो रे ॥ दे० ॥ आ० ॥ ४ ॥ काली घटा वरदामिनि चमकत, दादुर मोर सुहायो रे ॥ अतिहि सुगंध पुष्पव्रज वर

सत, मोतियनकी झर लायो रे ॥ दे० ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति ॥

(प्रभु प्रतिमा पंचतीर्थी अंदरथी लावे, सिंहासण उपर स्थापपन करे, पछी स्नात्र पूजा करावे)

॥ दूहा ॥ शक्र जाय जिनवर गृहे, जिनजननी जिनराज ॥ प्रणमी श्रीमहाराजनी, भक्ति करे सुरराज ॥ १ ॥

॥ सुंदर नेम पियारो माई ॥ ए देशी ॥

॥ तुम सुत प्रान पियारो माई ॥ तु०॥ ए आंकणी ॥ जगवत्सल जगनायक निरख्यो, धन धन भाग्य हमारो माई ॥ तु० ॥१॥ धन जगजननी तुम सुत जायो, अधमउधारणहारो माई ॥ धन धन प्रगट भयो जगदिनकर, त्रिभुवन तारनहारो माई ॥ तु० ॥ २ ॥ सब सुर चाहत स्नात्र करनकुं, सुरगिरि प्रभुजी पधारो माई ॥ कर जोडी प्रभु अरज करतहुं, सब जनकाज सुधारो माई ॥ तु० ॥ ३ ॥ में सेवक तुम सुत चरननको, आयोहूं अधिकारो माई ॥ इंद्र कहे पदपंकज प्रणमुं, भय सब दूरनिवारो माई ॥ तु० ॥ ४ ॥ पांच रूप करि प्रभुजीकुं लावे, पांडुगवन सिणगारो माई ॥ चोसठ इंद्र महोत्सव करिहे, पूजन अष्ट प्रकारो माई ॥ तु० ॥ ५ ॥

॥ दूहा ॥ पंचरूप कर इंद्र जिन, पंडुग वन ले जाय ॥ सिंहासन उछंरग गहि, स्नात्र करे सुरराय ॥ १ ॥

॥ इतनो गुमान न करिये, छबीली राधा हे ॥ ए देशी ॥

॥ जिनजीको पूजन करियें, हांरे हो रंगीले श्रावक हो ॥ जि० ॥ द्रव्य भाव वेहु भेदें करतां, भव सागर निस्तरियें ॥ जि० ॥ १ ॥ गंगाजल चंदन पुष्पादिक, अडविध मंगल धरियें ॥ भाव विशुद्धें जिन गुण गावो, नाटक नवनव करिये ॥ जि० ॥ २ ॥ बहुविध प्रभुकी भक्ति रचावत, वर्नन करनन तरियें ॥ वो आनंद देखे सोई जाने, दुःख सब दूरें हरियें ॥ जि० ॥ ३ ॥ पूजन करि

प्रभुकुं घर ल्यावे, आतम पुण्यें भरियें ॥ कर अट्ठाइ महोत्सव आव त, सब सुर मिल निज घरियें ॥ जि० ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं श्री प० अ० ज० जन्मकल्याणके अष्टद्रव्याणि यजामहे स्वाहा ॥ ॥ २ ॥

॥ धजा अष्ट मंगल चढावे ॥

॥ अथ तृतीय दीक्षा कल्याणक पूजा ॥

॥ दूहा ॥ सुरकृत उत्सव अति अधिक, भये अनंतर प्रात ॥ मात पिता उत्सव करे, निज कुलक्रम विख्यात ॥ १ ॥ पार नही धनको जहां, अगणित भरे भंडार ॥ दान मनोवंछित दिये, दयावंत दातार ॥ २ ॥

॥ गात्र लूहे० ॥ ए देशी ॥

॥ जिनजन्म महोत्सव रंगशुं रे, भये प्रात करत उछरंगशुं रे ॥ हां रे देवा रंगशुं ॥ नृपउत्सव करे अति घणो ॥ १ ॥ पुत्रजनम कुलक्रम करे रे देवा, जगजस कीरत विस्तरे ॥ वि० ॥ घरघर उत्सव रंगमें ॥ २ ॥ सुरवधु मिल सुरसंगशुं रे ॥ सु० ॥ करे नाटक नवनव रंग शुं रे ॥ रंग० ॥ हां रे बाललीला जिन संगमें ॥ ३ ॥ रूपातिशयें शोभता रे ॥ दे० ॥ इंद्रादिक मन मोहता रे वाला ॥ मो० ॥ विद्याप्रभु विस्मयवता ॥ ४ ॥ परमप्रमोद प्रवीणता रे देवा, सुर क्रीडा अतिशयवता रे ॥ अ० ॥ वैक्रिय शक्तिसमेलशुं रे ॥ ५ ॥ गावतगीत उमंगशुं रे देवा, वाजित्र नवनव रंगशुं रे ॥ रं० ॥ वजि त अहोनिशि संगशुं रे ॥ ६ ॥

॥ दूहा ॥ तीन ज्ञान अतिशय धरे, अतिशय कला सुधाम ॥ सुर सुसंग क्रीडातिशय, अतिशयगुण अभिराम ॥ १ ॥

॥ पंच वरणी अंगी रची ॥ ए देशी ॥

॥ वरणी न जाती रे ॥ व० ॥ जिनजीकी शोभा व० ॥ चित्रजा त नर सुरासुर निरखत, ओर न एसो जग भाती ॥ जि० ॥ १ ॥ अनं

त गुणें करि शोभित प्रभुजी, शुद्ध संवेग सोवन जाती ॥ शिव मारग शुध सेवत निशिदिन, पुण्यपुरुष पायाराती ॥ जि० ॥ २ ॥ पर उप गारी परम पुरुषोत्तम, अद्भुत अनुभव रस पाती ॥ कामभोग वर विबुध प्रकारें, प्राप्त भये सुख संघाती ॥ जि० ॥ ३ ॥ जसु जस ख्यात प्रगट त्रिभुवनमें, कुल राजन्योत्तम जाती ॥ धन धन तीन भुवन के साहिब, श्याम हमारो वरगाती ॥ जि० ॥ ४ ॥ इंद्र अहोनिश भावन भावत, देख दरस अति हरखाति ॥ दुन्दुभि प्रमुख वाजित्र वजत नित, सुरवधु वन मंगल गाती ॥ जि० ॥ ५ ॥ ए भणी प्रभुने पुष्प वासक्षेप चढावे ॥

॥ दूहा ॥ प्रवरभोग प्रभुपुण्यतें, प्रगटे प्रगट प्रधान ॥ गुणग्राहक गृहवासमें, दर्शन ज्ञान निधान ॥ १ ॥

॥ प्रभुविन दीनानाथ दयाविन, कोन कहावत कोई रे ॥ प्र०॥ गृहवासें शुध संयमधारी, शुद्धसुभावें होई रे ॥ प्र० ॥ १ ॥ सम्यग् दर्शन भवनिर्वेदें, सशनकी जर सोई रे ॥ प्रभुता प्रभुकी को कहि वरने, सुर नरनारी मोही रे ॥ प्र० ॥२॥ शुभलेश्या शुभध्यान रमे नित, आतम निरमल धोइ रे॥ आत्मरूप निहारत निजघर, संगसुमति जह जोड रे ॥ प्र० ॥ ३ ॥ प्रगट प्रकाश आत्मउजियारे, साम कहावत सोड रे॥ गृहवासें शुद्धसंयम रागी, लागी लगन सवाइ रे॥ प्र० ॥ ४ ॥ निजप्रभुता प्रभुजीनो लीनो, अंतरशत्रु विगोइ रे ॥ विषयवासना छीण भइ लख, आतम शक्तिशु दोइ रे॥ प्र० ॥ ५ ॥ एम कही फूल चढावे ॥

॥ दूहा ॥ दाता दीनदयाल प्रभु, देत संवत्सरिदान ॥ दूर करे दारिद्र जग, त्रिभुवनमांहि प्रधान ॥ १ ॥

॥ मरुदेवानंदनकी क्या छबि लागत प्यारी ॥ ए चाल ॥

॥ जगपति जिनवरकी, क्या छबि मोहनगारी ॥ ज० ॥ मोहत प्रभुके मोहनरूपें, निरख निरख नरनारी ॥ क्या० ॥ १ ॥ क

र्मे अंतरायकर्म कछु, क्षीण भए निरधारी ॥ दानसंवत्सर घन जिम वरसत, पृथ्वी प्रमुदितकारी ॥ क्या० ॥ २ ॥ नवलोकांतिक देव सबे मिल, हाजर होय सुचारी ॥ जयजय मंगल शब्द उचारत, धर्म गहो सुखकारी ॥ क्या० ॥ ३ ॥ दान धर्म शिवमारग प्रभुजी, प्रगट कियो हितकारी ॥ दाता दीनदयाल जगतमें, जिन सम को सुविचारी ॥ क्या० ॥४॥ इंद्रादिक सुरसुरी नर नारी, दीक्षोत्सव अति भारी ॥ गान दान सनमान तान करी, प्रभुगति सकल सुप्यारी ॥क्या० ॥ ५ ॥ तजि संसार लियो शुभयोगे, संयम सतरप्रकारी ॥ मनपर्यव वर ज्ञान भयो तब, विहरत परउपगारी ॥ क्या० ॥६॥ ॐ ह्रीं प० अ० ज० श्री० दी० अष्टद्रव्या० स्वाहा ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्थ केवलज्ञानकल्याणक पूजा ॥

॥ दूहा ॥ गजवर अश्व समूह रथ, पायक कोडाकोड ॥ जिन दीक्षा महोत्सव समें, हाजर होय तिण ठोर ॥ १ ॥ इंद्रादिक सुर असुर नर, प्रभुकुं करे प्रणाम ॥ नर नारी आशीष दे, जयजय त्रिभुवन साम ॥ २ ॥ तजि आश्रव संवर गहे, संयमभाव निधान ॥ सब संसार तजी करी, भए अणगार प्रधान ॥ ३ ॥

॥ तेरी पूजा बणी तेरसमें ॥ ए देशी ॥

॥ धारी धारी धारी, जिन भए संयमपद धारी ॥ चरनकमल बलिहारी ॥ जि० ॥ पंचसुमतिधर तीन गुपतिकर, सब जीवां सुखकारी ॥ जि०॥ १॥ [illegible] सेना गणभारी ॥ भयभैरवतें निःप्रवं [illegible] जि० ॥ २ ॥ क्रोध मान माया लोभ [illegible]

निरलेप [illegible] पर

प्रभु अ [illegible]

अप्रति [illegible]

त गुणें करि श रत्नत्रय परिग्रह करी, मुक्तिमार्ग अभिराम ॥ निशि शुध सेवत विहारक्रम, प्राप्तुकाम निजधाम ॥ १ ॥

गारी प सद्गुरुजी सुनो मेरी अरजी ॥ ए देशी ॥

॥ जिनवरजी जगतहितकारी ॥ जि० ॥ जग वत्सल जगबंधु जगत गुरु, जग नायक जयकारी ॥ १ ॥ कुर्मतणीपर गुप्तइंद्री, अप्रमाद भारंडसुचारी ॥ अतिशय थाम धामनिजवीरज, वृषभपरेंसु विहारी ॥ जि० ॥ २ ॥ शूर वीर प्रभु सिंहतणी पर, कुंजर करम विदारी ॥ अतिगंभीर सायरसम शोभित, सौम्यलेश्या सुखकारी ॥ जि० ॥ ३ ॥ तेज पुंज दिनकर सम दीपत, हेम वरण मनुहारी॥ सर्व सहन कारक धरणी पर, स्वच्छ हृदयकजधारी ॥ जि० ॥ ४ ॥

॥ दूहा ॥ अनुत्तर धर संयमक्रिया, कल्पातीत जिणंद ॥ वीतराग विचरे प्रवर, रत्नत्रय जगचंद ॥ १ ॥

॥ कुबरीनें जादू डारा ॥ ए देशी ॥

जाके रागद्वेष भया न्यारा रे, सोई श्याम सकल सुखकारा ॥ जा० ॥ वासी चंदन सम प्रभु जगमें, अपकारें उपकारा रे ॥ सो० ॥ १ ॥ कंचन काठ समान हे जाके, सुख दुःख सम उपचारा ॥ कोऊ निंदत कोऊ पूजत, जिनजी हे अविकारा रे ॥ सो० ॥ जा० ॥ २ ॥ शिवसुख अरु भवसुख हू न वंछे, वीतराग प्रभु प्यारा ॥ शूरवीर प्रभु क्षपकश्रेणि चढ, मोहन मल्लपिछारा रे ॥ सो० ॥ जा० ॥ ३ ॥ क्षायिक संयमने शुभ योगें, अनुत्तर गुणगणधारा ॥ पाठक विजयविमल कहे प्रभुके, चरणकमल वलिहारा रे ॥ सो० ॥ जा० ॥ ४ ॥

॥ दूहा ॥ घनघाती चउ कर्मकों, क्षयकर क्षायिक ज्ञान ॥ दर्शनलोकालोकको, प्रगटप्रकाशी भान ॥ १ ॥

॥ राग ठुमरी ॥ वस मन खितरीकुंडके तीर ॥
॥ भजले श्रीमहावीर ॥ ए देशी ॥

पायो प्रभु भवजलनिधिको तीर, अतुलीबल वडवीर ॥ पा० ॥ अनुत्तर जाके सुमति गुपति हे, अनुत्तरक्षमासुधीर ॥ पा० ॥ १ ॥ मार्द्दव आर्यव अनुत्तर जाके, रोक्यो आश्रव नीर ॥ संवरजोग क्रि, या सब विणठी, रही ईर्यासुख सीर ॥ पा० ॥ २ ॥ घनघाती सब शत्रुविनाशी, केवलज्ञान सुधीर ॥ पूरन दर्शन प्रगट भयो हे, निज आतम गुणक्षीर ॥ पा० ॥ ३ ॥ प्रातिहार्य अतिशय जिनसंपद, भयो अनुकूल समीर ॥ दे उपदेश भविक प्रतिबोधत, वचनातिशय गंभीर ॥ पा० ॥ ४ ॥ लोकालोक प्रकाश परम गुरु, कहि न शके मति सीर ॥ पाठक विजयविमल परमातम, प्रभुता परम सुधीर ॥ पा० ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं परम० अ० ज० श्रीम० केवलज्ञानकल्याणके अष्टद्रव्याणि यजामहे स्वाहा इति ॥४॥ वासक्षेप चढावे ॥

॥ अथ पंचम निर्वाण कल्याणक पूजा ॥

॥ दूहा ॥ इंद्रादिक सुर सब मिलि, तीन भुवन शिरदार ॥ सब दरसी सर्वज्ञनी, महिमा करे अपार ॥ १ ॥

॥ अतुल विमल मिल्या अखंड गुणें मिल्या ॥ ए देशी ॥

॥ अतुल विमल प्रभुता प्रभुकी लख, चोसठ इंद्र उच्छव धरे ए ॥ चार प्रकारके सुर सब मिल कर, समवसरण रचना करे ए ॥ अ० ॥ १ ॥ राजत कनक रत्न प्राकारें, कनक रत्नमणि कंगुरे ए ॥ वृक्ष अशोग सिंहासन शोभित, तीन छत्र चामर ढुरे ए ॥ अ० ॥ २ ॥ दुंदुभि प्रमुख श्रवणसुख दायक, गहिर सुरे वाजित्र घुरे ए ॥ जानुप्रमाण पुष्पघन वरसत, जल ज थलज विकसित सुरे ए ॥ अ० ॥ ३ ॥ साधु साधवी श्रावक श्राविका, इंद्रादिक सुरी सुर वरे ए ॥ नरनारी तिर्यंग विद्याधर, द्वादशविध परिषद भरे ए ॥ अ० ॥ ४ ॥ भविजन धर्म तणे उपदेशें,

जोजन गामि मधुरगिरे ए ॥ प्रतिबोधत चोमुख श्रीजिनवर, निज निज भाषा अनुसरे ए ॥ अ० ॥ ५ ॥ ए भणीने वासक्षेप कीजे ॥

॥ दूहा ॥ प्रगटपणें प्रभुकी प्रभा, प्रगट प्रकाशक रूप ॥ प्रगटी प्रभुता परमसम, परमातम पद भूप ॥ १ ॥

॥ बिगरी कौन सुधारे नाथ बिना ॥ बि० ॥ ए देशी ॥

॥ भूमंडल भविकमल विबोधन, दिनकर सम जिनराया रे ॥ भू० ॥ अणहुंते इक कोडि अमरपद, पंकज भमर लुभाया रे ॥ भू० ॥१॥ ग्राम नगर पुर पट्टण विचरत, त्रिभुवननाथ कहाया रे ॥ चोसठ इंद्र करे जाकी सेवा, तन मनसें लयलाया रे ॥ भू० ॥ २ ॥ इंद्राणी मिल मंगल गावत, मोतियन चोक पुराया रे ॥ सर्व जीव हितकारक प्रभुजी, निःश्रेयस सुखदाया रे ॥ भू० ॥ ३ ॥ भवजलनिधि निर्यामक जगगुरु, तारक सकल कहाया रे ॥ शासननायक संघसकलकुं, प्रवचन तत्त्व सुनाया रे ॥ भू० ॥ ४ ॥ अनतगुणाकर प्रभुजीकी महिमा, वरने को कविराया रे ॥ पर उपकारक प्रभुके पाठक, विजयविमल गुण गाया रे ॥ भू० ॥ ५ ॥ ए भणीने वासक्षेप करे ॥

॥ दूहा ॥ निज निज भाषा भविकजन, तृपत न सुनतहि श्रोत ॥ मीठी अमृत सम गिरा, समझत श्रम नहि होत ॥ १ ॥

॥ राग कहेरबो ॥ जिनंदवा मिल गयो रे, दोय चरणुं परव्यान ॥ शुक्ल मन गहगह्यो रे ॥ जि० ॥ ज्ञायकज्ञेय अनंतनो रे, सब दरसी जिनचंद ॥ सुरतरुसम जग वालहो रे, सेवत सुरनरइंद ॥ धर्ममें लहो रे ॥ दो० ॥ १ ॥ चौदम गुण थानक करे रे, आतम वीर्य अनंत ॥ योग निरोधनकी क्रिया रे, सूखम बादरकत ॥ बंध सब टर गयो रे, सरव संवर भयो रे॥ दो० ॥२॥ घन कर आतमप्र

देशनो रे, कर शैलेशी कर्ण ॥ कर्म सकल दूरें किया रे, जीर्णवस्त्र जिम पर्ण, मुक्ति पद जिम लह्यो रे ॥ दो० ॥ ३ ॥ ज्ञान क्रिया कर कर्मकोरे, क्षय कर पर अनुबंध ।। निजआतम रूपें लह्यो रे, शाश्वत सुख संबंध, सिद्ध शुद्ध बुध थयो रे ॥ दो० ॥ ४ ॥

॥ दूहा ॥ अकल अगोचर अगमगम, सिद्ध भए सुविशुद्ध ॥ परमातम प्रभु परमपद, चिदानंद अविरुद्ध ॥ १ ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ तेजतरणि मुखराजे ॥ ए देशी ॥

॥ तेज तरणिसम राजे, प्रभुजीको ॥ ते० ॥ एकसमय प्रभु ऊरधगतिकर, मुक्तिमहल सुविराजे ॥ प्र० ॥ ते० ॥ १ ॥ सादि अनंत सदा शाश्वतवर, अनंत महासुख छाजे ॥ अचल अगोचर प्रभु अविनाशी, सिद्ध सरूप विराजे ॥ प्र० ॥ ते० ॥ २ ॥ निरुपाधिक निरुपम सुख प्रभुके, कहि न शके कविराजे ॥ अजर अमर अक्षय अविकारी, सकलानंद सहाजे ॥ प्र० ॥ ते० ॥ ३ ॥ संवत ओगणीसे तेरोत्तर, श्रावण शुदि पख राजे ॥ श्रीजिनराजतणा गुण गाया, पंचमि दिवस समाजे ॥ प्र० ॥ ते० ॥ ४ ॥ श्रीविक्रमपुर नगर मनोहर, श्रीसंघ सकल समाजे ॥ पंच कल्याणक पूजा प्रभुकी, कीनी हित सुखकाजे ॥ प्र० ॥ ते० ॥ ५ ॥ श्रीखरतरगच्छ नायक लायक, युगप्रधान पद छाजे ॥ जंगमगुरु भट्टारकवरश्री, जिनसौभाग्य सुराजे ॥ प्र० ॥ ते० ॥ ६ ॥ प्रीतविलास धर्म्मसुंदर गणि, अमृत समुद्र सुभ्राजे ॥ पाठक विजयविमल प्रभुके गुण, गावत घन जिम गाजे ॥ प्र० ॥ ते० ॥ ७ ॥ हंसविलास प्रवरगणिवरकी, प्रेरणया सुसमाजे ॥ श्रीजिनवरकी स्तवना कीधी, धर्म्म प्रभावन काजें ॥ प्र० ॥ ते० ॥८॥ ॐ ह्रीं प० ॥ अनं० ॥ जन्मजरामृत्युनिवारकेभ्यः श्रीमज्जिनेंद्रेभ्यो निर्वाणकल्याणके अष्टद्रव्याणि यजामहे स्वाहा ॥ इति ॥ पाठक विजयविमलविरचित पांच क०पू०स०॥

॥ पंचकल्याणक पूजानी आरती ॥ राग मालवी गोडी ॥

॥ शुभ आरती प्रभुकी उदाराचित्तें, करो भविक रसाल रे ॥ प्रथम धूपसुगंध जिनकूं, उखेवो जिननाल रे ॥ शु० ॥ १ ॥ भाल निजकर तिलक सुंदर, पहरपुष्प सुमाल रे ॥ दक्षिणकर जिनराज जूके, कर आवर्त्त सुथाल रे ॥ शु० ॥२॥ यथासगते शुद्धभगतें, करो दिल खुशियाल रे ॥ द्रव्यभावें विविध पूजा, भविक भाव विशाल रे ॥ शु० ॥ ३ ॥ गुण अनंत महंत गावो, प्रभू परम दयाल रे ॥ जन्म सफल करो भविजन, कहे पाठक बाल रे ॥ शु० ॥ ४ ॥

॥ इति आरती ॥

॥ अथ ॥

॥ श्रीतिलकप्रधान गणि कृत ध्वज पूजा ॥

(संवत्सरी दिन पढाते हे)

॥ श्री अरिहंताय नमः ॥ जय सयल सुरासुर नमिय पाय, जय कंचण कोमल विमल काय ॥ जय सुंदरि सोहगसिरि सुहाय, जय संति जिणेसर भुवणराय ॥ १ ॥सव्वठ विमाणह चविय सामि, नयरी हथिणा उरपवर गामि ॥ विससेण नरेसर गिह मझारि, पटरांणी अइरादेवि नारि ॥ २ ॥ तसु उयरि सरोवर रायहंस, अवयरिओ जिणवर कुल वयंस ॥ आइम सत्तमि भद्दवय मासि, रयणहिं रयणोवम मेपरासि ॥ ३ ॥ चउदह सुमिणंतर जणणिताम, निरखै गयवर मुह्महिम ठाम ॥ जेठहवदि तेरसि पढम पक्खि, जायो जिण नायक भरणि रिक्खि ॥ ४ ॥ दिसिकुमरीय छप्पन गुण विसाल, चलि आसण आवै घणरसाल ॥ विरचै सवि निय निय सूइ कम्म, कुल निम्मल तिह सुकयथ्थ जम्म ॥ ५ ॥ सुरगिरि सिरि लेविणजिण वरिंद, हिव न्हवण करै चउसठि इंद ॥ जल भ

रियो रुप्प सोवन्नसुहेहिं, मणिमय कलसेहिं जोयणमुहेहिं ॥ ६ ॥ तो बावनचंदन नव कपूर, कसतरिय केसर अगर पूर ॥ रस मेलवि विलेवण नाह अंगि, बहु भंगै लावै गरुयरंगि ॥ ७ ॥ इय न्हवण विलेवण भाव धरे, विण पहिलो परमानंद भरे ॥ चउसठि सुरेस संतिजिणेसरे, रचे पूज नवनवनवीय परे ॥ ८ ॥ सोवन केवडो चंपो मरुयो, पल्लवानमणो दमणो मरुयो ॥ वालो परिमल गुणह विसालो, बउलसिरि वेउला विमलदल मालो ॥ ९ ॥ महमहै कुंद मचकुंद कुशमावली, वहकए जाइ करणीय नवनव कली, पाडल परिमल सयल जण मोहए, सेत सेवंत्रीय सोरभ सोहए ॥ १० ॥ इण परि अवरवर फुलमाला घणी, लेइ सुर असुरनर देवलोयह धणी ॥ विविहपरि पूज करि संति तिथ्थंकरं, तयणुमंडंतिपिख्खणमहं सुंदरं ॥ ११ ॥ केवितहतूर वायंति बारसविहं, किन्नरीगीय गायंति सुख्खावहं ॥ रुणझुणइ नेउरा नच्चए सुर बहू, पिख्खए एगदिठाय तिहुयण सहू ॥ १२ ॥ करि उच्छव भत्तिहिं निम्मल चित्तहिं, थुणिय हरषि मिलेवि जिण ॥ सिरिजणणी पासहि निय आवासहिं, वच्चइ सवि सुर असुर गण ॥ १३ ॥ अवयरिओ कूखीहि हुईय संति, तिण कारण नामइसामि संति ॥ जो धणु चालीसपमाग देह, मृग लंछण लावन केलि गेह ॥ १४ ॥ अंतेउर चौसठि सहस भोग, तजि षंड महियलि राजभोग ॥ जेठह वदि चवदिसि दिवसि देव ॥ संयमसिरि वरिय उपणय देव ॥ १५ ॥ केवलिसिरि कलियो पोसि मासि, सियनवमीहिं पूईय इंद रासि ॥ पियडिय तिहुयण पहु धम्म तिथ्थ, भवजलनिहिं तारण भविय सथ्थ ॥ १६ ॥ ससिमंडल चक्कीसर मुणींद, पद वर सहस्सी पंचवीस ॥ जेठह वदि तेरसि वरस लख्ख, संपूरिय सामिय लहइ मुख्ख ॥ १७ ॥ इय थुणिय सुझाणहिं पंच कल्लाणहिं, अणहिलपुर सिरितिलय वरो, सिरिसंति जिणेसर भुवण

दिणे, सरहवउ विजयसिरिसंति करो ॥ १८ ॥ इति श्री शांतिनाथ जी जिन्माभिषेक सिनात्र संपूर्णम्॥ ए सिनात्र धज पूजा कहे छे सो भादवा सुद ४ चौथ दिने धजा विस्तारी पढीजे ॥

॥ अथ पूजा विधि ॥

केसर मा५, चंदन ०॥ धूप० घीरत ०। अंगलूहणा २ कसुंबो हाथ १। चावल १। मौली ')— रोक रु १) थापनारो अंगी रु १। निछरावल ')= आरती ')= नालेरनंग५ कुंकुं २५लोंग २५इलायची २५ बीदाम ०। मेवो सरव ०। मीठाई ०॥ मीश्री ')= पंचामृत १। सोपारयां धजा कल्पवृक्ष अष्टमंगलिक सासणदेवी तेल सिंदूर मालिपन्ना क्षेत्रपाल पूजा नैवेद्य अतरफूलेल फल इत्यादि जिनस पूजामें चाहिये ॥

॥ अथ ॥

॥ पंडित कपूरचंदजी कृत बारेव्रतकी पूजा ॥

॥ तत्र ॥

॥ प्रथम समकित व्रत दृढकरण जल पूजा ॥

॥ दूहा ॥ व्रत बारे आदर करी, पूजा तेर विधान ॥ आनंदादिक संग्रही, सप्तम अंग प्रधान ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ राग सरपदो ॥ ज्योति सकल जग जागती, हांरे अइयो ॥ जा० ॥ इस चालमें ॥ ज्योति विमल जग झलहले, हांरे अईयो झलहले ए ॥ सासनपति जिनचंद, त्रिकरण प्रणमन करि नमूं ॥ वीर चरण अरविंद ॥ वि० ॥ १ ॥ न्हवण १ विलेपन २ वासनी ३, हां रे० मालं ४ दीवंच ५ धूवणियं ६, फूल ७ सुमंगल ८ तंदुला ९ ए ॥ हां रे० ॥ अमल दप्पणंच १० नेवज्जं ११, ॥ २ ॥ ध्वज १२ फलवृंद १३ ए मेलिये, हां रे अ० ॥ पूजा त्रिदश प्रकार ॥ व्रत

ग्रहि अणुव्रत अरचीये, जगपति जगदाधार ॥ ३ ॥ शिवतरु सुख फल स्वादनो, हांरे अ० ॥ दायक गुणमणि खाण ॥ कुशल कला कलना थकी, प्रगटे परम निधान ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ दूहा ॥ समकित व्रत धुर आदरो, मेटो निज मन भर्म ॥ दूर थकी ए परिहरो, कुगरु कुदेव कुधर्म ॥ १ ॥

॥ राग रामगिरी ॥ गात्र लूहे, जिन मनरंगसूं रे देवा ॥ ए चाल ॥ धुर समकित चितमें धरो रे वाल्हा, भव भय दुखदल परिहरो ॥ परिहरो, हांरे वाल्हा प० ॥ शिव रमणी वर लीजीये ॥ १ ॥ वीर जिनेसर वंदिये रे वाल्हा, जिम चिरकालसु नंदिये ॥ नंदिये, हांरे वाल्हा नं० ॥ कुमति दुरति सर कीजीये ॥ २ ॥ चरण करण गुणमणि निलो रे वाल्हा, जगजन तारण सिरतिलो ॥ सिरतिलो, हांरे० सि०॥ सदगुरु चरण नमिजिये ॥ ३ ॥ जिन भाषित श्रुत सागरो रे वाल्हा, भेद विविधविधि आगरो ॥ आगरो, हांरे० आ० ॥ श्रवण जुगलकर पीजीए ॥ ४ ॥ जिनसासन जिन धर्मनो रे वाल्हा, राग दलन वसु कर्मनो ॥ कर्मनो, हांरे० क० ॥ कुशल कला रस पीजीये ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ दूहा ॥ सकल करम दल मल हरण, पूजा धुर जलधार ॥ जगनायक जिनतूंगनी, उर धर भगति उदार ॥ १ ॥

॥ राग झिंझोटी ॥ निरमल होय भज ले प्रभु प्यारा, सब० ॥ ए चाल ॥ जिनवर न्हवण करण सुखदाई, छूटे जनम मरण दुखदाई ॥ जिन० ॥ ए टेर ॥ खीरजलधि गंगोदकमांहे, अमल कमल रस सरस मिलाई ॥ जि० ॥ १ ॥ निरमल शकल परम तीरथजल, मणि जुत कंचन कलस भराइ ॥ जि० ॥ २ ॥ या जिनजीके न्हवण करणते, भव भय दुखदल दाघ समाई ॥ जि० ॥ ३ ॥ द्रव्य भाव विध समकित फरसे, ते नर नरक निगोद न जाई ॥ जि० ॥ ४ ॥ यातें भविजनके दुख नासे, कपूर कहे सुर होत सहाई ॥ जि० ॥५॥ इति ॥

॥ काव्य ॥ परमलंकृतसंस्कृतश्रद्धया । स्नपतियोजिनचंद्रमिमंमुदा ॥ भवभयंपरिमुच्यसदोदयं । भजतिसिद्धिपदंसुखसागरं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीपरमात्मने अनं० जन्म०श्रीमत्समकितव्रत दृढकरणाय जल यजामहे स्वाहा ॥ इति प्रथम समकित व्रत पूजा ॥ १ ॥

॥ अथ दूजी प्राणातिपात विरमण व्रत चंदन केशर विलेपन पूजा ॥

॥ दूहा ॥ प्राणिपात विरमण व्रते, छंडो जंतु विनास ॥ इणसुं शिवसुख ना मिले, हिंसा दोष विलास ॥ १ ॥

॥ तिहां दर्शनाण सुचरण अणसण । धीर वीरज जानिये ॥ तप इम सकलना सिद्धि गजवसु, पणतिवार सुठानिये ॥ अतिचार वार निवार इणपर, तुर्य गुणपद मानिये ॥ गुण पंचमो तिम थूल प्रत्या, ख्यान मान वखाणिये ॥ १ ॥

॥ राग वरवो ॥ हमकूं छांड चले वन माधो, राधा० ॥ ए चाल ॥ भविजन जीवदया व्रत धारो, सम परिणाम संभारो रे ॥ भ० ॥ टेर ॥ अपराधी पिण जीव न हणिये, भाखे जगदाधारो रे ॥ देशविरतधरने पिण भाख्यो, विन अपराध न मारो रे ॥ भ० ॥ १ ॥ गो गज सेंधव महिसादिकने, बंधन वध न विचारो रे ॥ कीजे न अवयव छेद त्रिकाले, जलचारे नविसारो रे ॥ भ० ॥ २ ॥ कीडी कुंजरने सम गिणिये, सुख दुख जोग विकारो रे ॥ थावर त्रस पंचेंद्र्यादिकनो, होय रहिये हितकारो रे ॥ भ० ॥ ३ ॥ ए व्रत रत चित जे नर जगमें, सुर नर गण मन प्यारो ॥ रे, तेहिज लोभ महाभट मार्यो, सकल करम परिवारो रे ॥ भ० ॥ ४ ॥ थूल थकी ए व्रत जे पाले, ते लहे शिवसुख सारो रे ॥ कुशलकला कलनाकर प्रगटे, अनुभव रग उदारो रे ॥ भ० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ दूहा ॥ भव दव दाघ सबे मिटे, पूजो परम दयाल ॥ भावठ भंजन सुखकरण, दूजी पूज रसाल ॥ १ ॥

॥ राग घाटो ॥ जिनराज नाम तेरा ॥ होरा० ॥ ए चाल ॥ पूजो जिनेंद्र प्यारा, हो तारो रे विकट भवजलमें ॥ हो० ॥ टेर ॥ हां रे घनसार चंदन वासे, हां रे सुकुरंगनाभिजासे ॥ दुख नारकादि नासे ॥ हो ता० ॥ १ ॥ घसि सूकडादि भेली, नाना सुगंध मेली, सिव देन कर्म ठेली ॥ हो ता० ॥ २ ॥ पूजा सदा रचावो, परभाव नापि भावो, शिव सौंधसों समावो ॥ हो ता० ॥ ३ ॥ विधि भाव द्रव्य धारो, हिंसा कुदोष वारो, प्रभु नाम ना विसारो ॥ हो ता० ॥ ४ ॥ तज पाप भार फंदा, शिवशंकलाप कंदा, साधे कपूरचंदा ॥ हो तारो रे० ॥ ५ ॥ इति ॥ काव्य ॥ अमलकुंकुमकेशरमिश्रितै । र्जिनपतेर्जुगपादसमर्चनं ॥ हरतिसोभवदाघमसंधरं । रचतियोघनसारसुचंदनैः ॥ १ ॥ ॐ ह्रूँ श्रीपरमा० प्राणातिपातविरमणव्रत ग्रहणाय चंदनं यजामहे स्वाहा ॥ इति प्राणातिपातविरमण व्रत पूजा ॥ २॥

॥ अथ तीसरी मृखावादविरमण व्रत वासक्षेप पूजा ॥

॥ दूहा ॥ मृखात्याग व्रत दूसरो, कुमति दुरति हरनार ॥ भवि जन भावे आदरे, शिवतरु सुख दातार ॥ १ ॥

॥ राग बसंत ॥ सब अरति मथन मुदार धूपं ॥ ए चाल ॥ सुण भविक नर धर दुतिय व्रत मन, मृखावाद न बोल रे, वाल्हा मृखा० ॥ टेर ॥ मृखावाद कुवाद शेखर, कुजसवाद न ढोल रे, वाल्हा कुज० सु० ॥ १ ॥ सकल शिवसुख धामधूमारवि, ढकण राहु निटोल रे ॥ शिवपुर नगर पथि शबर सरिखो, अरति व्यापन घोलरे ॥ वाल्हा अर० सु० ॥ २ ॥ निपट कूट कलाप करिने, पर गुपत मत खोल रे ॥ ऋण विधौ धन धान्यनि करै, कपट कूट न तोल रे ॥ वाल्हा कप० सु० ॥ ३ ॥ कूट लेख कुसाख भरिने, रचयमा ड मडोल रे ॥ अन्य सिरसि कलंक धरिने, चरित छांनु न छोल रे ॥ वाल्हा चरि० सु० ॥ ४ ॥ वसु नरेसर वृथा रचिने, लह्यो कुगति

कचोल रे ॥ दुतिय व्रत रस राग भाखी, कुशल सार विमोल रे ॥ वाल्हा कु० सु० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ दूहा ॥ जगदाधार जिनेंदने, पूजो भाव रसेण ॥ शिव वनिता वस कीजीये, पूजा त्रयतमएण ॥ १ ॥

॥ राग गरबो ॥ भवि चतुरसुजाण, परनारीसुं प्रीतडी कबहुं न कीजीये ॥ ए चाल ॥ भवि भाव धरी, भवसागर निसतारक जिन पति सेवीये ॥ भवि० ॥ टेर ॥ बावनचंदन खंडन करिये, तेहमां वलि कुंकम रस भरिये, मृगमद परिमलता अनुसरिये ॥ भ० ॥१॥ कंकोल सुवासित वलि कीजे, तिम विविध कुसम रसकस दीजे, ए चूरण विधि निज वस कीजे ॥ भ० ॥ २ ॥ इम वास रसें जे जिन पूजे, तिणसें सवि करम सवल धूजे, सुख संपति जाय न घर दूजे ॥ भ० ॥ ३ ॥ सुर किन्नर नर शासन धारे, विन समर्या सहु संकट वारे, ए पूजन मन वंछित सारे ॥ भ० ॥ ४ ॥ विमला कमला सवला पावे, जे प्रभु गुणगण भावन भावे, इम चंदकपूर सुजस गावे ॥ भ० ॥ ५ ॥ इति ॥ मृगमदांबरघुसृणमिश्रितै, र्वरवरास सुचंदनसंस्कृतै ॥ विधतियोजिनपूजनमंजसा, सलभतेनिभूतिकिल वासकैः ॥ ॐ ह्रीं श्रीपर० मृषावादत्यागव्रतधारणाय वासक्षेपं यजामहे स्वाहा ॥ इति पुष्प मृषावादविरमणव्रत पूजा ॥ ३ ॥

॥ अथ चोथी अदत्तादान विरमण व्रत पुष्पमाल पूजा ॥

॥ दूहा ॥ त्रयतम व्रत हिव सांभलो, भाखे जगत जिनंद ॥ ॥ स्तेय करण सव सुख हरण, अष्ट कर्मदलकंद ॥ १ ॥

॥ राग सोरठ ॥ हां हो रे देवा बावनचंदन घस कुमकुमा ॥ ए चाल ॥ हां हो रे वाला, पर धन हरण गमन करो, धरि त्रिकरण सुद्ध विलाश ए ॥ हा हो रे वाला, ए भवजल जलधर समो, वलि समकित वृंद विनास ए ॥ व० ॥ १ ॥ हां हो रे वाळा, कनक र

जत मणि धातूनो, जल थल खज पसु पटकूल ए ॥ ज० ॥ हां हो० इम तनु थूल जगति भरया, लही सकल पदारथ मूल ए ॥ ल० ॥ २ ॥ हां हो० कुमति दुरति रमणी तणो, छे सदन ए चोरिनो कर्म ए ॥ छे० ॥ हांहो० विपद जलधि पिण जाणिये, सचपल थइ नासे धर्म ए ॥ स० ॥ ३ ॥ हांहो० ए व्रत सुरतरु सारिखो, शिवसुख फल दैन उदार ए ॥ शि० ॥ हांहो० ॥ कुशल कलायुत कीजीये, लहीये भवजलनो पार ए ॥ ल० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ दूहा ॥ पूज चतुर्थी मालनी, करिये भक्ति वसेण ॥ मोह तिमिर भर उपसमे, प्रगटे बोध खिणेण ॥ १ ॥

॥ राग खंभायची ॥ भव भय हरणा, शिव सुख करणा, सदा भजो व्र० ॥ ए चाल ॥ भविजन पूजो, जिन ग्रीवा धरी, वर फूलनकी माला, में वारी जाउं व० ॥ ए पूजन दुरगति घर च्छेदी, विरचे शिव सुख शाला ॥ मेंवा० विर० भवि० ॥ १ ॥ चंपक मरुक तिलक चंपेली, पाडल लाल गुलाला ॥ मैं० पा० ॥ विमल कमल परिमल मदमाता, न तजे अलि मतवाला ॥ में० न० भवि० ॥ २ ॥ जाय दमण जूही कोरंटक, मालति मरुक रसाला ॥ में० मा० ॥ एसें पंच वरण कुसुमे करि, माल रचन परनाला ॥ में० मा० भवि० ॥ ३ ॥ ए माला पूजन करो नासे, कोटि करम दुख जाला ॥ में० को० ॥ सुमति सुरति अनुभव वलि प्रगटे, त्रासे कुमति कुचाला ॥ में० त्रा० भवि० ॥ ४ ॥ ए विधि संवरद्वार विकासे, पापसदन मुख ताला ॥ मे० पा० ॥ कपूर कहे प्रभु चरण सरणमें, मंगलमाल विशाला ॥ में० मं० भवि० ॥ ५ ॥ इति ॥ काव्य ॥ सरसमुद्गरचंपकपाडलै । मरुकमालतिकेतकीसत्कजै ॥ विधिविगुंफ्य जिनंपरिपूजयेत् । स्वजमजस्रममीभिरजेच्छकः ॥ १ ॥ ॐ ह्रूँ श्री पर० अदत्तादानमोचनाय मालं यजामहेस्वाहा ॥ इति अदत्तादान विरमणव्रतपूजा ॥ ४ ॥

॥ अथ पांचमी मैथुन विरमण व्रत दीपक पूजा ॥

॥ दूहा ॥ व्रत चोथे मैथुन तणो, भजो भविक भगवान ॥ इण सुं नरक निवासमें, लहिये दुःख वितान ॥ १ ॥

॥ राग सोरठ ॥ कुंद किरण ससी ऊजलो रे देवा ॥ ए चाल ॥ मन वच काया थिर करी रे वाल्हा, कलुप कुशील निवारो रे आछो ॥ एह नरकरमणी तणो रे वाल्हा, शोदर अति हितकारो रे आछो ॥ १ ॥ नृ सुर पसु सहु जातनो रे वाल्हा, विपय कलित बहु दोपे रे आछो ॥ ते परिहरने थिर रहो रे वाल्हा, निज दारा संतोखे रे आछो ॥ २ ॥ लंकापति नरके गयो रे वाल्हा, ए मैथुन रस धारु रे आछो ॥ एहने तजकर केइ लह्या रे वाल्हा, जीव सकल सुख सारु रे आछो ॥ ३ ॥ शीलरतन जतने धरो रे वाल्हा, तस दूपण सब छंडी रे आछो ॥ कुशल कला करिने लहो रे वाल्हा, शिवसुख माल प्रचंडी रे आछो ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ दूहा ॥ दीपक पूजा पंचमी, करे सकल दुख नास ॥ लोकालोक विलोकने, प्रगटे बोध विकास ॥ १ ॥

॥ राग वरवोदेस ॥ केसरियाने जिहाजको लोक तिरायो ॥ ए चाल ॥ भाव धरी दीपक पूज रचावो, यातें शिवसुख संपति पावो ॥ भा० ॥ रक्तपित सितवर्ण विचित्रित, सूतनी वाट वणावो ॥ गो घृतमांहि अधिकतर करिने, सुभ मन दीप जगावो ॥ भा० ॥ १ ॥ दीपकने मिश मनमंदिरमें, ज्ञानको दीप जगावो ॥ जडता तिमर कलाप हरीने, मंगलमाल वधावो ॥ भा० ॥ २ ॥ अरति हरण रति दायक जगमें, ए पूजन मन भावो ॥ सुरनर पाय नमे ततखिणही, यातें नरक न जावो ॥ भा० ॥ ३ ॥ अनुभव भाव विसाल करीने, आतमसुं लय लावो ॥ कपूर कहे भविजनसें प्रभुके, वर गुणगण जस गावो ॥ भा० ॥ ४ ॥ इति काव्य ॥ आत्मप्रवो

धैकविवर्द्धनाय । जाडणंधकारव्रजमर्दनाय ॥ भव्यंप्रदीपंकुरुभक्ति वृंदै, प्रभोर्गृहैवायघतर्जनाय ॥ १ ॥ ॐ ह्रूं । श्रीपरमात्मने अनंतानंत० मैथुनपरिहरणाय दीपं यजामहे स्वाहा ॥ इति मैथुन विरमण व्रत पूजा ॥ ५ ॥

॥ अथ छठी परिग्रह विरमण व्रत धूप पूजा ॥

॥ दूहा ॥ भवि कीजे व्रत पंचमे, सकल परिग्रहमांन ॥ ए मो हादिक सबरनो, भूधर दुखनी खाण ॥ १ ॥

॥ राग वसंत ॥ अतुल विमल मिल्या, अंखड गुणे० ॥ ए चाल॥ सकल भविक भरया, विमल गुणे वाल्हा, मान परिग्रहनो करो ए ॥ ॥ सक० ॥ टेर ॥ वज्र समान ए सम गिरि भेदन, दोष दि वसपतिवासरोए ॥ स० ॥ १ ॥ धन कण वसन गवादिक पसुनो, धातु निकर तिम जाणिये ए ॥ इत्यादिक नव भेद विधाने, दश वैकालिक भांणीये ए ॥ स० ॥ २ ॥ एहने मूल थकी जे हरे नर, तेहने मोक्ष मिले सही ए ॥ सुचिरकाल गृहवास वसे जे, तेहने देशविधे कही ए ॥ स० ॥ ३ ॥ नरक निवास इणे विन पाम्यो, मुम्मण शेठ ते भाखिये ए ॥ भविजन ए व्रत भावथी पालो, कुशल कला निज दाखिये ए ॥ स० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ दूहा ॥ छठी पूजन धूपकी, धूपो जिनवर अंग ॥ कुसुरभि करम तणी हरे, दायक हे सुखचंग ॥ १ ॥

॥ राग देश ॥ थांरी छिव वरणी न जाय, थांरे मुखडारी हो वारी राज ॥ ए चाल ॥ एसी विध पूजन, भाई दिल धार, धूपधूम घनसार धार करि ॥ ए टेर ॥ याभवभीम वारि सागरमें, तरण तरंडक तरल विचार ॥ धू० ॥ १ ॥ चंदन देवदारु बलि अंबर, मृगमद घनवटी घनसार ॥ धू० ॥ २॥ एसें सुरभि द्रव्य बहु मेली, तिणमें सेल्हारस न विसार ॥ धू० ॥ ३ ॥ मणियुत कंचन

धूपदानमें, विमलानलथी करि सुप्रचार ॥ धू० ॥ ४ ॥ कपूर करत नुतिया जिनपूजा, भविजन गणकी तारणहार ॥ धू० ॥ ५ ॥ काव्य ॥ नानासुगंधवसुनिर्मितसारधूपं । चाकर्षितंभ्रमरवृंदमभिहियेन ॥ श्राद्धाश्रयेविधिनिवस्थविशालभक्त्या । धूपेज्जिनाधिपतिनं शिवदंसुदावे ॥ १ ॥ ॐ ह्रूँ श्रीपर० परिग्रहमानव्रतधारणाय धूपं यजामहे स्वाहा ॥ इति परिग्रहपमानव्रत पूजा ॥ ६ ॥

॥ अथ सातमी दिशिपरिमाणव्रत कुसुम पूजा ॥

॥ दूहा ॥ छठो व्रत दिशमानको, गमनागमन निवार ॥ अकुशलता सवि उपसमे, श्रेय संपजे सार ॥ १ ॥

॥ राग गरबो ॥ सिद्धाचलमंडण स्वामीरे ॥ ए चाल ॥ श्रीशिवसुख संपति वरिये रे, भवभय दुख वारण करिये रे ॥ कर दिसपरमाण जे चरिये ॥ रसीला, भाव विमल दिल धरिये रे, वाला धरिये तो समरस भरिये ॥ र० भा० ॥ १ ॥ अध उर्ध ने तिरछ वखाणो रे, दिशि विदिशिने तेम प्रमाणो रे, ए छे संकट जलधिनो राणो ॥ र० भा० ॥ २ ॥ एमां गमनागमन निवारो रे, ओ छे कुमति दुरति भरतारो रे, इक चक्री लह्यो दुख भारो ॥ र० भा० ॥ ३ ॥ ए व्रत शिवसाधन चंडो रे, तुमे भविजन एह न खंडो रे, कहे कुशल कला नित मंडो ॥ र० भा० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ दूहा ॥ भवियण पूजा सातमी, कीजे भक्ति विसाल ॥ ससुरभि नानाजातना, विमल कुसुम भर थाल ॥ १ ॥

॥ राग धन्यासिरी ॥ कबहु में नीके नाथ न ध्यायो ॥ ए चाल ॥ प्रभुजीकी फूले पूजन सारो, प्र० ॥ टेर ॥ श्रीजीनजीके चरण कमलमें, अलि समता गुण धारो ॥ प्र० ॥ १ ॥ चंपक कुंद गुलाब केवडा, पारधि नाग कलारो ॥ जासु दमण वासंति मोगरा, पाडल लाल मंदारो ॥ प्र० ॥ २ ॥ इम नानाविध कुसम घटाकर, भाव वि

मलजल झारो, तो लहिये भविजन ध्रुव करिने, अचिरथकी भव पारो ॥ प्र० ॥ ३ ॥ व्रत धर फूल कलाप रुचिर ग्रहि, पूजत जे जग तारो ॥ कपूर कहत जिन चरण सरण लहि, करम सबल दल मारो ॥ प्र० ॥ ४ ॥ इति ॥ काव्य ॥ गंधामलादिगुणलक्षणलक्षितैर्वै पुष्पोत्करैरखिलगुंजितचंचरीकैः ॥ संसेवयेद्विविधजातिसमुद्भवैर्या । जैनेश्वरंव्रजतिसोह्यचिराच्छिवंना ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीप० दिसिपरिमाणव्रतग्रहणाय पुष्पं यजामहे स्वाहा ॥ इति दिसि परिमाण व्रत पूजा ॥ ७ ॥

॥ अथ आठमी भोगोपभोग विरमण व्रत अष्टमंगल पूजा ॥

॥ दूहा ॥ जगनायक पद कमलमें, धरिये करि मन भृंग ॥ भोग अने उपभोगनो, ए सहु व्रत गिरिश्रृंग ॥ १ ॥

॥ देशी ॥ सिद्धचक्र पद वंदो रे भविका ॥ ए चाल ॥ सकल सचित्त ने द्रव्य विकृति, वाहन वलि तंबोल ॥ वसन कुसमदल पानहि तिम वलि, सयण विलेवण घोल रे ॥ भविका, इण व्रतमें मन मंडो, शिव सुख रयण करंडो रे ॥ भविका इ० ॥ १ ॥ ब्रह्मचर्य दिशि न्हाण भक्त इम, नियम चतुर्दश माल ॥ प्रतिदिन भाव हृदय धरि करिये, एहनी सार संभाल रे ॥ भ० इ० ॥ २ ॥ तिमही अभक्ष करोत्तर त्रिसत, अखिल विपुल महि कंदो ॥ कालक्षीण सहू द्रव्य अजाण्यो, फल निशि भोजन छंदो रे ॥ भ० इ० ॥ ३ ॥ विविध अप्पोल दुप्पोल विभेदे, अशनारंभविसाल ॥ ए छंडे ते शिवसुख मंडे, प्रवदे त्रिजग कृपाल रे ॥ भ० इ० ॥ ४ ॥ इण व्रत करि चित मंदिर भरिये, तरिये भवजल पार ॥ अनुभव चंद्र सुधा झड मंडे, कुशल कला निरधार रे ॥ भ० इ० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ दूहा ॥ मंगल पूजा आठमी, करम दलन असि धार ॥ करिये श्रीजिन आगले, वरिये शर्म्म अगार ॥ १ ॥

॥ राग ठूमरी ॥ तुम विन दीनानाथ दयानिध, कोन खबर ले मेरी रे ॥ ए चाल ॥ भविजन भावे श्रीजिनवरकी, मंगल पूजा कीजे रे ॥ वाल्हा मं० ॥ टेर ॥ श्लीलायन शरलाशन नंद्या, वर्त्त कुंभ निरमीजे रे ॥ मीनयुगल श्रीवच्छ सरावनो, संपुट स्वस्ति करीजे रे ॥ वाल्हा सं० भ० ॥ १ ॥ ए अडमंगल मंडण कारण, कंचन थाल रचीजे रे ॥ रुचिराखंड विमल गुणधारी, तंदुलसे लिखलिजे रे ॥ वाल्हा तं० भ० ॥ २ ॥ निज मन भक्ति भाव धर भविका, प्रभु सनमुख धर दीजे रे ॥ तो सुखधाम मुक्तिपुट भेदन, निवसन कृत्य लहीजे रे ॥ वाल्हा नि० भ० ॥ ३ ॥ स्वांत गगन सम सूर्योदयथी, कोटि करम तम छीजे रे ॥ प्रगट प्रताप पीन जिन चरणे, चंद कपूर नमीजे रे ॥ वाल्हा चं० भ० ॥४॥ इति॥ काव्य ॥ योसत्कंचनभाजनेसुचितरेमण्योत्तमैर्मंडिते । श्लीलान्यष्टसुमंगलानिविधिनामंव्यप्रभोसन्मुखे ॥ भक्तात्मापरिढोकयेद्रुचिपरःसोघव्रजंनासयेत् । भित्तेदुर्गतिभूधरंचलभतेस्वर्गादिमोक्षाश्रयं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीप्र० भोगोपभोग व्रत समदृष्टीसोधनाय अष्टमंगलं यजामहे स्वाहा ॥ इति भोगोपभोग विरमण व्रत पूजा ॥ ८ ॥

॥ अथ नवमी अनर्थदंड विरमणव्रत अक्षत पूजा ॥

॥ दूहा ॥ भवि ए व्रत अष्टम धरो, अनरथदंड विचार ॥ पाप चिरंतन उपसमे, प्रगटे पुन्य प्रचार ॥ १ ॥

॥ देशी ॥ सुगुण सनेही साजन श्रीसीमंधरस्वाम ॥ ए चाल॥ त्रिकरण शुद्ध निसुण भवि अनरथदंड विचार, समकित सुभटनो गंजन भंजन संवर द्वार ॥ मनमथ बोध विकाशक सास्त्र पठन अधिकार, मुखभ्रद्दग तनुथी करे, भंड कुचेष्टागार ॥ १ ॥ हास्यथकी वलि कुवचन भाषण मुसरे प्रबंध, ऊखल मूसल घरटादय अति धरण संबंध ॥ स्नानसमै जल तेल अधिकतर अप्रतिबंध, विन कारण

षट् काय विराधनमें दुखधंद ॥ २ ॥ इंगालादिक करण कर,वण सकल विधान, उदर भरण पंचोत्तरं दसविध कर्मादांन ॥ इम सहु अनरथ करम अवर पिण दुखनी खाण, व्यर्थपणे मनमान्या छेदे पुन्य प्रधान ॥ ३ ॥ इणकर पूर्वे केइ गया नर संकट धाम, व्रत ग्रही न रहिये तब लहिये शिवसुख ठाम ॥ ए व्रततणी भवोदधि तारण तरण प्रकाम, कुशल कला नित करतां प्रगटे अभिनव मांम ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ दूहा ॥ नवमी श्रीजिनराजनी, पूजा परम विलास ॥ विमलाक्षत भरि भाजने, भविजनें करे प्रकास ॥ १ ॥

॥ राग पील्ह ॥ अबतो उधारयो मोहि चहिये जिनंदराय, राखुं भरो० ॥ ए चाल ॥ श्रीजिनवरजीकी सेवा सारे, सो भवभय दुख दूर निवारे ॥ श्री० ॥ टेर ॥ तंदुल विमल सकल गुण मंडित, खंडित दोपरहित उर धारे ॥ कंचन पात्र भरि जिन आगे, ढोकन बुद्धि प्रबल सुविचारे ॥ श्रीजि० ॥ १ ॥ यापूजन जन तन मन रंजन, गंजन कुगति कुबोध विदारे ॥ सबल करम नग भेदनहारो, सघन भवोदधि पार उतारे ॥ श्रीजि० ॥ २ ॥ सुमति सानुभव आण मिलावे, ते पिण पद दिवशर्म समारे ॥ पीनं महोदय धार भाव धरि, चंदकपूर सनूर निहारे ॥ श्रीजि० ॥ ३ ॥ इति ॥ काव्य ॥ योखंडजातिगुणवृंदसमन्वितानि । नाढोकयेद्विपुलनिर्मलतंदुलानि ॥ कर्म्मावलिंझटतिछेद्यहिमाज्जिनाग्रे । सोवैभजेच्छिवसुखंसुतरामनंतं ॥ १॥ ॐ ह्रीं श्रीपर० अनर्थदंडसमूलंमोचनाय अक्षतं यजामहे स्वाहा ॥ इति अनर्थदंड विरमणव्रत पूजा ॥ ९ ॥

॥ अथ दशमी सामायक व्रत दर्पण पूजा ॥

॥ दूहा ॥ नवमो नवनिधि जाणिये, सामायक व्रत सार ॥ सुर जेहनी आसा करे, सुरतरु सम दातार ॥ १ ॥

॥ राग ॥ आय रहो दिल वागमें, हो प्यारे जिनजी ॥आ०॥ ए चाल ॥ सामायक व्रत पाल रे, भविक जन सामा० ॥ टेर ॥ त्रिकरण त्रिकयोगे इक महुरत, निरतीचारे चाल रे ॥ भ० सा० ॥ १॥ गृह व्यापार तजीने सुभ मन, धरि निरवद्य विसाल रे॥ भ० सा० ॥ २ ॥ मन वच वपु प्रणिधान असेवन, स्मृति विहीनता टाल रे ॥ भ० सा० ॥ ३ ॥ द्वात्रिसत दूषण परिहरिने, पंचम गुण घर झाल रे ॥ भ० सा० ॥ ४ ॥ इम धनमित्र तणी पर सीझो, कुशल कला परनाल रे ॥ भ० सा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ दूहा ॥ दशमी दर्प्पण पूजना, कीजे श्रावक शुद्ध ॥ सुर पादप शम शंकरण, हरण पाप संकुद्ध ॥ १ ॥

॥ राग कालिगडो ॥ नेम प्रभुजीसुं कहज्यो जी म्हारा ॥ ए चाल ॥ जिन पूजनमें रहिये रे, म्हारा जि० ॥ मन वंछित फल लहीये रे, म्हा० जि०॥ टेर ॥ कंचन मणिरतनेकर जडियो, वर दरपण कर गहीये ॥ जिनवर सनमुख दाखन विधिसें, सकल करम वन दहीये रे, म्हा० जि० ॥१॥ प्रभूजीकी सेवा सब सुखदाई, भाव भक्ति उर चहीये ॥ शिव वनिता तुम प्रेम विलुधे, अपर अधिक किम कहीये रे, म्हा० जि० ॥ २ ॥ निजकशरीर प्रमाद वसे करि, भव दल भीति न सहिये॥ सुभ मन समकित वीर सग ले, चंदक पूर निवहीये रे॥ म्हा० जि० ॥ ३ ॥ इति ॥ काव्य॥ रुचिरनिर्मल दर्प्पणदर्शनं । विनयभृभ्रिदयक्लिकारये ॥ जिनपतेरचिराद्भवसंगमं। सचनिरस्यभजेच्छिवमंजसा ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं पर० सामायकव्रतग्रहणदृढकरणायदर्प्पणं यजामहे स्वाहा ॥ इति सामायकव्रत दृढकरण पूजा ॥ १० ॥

॥ अथ इग्यारमी देशावगामीकव्रत नैवेद्य पूजा ॥

॥ दूहा ॥ दसमो व्रत हिव भवियगा, धारो धरि वरभाव ॥ संसारार्णव गहिरनो, तारणवरतर नाव ॥ १ ॥

॥ देशो ॥ सिद्धाचल गिर भेट्या रे, धन भाग हमारा ॥ ए चाल ॥ श्रद्धा धर मन भाजे रे, घन पाप तिहारा ॥ श्र० ॥ टेर ॥ विमल सकल सुभ विनय धरीने, गुरु मुख वचन हजारा ॥ ए व्रत सुंदर दिल धरो भविजन, देसावकास विचारा रे ॥ घ० श्र० ॥१॥ द्रव्यानयन प्रेक्ष प्रयोगे, शब्द रूप अनुसारा ॥ पुद्गल प्रेक्षण प्रभृति सकलना, तजिये दूषण धारा रे ॥ घ० श्र० ॥ २ ॥ परमोत्कृष्ट जघन्य प्रकारे, प्रत्याखान प्रचारा ॥ सहु व्रतनो आगमन ए व्रतमें, गुण मणिरयण भंडारा रे ॥ घ० श्र० ॥ ३ ॥ कर्म कषाय हरीने छेदे, चउ गति गेह विहारा ॥ अजरामर धन दे लह्यो निरमल, कुशल कला करि सारा रे ॥ घ० श्र० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ दूहा ॥ एकादसमी पूजमें, विविध भांति नेवद्य ॥ मेलि करो जिनराजनी, दायक सुख निरवद्य ॥ १ ॥

॥ राग कल्याण ॥ तेरी पूजा वणी हे रसमें ॥ हो ते० ॥ ए चाल ॥ सेवा सारो श्रावक जिन चरणे ॥ हो से० ॥ टेर ॥ मोदक लपनश्री वरघेवर, शिता सुरस घृत झरणे ॥ मुक्तचूरविंद्रादिक बहुतर, नैवद्य नानावरणे ॥ हो से० ॥ १ ॥ रयणांकित कंचन भाजन भरि, मन वच तनु थिर करणे ॥ करि ढोकन विधि परम विनय धरि, रहिये नित प्रभु सरणे ॥ हो से० ॥ २ ॥ दुखदल नासन यापूजन विधि, निर्वृति विशद सुख भरणे ॥ चंदकपूर कहत भवि जनके, कलिमल माला हरणे ॥ हो से० ॥ ३ । इति ॥ काव्य ॥ धवलधामशिताप्पिसमुद्भवै । विमलभक्तिधरोन्वितकर्परै ॥ जिनपतेर्विदधातिवियूषनं । सलभतेशिवशंप्रवरान्नकैः ॥१॥ ॐ ह्रीं श्रीपर० देशावगासीव्रतदृढकरणाय नैवेद्यं यजामहे स्वाहा॥ इति देशावगासिव्रत दृढकरण नैवेद्य पूजा ॥ ११ ॥

॥ अथ बारमी पोषध व्रत ध्वज पूजा ॥

॥ दूहा ॥ व्रत पोषध इग्यारमो, भावो भविक विधान ॥ ध्यावो ज्युं द्रुत संहरे, प्राकृत कर्म वितान ॥ १ ॥

॥ देशो ॥ इण सरवरियारी पाल, ऊभा दोय राजवी म्हारा ला० ॥ ए चाल ॥ भविजन भाव विशाल, प्रमाद निवारिये म्हारा लाल ॥ प्र० ॥ टेर ॥ पोसह व्रत चित मांहि, विनय धर धारिये ॥ म्हा० वि० ॥ ते पिण दुविध प्रकार, चतुर न विसारिये ॥ म्हा० च० ॥ प्रति वासर प्रति पर्व्व, सजे तिम सारिये ॥ म्हा० स० ॥ १ ॥ पडिलेहण धुर धार, सकल किरिया करो ॥ म्हा० स० ॥ परिठावण विधिवाद, मया धर आदरो ॥ म्हा० म० ॥ खट्काया संघट्ट तजीने संचरो ॥ म्हा० त० ॥ अचपल थइ पच्चखाण, विविध मन संभरो ॥ म्हा० वि० ॥ २ ॥ वलि सहु दूषण टालिने, पाप निकंदिये ॥ म्हा० पा० ॥ चौगति च्यार कषाय, करम दल छंदिये ॥ म्हा० क० ॥ भवनिधि तारण तरण, सुगरु पद वंदिये ॥ म्हा० सु० ॥ कुशल कला दल माल, करी चिरनंदिये ॥ म्हा० क० ॥ ३ इति ॥

॥ दूहा ॥ द्वादशमी ध्वज पूजमें, घोषण देइ अमार ॥ धरिये द्वादश भावना, तरिये भवजल पार ॥ १ ॥

॥ राग देशाख ॥ कुबज्याने जादू डारा ॥ ए चाल ॥ प्रभुजीसें प्रीत लाना, करि ध्वज पूजन विधानाहो ॥ प्र० टेर ॥ जोयण स सहसमांन मणि मंडित, कंचन दंड रचाना हो ॥ प्र० १ ॥ पंच वरणयुत वसन पताका, अधिवासित लहकाना हो ॥ प्र० ॥ २ ॥ ढक्कनाद करि तिन प्रदक्षिण, रोहन विधि मन भाना हो ॥ प्र० ॥ ३ ॥ याविधि सकल करम रिपु दारण, ज्योतिमें ज्योति समाना हो ॥ प्र० ॥ ४ ॥ जगतारण श्रीजिन दरसणसें, चंदकपूर लुभाना हो ॥

प्र० ॥ ५ ॥ इति ॥ काव्य ॥ भव्यार्च्चतिद्रुजवैरसशुभैः सजीलै, जैन्येश्वरंकनकदंडयुतैःससोभैः ॥ कर्मारिवृंदजयछ्मसमान्वितैर्यो। वैसोभजेच्छिदविवादिसुराज्यलक्ष्मीः ॥१॥ ॐ ह्रीँ श्रीपर० पोसह व्रत दृढकरणाय ध्वजं यजामहे स्वाहा ॥ इति ॥ पोषध व्रत दृढकरण पूजा ॥ १२ ॥

॥ अथ तेरमी अतिथिसंविभागव्रत फल पूजा ॥

॥ दूहा ॥ द्वादशमो व्रत सुख फलद, साधु दान सनमान ॥ अजरामर पद संपजे, सालिभद्र अनुमान ॥ १ ॥

॥ राग कजली ॥ मेरो मन मोह्यो माई, आनंद झीले ॥ आ० ॥ ए चाल ॥ साधु दानव्रत भवि हृदय धरो, हृदय धरो रे भाई हृदय धरो ॥ सा० ॥ टेर ॥ व्रत संयमगत परलिंगीने, पडिलाभन मति रिजुन करो ॥ रिजु० भा० सा० ॥ १ ॥ जिनमत मुनिवर चरण नमीजे, असनादिक देइ सुकृत वरो ॥ सु० भा० सा० ॥२॥ वलि पंचातिचार निवारी, परम विरतीना विघन हरो ॥ वि० भा० सा० ॥ ३ ॥ श्रीश्रेयांस ने चंदनबाला, अनुमाने पद निर्वृत्ति वरो ॥ नि० भा० सा० ॥ ४ ॥ कुशल कला सुविसाल करीने, भवजल सागर झटति तरो ॥ झ० भा० सा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ दहा ॥ फलदल पूजा तेरमी, भरि भाजन कमनिय ॥ भविक रचो भगवंतनी, भव विषधर दमनीय ॥ १ ॥

॥ राग ख्याल ॥ लोभी नेना रे, लोभी नेना हो द० ॥ ए चाल ॥ लोभी सेणा रे, लोभी सेणा, हो पूजनके लोभी सेणा ॥ हो पू० टेर ॥ पूजन विधि प्रभुकी दिल धर ले, थिर कर मन तनु वैणा ॥ हो पू० ॥ १ ॥ श्रीफल पूंगो बीज पूर वर, आम्र कदली फल लेणा हो पू० ॥ २ ॥ इम नानाफल गहि प्रभु आगे, भरि भाजन धरदेणा ॥ हो पू० ॥ ३ ॥ भक्ति विमल सुचितर धर मनमें,

प्रभु समरण दिन रेणा ॥ हो पू० ॥ ४ ॥ कपूर कहे प्रभु पद पंक जमें, षट्पद भए युग नेणा ॥ हो पू० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ कलश ॥

॥ हां हो यश धारा, प्रभुजोने, जगतारण यशधारा ॥ प्र० ॥ टेर ॥ सुरनर मुनि तिरियगवन सिचन, वचन सजल घन झारा ॥ हां हो घ० प्र० ॥ विक्रमपुर श्रीत्रिशला नंदन, जिनवर त्रिभुवन प्यारा ॥ द्वादश व्रत पूजन विधि पभणो, भवियण गण हितकारा ॥ हां हो हि० प्र० ॥ १ ॥ गुरु खरतर जिनचंद्र सूरिवर, राजे विगत विकारा ॥ श्रीमति भाधृतिरादिकलितके, धरि मन वचन आगारा ॥ हां हो आ० प्र० ॥ २ ॥ संवत रस त्रिक निधि रात्रीकर, मासाश्विन मनुहारा ॥ धवल पक्ष प्रतिपद तिथि शोभन, रजनीपति सुत वारा ॥ हां हो सु० प्र० ॥ ३ ॥ श्रीजिनरत्न सूरि शाखाधर, पाठक पद विसतारा ॥ रूपचंद गणि चरण कमलमें, कुशलसार मधुकारा ॥ हां हो म० प्र० ॥ ४ ॥ अपर नाम करि चंदकपूरा, रचि जिनपति नुति सारा ॥ कुशलनिधान प्रवर मुनिवरको, प्रेरणया सुविचारा ॥ हां हो सु० प्र० ॥ ५ ॥ इति ॥ काव्य ॥ जंव्वाम्रादिफलव्रजैःससुरसैगंधादिभिर्मिश्रितै । नूनं द्रव्यरुतुद्भवैश्च विधिना कुर्यात्प्रभोरर्चनं ॥ सो भक्त्यात्मनघश्रजोत्करनिरासंकृत्यसद्यंलभे । च्छमंस्वर्गतरो स्वंसुखफलागारंवरंनिर्मलं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीपर० अतिथिसंविभागव्रतशोधनाय फलं यजामहे स्वाहा ॥ इति अतिथिसंविभाग व्रत पूजा ॥ १२ ॥ इतिश्री बारह व्रत पूजा संपूर्णम् ॥

॥ अथ पूजा विधि ॥

श्रीमहावीर स्वामीकी प्रतिमा त्रिगडे पर स्थापनकर स्नात्र कराणी, डावे तरफ कल्पवृक्ष, अष्टमंगलीक, धजा रखीजे. नालेर १५, रोक ३) अष्टद्रव्य, मोलि, कुंकु, घृत; पंचामृत, पीछे पूजा पढणी.

एक पट्टेपर चावलोका तेरे पूंज करणा. विस्तार विधिमें १३ अष्ट मंगलीकका रु १३), धजा १३, सासन देवी, तेरे पूंजो पर एकेक चिठी धरणा ॥ ॐ ह्रूँ श्रीसर्वधर्ममूल श्रीमद्दर्शनायनमः ॥ या चीठी वीचमें, इसी तरे बारे व्रतोकी १२, थोडा२ आठोही द्रव्य इन तेरा पूंजो पर चढाणा ॥ इति ॥ १२४ दीपक अथवा श्रेणीबंध बत्तिया जगाके मंडलके चोतरफ रख्खे ॥ बारेव्रत मंडल पूजाविधि संपूर्ण ॥ धजा सहरमें फिरावे ॥

॥ अथ ॥

॥ उपाध्याय रामऋद्धिसारगणि विरचित ॥

॥ पैतालीस आगम पूजा ॥

॥ तत्र ॥

॥ प्रथम जल पूजा ॥

॥ श्रीजिनाय नमः ॥ दूहा ॥ वर्द्धमान जिनवर नमुं, समरूं सारद माय ॥ सदगुरुने प्रणमी करी, धर्मतणे सुपसाय ॥ १ ॥ पैतालीस आगमतणी, पूजा प्रभुनी सार ॥ प्रभु मुखथी वाणी सुणी, रचै सूत्र गणधार ॥ २ ॥ ज्ञान जगत दीपक समो, ज्ञानै जय जयकार ॥ ज्ञानतणी पूजा करो, ज्युं पामो भवपार ॥ ३ ॥ आगम पिण हियडै धरी, पूजो श्रीजिनराय ॥ पूजत अनुभव गुण लहो, दुरगति दूर पुलाय ॥ ४ ॥ ज्ञानने वंदो भविक जन, ज्ञान सुगति दातार ॥ अष्टद्रव्य लेई करी, पूजो जग भरतार ॥ ५ ॥ जल चंदन कुसमैं करी, धूप दीप सुविचार ॥ तंदुल नेवद्य फलतणी, पूज करो मनुहार ॥ ६ ॥ श्रीसुधरम गणधर रच्यौ, भविक जीव सुखदाय ॥ द्वादस अंग जे वर्णव्या, सकल चित्त उलसाय ॥ ७ ॥

॥ ढाल ॥ हां हो रे देवा बावनचंदन घस कुमकुमा ॥ ए चाल ॥ हां हो रे वाला, कलश सुद्ध लेइ करी, भवि पूजो जिन मन भाय ए ॥ हां हो रे वाला, गंगा क्षीर समुद्रना, सलिलथी नवण सुखदाय ए ॥ १ ॥ हां हो रे वाला, दृष्टिवाद पूर्व वर्णव्या, पंच भेद छे अति मनुहार ए ॥ हां हो रे वाला, परकरमें सप्त श्रेणिया, अठयासी सुत्र सुखकार ए ॥ २ ॥ हां हो० चवद पूरवगत मनहरा, महामंत्र ने विद्या भंडार ए ॥ हां हो० जंबुवेलंधर देवता, धरे पूर्व समु सुविचार ए ॥ ३ ॥ हां हो० दिग् वस्तु विनयें कह्या, उतपाद पूर्व सुखदाय ए ॥ हां हो० वस्तु चवद छे अग्रायणी, ए पूरव मन में भाय ए ॥ ४ ॥ हां हो० विर्यप्रवाद अति मनहरु, अड वस्तु भेद सुभ जाण ए ॥ हां हो० अस्तिप्रवाद छे सुखकरु, अढार वस्तु गुणखाण ए ॥ ५ ॥ हां हो० ज्ञानप्रवाद बारम कह्यो, दोय वस्तु छे सत्यप्रवाद ए ॥ हां हो० सोल वस्तु अति मनहरु, ए पूरव आत्म प्रवाद ए ॥ ६ ॥ हां हो० कर्मप्रवादें तीस छे, तीस वस्तु पूरव पच्चखाण ए ॥ हां हो० विद्याप्रवादमें पनर छे, वीस वस्तु कहत कल्याण ए ॥ ७ ॥ हां हो० प्राणावादमें तेर छे, तीस वस्तु क्रिया सुविसाल ए ॥ हां हो० पणवीसे करी सोभतो, चवदम बिंदुसार गुण माल ए ॥ ८ ॥ हां हो० पुज मसि लिखे तीनसे, त्यासी गज सोल हजार ए ॥ हां हो० वर्द्धमानना गणधरु, रचीयो तीजो अधिकार ए ॥ ९ ॥ हां हो० कुसल करण भव भयहरु, ज्ञान जोत भविक सुविचार ए ॥ चवद पूरव ए सुखकरु, कहे रामपाठक ऋद्धिसार ए ॥ १० ॥ इति ॥

॥ दूहा ॥ दिग् पूरव पूरण कह्या, लब्धि क्षीराश्रव जाण ॥ भवि जन भावें वंदिये, ज्ञान सदा कल्याण ॥ १ ॥

॥ ढाल दूजी ॥ आज आयो रे उछाह, जीवडा नाच जिणंद आगे ॥ ए चाल ॥ भवि रंग धरी आगम पूजन करीये रे, भेद

चोथौ हिव सुणो चित लाय ॥ दृष्टीवाद अनुयोग मिलाय ॥ भ० ॥ योग भेद करी जाण्यो सार, जंबु गुरु संयोग विचार ॥ भ० ॥ १ ॥ पंचम भेदै चूलिका जाण, पहिले पूरव च्यार वखाण ॥भ०॥ वीसमै अठदस चूलिका होय, चौथ पूरब लग सारण जोय ॥ भ० ॥ २ ॥ दस पूरबैमहि चूलिका सार, नंदीसुत्रमैं ए अधिकार ॥ भ० ॥ दृष्टीवाद बारम सुखकार, अंग हुंता पूर्वै सुविचार ॥ भ० ॥३॥ बार वरस दुकाल लहाय, बारमो अंग ते लीध सवाय ॥ भ०॥ संप्रत कालै नहिं पडै काल, एहवो प्रसिद्ध भविक सुविसाल ॥ भ० ॥४॥ परमादथी गया पूरब गुणमाल, श्रीजिन पूज्यां सुखनी साल ॥ भ०॥ एह आगम भवि हीयडै धार, भवि पामो सिवरमणी नार ॥ भ० ॥ ५ ॥ इति ॥

गाथा ॥ अरिहंतभासियथ्थं । गणधरदेवेहिंगंथियंसम्मं ॥ पणमामिभत्तिजुत्तो । सुयनाणमहोदहिंसिरसा ॥ १ ॥

तत्रादौ शार्दूलविक्रीडित छंदः ॥ श्रीमत्पुण्यधुनीप्रवाहधवलांस्थूलाच्छलच्छीकरै । रालीनालिकुलानिकल्मषधियेवोत्सारयंतीमुहुः ॥ नीलांभोरुहवासितोदलसद्भृंगारनालश्रुतां । वर्द्धारांश्रुतदेवतार्चनविधौसंपादयामादरात् ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीसमग्रसूत्रोऽग्रे जलं समर्पयामि ॥ इति जल पूजा ॥ १ ॥

॥ अथ बीजी चंदन पूजा ॥

॥ दूहा ॥ हिव चंदन पूजा करो, आगम पैंतालीस ॥ अंग इग्यार पूजो भविक, सुख पावो निसदीस ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ पास जिणंदा प्रभु मेरे मन वसीया ॥ पा० ॥ ए चाल ॥ अंग इग्यार सेवो सुखकारी ॥ अं० ॥ बावन चंदन पूज रचावो, ज्ञानने वंदो भवि सुविचारी अं० ॥ राई उदाई प्रभू गुण गावै, पदमावती नाचै तिण वारी ॥ अं० ॥ १ ॥ आचारंग प्रथम भ

वि जाणो, नामनी भजनासे सैधारी ॥ अं० ॥ आचाररथ सुनिइंद्र चलावे, बहुश्रुत हाथमे डोर उदारी ॥ अं० ॥ २ ॥ पंच प्रकार आचारना कहियै, किम पाले ते सिथलाचारी ॥ अं० ॥ दो श्रुतखंध आचारंग अंगे, संखित अनुयोग भविक उदारी ॥ अं० ॥ ३ ॥ संख्या निरयुक्तिनी कहस्युं, अध्ययना पचवीस विचारी ॥ अं० ॥ अढार सहस पदनी छे संख्या, नित गुणतां ते सुध अणगारी ॥ अं० ॥ ४ ॥ भाव जीवादि सुत्र कृतांगै, त्रिणसै तेसठ वादी धारी ॥ अं० ॥ तेवीस अध्यैन वीजे अंगे, अवर पूरव लीजे गुणधारी ॥ अं० ॥ ५ ॥ पदसंख्या हिव दुगणी जाणो, दसठाणा ठाणांगै धारी ॥ अं० ॥ दस अध्यैन श्रुतखंध छै एहीज, समवायांग भविक उपगारी ॥ अं० ॥ ६ ॥ समवायश्रुतसतखंध ए गुणमणि, भगवति पंचम अंग उदारी ॥ अं० ॥ दस हज्जार उद्देसा तेहना, इकतालीस सतक मनधारी ॥ अं० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ ढाल दूजी ॥ तुम विन दीनानाथ दयानिध, कौन खवर लै मेरी रे ॥ तु० ॥ ए चाल ॥ ज्ञाताअंग तुमे सेवो भविजन, मन वंछित फल पावो रे ॥ ज्ञा० ॥ दस वोल्या तिहां वर्ग छै अनुपम, गुणमणि सागर दरीया रे, उंठ कोड तिहां कथा वखांणी, सांभलतां सुख करिया रे ॥ ज्ञा० ॥ १ ॥ उगणीस अध्यैनै ते,सोहै, दोय श्रुतखंध सुभावै रे ॥ उपासगदस अंगमें भणीया, दस श्रावक मन भावै रे ॥ ज्ञा० ॥ २ ॥ अंतगडमांहे अष्ट वर्ग छै, अनुत्तरोवाई सोहै रे ॥ तिन वर्ग छै तिनमें निरुपम, त्रिभुवन जन मन मोहै रे ॥ ज्ञा० ॥ ३ ॥ एक सुत्रै करी सुगति वर्या छै, वीजै सुर सुख माणै रे ॥ प्रश्नव्याकरण सुत्रमें निरुपम, दस अध्यैन वखांणे रे ॥ अ० ॥ ४ ॥ सूत्र विपाकै सांभलो भविजन, वीस अध्यैन ते जांणो रे, दो श्रुतखंधै भाख्या जिनवर, दुख सुख केरा प्रमाणो रे

धिक उछाह रे ॥ भ० ॥ हूं रागी थइ प्रभूनी कहस्युं, पूजा चित धरि चाह रे ॥ भ० ए० ॥ ६ ॥ छठो चंदाविजय पईन्नो, धनो मुनिवर गावो रे ॥ भ० ॥ देविंदथूय सप्तमो पइनो, मरण समाधि ध्यावो रे ॥ भ० ए० ॥ ७ ॥ महापच्चक्खाण पयन्नो सुखकर, गणविज्जा मन धारो रे ॥ भ० ॥ एह पयन्ना वंदो भावै, एह सदा ऋद्धसारो रे ॥ भ० ए० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ शार्दूलविक्रीडित छंद ॥ श्रीमद्भृंगतरंगतांगघटनैः स्वर्मोक्षसोपानतां । बिभ्राणैरिववभ्रूधूमपटलैरातिर्य्यगूर्ध्वायतैः ॥ धूपैर्व्यापिभिरापतन्मधुकराघातैरघध्वंसिभिः । संप्रीत्यापरिपूजयामिधवलांजैनेश्वरीं भारतीम् ॥ १ ॥ ॐ ह्रूँ श्रीसमग्रसूत्रोऽग्रेधूपंसमर्प्पयामि ॥ इति धूप पूजा ॥ ४ ॥

॥ अथ पांचमी दीपक पूजा ॥

॥ दूहा ॥ दीपक पूज करो भविक, पामो भवनो पार ॥ ज्ञान जोत दीपक समो, ज्ञान मुक्ति दातार ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ बलीहारी तेरी नाथ सुरत परीया ॥ ब० ॥ ए चाल ॥ ध्यावो भविजन तुमे सुखकारी ॥ ध्या० ॥ कनक रजतमई लेई दीपक, आज्य धरी गावो जिनधारी ॥ध्या०॥१॥ अनल जोत तसु वर्त्तिका सोहै, जिनपति सेवो इकतारी ॥ ध्या० ॥ प्रथम छ छेद ए भाख्या जिनवर, सूत्र निसीथ ए उपगारी ॥ ध्या० ॥ २ ॥ तिणमें आलोयण मुनीवरकी, जीतकल्प मनमें धारी ॥ ध्या० ॥ चरण करण अणगारना कहीया, पंच उत्तम मुनि विवहारी ॥ ध्या० ॥३॥ एह ज्ञान जगदिनकर सोहे, एह गुणनी जाउं बलिहारी ॥ ध्या० विवहार छेदण सुखकर सोहै, अपवादे कर सुविचारी ॥ ध्या० ॥४ ॥ दसा कल्पमांहै दस उद्देसा, कहै अपवादे सुखकारी ॥ ध्या० ॥ माहानीसीथ प्रवर जग उत्तम, भाषै जिनवर उपगारी ॥ ध्या० ॥

५ ॥ उपधानादि आचार ए कहीया, गीतारथ मुनि गुणधारी ॥ ध्या० ॥ एह छ छेद कह्या गणधर मुनि, पाठक इम गणि ऋद्धि सारी ॥ ध्या० ॥ ६ ॥ इति ॥

शार्दूलविक्रीडित छंद ॥ श्रीमद्भिः सुरलोकसारमणिभिः स्पर्द्धाभि चातन्वतां । दीपानांनिकरैरपाकृततमः स्वर्णैरस्वाणुप्रभैः ॥ निर्धूमैः कनकावदातरुचिभिर्नेत्रप्रियैरुज्वलां । जैनेंद्रीवचनावलीमुनिमुखांभोजस्थितांसयजे ॥१॥ ॐ ह्रीं श्री समग्रसूत्रोऽग्रेदीपंसमर्प्पयामि ॥ इति दीप पूजा ॥ ५ ॥

॥ अथ छठी अक्षत पूजा ॥

॥ दूहा ॥ तंदुल सुभ लेई करी, पूजो जिनवर सार ॥ आगमनी पूजा करो, पावो गुणमणि माल ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ जीया चतुरसुजाण नवपदके गुण गाय रे ॥ जी० ॥ ए चाल ॥ भवि चतुरसुजाण पूजकरो सुखदाय रे ॥ भ० ॥ सुभ तंदुलनी ए करो पूजा, जिम भवियण मन भाय रे ॥ भ० १ ॥ ए अरिहादिक पदनें पूज्यां, अजर अमर पद थाय रे ॥ भ० ॥ ज्ञानीके वहुमानज सेती, ज्ञानकी जोत उपाय रे ॥ भ० ॥ २ ॥ ज्ञान विना आडंवर तेहने, नवि सनमान मिलाय रे ॥ भ० ॥ कपट क्रिया करी मूरख पापी, वग परजन भोलाय रे ॥ भ० ॥ ३ ॥ मच्छरीखर मुख उजल करीने, उग्र विहार वहाय रे ॥ भ० ॥ पापी श्रवण करि दाक्षा जिनवर, उत्तराध्ययननेमांहि रे ॥ भ० ॥ ४ ॥ मूल सूत्र हिव भाषे जिनवर, सुणो भविक चित लाय रे ॥ भ० ॥ दसवीकालिक दस अध्येनै, मनकज हेत कहाय रे ॥ भ० ॥ ५ ॥ उत्तराधयन ते वीजो सुणज्यो, छत्तीसध्येन लहाय रे ॥ भ० ॥ तीजो ओघनिरयुक्ति सुखकर, मुनिवर गुण दरियाव रे ॥ भ० ॥ ६ ॥ चोथो आवस्यक अनुसरतां, केवली वचन वहाय रे ॥ भ० ॥ अ

दा परिमाण ॥ ज्ञा० ॥ ५ ॥ पैंतालीस आगमतणा, हां रे आ० ॥ नाम गिणाउं सार ॥ प्रथम अंग हिव वर्णवुं, हां रे हि० ॥ सिवरम णी दातार ॥ सि० ॥ ६ ॥ आचारंग सुगडांग वली, हां रे सु० ॥ ठाणायंग समवाय ॥ भगवती ज्ञातोपासकदसा, हां रे पा० ॥ अंतगड ए सुखदाय ॥ अं० ॥ ७ ॥ अनुत्तर प्रश्नव्याकरण सदा, हां रे व्या० ॥ विपाक सुत्र मन धार ॥ अंग ईग्यारै इम भण्यां, हां रे इम० ॥ कुशल सदा ऋद्धसार ॥ कु० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ शार्दूलविक्रीडित छंद ॥ श्रीमत्पुण्यफलैरिवातिमधुरैःकैश्चि च्चनानारसै । र्हृद्यैर्माद्यदलिप्रतानविरुतैरारब्धगीतैरिव ॥ भास्वत्कल्प त्तरुद्भवैःफलशतैर्भक्त्यायजेसंफलीम् । वाग्देवींजिनचंद्रमहितांमुक्त्यं गनासंफलीम् ॥ १ ॥ ॐ ह्रूँ श्रीँ समग्रसूत्रोऽग्रेफलंसमर्प्पयामि ॥ इति फल पूजा ॥ ८ ॥

॥ अथ नवमी वस्त्र पूजा ॥

॥ दूहा ॥ वस्त्र उज्जल लेइ करी, हय लाला सम जांण ॥ वस्त्र पूज करतां भविक, होय सकल कल्याण ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ सिद्धचक्र पद वंदो रे भविका ॥ ए चाल ॥ वस्त्र पूज सुखकारी रे, भविजन व० चंद्रकिरण सम उज्जल सोहै, अदभुत ज्योत उदारी रे ॥ भ० ॥ देव वसन युग लेइ सु खकर, पूज करो मन धारी रे ॥ भविजन व० १ ॥ उपांग नाम हिव वर्णवुं भावै, उववाई सुखकारा रे ॥ भ० व० ॥ रायपसेणी जीवाभिगम वली, पन्नवणा पुप्फिया सारा रे ॥ भ० व० ॥ २ ॥ जंबुद्दीपपन्नत्ती सोहै, चंदपन्नत्ती धारा रे ॥ भ० व० ॥ सूरपन्नत्ती पुप्फचूलिया, वह्निदसा सुखकारा रे ॥ भ० व० ॥ ३ ॥ निर्यावलिकल्पिक मन मोहै, उपांग एह इकतारी रे ॥ भ० व० ॥ छ छेदसूत्र हिव कहस्युं मन धर, नीसीथ सूत्र मन धारी रे ॥ भ०

व० ॥ ४ ॥ महानिसीथ दसाश्रुत ध्यावो, विवहार सुत्र ए जाणो रे भ० व० ॥ पंचकल्प कल्पसूत्र वखाण्यो, छेद सदा कल्याणो रे ॥ भ० व० ॥ ५ ॥ दस पयन्ना सेवो भविजन, प्रथम चौसरण पइन्नो रे ॥ भ० व० ॥ आउरपच्चखाण चंदविज्जयं, गणविज्जा ते धन्नो रे ॥ भ० व० ॥ ६ ॥ तंदुलवेयाली मरण समाधि, देविदथूय गावो रे ॥ भ० व० ॥ भक्तपच्चखाण महीसंथारग, एह पयन्ना ध्यावो रे ॥ भ० व० ॥ ७ ॥ च्यार मूलसूत्र हिवे वखाणु, दसवैकालिक जाणो रे ॥ भ० व० ॥ उत्तराध्यैन पिड निर्युक्ति, आवस्यक मन आणो रे ॥ भ० व० ॥ ८ ॥ नंदी अनुयोगद्वार विचारो, एह सदा सुखकारो रे ॥ भ० व० ॥ संप्रति काले एहीज आगम, कुशल सदा ऋद्धसारो रे ॥ भ० व० ९ ॥ इति ॥

॥ शार्दूलविक्रीडित छंद ॥ श्रीमन्नेत्रदुकूलपट्टसुमहाचीनादिसारोद्भवैः । कांचीजैनवृहत्यटोलनिचयैः सक्षोमकौशेयकैः ॥ अन्यै शिल्पिविनिर्मितैःशुभतमैःकैश्चिच्चनानाविधै । वांग्देवीमभिपूजयामिरुचिरैः वस्त्रैर्विचित्रैर्मुहुः ॥ १ ॥ ॐ ह्रूँ श्री समग्रसूत्रोऽग्रेवस्त्रंसमर्प्पयामि ॥ इति वस्त्र पूजा ॥ ९ ॥

॥ अथ कलश ॥

॥ ढाल ॥ तेज तरण मुखे राजे, हांओ० ॥ ए चाल ॥ आज्ज अधिक दिन छाजे, हांओ दिन छाजे, प्रभूजीको आज अधिक दिन छाजे ॥ पैंतालीस आगमनी पूजा, रचीय सकल सुख काजे ॥ संवत सय उगणीस तीसमें, मास सुची सुसमाजे ॥ हां० प्र० आ० ॥ १ ॥ वदी एकादसी अति मनमोहन, वीकानेर विराजे ॥ श्रीजिनसोभाग्य सूरि पटोधर, हंस सूरि गुरु छाजे ॥ हां० प्र० आ० ॥ २ ॥ खरतर गच्छ भट्टारक सुखकर, जिम शशि गयण विराजे, ए पूजन जे भणसी गुणसी, तसु घर ऋद्द समाजे ॥ हां० प्र० आ०

॥ ३ ॥ ए पूजन करतां सुख लहीये, कुमति कुटलता लाजै ॥ क्षेम कीर्त्ति साखावर दीपत, लब्धी हर्ष गुरुराजै ॥ हां० प्र० आ० ॥ ४ ॥ तसु पद सेवक धर्मशीलमुनि, श्रुतजल पूरण राजै ॥ तसु पादांबुज सेवत मधुकर, कुशल निधांन विराजै ॥ हां० प्र० आ० ॥ ५ ॥ ऋद्धसार पाठक पदधारी, गावत घन जिम गाजै, भाव धरी श्रुतना गुण गाया, दिनदिन चढत दिवाजै ॥ हां० प्र० आ० ॥ ६ ॥ इति श्रीपैंतालीस आगम पूजा संपूर्णम् ॥

॥ अथ ॥

॥ उपाध्याय रामऋद्धिसारगणि कृत ॥

॥ विहरमान जिन पूजा ॥

॥ तत्र ॥

॥ प्रथम श्रीसीमंधर जिन पूजा ॥

॥ दूहा ॥ प्रणमी श्रीजिन शांतिकर, अक्षय गति दातार ॥ कर्म संग व्यतिरिक्त निज, परमातम पद सार ॥ १ ॥ चिदानंद चित् आतमा, सब जग करण कल्यांण ॥ प्रगटै निज पद ध्यावतां, सत्तामइ विज्ञान ॥ २ ॥ वाग् वरदा हृदि ध्यांन धर, श्रुत दाता गुरु भक्ति ॥ जसु प्रसादमय लक्षो, त्रिहुं जग व्यापित शक्ति ॥ ३ ॥ विचरत शास्वत जगतमैं, ये श्रीजिनवर वीस ॥ पूजन विधि भवि भाव कर, नमुं जगतपति शीश ॥ ४ ॥ सीमंधर युगमंधरा, श्रीजिन बाहु विख्यात ॥ श्रीसुबाहु जिन जाणीयै, पंचम प्रभु सुजात ॥ ५ ॥ स्वयंप्रभु ऋषभाननी, सुरप्रभु सुविशाल ॥ वज्रधर चंद्रानन जयो, चंद्रबाहु गुणमाल ॥ ६ ॥ भुजंग इश्वर साहिबा, नमिप्रभु श्रीवीरशेन ॥ देवयशा चित ध्याइयै, महाभद्र सुख चैन ॥ ७ ॥ अजितवीर्य जिनवीशमा, शास्वत ए भगवान ॥ नि

श्रै शिव पद भवि तिरै, सेवत परम निधान ॥ ८ ॥ अष्ट द्रव्य अर्चा प्रगट, जैसें करै सुरिंद ॥ तिम भवि हिय उल्लास कर, अरचौ श्रीजिनचंद ॥ ९ ॥ कलशसुआगम लिखत विध, गंगोदक भृत जांण ॥ सुचि होय हरिकी तरै, ग्राहक भव्य सुजांण ॥१०॥ निर्मल जल चंदन कुशम, धूप दीप सुविशेष ॥ अक्षत भोजन फल रुचिर, पूजन करो अशेष ॥ ११ ॥

॥ दूहा सोरठा ॥ श्रीमंधर जग धार, अरजी जिन सुण लीजीयै ॥ वहियां पकड निसतार, सुनिजर मोपै कीजीयै ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ वाजे तेरा बिछुआ ॥ वा० ॥ ए चाल ॥ सेवो भवि रशिआ ॥ सेवो० ॥ सीमंधर जिन पुजो भवि रशिआ पु० ॥ पुष्कल वइ विजया मनमोहन, पुंडरगीणी नगरी प्रभु वसीआ ॥ सी० ॥ १ ॥ राय श्रेयांसके नंदन वंदन, सेवित चरण सुरिंद विकसिया ॥ सी० ॥ सत्यकी मा एसे प्रभु जाए, जिन सेवनतैं पाप तिरसिआ ॥ सी० ॥ २ ॥ विचरत आज भव्य जिय तारक, जैसें कमलवन भ्रमर विकसिया ॥ सी० ॥ मैं तुम शरणों आंण ग्रह्यो प्रभु, पाप पंक मल दूरतें खिसिया ॥ सी० ॥ ३ ॥ वांणी सप्तभंग दरशावत, मिथ्या तिमर शूं ततखिण नसिया ॥ सी० ॥ दर्शनकूं एकांत विचारै, सोही अभव्य जगतमै फसीया ॥ सी० ॥ ४ ॥ हरि हर ब्रह्म देव बहुतेरे, राग रंगमे भोग विलसिया ॥ सी० ॥ लीलामै निज गुण नहि प्रगटै, परगुण रमण बंधमैं कसिया ॥ सी० ॥ ५ ॥ कंचन पर निरखत तोहे परख्या, निरभय शांत वैराग उलसिया ॥ सी० ॥ जलधरकी ओपम तुम वांणी, उंच नीच शम क्षेत्र वरसिया ॥ सी० ॥ ६ ॥ निकट भव्यके सद्गुण प्रगटै, अति अभव्य सो नांहि फरसिया ॥ सी० ॥ जैसें भांण सरव चित रंजन, घूक ताहि नहि होत हरसिया ॥ सी० ॥ ७ ॥ लंछन वृषभ

विराजत जिनके, लक्ष चोरासी पूरब हसिया ॥ सी० ॥ रुकमणी कंत तजी जिन माया, केवल ज्ञान उलास उजसिया ॥ श्री० ॥ ८ ॥ धर्मशील जिन पूजौ भविजन, कुशल सदा ऋद्ध सारमें दसिया ॥ सी० इति ॥

॥ काव्य ॥ विघ्नहारीभविउधारी । श्रीजिनेंद्रसुखंकरं ॥ शलिलती र्थप्रभाशमागध । स्नाप्यतेजिनसुरवरं ॥ तद्भावभक्ते यथाशक्ते । कृतम विकजनसादरं ॥ परमपदनिर्वाणदाता ॥ विहरमाणजिनेश्वरं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीसीमंधरजिनेंद्रायजलादिअष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति श्रीसीमंधर जिन पूजा ॥ १ ॥

॥ अथ बीजी श्रीयुगमंधर जिन पूजा ॥

॥ दूहा ॥ दूजै जिनकूं ध्याइयै, श्रीयुगमंधर स्वाम ॥ श्रीजिनराज दयाल प्रभु, भव्य भक्ति आराम ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ केशरीयानैं जिहाजको लोक तिरायो ॥ ए चाल ॥ शरवी युगमंधर तारक वाणी, परमातम मुक्ति निसांणी ॥ श० यु० ॥ विजया वप्रपुरीके राजा, मात सुतारा राणी ॥ सुद्दढराय सुघण कुल दिनमणि, गज लंछन सुखखाणी ॥ श० सु० ॥ १ ॥ मैं इण भरत आप उस विजया, कैसैं प्रीत निभांणी ॥ कुमद निशाकर देखत हरखै, मैं यूं रीत पिछांणी ॥ श० ॥ २ ॥ मैं दरशणको ग्राहक लोभी, च्यार चोर अगवाणी ॥ उनके क्षय क्षायक गत होवै, फेर न जाय भिसाणी ॥ श० ॥ ३ ॥ भेद तीन धुर है समकितके, उपशम आदि वखाणी ॥ पंच फरश क्षय उपशम जिनकी, क्षायक ज्ञाता ज्ञानी ॥ श० ॥ ४ ॥ भव अनंत भटकत नहीं पायो, राश निगोद उफाणी ॥ बाहिर राश सुकृतसैं आयो, घेर्यो मोह अज्ञानी ॥ श० ॥ ५ ॥ दोय सहस कोटाकोटि सागर, बादर राश प्रमाणी ॥ करण अपूरब जो नहीं फरसत, फेर निगोदकी

स्थानी ॥ श० ॥ ६ ॥ इण विध वार२ मैं भटक्यौ, श्रवण रुची न हीं थांणी ॥ अब युगमंधिर अरज करतहूं, तार लै अपनो जांणी॥ श० ॥ ७ ॥ राग रहित अपनौ नहीं जाणै, भक्ति वचनकरमांनी ॥ ध्याता कर्म निर्जरा प्रगटै, होय वंधकी हानि ॥ श० ॥ ८ ॥ पूरब लक्ष चौरासी आयु, धर्मशील पहिचानी ॥ कुशल सदा ऋद्धसार निरंजन, मैं तेरी आज्ञा मांनी ॥ श० ॥ ९ ॥ काव्य ॥ त्रिभुहारी० ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने अनं० जन्म० जलादि अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति द्वितीय युगमंधर विहरमान पूजा ॥ २ ॥

॥ अथ तीजी श्रीवाहु जिन पूजा ॥

॥ दूहा ॥ श्रीजिन वाहू अरचियै, तीजै श्रीमहाराज ॥ भवसागर भवि ना फिरै, पावै तरण जिहाज ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ सहसफणा मोरा साहिवा, तेरी सांवरी सूरत ॥ ए चाल ॥ जिनवर वाहू अंतरजामी, भवि आस्या विसरामी रे ॥ जि० ॥ विजयावछ सुसीमा नगरी, विजया मा सुखधामी रे ॥ जि० ॥ राय सुग्रीव नंद जसु रामा, मोहना दिलकी गामी रे ॥ जि० ॥ १ ॥ अखिल करमदल भंजन गंजन, त्रिजगमै प्रभु नांमी रे ॥ जि० ॥ अधम उद्धार आप सम कीजे, तो सव मे भर पामी रे ॥ जि० ॥ २ ॥ वसु अरि फंद वीचमें उरझ्यौ, सुण पुकार जग स्वामी रे ॥ जि० ॥ प्रकृति सो अठावन चाकर, जिनतैं वात हरामी रे ॥ जि० ॥ ३ ॥ प्रकृति स्थिति अणुभाग विभेदै, वंध प्रदेस विरामी रे ॥ जि० ॥ प्रकृति वंध है कर्म स्वभावक, मोदक भेषज खांमी रे ॥ जि० ॥ ४ ॥ पित्त हरणको गुण होय जामै, करत पित्त आरामी रे ॥ जि० ॥ तेसें ज्ञानावरण वस्तु है, रोकै ज्ञान स्वधामी रे ॥ जि० ॥ ५ ॥ ऐसें दर्शनावरणी जाणो, वेदन मोहन ठामी रे ॥ जि० ॥ वंधथितीको कालमान है, इक दुय तिय चउ पांमो

रे ॥ जि० ॥ ६ ॥ स्थानमांनकूं थिति दरशाई, है अनुभाग निकामी रे ॥ जि० ॥ रशको बंध सोइ अणुभागी, यह भाखे शिवगामी रे ॥ जि० ॥ ७ ॥ जो दलियनको कर्म शंग है, बंध प्रदेशसो कामी रे ॥ जि० ॥ निकल२ फिरते सोइ बंध्यो, अब तेरी सेवा स्वामी रे ॥ जि० ॥ ८ ॥ मृग लंछनधर नाथ दयानिध, धर्मशील गुणधामी रे ॥ जि० ॥ कुशल सदा ऋद्धसार भक्तिकूं, दीजै अचल आरामी रे ॥ जि० ॥ ९ ॥ काव्य ॥ विघ्नहारी० ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमा० अनं० जन्म० जलादि अष्टद्र० ॥ इति तृतीय बाहु विहरमान पूजा ॥ ३ ॥

॥ अथ चोथी श्रीसुबाहु जिन पूजा ॥

॥ दूहा ॥ श्रीसुबाहु पूजित भविक, होत कर्मको नाश ॥ भव दंडकमैं ना फिरै, टलै बंधको फास ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ नंदीश्वर बावन्न जिनालय, सास्व० ॥ ए चाल ॥ स्वामी सुबाहु अरज सुणीजे, महिर निजर प्रभु कीजै रे ॥ निसढ नंद प्रभु नंदामाता, आप समो पद दीजै रे ॥ स्वा० ॥ १ ॥ नगर अयोध्या वप्रविजयमैं, कपि लंछन तुम पाया रे किंपुरषा भरतार जगतपति, मै तुम शरणै आया रे ॥ स्वा० ॥ २ ॥ मै तुम पद देखणकूं नैणा, राह ग्रहण कर चालूं रे ॥ वैरी दोय संग नही छोडे, कैसें प्रभु परजालूं रे ॥ स्वा० ॥ ३ ॥ है सोपान चढणके चौदे, प्रथम सोपान विषांधा रे ॥ काल अनंत रह्यो मै तामै, विन श्रद्धा विन अंधा रे ॥ स्वा० ॥ ४ ॥ सास्वदन भोजन कर वमणा, मिश्रकाल अनुमांनै रे ॥ समकितधर अविरत है चौथा, भक्ष्याभक्ष ते जाणै रे ॥ स्वा० ॥ ५ ॥ देशविरतमै विसन सब त्यागे, छठ्ठा प्रमाद विरागी रे ॥ अंतर महुरत काल शंक्षया, अप्रमाद फिर सागी रे ॥ स्वा० ॥ ६ ॥ है सोपान अपूर्व अष्टमो, अनिव्रत वादर

मानौ रे ॥ थिती जघन्य अंतरमहुरतकी, पुन उतकृष्टी जांणो रे ॥ स्वा० ॥ ७ ॥ नांम यथास्थित गुण है जाकै, सुक्षम संपराय उल्हासै रे ॥ जो फरसै उपशांत इग्यारम, फेर पतनगत भासै रे ॥ स्वा० ॥ ८ ॥ क्षीणमोह होतेही अयोगी, केवलपदको भोगी रे ॥ होय सजोगी पद निर्वाणी, अनावाधमै जोगी रे ॥ स्वा० ॥ ९ ॥ स्वामी सुवाहु मोहि दिखावो, गुणथानकको ज्ञाता रे ॥ धर्मशील सो कुशल आतमा, ऋद्धसार विख्याता रे ॥ स्वा० ॥ १० ॥ काव्य ॥ विघ्नहारी० ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं पर० अनं० जन्म० जलादि अष्टद्र० ॥ इति चतुर्थ सुवाहु विहरमान पूजा ॥ ४ ॥

॥ अथ पांचमी श्रीसुजात जिन पूजा ॥

॥ दूहा ॥ पंचमगति दायक प्रवर, पंचम प्रभु सुजात ॥ अरचन तै सव अघ टलै, त्रिभुवन होत विख्यात ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ भाव धरी उवझ्झाया वंदो, विज० ॥ ए चाल ॥ सेवो सुजात जिन हरख धरी ॥ टेर ॥ धातकीखंड पूरव अध पुष्कल, विजया पुंडरगिणी नयरी ॥ से० ॥ देवशेन तात हरीको लंछन, जयशेना प्रभु सुंदर वरी ॥ से० ॥ १ ॥ देवशेनाके नंदन सुखकर, केवल चिद्आनंद करी ॥ से० ॥ देशन ध्वनि अमृत ज्यूं वरशत, श्रवण सुनत सव पाप झरी ॥ से० ॥ २ ॥ चेतन कर्म भिन्न दरशाये, लोक चवद सव जीव भरी ॥ से० ॥ रतनत्रई गुणसत्ता मैतसु, सोई हंस पहचान धरी ॥ से० ॥ ३ ॥ भेदाभेद अनेक प्रकासे, भव्याभव्य दुय प्रगट करी ॥ से० ॥ कर्म रहित हुय भव्य अमरपद, नहि अभव्यको तरणतरी ॥ से० ॥ ४ ॥ संका हुय पुछत कोउ ऐसें, त्रिगुण सहित नहि काज सरी ॥ से० ॥ सत्तामै ज्ञानादिक वरतै, कर्म लेप नहीं दूर टरी ॥ से० ॥ ५ ॥ मुद्गशैलपापाण न्याय पर, वोधवीज नहीं है सुधरी ॥ से० ॥ पालक पर श्रीवीर जिनेसर, संमुख

आप प्रकाश करी ॥ से० ॥ ६ ॥ ऐसें भेद अजीवतत्त्वको, बंध देश परदेश चरी ॥ से० ॥ सुक्ष्म परमाणु पुद्गलके, असंख्यात परदेश भरी ॥ से० ॥ ७ ॥ ऐसैं तत्त्व आप नव भाखे, पुन्य पाप आश्रव संवरी ॥ से० ॥ निर्जर बंध मोक्ष विधि आगम, सरदहणा समकित सुधरी ॥ से० ॥ ८ ॥ भव२ सरदहणा मोह ऐसी, मिथ्या तिमर हियातें फिरी ॥ से० ॥ धर्मशील गुरु कुशल कलातें, ऋद्धसारसैं कुमति डरी ॥ से० ॥ ९ ॥ काव्य ॥ विघ्नहारी० ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमा० अनंता० जन्म० जलादिअष्टद्र० ॥ इति पंचम सुजात विहरमान पूजा ॥ ५ ॥

॥ अथ छठी श्रीस्वयंप्रभ जिन पूजा ॥

॥ दूहा ॥ छठे जिन परमातमा, तारण तरण जिहाज ॥ ज्ञानयुक्त उपदेश दै, स्वयंप्रभ महाराज ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ कुंद किरण शसी ऊजलोरे देवा, पाव० ॥ ए चाल ॥ स्वयंप्रभ जग दिनमणीरे वाला, पावन देह उदारो जी आछो ॥ धातकी खंड पूरब अधै रे वाला, वप्रविजय सुखकारो जी आछो ॥ १ विजयापुरपति राजवी रे वाला, मित्र नृपति अंगजातौ रे आछो ॥ मात सुमंगला जनमीयो रे वाला, शशि लंछन विख्यातो रे आछो ॥ २ ॥ प्रियशेनाके वल्लहा रे वाला, द्रव्य सुषटके ज्ञाता रे आछो ॥ केवलदर्शन देखता रे वाला, लोकालोक विख्याता रे आछो ॥ ३ ॥ धर्माधर्म पुद्गल यथा रे वाला, है आकाश सुरंगा रे आछो ॥ जीवादि पण अस्ति कही रे वाला, काल प्रवर्त्तन चंगा रे आछो ॥ ४ ॥ भेद तीन क्रमसै कीयै रे वाला, खंध देश परदेशा रे आछो ॥ पुद्गल परमाणु चउ रे वाला, कालक्रमण गति ऐसा रे आछो ॥ ५ ॥ भूत भविष्यद्विद्यता रे वाला, जीव ज्ञानगुण दर्शै रे आछो ॥ चलण स्वभावै धर्म है रे वाला, थिर अ

धर्म गुण फरसै रे आछो ॥ ६ ॥ अवगाहन आकाशको रे वाला, देखै लोक हजारो रे आछो ॥ जैसे नाचै पण्यंगना रे वाला, भाजन परगुण शारो रे आछो ॥ ७ ॥ दृष्टी पडे सब एकठी रे वाला, भारलैपनही वाला रे आछो ॥ ऐसैं सब आकाशमे रे वाला, दृष्टांतिक परचाला रे आछो ॥ ८ ॥ स्वयंप्रभु पद देखतां रे वाला, द्रव्यादिक गुण साचो रे आछो ॥ धर्मशील गुरु कुशलसै रे वाला, ऋद्धसार हुय राचो रे आछो ॥ ८ ॥ काव्य ॥ विघ्नहारि० ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमा० अनंता० जन्म० जलादि अष्ट० ॥ इति छठा स्वयंप्रभ विहरमान पूजा ॥ ६ ॥

॥ अथ सातमी श्रीऋषभानन जिन पूजा ॥

॥ दूहा ॥ साताकारक सातमा, ऋषभानन सुविशाल ॥ पूजन तैं संपद लहै, प्रगटै निज गुणमाल ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ कुबजाने जादू डारा रे ॥ चाल ॥ प्रभू मूरत मोहन गारी रे, चित सेवा मैं चाहुं तुमारी ॥ ऋषभानन जग सुखकारी रे, प्रभु बांह पकड निसतारी ॥ प्रभू० ॥ १ ॥ धातकी पूरब श्रीवच्छ विजया, वीरशेना मात उदारी रे ॥ प्र० ॥ जयावतीके कंत जगतगुरु, मृग लंछन बलिहारी रे ॥ प्र० ॥ २ ॥ कीरत नृप कुल वंश विभूषण, केवल महिमा धारी रे ॥ प्र० ॥ पाप दुरित सैवनते त्रासे, परम पदारथकारी रे ॥ प्र० ॥ ३ ॥ तुम गुणको कोइ पार न पावै, इंद्रादिक गणधारी रे ॥ प्र० ॥ मूर्खमति प्रतिपक्ष एकांतै, कहे निश्चै अविचारी रे ॥ प्र० ॥ ४ ॥ पल्यादिक आयुधर देवा, सेवा करत तुमारी रे ॥ प्र० ॥ अनहुंतै इक कोट निरंतर, मैं जिनकी बलिहारी रे ॥ प्र० ॥ ५ ॥ निजपद मैं जाचतहुं तुमसै, सो दीजै सुखकारी रे ॥ प्र० ॥ पंचम काल भेद मत देखत, अल्पास्ति आचारो रे ॥ प्र० ॥ ६ ॥ निक्षेपादिकभंगे केइयक, केइ पटरंगत

धारी रे ॥ प्र० ॥ शांति सुधारस मुद्रा तेरी, निरख भयो अविकारी रे ॥ प्र० ॥ ७ ॥ षट् आरे उत्सर्पिणी कहीये, षट् अवसर्पणी चारी रे ॥ प्र० ॥ दश कोटाकोटी सागरवर, कालचक्र द्विगुणारो रे ॥ प्र० ॥ ८ ॥ अद्धा अरु उद्धार त्रिविध कर, पल्योपम विधचारी रे ॥ प्र० ॥ जिन आगम श्रुत मोह प्रमाणी, आतम तत्व उजारी रे ॥ प्र० ॥ ९ ॥ गुरु कुलवाश परंपर आगम, जो धारै इकतारी रे ॥ प्र० ॥ धर्म शील ऋषभानन जिनकी, कुशल करण ऋद्धसारी रे ॥ प्र० ॥ १० ॥ काव्य ॥ विघ्नहारी० ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमा० अनंतानंत जन्म० जलादि अष्ट द्र० ॥ इति सातमा ऋषभानन विहरमान पूजा ॥ ७ ॥

॥ अथ आठमी अनंतविर्य जिन पूजा ॥

॥ दूहा ॥ अतुल बली त्रिभुवन धणी, अनंतवीरज स्वाम ॥ अरि अंतरघन जितकै, पायो तदगुण नाम ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ मेरो मन वसै श्रीमहावीर ॥ मेरो० ॥ ए चाल ॥ लगै मोय प्यारो लगै मोय प्यारो, जिन तेरो दरशन लगै मोय प्यारो ॥ जि० ॥ खंड धातकी नलिनाविजया, नगर अयोध्या सारो ॥ जि० ॥ पूरब अथ मंगलाके नंदन, राजा मेघ मलारो ॥ जि० ॥ १ ॥ विजयापति सो पती हमारो, मोह अब पार उतारो ॥ जि० ॥ दुर्जेय इंद्री वश नहि स्वामी, कैसैं होय निसतारो ॥ जि० ॥ २ ॥ नहीं इंद्रीगत विषय विकारा, मनही करत प्रचारो ॥ जि० ॥ लिंग नपूंसक जगकूं जीते, अचरज एह विचारो ॥ जि० ॥ ३ ॥ सुभ असुभ इंद्रीकी प्रकृति, यामै यो हलकारो ॥ जि० ॥ राग हेतु सुभ वस्तु विभावक, द्वेश असुभको चारो ॥ जि० ॥ ४ ॥ जीपक तूं जगपति प्रतिपादक, अधम उधारनहारो ॥ जि० ॥ कर आलंबन सुभ शत्ताको, निजगुण भक्ति विचारो ॥ जि० ॥ ५ ॥ वार अनंती तुझ मु

झ संगम, होय गयो जगधारो ॥ जि० ॥ अव तुम अमर राज्य सुख भोगक, मोहि कैसें नाथ विसारो ॥ जि० ॥ ६ ॥ उत्तम प्रात तजे नही कवही, एसो जगत विवहारो ॥ जि० ॥ में रागी जिन राज निरागी, कैसें मिलै इतकारो ॥ जि० ॥ ७ ॥ तज परगुण अनु रसुं स्वगृहमें, क्या तुम दोगे न्यारो ॥ जि० ॥ जो तुम ध्यातें संपद पावे, तो ध्यावे लोक हजारो ॥ जि० ॥ ८ ॥ वीर्य अनंत स्वामि मोहि दीजे, धर्मशील उर धारो ॥ जि० ॥ कुशल कला प्रगटेगो चेतन, रंग मगन ऋद्धशारो ॥ जि० ॥ ९ ॥ काव्य ॥ विघ्नहारि०॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमा० अनं० जन्म० जलादि० ॥ इति आठमा अनंतवीर्य विरहमान पूजा ॥ ८ ॥

॥ अथ नवमी सूरप्रभजिन पूजा ॥

॥ दूहा ॥ सुण दयाल जग जीवके, सूर प्रभू वडवीर ॥ अतिशयवंत महागुणी, साहसवंत सधीर ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ आज आपे चालो सहीयां सिद्धाचल० ॥ ए चाल ॥ सूरप्रभु मनमोहनगारो, देख दरश शिव वरीये ॥ देस द० सजनी भवसायर निसतरियेरे ॥ सूर० ॥ १ ॥ धातकी पश्चिम अरधे छाजे, विजया कूख विराजे ॥ पुष्कलवइ पुंडरीकणी नगरी, विजय नृपत घर गाजै रे ॥ सू० ॥ २ ॥ हय लंछनपति नंद सेनाको, जिन मुझ दरसन दीजे ॥ विकट कटक ते पाय चिदानंद, मन वंछित सव सीझे रे ॥ सू० ॥ ३ ॥ लेस्या सुद्ध धरै भवि प्राणी, प्रगटै सो सद्ज्ञानी ॥ षट् लेस्या निरणय जिन भाषे, कृश्न नीलमे हानी रे ॥ सू० ॥ ४ ॥ है कापोत अधम ए तीनों, तेजू पद्म वखाणे ॥ सुक्र तीन ए उत्तम कहीयै, श्रीज्ञाता गुरु जाणे रे ॥ सू० ॥ ५ ॥ वर्ण गंध रस फरस स्वभावै, आदि तीन असुभाई ॥ सुभ प्रकृति उत्तरकी कहीये, समझो श्रुत ल्यलाई रे ॥ सू० ॥ लेस्या मन प

रणामसुं कहीये, नही मिथ्यात्वी जाणे ॥ वाद विवाद पररस्पर करतां, जाचंधा पख ताणे रे ॥ सू० ॥ ७ ॥ नास्तिक पंच भूतमय मानै, केइ एक इश्वर कर्त्ता ॥ बोध क्षणिकवादा अभिगमसैं, मति विकल्प संसर्त्ता रे ॥ सू० ॥ ८ ॥ तत्व विभेद ज्ञान आवरणे, श्रीसर्वज्ञ स्वाभावे ॥ लोकालोक प्रगट केवलचिद, स्याद्वाद दिखलावे रे ॥ सू० ॥ ९ ॥ वाणी सप्तन्याय गुणखांणी, धर्म शील गुरुज्ञानी ॥ कुशलकला जिनसूर समागम, ऋद्धशार मन मांनी रे ॥ सू० ॥ १० ॥ काव्य विघ्नहारी० ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमा० अनंता० जन्म० ॥ इति नवमी सूरप्रभु विहरमान पूजा ॥ ९ ॥

॥ अथ दशमी विसाल जिन पूजा ॥

॥ दूहा ॥ क्षांत्यादिक दश धर्मके, धारक स्वामि विसाल ॥ भय भंजन रंजन भवि, प्रभु सुरतरुकी शाल ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ मन तौ विंद्रावन जाय वस्यो री ॥ म० ॥ ए चाल ॥ मन जिन चरणाविलम रह्यो री, अंतरगत सुभ भाव भयो री ॥ म० ॥ स्वामि विशाल निहार विमलपती, विजयनयर वप्रविजय कं ह्यो री ॥ म० ॥ भुपति नाग भद्राके नंदन, धातकि पश्चिम अर्द्ध जयो री ॥ म० ॥ १ ॥ लंछन भानु जिनंद पदपंकज, मैं तुम शरणो आंण ग्रह्यो री ॥ म० ॥ क्रोध मान माया विषवल्ली, लोभ महामल्ल दुरित भयो री ॥ म० ॥ २ ॥ बंध अनंत अप्रत्याख्यानी, प्रत्याख्यानी भेद त्रयो री ॥ संज्वलनाये भेद चतुर्थम, क्रमसैं षोडस भेद लह्यो री ॥ म० ॥ ३ ॥ हास्य रति अरति भय शोका, जाण जुगुप्सा होय ठयो री ॥ समकित मिथ्या मिश्रमोहनी, तीन वेद ये कर्म चयो री ॥ म० ॥ ४ ॥ क्रमसैं ये नरकादिक गति के, तीरि नर अमर प्रतीति कह्यौ री ॥ इन कषायके धंध घेरमैं, नहि भव जलधि पार पयो री ॥ म० ॥ ५ ॥ पुरस नांम मोह कैसैं छाजे,

जो कषायके फंद छयो री ॥ धन्न पुरस अभिधान तुमारो, पद निर्वाणी होय रह्यो री ॥ म० ॥ ६ ॥ प्रीतंदशा जोडुं नहीं तोडुं, सादि अनंत उद्योत मयो री ॥ जनम मरणसैं हिय मुझ कंपै, भव रटनाको भार गयो री ॥ म० ॥ ७ ॥ जिम जलधर सुनशिखि हिय उलसै, ऐसौ भक्ति विभाव भयो री ॥ चंद चकोर जोर घन संगम; ऐसें विसाल खुस्याल दयो री ॥ म० ॥ ८ ॥ धर्मशील श्रीजिनकौ सुधामय, मुख निरखण आनंद लयो री ॥ कुशल करण परमातम चेतन, ऋद्धसार जिनसार जयो री ॥ म० ॥ ९ ॥ काव्य ॥ विघ्न हारी० ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमा० अनंता० जन्म० विशाल विहरमान जलादि अ० ॥ इति दशमा विशाल विहरमान पूजा ॥ १० ॥

॥ अथ ईग्यारमी वज्रधर जिन पूजा ॥

॥ दूहा ॥ वज्रधर स्वामि निहारतें, भई वज्रमय काय ॥ अरचन चिद्घन मूलकौं, पाप तिमर सब जाय ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ हां हो रे वाला, बावनचंदन घसि कुमकुमा ॥ ए चाल ॥ हां हो रे वाला, नाथ वज्र जगजीवके, नरनाथ पदमरथ नंद ए ॥ हां० मात सरस्वती कुलतिलो, शंख लंछन सुख घन कंद ए ॥ १ ॥ हां० धातकी पश्चिम अरधमैं, रांणी विजया चित चंद ए ॥ हां० ए प्रभु मुझ मनमैं वस्यो, कल्यांण करण आनंद ए ॥ २ ॥ हां० लोक चवद जिन उपदिस्या, नहीं संख्या अलोक प्रमाण ए ॥ हां० सात लोक नीचै कह्या, रत्नप्रभ आदि वखाण ए ॥ ३ ॥ तीर्यग् लोक सुभासु ए, जलधि द्वीपादि असंख्य ए ॥ हां० द्वीप सार्द्ध द्वय खेत्रमै, पैंतालीस जोजन लक्ष ए ॥ ४ ॥ हां० पहिलो जंबूद्वीप ए, लक्ष जोजन थाल अकार ए ॥ हां० वींट्यो लवण जलधि करी, दोय लक्ष प्रमाणे सार ए ॥ ५ ॥ हां० इम दुगुणा करतां थकां, असंख्यात जोजन सुप्रमाण ए ॥ हां० मनुष्यक्षेत्र पैं

॥ अथ चौदमी श्रीभुजंग जिन पूजा ॥

॥ दूहा ॥ श्रीभुजंग भावे नमुं, पाउं करण कल्याण ॥ जिनवर भज तज ओरकूं, सो दायक सुखखाण ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ आज हमारे आनंद भयो, मै भेट्या श्रीगुरुरायजी ॥ ए चाल ॥ आज गिरा घन जलधर वरसै, दरसै जिन दीदार जी ॥ राय महाबल महमा नंदन, लंछन कमल उदार जी ॥ आ० ॥ १ ॥ पूष्कर पूरब अर्द्ध जगतपति, वप्रविजय सुखकार जी ॥ विजयापुर गंधसेना राणी, तूं प्रभू जगदाधार जी ॥ आ० ॥ २ ॥ रंचक सुख रसवस होकै प्रभु, गम्यो मनुज भव सार जी ॥ पंच प्रमाद धंधके घरमैं, विरम्यो कुमता नार जी ॥ आ० ॥ ३ ॥ रे पापण अब दूर खडी रह, न करुं अब तुझ संग जी ॥ सुमता नार प्रीत रस लयकर, व्याप्यो रंग सुरंग जी ॥ आ० ॥ ४ ॥ तेरै संग चौरासी सदना, करत फियों भव भंग जी ॥ ना चहीये अब मोहबत तेरी, तेरा पति अनंग जी ॥ आ० ॥ ५ ॥ मैं भुजंग महाराज रूपमैं, रमैं सो आतमराम जी ॥ कपट रहित किरिया शिव दायक, पावैं सो निज धाम जी ॥ आ० ॥ ६ ॥ नय पक्षै बहु अर्थापत्ति, नही निश्चै गम सूर जी ॥ कोट रवि आतप शीतल गुण, जय२ चरण सनूर जी ॥ आ० ॥ ७ ॥ ज्योतिरूप है एक अपेक्षा, चरण करण विध भेद जी ॥ विन विवहार होय नहीं निश्चै, म कर अध्यारथ खेद जी ॥ आ० ॥ ८ ॥ धर्मशील जिनके चित व्यापक, ताकूं कुशल निधान जी ॥ ऋद्धसार जिनराज सेवना, प्रगटै आतम ज्ञान जी ॥ आ० ॥ ९ ॥ काव्य ॥ विघ्नहारी० ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ परमा० अनंता० जन्म० भजंग जिन जलादि अष्टद्र० यजा० ॥ इति चवदमा भुजंग विहरमान पूजा ॥ १४ ॥

॥ अथ पंदरमी श्रीईश्वर जिन पूजा ॥

॥ दूहा ॥ ईश्वर जगदीश्वर नमूं, सुणो जगतपत् स्वाम ॥ अपनो विरुद्ध विचार कै, तारो भक्ति सुधाम ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ तुम विन दीनानाथ दयानिध, कौन खवर लै मेरी रे ॥ तु० ॥ ए चाल ॥ इश्वर जिनके चरण कमलपर, मनअलि हित कर धरीया रे ॥ इश्वर० ॥ पुष्कर पूरव कच्छ अरधमैं, विजय सुसोमापुर वरीयारे ॥ इ० ॥ १ ॥ नृप गजसेन यशोदा माता, भद्रावतिके पति धरियारे ॥ इ० ॥ शशि लंछन छाजत दुख भाजत, भविक जनोके सुख करिया रे ॥ इ० ॥२॥ जो घटना इश्वर पद पावे, सो घटना मुझ चित धरिया रे ॥ इ० भव अनंत भटक्यो चिहुं गतिमें, जनम मरण विध२ सरीया रे ॥ इ० ॥ ३ ॥ सुक्ष्मरास एकेंद्री पावो, विकलेंद्री पुन आदरिया रे ॥ इ० ॥ सन्नी असन्नि तिर्यक योनि, पंचेंद्री भव कर मरीया रे ॥ इ० ॥ ४ ॥ युगलक जन्म लिय भयो खेचर, सुर नर भयो जिन केई विरिया रे ॥ इ० ॥ चरम चक्षु गिणती नही आवै, केवल ज्ञान उजागरिया रे ॥ इ० ॥ ५ ॥ सात नरककी विविध वेदना, ताडन मारन वहु परियां रे ॥ इ०॥ विन दरशन जिनराज तिहारे, तूं अथार मोह अडवडिया रे ॥ इ० ॥ ६ ॥ सार्थक नाम तुमारो इस्वर, नाम तुमारै केई तिरिया रे ॥ इ० ॥ धर्मशील आराधक तुझ पद, कुशलऋद्धसारा दरिया रे ॥ इ० ॥ ७ ॥ काव्य ॥ विघ्नहारी भविउ० ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ परमा० अनंता० जन्म० ईश्वर जिनेंद्राय जलादिअष्ट्द० यजा० ॥ इति पनरमा ईश्वर विहरमान पूजा ॥ १५ ॥

॥ अथ सोलमी नमि प्रभु जिन पूजा ॥

॥ दूहा ॥ नमिप्रभु जिन नवण कर, करीयें सद्गुण पूर ॥ भव अरण्यमें नहि भमै, कर्म होय चकचूर ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ निंबुआ रे मेरी ज्यान, जडसैं कटाय डारो नींबुआ ॥ क० ॥ ए चाल ॥ अरे मनमोहननाथ, मेरो मन वश प्रभु तैं कीयो ॥ अरे सुण दीन दयाल, अधम उधारो साहिबा, निज नयण निहार ॥ मेरो० ॥ १ ॥ पूष्करवर पूरब अधै, नलिनावतीय सुठाम ॥ नगर अयोध्या सेना मातको, पिता वीर सुनाम ॥ मे० ॥ २ ॥ मोहना राणीके वल्लहा, लंछन वर भांण ॥ तुम गुण कोण कहे प्रभु, मैं अधम अज्ञान ॥ मे० ॥ ३ ॥ तुम वासी लोकांतिके, जाके नाम अनेक ॥ पद अक्षय गुरुमुख सुन्यो, आगम सुविवेक ॥ मे० ॥४॥ योयन एक अलोकके, पैंतालीस लक्ष ॥ ईषत् प्रागभारा कहै, केवल परत्यक्ष ॥ मे० ॥ ५ ॥ पुनरागमन जहां नही, नही जनम उद्योत॥ सिद्ध पदै क्षायिक सही, लगी झिगमग ज्योत ॥ मे० ॥ ६ ॥ पंचम ज्ञान उपायके, हुये कर्म विमुक्त ॥ शेलेसी करणे करी, पावै पद मुक्ति ॥ मे० ॥ ७ ॥ शुकल ध्यान आलंबता, जल तूंबिकन्याय ॥ लघु पंच वर्ण उचारतां, पोहचै तिहां जाय ॥ मे० ॥ ८ ॥ सोही पद मोहि दीजीये, कर आप समान ॥ प्रीत गति तुमसुं कहा, में रह्योजी अज्ञान ॥ मे० ॥ ९ ॥ सादि अनंत सुखाकरु, धरकै मुझ वांह ॥ धर्मशील कुशलातमा, ऋद्धशार उछाह ॥ मे० ॥ १० ॥ काव्य ॥ विघ्नहारी भवि उ० ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमा० अनंता० जन्म० नमिप्रभू जिनेंद्राय जलादि अष्ट० ॥ इति सोलमा नमिप्रभु विहरमान पूजा ॥ १६ ॥

॥ अथ ॥ सतरमी वीरसेन जिन पूजा ॥

॥ दूहो सोरठो ॥ वीरसेन वडवीर, चरण कमलमैं चित दीयो ॥ पाउंभवजल तीर, वाणी रस अमृत पीयो ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ राग आसाउरी ॥ अबधू सो जोगी गुरु मेरा ॥ अ० ॥ ए चाल ॥ वीरसेन प्रभु मेरा, चेतन वीर० ॥ मैं चरण कमलका

चेरा रे ॥ चे० वी० ॥ पश्चिम अरध पुख्खरवर द्वीपै, पुष्कल विजया छाजै ॥ पुंडरीगीणी नगरी मनमोहन, भूमपाल घर गाजे रे ॥ चे० वी० ॥ १ ॥ भानूसेना मात तिहारी, वृषभ लंछन वलिहारी ॥ राजसेनाके रमण विहारी, तुझपर वार हजारी ॥ चे० वी० ॥ २ ॥ घनघाती चिहूं दूर कीये प्रभु, ज्ञान दरशनावरणी ॥ अंतराय मोहन तज दीने, रही साताकी करणी रे ॥ चे० वी० ॥ ३ ॥ सुरवर रचित त्रिगढ सिंहासन, भामंडल छवि छाजै ॥ वृक्ष असोक देवधुनि मंगल, इंद्रध्वजा अति गाजै रे ॥ चे० वी० ॥ ४ ॥ रूप चतुर्मुख अभिनव ब्रह्मा, कोटि भान तिहां लाजै ॥ इंद्र इंद्राणी सुरनर मुनिवर, द्वादस पर्षद राजै रे ॥ चे० वी० ॥५॥ दान शील तप भाव सुधाकर, ये जिन अमृत वाणी ॥ अपनी भाषा व्यापत सबको, नहीं संका विकलाणी रे ॥ चे० वी० ॥६॥ वैरभाव व्यापत नहीं किसको, मृग हरि समकर भासै ॥ पूरवदिशि प्रभूजीकी मूरत, मगध भास प्रकाशै ॥ चे० वी० ॥ ७ ॥ सुणकै अर्थ प्रभु मुखसेती, गणपति सूत्र रचावै ॥ भव्य उद्धारण द्वादस अंगी, जो श्रुतज्ञान कहावे रे ॥ चे० वी० ॥ ८ ॥ मंत्र तंत्र ज्योतिष अरु वैद्यक, अक्षर ज्ञान उजाला ॥ वीरसेनकी वांणी भविक सुण, हो गये जगसें निराला रे ॥ चे० वी० ॥ ९ ॥ अब सरदहणा जैन वचन पर, धर्मशील मन माना ॥ कुशल निधान प्रगट होय घटमै, ऋद्धसार जिन आणा रे ॥ चे० वी० ॥ १० ॥ काव्य ॥ विघ्नहारी भवि उ० ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमा० अनंता० जन्म० वीरसेन विहरमान जलादि अष्टद्रव्यं यजामहे० ॥ इति सतरमा वीरसेन विहरमान पूजा ॥ १७ ॥

॥ अथ अढारमी महाभद्र जिन पूजा ॥

॥ दूहा ॥ महाभद्र जगमै जयो, दायक सिवपद नाथ ॥ मन भमरो लोभै सदा, पंकज चरण विख्यात ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ राग कालिंगडो ॥ मैं बलिहारी गुरु चरणां ॥ ए चाल ॥ वारीयां वारीयां वारीयां, जाउंरे जिनंद तोपै वारीयां ॥ जा० ॥ पुष्कर पश्चिम अर्द्ध विराजे, वप्रविजय सुखकारीयां ॥ जा० ॥ विजया नगर देव पृथ्वीपति, उमा मात मल्हारीयां ॥ जा० ॥ १ ॥ सुरीकंताके कंत जगतप्रभु, गज लंछन अधिकारीयां ॥ जा० ॥ तज कै भोग जोग धर लीनौ, सूरतकी बलिहारीयां ॥ जा० ॥ २ ॥ चरण कमलयुग अधिक विराजै, जांघ कैल छवि न्यारीयां ॥ जा० ॥ कटि चीतात्रिवली हद लंकी, चंद्र वदनकी उजारीयां ॥ जा० ॥ ३ ॥ पंकज पत्र आंगली ओपित, दो भुज दंड उदारीयां ॥ जा० ॥ नैण चकोर दीपशिखि नाशा, अर्द्ध चंद्रसम भालीयां ॥ जा० ॥ ४ ॥ एक हजार आठ गुण लक्षण, भगत सुधारण कारीयां ॥ जा० ॥ ईत उपद्रव भंजनगंजन, आप तिरै भवि तारीयां ॥ जा० ॥ ५ ॥ वांणी गुण पैतीस विराजै, अतिसय चौतीस धारीयां ॥ जा० ॥ हेम कमल सुर रचत विचरते, जै जै शब्द उच्चारीयां ॥ जा० ॥ ६ ॥ इंद्र चंद्र नागेंद्र सुरासुर, कोटि भांन अनुहारीयां ॥ जा० ॥ वीतराग निरमल परमातम, दरस सुधारस पारीयां ॥ जा० ॥ ७ ॥ जन्म समय छप्पन दिसकुमरी, सूतककर्म सुकारीयां ॥ जा० ॥ मिलकै चोसठ इंद्र मेरुपै, भक्ति न्हवण संभारीयां ॥ जा० ॥ ८ ॥ कर अभिषेक रचै तुम पूजा, थेई२ तांन उगारीयां ॥ जा० ॥ युग२ जीवो नाथ दयानिध, दे आसीस हजारीयां ॥ जा० ॥ ९ ॥ पंच कल्याणक ऐसें जिनके, करै महोच्छव सारीयां ॥ जा० ॥ धर्मशील गुरु कुशलनिधीके, ऋद्धसार अति प्यारीयां ॥ जा० ॥ १० ॥ काव्य ॥ विघ्नहारी भविउ० ॥ १ ॥ ॐ ह्रूँ परमा० अनंता० जन्म० महाभद्र विहरमान जलादि अष्टद्र० ॥ इति अढारमा महाभद्र विहरमानं पूजा ॥ १८ ॥

॥ अथ ओगणीसमी देवयसा जिन पूजा ॥

॥ दूहा ॥ देवयशा मुख चद्रमा, मुझ मन चकित चकोर ॥ उलसै विलसै उदयतें, ज्यूं वर्षाऋतु मोर ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ कुसुम जाती रे देवा कुसुम जाती, पांच वरणी अंगी रची० ॥ चाल ॥ कर उपगार प्रभु कर उपगार, पतित उधारो प्रभु कर उपगार ॥ प० क० ॥ पुष्कर पश्चिम अर्ध्ध सुखंकर, वच्छ विजय सुखकार ॥ प० ॥ १ ॥ नगर सुसीमा माताजी गंगा, पदमावतीके आधार ॥ प० ॥ सर्वभूत राजाके नंदन, ससि लंछन जयकार ॥ प० ॥ २ ॥ मै सरणागत आयो तेरै, बहियां पकड निसतार ॥ प० ॥ दश दृष्टाते पायो दुर्लभ, एह मनुज भव सार ॥ प० ॥ ३ ॥ आरज क्षेत्र सुकुल गुरु सेवा, श्रीजिनधर्म विचार ॥ प० ॥ उपदेशामृत जाण्यो जगगुरु, न पले महाव्रत भार ॥ प० ॥ ४ ॥ स्नान विलेपन चोवा चंदन, अरु शोले सिणगार ॥ प० ॥ परनिंदा विकथा परतिरिया, सेवेजी पाप अढार ॥ प० ॥ ५ ॥ मनमथ सुभट खडो अगवांणी, लेके विषय कटार ॥ प० ॥ भगतवछल हैं बिरुद तुमारो, इकयक नयन निहार ॥ प० ॥ ६ ॥ मनमतंग अंकुस नहि माने, याको कर निरधार ॥ प० ॥ रत्नचिंतामणि सुरतरु सिरखो, श्रीजिनराज दीदार ॥ प० ॥ ७ ॥ तीरथ फिरन करें जपतप विध, पूजा दान उदार ॥ प० ॥ विन समता निरफल सुण चेतन, विन दीपक घरबार ॥ प० ॥ ८ ॥ भवभव चरण तिहारे मुझकों, सफल करण संसार ॥ प० ॥ धर्मशील गुरु कुशल कलानें, जय२ श्रीऋद्धसार ॥ प० ॥९॥ काव्य ॥ विघ्नहारी भविउ० ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं पर० अनंता० जन्म० देवयसाजलादि अष्ट० ॥ इति उगणीसमा देवयसा विहरमान पूजा ॥ १९ ॥

॥ अथ वीसमी अजितवीर्य जिन पूजा ॥

॥ दूहा ॥ अजितवीर्य अविचल नमो, तजकै मत मिथ्यात ॥ गमो तिमर अज्ञानता, त्रिभुवन होत विख्यात ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ नेम स्यामसें कहियो मोरी ॥ तथा होरीकी ॥ ए चाल ॥ जिनवरजी जगत जयकारी, मोहन प्रभू मूद्रा तिहा थांरी ॥ जि० ॥ दीप पुष्कर पच्छिम अध सोहै, नगर अयोध्या सारी ॥ नलिनावतिय विजय मनहरणी, कंननी मात मल्हारी, रतनमाला आधारी ॥ जि० ॥ १ ॥ राजपालकै तुम हो दुलारे, स्वस्तिक लंछन धारी ॥ धन तुम जननि ऐसौ सुत जायो, भव्यजना सुखकारी, मेरी सुध काहै विसारी ॥ जि० ॥ २ ॥ अष्टद्रव्य जल चंदन लेकर, पूजन विध मनुहारी ॥ चोवा अरगजा ओर आभूषण, खुल रही केसर क्यारी, अहो जिन शोभा तिहारी ॥ जि० ॥ ३ ॥ समकित मूल देव ईक तूंहीं, दोष रहित ईकतारी ॥ धन२ प्रभुकी मुख छवि निरखे, जो जुगमै नरनारी, सूरतिकी जाउं बलिहारी ॥ जि० ॥ ४ ॥ क्रोध मानकूं तजकै दयानिध, आयो मैं सरण तुमारी ॥ रंग मजीठ लाग्यो दिलभीतर, अब नही जात विसारी, अध्यातम सूरत थांरी ॥ जि० ॥ ५ ॥ कर आलोचन चित्त इक रंगी, स्याद्वाद नय धारी ॥ कुगुरु कुदेव तजी परवंचित, गुण पर्याय विचारी, अलख की लखणा न्यारी ॥ जि० ॥ ६ ॥ श्रीजिनराज जिहाज मिले अब, भवजल पार उतारी ॥ धर्मशील गुरु कुशल कलातैं, ऋद्धसार जयकारी, भइ सुमता संग प्यारी ॥ जि० ॥ ७ ॥ काव्य ॥ विघ्नहारी भवि उ० ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमा० अनंता० जन्म० अजीत विर्यजलादि अष्टद्रव्यं० ॥ इति वीसमा अजितवीर्य विहरमान पूजा ॥ २० ॥

॥ अथ कलश ॥

॥ इम वीस जिनवर सयल सुखकर, द्रव्य भावै जे नमैं ॥ सब

दुरित त्रासै, ज्ञान भासै, कुमति मति दूरै गमें ॥ इय विहरमान जिनंद शास्वत, तसु चरण लय लावही ॥ परमपद अविचल सुसा कर, जयपताका पावही ॥ १ ॥ खरतर गणेश्वर भुवि दिनेस्वर, चंद्रसूरि गुरु मुदा ॥ जसु राज्य अंवर ध्रुव महितल, संघवर सुख संपदा ॥ भवि पठन करीयै लील वरीयै, पाइयै सुख सागरा ॥ वरपूज रचना कीन सुभमति, ऋद्धशार गुणागरा ॥ २ ॥

॥ राग चाल ॥ तेज तरण मुख राजे प्रभु थांरो० ॥ ए चाल ॥ धन्यासिरि ॥ जगपति विहरमाण जिनराजे ॥ ज० ॥ द्वीप अढाई भवि सुखदाइ, समवसरण अति साजे ॥ विहरमाण जिन वीस सास्वता, भव्य जना सुख काजे ॥ जग० ॥ १ ॥ समकीतधर पंचम गुणथानक, जे श्रावक जन छाजे ॥ तिण कारण ये पूजन जिन की, रचना चढत दिवाजे ॥ ज० ॥ २ ॥ खरतर गण भट्टारक सुखकर, चंद्रसूरि विभ्राजे ॥ वेद२ निनि इंदु संवच्छर, माधव मास विराजे ॥ ज० ॥ ३ ॥ क्षेम कीर्त्ति साखा सुरतरु वर, लब्धि हर्ख गुरु गाजे ॥ धर्मशील मुनि श्रुतगुण पूरण, कुशल निधान विराजे ॥ ज० ॥ ४ ॥ भागनगर दक्षण दिस सुखकर, सकल संघ सुख ताजे, ऋद्धशार जिन पूजन पाठक, मगन निधान उपाजे ॥ ज० ॥५॥ इति वीस विहरमान जिन पूजा संपूर्णम् ॥

॥ अथ ॥

॥ पंडित साधूकीर्ति मुनि कृत ॥

॥ सत्तर भेदी पूजा प्रारंभः ॥

॥ दूहा ॥ भाव भले भ [illegible] पूजा सतर प्रकार ॥ परमिय कीधी द्रोपदी, अंग छठे अ [illegible] ॥

॥ राग सरपदो ॥ शांति [illegible] । जागति प्र सम्मति सुखिंद ॥ सतर सुविधि [illegible] पिम परमानंद ॥

॥ गाहा ॥ न्हवण विलेवण वथजुग, गंधारुहणं चपुप्फरोहणयं ॥ मालारोहण वन्नय, चुन्न पडागाय आभरणे ॥ १ ॥ मालकलावं सघरं, पुप्फ पगरं च अठ्ठ गुण मंगलयं ॥ धूव उखेवो गीयय, नट्टं वज्जं तहा भणियं ॥ २ ॥

॥ दूहा ॥ सतर सुविध पूजापवर, ज्ञाता अंगमझार ॥ द्रुपदसुता द्रौपदिपरें, करियें विधि विस्तार ॥ १ ॥

॥ अथ प्रथम न्हवण पूजा ॥

॥ राग देशाख ॥ पूर्व मुख सावनं, करि दशन पावनं, अहत धोती धरी, उचित मानी ॥ विहित मुख कोश के, खीरगंधोदकें, सुभृत मणिकलश करि, विविध वानी ॥ नमिवि जिनपुंगवं, लोम हच्छेनवं, मार्जनं करिय वा वारि वारी ॥ भणिय कुसुमांजली, कलशविधि मन रली, न्हवति जिन इंद्र जिम, तिम अगारी ॥ १ ॥

॥ दूहा ॥ पहिली पूजा साचवे, श्रावक शुभपरिणाम ॥ शुचि पखाल तनु जिन तणी, करे सुकृत हितकाम ॥ १ ॥ परमानंदपीयूष रस, न्हवण सुगति सोपान ॥ धरम रूप तरु सींचवा, जलधर धार समान ॥ २ ॥

॥ राग सारंग तथा मल्हार ॥ पूजा सतर प्रकारी, सुणियो रे मेरे जिनवरकी ॥ परमानंद अति छल्योरी सुधारस, तपत बूझी मेरे तनकी हो ॥ पू० ॥ १ ॥ प्रभुकुं विलोकि नमि जतन प्रमार्जित, करत पखाल शुचिधार विनकी हो ॥ न्हवण प्रथम निजवृजिन पुलावत, पंककुं वरष जैसें घनकी हो ॥ पू० ॥ २ ॥ तरणि तरुण भव सिंधु तरणकी, मंजरी संपदफल वरधनकी ॥ शिवपुर पंथ दिखावण दीपी, धूमरी आपद वेल मरदनकी हो ॥ पू० ॥ ३ ॥ सकल कुशल रंग मिल्योरी सुमतिसंग, जागी सुदिशा शुभ मेरे दिनकी ॥ कहे साधु कीरत सारंग भरि, करतां आस फली मेरे मनकी हो ॥ पू० ॥ ३ ॥

॥ अथ द्वितीय विलेपन पूजा ॥

॥ राग रामगिरी ॥ गात्र लुंहे जिन मनरंगसुं हो देवा ॥ गा० ॥ सुसरसुपित वाससुं, वाससुं हां रे देवा वाससुं ॥ गंधकसायसुं मेलियें, नंदन चंदन चंद मेलीयें रे देवा ॥ नं० ॥ मांहे मृगमद कुंकुम भेलीये, कर लीये रयणपिगाणी कचोलीयें ॥ १ ॥ पग जानु कर खंधे सिरें रे, भाल कंठ उर उदरंतरें ॥ दुख हरे हां रे देवा सुख करे. तिलक नवे अंग कीजियें ॥ दूजी पूजा अनुसरे श्रावक, हरि विरचे जिम सुरगिरें ॥ तिम करे जिणपर जन मन रंजीयें ॥ २ ॥

॥ राग ललितमां ॥ दूहा ॥ करहुं विलेपन सुखसदन, श्रीजिनचंद शरीर ॥ तिलक नवे अंग पूजतां, लहे भवोदधि तीर ॥ १ ॥ मिटे ताप तसु देहको, परम शिशिरता संग ॥ चित्त खेद सवि उपसमे, सुखम समरसी रंग ॥ २ ॥

॥ राग विलावल ॥ विलेपन कीजे जिनवर अंगे ॥ जिनवर अंग सुगंधे ॥ वि० ॥ कुंकुम चंदन मृगमद यक्षकर्द्दम, अगरभिश्रित मनरंगें ॥ वि० ॥ १ ॥ पग जानू कर खंधे सिर, भालकंठ उर उदरंतरसंगें ॥ विलुपति अघ मेरो करत विलेपन, तपन बुझाति जिम अंगें ॥ वि० ॥ २ ॥ नवअंग नव नव तिलक करतही, मिलत नवे निधि चंगे, जैसे गंगतरगें ॥ वि० ॥ ३ ॥

॥ अथ तृतीय वस्त्रयुगल पूजा ॥

॥ दूहा ॥ वसनयुगल उज्वल विमल, आरोपे जिन अंग ॥ लाभ ज्ञान दर्शन लहे, पूजा तृतिय प्रसंग ॥ १ ॥

॥ राग गोडी ॥ कमल कोमलघन, चंदनं चर्चितं, सुगंध गंधें अधिवासिया ए ॥ कनकमंडित हये, लालपल्लवशुचि, वसनजुगवेन अधिवासिया ए ॥ जिनप उत्तम अंगे, सुविधि शक्रो यथा, करिय पहिरावणी ढोइयें ए ॥ पाप ल्हहण अंग, ल्हहणुं देवनें, वस्त्रजुगपूज मल धोइयें ए ॥ १ ॥

॥ राग वैराडी ॥ देव दुष्य जुग पूजा बन्यो हे जगत गुरु, देव दुष्य हर अब इतनो मागुं ॥ तुंहिज सबही हित तुंहिज सुगति दाता, तिण नमि नमी प्रभुजीके चरणे लागुं ॥ दे० ॥ १ ॥ कहे साधु त्रोजी पूजा केवल दंसण नाण, देव दुष्य मिश देहुं उत्तम वागुं ॥ श्रवण अंजली पुट सुगुण अमृत पीता, सविराडे दुखसंशय घुरम भांगुं ॥ दे० ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ चतुर्थ वासक्षेप पूजा ॥

॥ राग गोडीमां दोहा ॥ पूज चतुर्थी इण परें, सुमति वधार वास ॥ कुमति कुगति दूरें हरे, दहे मोह दल पास ॥ १ ॥

॥ राग सारंग ॥ हांहो रे देवा बावन चंदन घसि कुंकुमा, चूरण विधि विरचे वासु ए ॥ हां० ॥ कुसुम चूरण चंदन मृगमदा, कंकोल तणो अधिवासु ए ॥ हां० ॥ वास दशोदिशि वासतें, पूजे जिन अंग उवंगु ए ॥ हां० ॥ लाछि भुवन अधिवासिया, अनुगाम की सरम अभंगु ए ॥ १ ॥

॥ राग गौडी तथा पूर्वी ॥ मेरे प्रभुजीकी आणंद, पूजा मेलेंकी ॥ मे० ॥ वास भुवन मोह्यो सब लोए, संपदा भेलेंकी ॥ पूजा० ॥ १ ॥ सतर प्रकारी पूजा विजय, देता तत्ता थेई ॥ अप्रमित गुण तोरा चरण सेवाकी ॥ पूजा० ॥ २ ॥ कुंकुम चंदनवासें पूजीयें, जिनराज तत्ता थेई ॥ चतुर्गति दुख गौरी चतुर्थी धनकी ॥ पूजा ३

॥ अथ पंचम पुष्पारोहण पूजा ॥

॥ दूहा ॥ मन विकसे तिम विकसतां, पुष्प अनेक प्रकार ॥ प्रभुपूजा ए पंचमी, पंचमि गति दातार ॥ १ ॥

॥ राग कामोद ॥ चंपक केतकी मालती ए, कुंद किरण मचकुंद ॥ सोवन जाइ जूईका, बिउलसिरी अरविंद ॥ १ ॥ जिनवर चरण उवरि धरे ए, मुकुलित कुसुम अनेक ॥ शिव रमणीसें वरवरे, विधि जिन पूज विवेक ॥ २ ॥

॥ राग कानडो ॥ सोहेरी माई मन मोहेरी वरणे ॥ विविध कुसुम जिनचरणे ॥ सो० ॥ विकसी हसी जंपें साहिबकुं, राखि प्रभु हम सरणें ॥ सो० ॥ १ ॥ पंचमि पूज कुसुम मुकुलितकी, पंचविषय दुख हरणे ॥ सो० ॥ कहे साधुकीरती भगति भगवंतकी, भविक नरा सुख करणे ॥ सो० ॥ २ ॥

॥ अथ छठी मालारोहण पूजा ॥

॥ राग आशावरीमां दूहा ॥ छठी पूजा ए छती, महा सुरभि पुफमाल ॥ गुण गूंथी थापे गले, जेम टले दुखजाल ॥ १ ॥

॥ राग रामश्री गुर्जरी ॥ हे नाग पुन्नाग मंदार नव मालिका, हे मल्लिकासेग पारिधे कली ए ॥ हे मरुक दमणक बकुल तिलक वासंतिका, हे लाल गुलाल पाडल मिली ए ॥ हे जासुमण मोगरा वेउला मालती, हे पंच वरणें गुंथी मालती ए ॥ हे माल जिन कंठ पीठें ठवी लहलहे, हे जाण संताप सहु पालती ए ॥ १ ॥

॥ राग आशावरी ॥ देखी दामा कंठ जिन अधिक एधति नंदें, चकोरकुं देखि देखि जिम चंदें ॥ पंचविध वरण रची कुसुमाकी जैसी, रयणावलि सुहमंदें ॥ दे० ॥१॥ छठी रे तोडर पूजा तब डार धूजे, सब अरिजन हुइ हुइ छंदे ॥ कहे साधुकीरति सकल आशा सुख, भगति भगति जेय जिण वंदे ॥ दे० ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ सप्तम वर्णपूजा प्रारंभः ॥

॥ दूहा ॥ केतकि चंपक केवडा, शोभे तेम सुगात ॥ चाढो जिम चढतां हुवे, सातमियें सुखशात ॥ १ ॥

॥ राग केदारो गोडी ॥ कुंकुम चर्चित विविध पंच वरणका, कुसुमशुं हे । कुंद गुलाबशुं चंपको [illegible], जासुसुं ए ॥ सातमो पूजमें अंगि, अलंकियें ए ॥ [illegible] मिश माननी मुगति आलिगियें ए ॥ १ ॥

॥ राग भैरवी ॥ पंच वरणी अंगे रचि, कुसुमनी जाती ॥ फूलनको जाती ॥ पं० ॥ कुंद मचकुंद गुलाब शिरोमणी, कर करणी सोवनजाती ॥ पं० ॥ दमणक मरुक पाडल अरविंदो, अंस जूई वेउल वाती ॥ पं० ॥१॥ पारथि चरण कल्हार मंदारो, विण पट कूल बनी भांतो ॥ पं० ॥ सुरनर किन्नर रमणो गाती, भैरव कुमति व्रतती दाती ॥ पं० ॥ २ ॥

॥ अथ अष्टम गंधवटी पूजा प्रारंभः ॥

॥ दूहा ॥ राग सोरठमां ॥ सोरठ राग सुहामणी, मुखें न मेली जाय ॥ ज्युं ज्यूं रात गलंतियां, त्यूं त्यूं मीठी थाय ॥ १ ॥ सोरठ थारा देशमें, गढां बडो गिरनार ॥ नित उठ यादव वांदस्यां, स्वामी नेम कुमार ॥ २ ॥ जो हूंती चंपो बिरख, वा गिरनार पहार ॥ फूलन हार गुंथावती, चढती नेम कुमार ॥ ३ ॥ राजिमती गिरवर चढी, उभी करे पूकार ॥ स्वामी अजहु न वाहुडे, मो मन प्राण आधार ॥ ४ ॥ रे संसारी प्राणिया, चढ्यो न गढ गिरनार ॥ जैनधर्म पायो नही, गयो जमारो हार ॥ ५ ॥ धन वा राणी राजीमती, धन वे नेम कुमार, शील संयमता आदरी, पहोतां भवजल पार ॥ ६ ॥ दया गुणांकी वेलडी, दया गुणांकी खान ॥ अनंत जीव मुगते गया, इण दया तणे परमाण ॥ ७ ॥ जगमें तीरथ दोइ बडा, सेत्रुंजो गिरनार ॥ इण गिर रिषभ समोसरे, उण गिर नेम कुमार ॥ ८ ॥

॥ दोहा सोरठो रागमां ॥ अगर सेलारस सार, सुमति पूजा आठमी ॥ गंधवटी घनसार, लावो जिन तनु भावशुं ॥१॥

॥ राग सोरठ ॥ कुंद किरण शशि उजलो जी देवा, पावन घन घनसारो जी ॥ आछो सुरभि शिखर मृग नाभिजा जी देवा, चुन्न रोहण अधिकारो जी ॥ आ० ॥ वस्तु सुगंध जब मोरियो जी देवा,

अशुभ करम चूरीजें जी ॥ आ० ॥ आंगण सुरतरु मोरियो जी देवा, तब कुमति जन खीजे जी ॥ पाठांतरे ॥ तव सुमती जन रंजिं जी ॥ १ ॥

॥ राग सामेरी ॥ पूजोरी माई, जिनवर अंग सुगंधें ॥ जि० ॥ पू० ॥ गंधवटी घनसार उदारे, गोत्र तीर्थंकर बांधे ॥ पू० ॥ १ ॥ आठमी पूजा अगर सेलारस, लावे जिन तनु रागें ॥ धार कपूर भाव घन वरखत, सामेरी मति जागे ॥ पू० ॥ २ ॥

॥ अथ नवम ध्वज पूजा प्रारंभः ॥

॥ दूहा ॥ मन मोहन धर मस्तकें, सूहव गीत समूल ॥ दीजें तीन प्रदक्षिणा, नवमी पूज अमूल ॥ १ ॥

॥ राग मेघ ॥ गोडीमां वस्तु छंद ॥ सहस जोयण सहस जोयण हेममय दंड, युतपताक पांचे वरण ॥ घुम घुमंत घूघरी वाजे, मृदु समीर लहके गयणं ॥ जाण कुमति दल सयल भांजे, सुरपति जिम विरचे धजा ए, नवमी पूज सुरंग ॥ तिणपरि श्रावक ध्वज वहन, आपे दान अभंग ॥ १ ॥

॥ राग नट्टनारायण ॥ जिनराजको ध्वज मोहनां, ध्वज मोहनां रे ध्वजमोहनां ॥ जि० ॥ मोहन सुगरु अधिवासियो, करि पंच सबद त्रिप्रदक्षिणा ॥ सधव वधू शिरसोहणा ॥ जि० ॥ १ ॥ भांति वसन पांच वरण बन्यो री, विध करि ध्वजको रोहणां ॥ साधु भणत नवमी पूजा, नव पाप नियाणां खोहणां ॥ शिव मंदिरकुं अधिरोहण, जन मोह्यो नट्टनारायणा ॥ जि० ॥ २ ॥

॥ अथ दशमी आभरण पूजा प्रारंभः ॥

॥ राग केदारामां दूहा ॥ शिर सोहे जिनवर तणे, रयण मुकुट झलकंत ॥ तिलक भाल अंगद भुजा, श्रवण कुंडल अतिकंत ॥ १ ॥ दशमी पूज आभरणकी, रचना यथा अनेक ॥ सुरपति प्रभु अंगें रचे, तिम श्रावक सुविवेक ॥ २ ॥

॥ राग अधरस वा गुंडमल्हार ॥ पांच पिरोजा नील लसणीया, मोती माणक लाल लसणीया, हीरा सोहे रे, मन मोहे रे, धुनी चुनीपुलक करकेतनां, जातरूप सुभग अंक अंजना, मन मोहे रे ॥ १ ॥ मौलि मुकुट रयणें जड्यो, काने कुंडल हारे अति जुगते जुड्यो ॥ उरहारू रे मनवारू रे ॥ २ ॥ भाल तिलक बांहे अंगदा, आभरण दशमी पूजा मुदा ॥ सुखकारू रे, दुखहारू रे ॥ ३ ॥

॥ राग केदारो ॥ प्रभु शिर सोहे, मुकुट मणि रयणें जड्यो ॥ अंगद बांह तिलक भालस्थल, येहु नीको कोन घड्यो ॥ प्र० ॥ ॥ १ ॥ श्रवण कुंडल शशि तरणि मंडल जीपें, सुरतरुसम अलंकृ रचो ॥ दुखके दार चमर सिंहासण, छत्र शिर उवरि धरचो, अलंकृत उचित वरचो ॥ २ ॥

॥ अथ एकादश फूलघर पूजा ॥

॥ दूहा ॥ फूलघरो अति शोभतो, फुंदे लहके फूल ॥ महके परिमल महमहा, इग्यारमी पूजा अमूल ॥ १ ॥

॥ राग रामग्री कौतकिया ॥ कोज अंकोल रायबेलि नव मालिका, कुंद मचकुंद वर विचिकल हां रे अइ० वि० ए ॥ तिलक दमण कंदलं मोगरा, परिमलं कोमला पारिध पाडल, हां रे अ० पा० ए ॥ प्रमुख कुसुमैं रचे त्रिभुवनकुं रुचै, कुसुम गेहे विच तोरणूं, हां रे अ० तो० ए ॥ गुच्छ चंद्रोदयं झुंवक उन्नयं, जालिका गोख चित चोरणूं हां रे अ० चो० ए ॥ १ ॥

॥ राग रामग्री ॥ मेरो मन मोह्यो माईरी, फूलघर आणंद झिलै ॥ असत उसत दाम वघारी मनोहर, देखत तबही सब दुरित खिले ॥ फू० ॥ १ ॥ कुसुम मंडप थंभगुच्छ चंद्रोदय, कोरणि चारु विनाण सझै ॥ इग्यारमी पूज भणीहे रामगिरी, विबुध विमाण जैसेति पुरि भजै ॥ फू० ॥ २ ॥ इति फूलघर पूजा ॥

॥ अथ द्वादश पुष्पवर्षा पूजा ॥

॥ दूहा मलार रागमां ॥ वरषे बारमी पूजमें । कुसुम बादलिया फूल ॥ हरण ताप सवि लोकको, जानु समां बहु मूल ॥ १ ॥

॥ राग भीम मलार गुंडमिश्र ॥ देशी कडखानी ॥ मेघ वरसे भरी, पुप्फ वादल करी, जानु परिमाण करि कुसुम पगरं ॥ पंचव र्णे बन्यो, विकच अनुक्रम चण्यो, अधोवृंतें नही पाड पसरं ॥मे० ॥ १ ॥ वास महके मिले, भमर भमरी भिले, सरस रसरंग तिण दुख निवारी ॥ जिनप आगें करै, सुरप जिम सुख वरै, बारमी पू ज तिण पर अगारी ॥ मे० ॥ २ ॥

॥ राग भीम मलार ॥ पुप्फ वादलीया वरसे सुसमां ॥ अहो पु० ॥ योजन अशुचिहर वरसे गंधोदक, मनोहर जानु समा ॥ पु० ॥ १ ॥ गमन आगमनकी पीर नही तसु, इह जिनको अतिशय सु गुणें ॥ गुंजत गुंजत मधुकर इम भणे, मधुर वचन जिन गुण थुणे ॥ पु० ॥ २ ॥ कुसुम सुपरि सेवा जो करे, तसु पीर नही सुमणे ॥ स मवसरण पंचवरण अधोवृंत, विबुध रचे सुमना सुसमा ॥ पु० ॥ ३ ॥ बारमी पूज भविक तिम करे, कुसुम विकसी हसी उच्चरे ॥ तसु भीम बंधण अघरा हुवे, जे करे जै जै जिन नमा ॥ पु० ॥ ४ ॥

॥ अथ त्रयोदशाष्ट मंगलिक पूजा ॥

॥ दूहा ॥ राग कल्याणमें ॥ तेरमि पूजा अवसरें, मंगल अष्ट विधान ॥ युगति रचे सुमतें सही, परमानंद निधान ॥ १ ॥

॥ राग वसंत ॥ अतुल विमल मिल्या, अखंड गुणें भिल्या, सा लि रजत तणा तंदुला ए ॥ श्लषण समाजकं, विध पंच वर्णकं, चं द्रकिरण जैसा ऊजला ए ॥ मेलि मंगल लिखे, सयल मंगल अखे, जिनप आगें सुथानक धो ए ॥ तेरमि पूजविधि ते रमी मन मेरे, अष्ट मंगल अष्ट सिद्धि करे ए ॥ अतुल० ॥ १ ॥

॥ राग कल्याण ॥ हांहो पूजा बणी तेरी रसमें ॥ अष्ट मंगल लिखै, कुशल निधान हे, तेज तरणके रसमें ॥ हां० ॥ १ ॥ दर्पण भद्रासण नंद्यावर्त्त पूर्ण कुंभ, मच्छयुग श्रीवच्छ तसुमैं ॥ वर्धमान स्वस्तिक पूज मंगलकी, आनंद कल्याण सुखरसमैं ॥ हां० ॥ २ ॥

॥ अथ चतुर्दश धूप पूजा ॥

॥ दूहा ॥ गंधवटी मृगमद अगर, सेलारस घनसार ॥ धरि प्रभु आगल धूपणा, चउदमि अरचा सार ॥ १ ॥

॥ राग वेलावल ॥ कृष्णागर कपूरचूर, सौगंध पांचे पूर, कुंदरुक सेलारस सार, गंधवटी घनसार गंधवटी घनसार ॥ चंदन मृगमदा रस भेलियें, श्रीवास धूप दशांग, अंबर सुरभि बहु द्रव्य मेलियें ॥ वेरुलिय दंड कनक मंड, धूपधाणुं कर धरे ॥ भववृत्ति धूप करंति भोग, रोग सोग अशुभ हरे ॥ १ ॥

॥ राग मालवी गौडी ॥ सब अरति मथनमुदार धूपं, करति गंध रसाल रे ॥ देवा, कर० ॥ धाम धूमा वलीय धूसर, कलुष पातिक गाल रे ॥ देवा, स० ॥ १ ॥ ऊर्ध्वगति सूचंति भविकुं, मघमघै करनाल रे ॥ दे० ॥ चौदमि वामंग पूजा, दीये रयण विशाल रे ॥ आरति मंगल माल रे, मालवी गौडी ताल रे ॥ स० ॥ २ ॥

॥ अथ पंचदश गीत पूजा ॥

॥ दूहा ॥ कंठ भलै आलाप करि, गावो जिनगुण गीत ॥ भावो अधिकी भावना, पनरमि पूजा प्रीत ॥ १ ॥

॥ श्री राग ॥ आर्यावृतं ॥ यद्वदनंतकेवल, मनंत फलमस्ति जैनगुणगानं ॥ गुणवर्णतानवाद्यै, र्मात्राभाषालयैर्युक्तं ॥ १ ॥ सप्तस्वरसंगीतैः, स्थानैर्जयतादि तालकरणैश्च ॥ चंचुरचारी चारै, र्गीतं ...नं सुपीयूषं ॥ २ ॥

॥ श्री राग ॥ जिनगुण गानं श्रुत अमृतं, तार मंद्रादिअनाहत तानं, केवल जिम तिम फल अमृतं ॥ जि० ॥१॥ विबुध कुमार कुमारी आलापे, मुरज उपंग नाद जनितं ॥ पाठ प्रबंध धुआप्रतिमानं, आयति छंद सुरति सुमितं ॥ २ ॥ शब्दसमान रुच्यो त्रिभुवनकुं, सुर नर गावे जिन चरितं ॥ सप्तस्वर मान शिवश्री गीतं, पनरमि पूजा हरे दुरितं ॥ जि० ॥ ३ ॥

॥ अथ षोडश नृत्य पूजा ॥

॥ दूहा ॥ कर जोडी नाटक करे, सजि सुंदर सिणगार ॥ भव नाटक ते नवि भमे, सोलमि पूजा सार ॥ १ ॥

॥ राग शुद्ध नट्ट ॥ काव्यं ॥ शार्दूलविक्रीडितं वृत्तं ॥ भावा दिप्पिमणा सुचारु चरणा, संपुन्न चंदानना, सप्पिम्मासम रूप वेस वयसो, मत्तेभ कुंभथ्थणा ॥ लावण्णा सगुणा पिकस्स रवई, रागा इआ लावणा ॥ कुम्मारी कुमरावि जैन पुरओ, नच्चंति सिगारणा ॥ १ ॥

॥ गद्यं ॥ तएणं ते अट्ठसयं कुमार कुमरीओ सूरियाभेणं देवेणं संदिट्ठा रंग मंडवे पविठा जिणं नमंता गायंता वायंता नच्चंतित्ति ॥

॥ राग नट्ट त्रिगुण ॥ नाचंति कुमार कुमरी, द्रागडदि तत्ता थेइ, द्रागडदि द्रागडदी थोंग थोंगानि मुखें तत्ता थेइ ॥ ना० ॥ १ ॥ वेणु वीणा मुरज वाजै, सोलही सिणगार साजे, तन नन्नानेइ, घणण घणण घूघरी घमके, रणंणणंणं नानेई ॥ ना० ॥२॥ कसंती कंचुकी तरुणी, मंजरी झंकार करणी, ॥ सोभंति कुमरी, हस्तकृत हावादि भावें, ददंति भमरी ॥ ना० ॥ ३ ॥ सोलमी नाटक पूजा, सूरीयाभें रावण कीनी ॥ सुगंध तत्ता त्थेई, जिनप भगतें भविक लीणा, आणंद तत्ता थेई ॥ ना० ॥ ४ ॥

॥ दूहा ॥ अरिहंतादिक पद सदा, भजियें तप करि शुद्ध ॥ अति निर्मल शुभ योगता, करिके तसु गुण लुद्ध ॥ १ ॥ विमल पीठ त्रिक तदुपरें, ठवियें जिनवर वीश ॥ पूजन उपगरण मेलि करि, अरचीजें सुजगीश ॥ २ ॥ एक एक ए पद तणो, द्रव्य पूज परकार ॥ पंच अष्टविध जाणियें, सत्तर इगविस सार ॥ ३ ॥ अष्ट जातिना कलश करि, विमल जलें भरपूर ॥ पूजो भवियण सहु मुदा, होय सकल दुःख दूर ॥ ४ ॥ सोहे सहु परमेष्टिमें, जिनवरपद अभिराम ॥ वेद निक्षेपे समरियें, वधते शुभ परिणाम ॥ ५ ॥

॥ राग देशाख ॥ पूर्वसुखसावनं ॥ ए देशी ॥ सकल जगनायकं, परमपददायकं, लायकं जिनपदं विमलभानं ॥ चतुरधिकतीस, अतिशय अमलबारगुण, वचन पणतीस गुणमणिनिधानं ॥ अइयो ॥ १ ॥ सुखकरण जिन चरण, पद्मसेवित सदा, अमर सुर असुर नर व्हृदयहारी ॥ एह जिनवर तणी, आण पुरण सदा, दाम जिम जगतजन शिरसि धारो॥अइयो ॥ २ ॥ जिनपपददरस, पारस फरसतें हुवे, प्रगट निज रूप परिणति विभासं ॥ तजिय बहिरात्म, गिरिसारता भवि लहे, अनुपमं आतमकांचन प्रकाशं ॥ अइयो ॥ ३ ॥ हुवइ जिनराज पद, जाप रवि किरणतें, तुरत बहु दुरित भर तिमिर नाशं ॥ घनचिदानंद, वरकंदघन भवि लहे, तीर्थंकरचरण कमलाविलासं ॥ अइयो ॥ ४ ॥ वर विबुध मणिलही, काच लघु शकलकों, ग्रहण करिवा कवण कर पसारे ॥ तिम लही जिन चरण, शरण शुभ योंगसें, अवर सुरसरण कुण व्हृदय धारे ॥ ५ ॥ प्रभु तणे पंच, कल्याण केरे दिनें, प्रगट तिहुं लोकमें हुइ उजेरो ॥ भविक देवपाल, श्रेणिक प्रमुख जिन नमी, बांधियो गोत्र जिनराज केरो ॥ ६ ॥ जेह त्रिण काल, नित नमें जिन हरखशुं, तेह भव जल तरे जनम त्रीजें ॥ अधिक भव यदि करे, तदपि निश्चय करी, सप्त वलि अष्ट भव करीय सीझे ॥ ७ ॥

॥ काव्यं ॥ णमो णंतविन्नाण सद्दंसणाणं, सयाणं दिया सेस जंतूगणाणं ॥ भवांभोज विच्छयणे वारणाणं, णमो बोहियाणं वराणं जिणाणं ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हद्भ्यो नमः ॥ इति जिनेंद्र पूजा ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय श्रीसिद्धपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ तनु त्रिभागके घटनते, घन अवगाहन जास ॥ विमल नाण दंसण कियो, लोकालोक प्रकाश ॥ १ ॥ अविनाशी अप्रमित अचल, पदवासी अविकार ॥ अगम अगोचर अजर अज, नमो सिद्ध जयकार ॥ २ ॥

॥ राग सोरठ ॥ कुंदकिरण शशि ऊजलो रे देवा ॥ ए देशी ॥ अनुभव परमानंदशुं रे वाला, परमातमपद वंदो रे ॥ करम निकंदो वंदीने रे वाला, लहि जिनपद चिरनंदो रे ॥ १ ॥ गगन पएसंतर वली रे वाला, समयांतर अणफरसी रे ॥ द्रव्य सगुण परजायना रे वाला, एक समय विध दरसी रे ॥ २ ॥ एक समय रुजुगति करी रे वाला, भए परमपद रामी रे ॥ भांगे सादि अनंतमां रे वाला, निरुपाधिक सुख धामी रे ॥ ३ ॥ अखिल करममल परिहरी रे वाला, सिद्ध सकल सुखकारी रे ॥ विमल चिदानंद घन थया रे वाला, वर इकतिस गुण धारी रे ॥ ४ ॥ उत्पन्नता वलि विगमता रे वाला, ध्रुवता त्रिपदी संगे रे ॥ प्रभुमें अनंत चतुष्कता रे वाला, सोहे शमक्रम भंगे रे ॥ ५ ॥ पनर भेदें ए सिद्ध थया रे वाला, सहजानंद स्वरूपी रे ॥ परम ज्योतिमें परिणम्या रे वाला, अव्याबाध अरूपी रे ॥ ६ ॥ जिनवर पण प्रणमे सदा रे वाला, एहने दिक्षा अवसरें रे ॥ तिण प्रभुपद गुणमालिका रे वाला, कंठें धरियें सुपरें रे ॥ ७ ॥ हस्तिपाल भवि भगतिशुं रे वाला, सिद्ध परमपद भजिनें रे ॥ पद श्रीजिन हरसें लह्युं रे वाला, परगुण परणति तजिनें रे ॥ ८ ॥

॥ काव्यं ॥ लोगग्गभागोपरि संठियाणं, बुद्धाणसिद्धाण मणिंदियाणं ॥ निस्सेस कम्मक्खयकारगाणं ॥ णमोसया मंगल धारगाणं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीसिद्धेभ्योनमः ॥ २ ॥

॥ अथ तृतिय प्रवचनपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ पद तृतीय प्रवचन नमो, ज्युं न भमो संसार ॥ गमो कुमति परिणमनता, दमो करण भयकार ॥ १ जैसें जलधरवृष्टितें, अखिल फलद विकसाय ॥ तैसें प्रवचनभक्तितें, शुभ परिणति उलसाय ॥ २ ॥

॥ श्रीराग ॥ जिनगुणगानं श्रुत अमृतं ॥ ए देशी ॥ प्रवचन ध्यानं सुखकरणं, परिहरियें सहु विषय विकारं, करियें प्रवचन आचरणं ॥ प्र० ॥ १ ॥ सप्त भंगिभूषित ए प्रवचन, स्यादवाद मुद्राभरणं ॥ सप्त नयात्मक गुणमणि आगर, बोधबीज उतपति करणं ॥ प्र० ॥ २ ॥ जैसें अमृत पान करणतें, हुवे सकलविषसंहरणं ॥ तैसें प्रवचन अमृत पानें, कुमति हलाहल प्रविसरणं ॥ प्र० ॥ ३ ॥ प्रवचनको आधेय ए कहियें, सकलसंघ तसु अधिकरणं ॥ तिण ए संघ चतुर्विध प्रवचन, ए पद अखिल कलुषहरणं ॥ प्र० ॥ ४ ॥ यदि भविजन तुम ए चाहतु है, मुगति रमणिकों वशकरणं ॥ करण तीन इक करि तद करियें, प्रवचन पद समरण धरणं ॥ प्र० ॥ ५ ॥ जिनवरजी पण ए तीरथनें, प्रणमे मध्यसमवसरणं ॥ भवजल तारण तरणिसमानं, ए तीरथ अशरण शरणं ॥ प्र० ॥ ६ ॥ जिम भरतेसर संघ भगति करि, लहियो पुण्यफलाचरणं ॥ चक्री पद अनुभवि वलि शिवपद, लीध करिय कर्म निर्जरणं ॥ प्र० ॥ ७ ॥ नरपति संभवजिन हरषें करि, आराधी प्रवचन चरणं ॥ करम निकंदी थया जगदीसर, जिनपरमा उर आभरणं ॥ प्र० ॥ ८ ॥

॥ काव्यं ॥ अणंतसंसुद्ध गुणायरस्स, दुक्खंधयारुग्गदिवायरस्स ॥ अणंतजीवाण दयागिहस्स, णमोणमो संघचउव्विहस्स ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं श्रीप्रवचनायनमः ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्थ आचार्य पद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ पद चतुर्थ नमियें सदा, सूरीसर महाराज ॥ सोहम जंबू सारिसा, सकल साधु सिरताज ॥ १ ॥ सारण वारण चोयणा, पडिचोयण करतार ॥ प्रवचनकज विकसायवा, सहस किरण अवतार ॥ २ ॥

॥ राग रामग्री ॥ गात्र लूहें ॥ ए देशी ॥ आचारिज पद ध्याइयें रे वाला, तास विमल गुण गाइयें ॥ पाइयें हांहो रे वाला पाइयें ॥ जिनपति पद जगशिर तीलो रे ॥ आ० ॥ १ ॥ जिन शासन अजुवालता रे वाला, सकलजीव प्रतिपालतां ॥ पांलतां हां० ॥ पालतां चरण करण मग चालतां रे ॥ आ० ॥ २ ॥ सूरि सकल गुण सोहता रे वाला, सुरनर जन मन मोहता ॥ मोहता हांहो० ॥ भवियणनें पडिवोहता रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ पंचाचार विराजिता रे वाला, सजल जलद जिम गाजता ॥ गाजता हांहो० ॥ सूरि सकल सिर छाजता रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ उपदेशामृत वरसता रे वाला, दुरित ताप सहु निरसता ॥ निरसता हांहो० ॥ परमातम पद फरसता रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ धरम धुरंधरता धरा रे वाला, जग बांधव जग हितकरा ॥ हितकरा हांहो० ॥ स्वपर समय विदु गणधरा रे ॥ आ० ॥ ६ ॥ पद श्रीजिन हरषें ग्रह्यो रे वाला, सूरीसर पद तव वह्यो ॥ तव वह्यो हांहो० पुरुषोत्तम नृप शिव लह्यो रे ॥ आ० ॥ ७ ॥

॥ काव्यं ॥ कुवादि केली तरु सिंधुराणं, सूरीसराणं मुनिबंधुराणं ॥ धीरत्तसंतज्जिय मंदराणं, णमो सया मंगलमंदिराणं ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्री आचार्येभ्योनमः ॥ इति ॥ ४ ॥

॥ अथ पंचमस्थविर पद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ द्विविध थिविर जिनवर कह्या, द्रव्य भाव परकार ॥ लौकिक लोकोत्तर वली, सुणियें भेद विचार ॥ १ ॥ जनकादिक लौकिक थिविर, लोकोत्तर अणगार ॥ पंचम पदमें जाणियें, द्वितिय थिविर अधिकार ॥ २ ॥

॥ राग सारंग ॥ नित नमियें थिविर मुनीसरा ॥ पंचमहा व्रत धारक वारक, कुमति जगत जन हितकरा ॥ नि० ॥ १ ॥ संयम योगें सीदत बालक, ग्लानादिक सहु मुनिवरा ॥ एहनें उचित सहाय दियण ते, वारे एहनां दुःखभरा ॥ नि० ॥ २ ॥ पर्यय वय श्रुत त्रिविध ए थिविरा, वीस रु साठ समो परा ॥ वयधर समवायाधिक पाठक, एह थिविर गुण आगरा ॥ नि० ॥ ३ ॥ त्रीजे अंग कह्या दस थिविरा, रत्नत्रयीना गुणधरा ॥ ते इह निर्मल भावे ग्रहिवा, भविक सरोज दिवाकरा ॥ नि० ॥ ४ ॥ क्षीरजलधिसम अतिहिं गंभीरा, सुरगिरि गुरु धीरज धरा ॥ शरणागत तारणता धारा, ज्ञानविमल जल सागरा ॥ नि० ॥ ॥ ५ ॥ श्रुत तप धीरज ध्यान धरणतें, द्रव्यादिक ज्ञातावरा ॥ तेह स्वरूपरमण कह्या थिविरा, नहीय धवल केशांकुरा ॥ नि० ॥ ६ ॥ एह थिविरपद सेवी भगतें, पदमोत्तर वसुधेशरा ॥ पद श्रीजिन हरखें तिण लहियुं, मुनिवर कुमुद निशाकरा ॥ नि० ॥ ७ ॥

॥ काव्यं ॥ सम्मत्तसंयम, पतित भविजन, अतिहि थिर करता भला ॥ अवगुण अदूषित, गुण विभूषित, चंद्रकिरण समुज्जला ॥ अष्टाधिकादश सहस शीलांग, रथ रुचिर धाराधरा ॥ भव सिंधु तारण, प्रवर कारण, नमो थिविर मुनीसरा ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्रीस्थविराय नमः ॥ इति ॥ ५ ॥

॥ अथ षष्ठ उपाध्याय पद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ प्रवरनाण दरसण चरण, धारक यतिधर्म सार ॥ समितिपंच त्रिण गुप्तिधर, निरुपम धीरज धार ॥ १ ॥ चरणकमल जेहनां नमे, अहोनिश सुर नर राय ॥ जडता गिरि दारण कुलिश, जय जय सिरि उवझाय ॥ २ ॥

॥ राग भैरव ॥ पंचवरणी अंगी रची ॥ ए देशी ॥ भाव धरी उवझाया वंदो, विजयकारी ॥ श्रीउवझाय परमपद वंदी, लहो जिनपद अतिशय धारी ॥ भा० ॥ १ ॥ कुमती मदतरु भंजन सिंधुर, सुमतिकंद घन अवतारी ॥ अंग दुवादस भणे भणावे, शिष्य भणी चित हित धारी ॥ भा० ॥ २ ॥ सकल सूत्र उपदेश दियणतें, वाचक अति विमलाचारी ॥ भव त्रीजे अमृत सुख पावे, सुर असुरेंद्र मनोहारी ॥ भा० ॥ ३ ॥ हय गय वृष पंचानन सरिसा, करमकंद वर तरवारी ॥ वासुदेव वासव नृप दिनकर, विधु भंडारि तुल धारी ॥ भा० ॥ ४ ॥ जंबू सीता नदिकांचन गिरि, चरमज लधि ओपम भारी ॥ ए ओपम बहुश्रुतनी जाणो, उतराध्ययन कही सारी ॥ भा० ॥ ५ ॥ अमल पंचविंशति गुण मणि निधि, सकल भुवन जन उपगारी ॥ संशय तिमिर हरण वासर मणि, पाप ताप आतप वारी ॥ भा० ॥ ६ ॥ प्रवर संस पय भरियो सोहे, तिम ए ज्ञान चरण चारी ॥ महेंद्रपाल पाठकपद सेवी, लहियो जिनपद विजितारी ॥ भा० ॥ ७ ॥

॥ काव्यं ॥ सव्वोहि बीजांकुर कारणाणं, णमो णमो वायग वारणाणं ॥ कुवोहि दंती हरिणेसराणं, विग्घोव सताव पयोहराणं ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्रीउपाध्यायेभ्यो नमः ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ अथ सप्तम साधुपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ जाणे जिनवाणी रम्य, स्यादवाद गुणवंत ॥ मुनि कहियें शिव पंथनें, साधे साधु कहंत ॥ १ ॥ शमता रस जल झील

ता, विशदानंद सुरूप ॥ तिण पाम्या पद सप्तमे, नमो नमो मुनि भूप ॥ २ ॥

॥ राग गुंड मिश्रित भीम मल्हार ॥ मेघ बरसे ॥ भरी पुष्प बादल करी ॥ ए देशी ॥ भक्ति धरि सातमे, पद भजो मुनिवरा, सुखकरा विजित इंद्रिय विकारा ॥ गुण सतावीश, भुषण करि शोभिता, क्षोभिता विकट क्रम सुभट सारा ॥ भ० ॥ १ ॥ चरण सित्तरि परम, करण सित्तरि धरा, शिव करण नाण किरिया प्रधाना ॥ प्रतिदिनें दोष, आहारना वरजिता, सप्त चालीश यति प्रम निधाना ॥ भ० ॥ २ ॥ मदन मद भंजता, कुमति जन गंजता, भक्त जन रंजता क्षांति भरिया ॥ सुमति धरिया सदा, चरण परिया जना, तारिया ज्ञान गंभीर दरिया ॥ भ० ॥ ३ ॥ तृणमणी सम गिणे, चतुर विध धर्मना, परम उपदेश दायक उदारा ॥ बहिरभ्यंतर भिदा, बारविध अति कठिन, तप तपे सकल जीउ अभयकारा ॥ भ० ॥ ४ ॥ वलि अठावीश, मनहरण गुण लब्धि निधि, सातमे छठ्ठ गुणठाण वसिया ॥ सप्त भय वारका, प्रवरजिन आगन्या, धारका स्वगुण परिणमन रसिया ॥ भ० ॥ ५ ॥ पंच परमाद, कल्लोलताकुल महा, पार संसार सागर जिहाजा ॥ विविध नव वाडि युत, शील व्रतके धरा, मधुर निज वाणि, रंजित समाजा ॥ भ० ॥ ६ ॥ कोडि नव सहस, थुणियें महामुनिवरा, वीरभद्र जिम करिय साधु सेवा ॥ परम पद जिन हर्ष, सुं ग्रह्यो तसु तणा, चरण कज युग नमे सकल देवा ॥ भ० ॥ ७ ॥

॥ काव्यं ॥ संतज्जिया सेसपरिसहाणं, निस्सेस जीवाण दयागिहाणं ॥ सन्नाण पज्जायतरूवणाणं, णमो णमो होउ तवोधणाणं ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्री सर्वसाधुभ्यो नमः ॥ इति ॥ ७ ॥

॥ अथ अष्टम श्रीज्ञानपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ विमल नाण वर किरण किय, लोकालोक प्रकाश ॥ जीत लही निज तेजसें, जिण अनंत रविभास ॥ सहु संशय तम अपहरे, जय जय नाण दिणंद ॥ नाण चरण समरण थकी, विलय होय दुख दंद ॥ २ ॥

॥ राग घाटी ॥ मेरो मन वस कर लिनो, जिनवर प्रभु पास ॥ ए देशी ॥ भावें ज्ञान वंदन करियें, शिव सुख तरु कंद ॥ जिनचन्द्र पद गुण धरियें, वरियें परम आनंद ॥ भा० ॥१॥ मतिनाण श्रुत पुनरवधि, मनपरजय जाण ॥ भा० ॥ लोकालोक भाव प्रकाशी, वर केवल नाण ॥ भा० ॥ २ ॥ पंच ए इकावन भेदें, कह्यो जिन वर भान ॥ जगजीव जडता छेदे, ज्ञानामृत रस पान ॥ भा० ॥३॥ विन ज्ञान कीधी किरिया, होय तसु फल ध्वंस ॥ भक्षाभक्ष प्रगट ए करियें, जिम पय जल हंस ॥ भा० ॥ ४ ॥ वरनाण सहित सुकिरिया, करी फल दातार ॥ हुवो ज्ञान चरण रासिला, लहो भव जलपार ॥ भा० ॥ ५ ॥ ज्ञानानंद अमृत पीधो, भरतेसरमहाराय ॥ तिणसें अमृत पद लीधो, सुरपति गुण गाय ॥ भा० ॥६॥ सेवी ज्ञान जयत नरेसें, भये जिन महाराज ॥ सोहे ज्ञान ए त्रिभुवनमें, सहु गुणपरि शिरताज ॥ भा० ॥ ७ ॥

॥ काव्यं ॥ छद्दव्वपज्जाय गुणक्करस्स, सया पयासी करणाधुरस्स ॥ मिच्छत्त अन्नाण तमोहरस्स, णमो णमो नाणदिवायरस्स ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्रीज्ञानाय नमः ॥

॥ अथ नवम दर्शनपद पूजा ॥

॥दूहा॥ दरिसण आश्रय धर्म्मनो, एहनां पद उपमान ॥ दरसण विण नहि चरणचिद, उत्तराध्ययनें जाण ॥१॥ जिन दरसण फरस्यो भलो, अंतर मुहुरतमान ॥ अर्द्धपुग्गल परियट्ट रह, तसु संसार निदान ॥ २ ॥

॥ राग कामोद ॥ चंपक केतक मालती ॥ ए देशी ॥ जिणदरिस ण मुझ मनवस्यो ए, अइयो मन वस्यो ए, उपजत परमआनंद ॥ जिनदरसण दरसण दिये, विमल नाण तरुकंद ॥ १ ॥ दरसण मोह रिपु जीतिया ए ॥ अ० ॥ वरदरसण उलसंत ॥ दरसण घट परग ट हुवां, भवियण भव न भमंत ॥ २ ॥ जिनवर देव सुगुरु व्रती ए ॥ अ० ॥ केवलि कथित जिनधर्म ॥ तीन तत्त्व परिणति रमे, ते दरसण करे शम ॥ ३ ॥ जिनप्रभु वचनोपरि सदा ए ॥ अ० ॥ थिर सरदहण धरंत ॥ इण लक्षणतें जाणियें, समकितवंत महंत ॥ ४ ॥ इग दुग ति चउ शर दस विहा ए, सत्तसठि भेदविचार ॥ अ० ॥ वलि परीति समकित भण्यो, द्रव्य भाव परकार ॥५॥ द्रव्ये जिण दरसण कह्युं ए ॥ अ० ॥ भावें समकित सार ॥ द्रव्यत दर सण भावतो, दरसण कारण धार ॥ ६ ॥ द्रव्यत दरस यदिगत व ली ए ॥अ०॥ तदपि उत्तर हित कार ॥ सय्यंभव जिनदरसणें, पायो दरसण सार ॥ ७ ॥ दरसण विण किरिया हता ए ॥ अ० ॥ अंक विना जिम बिंदु ॥ वलि हणियो विन चंद्रिका, वासरमें जिम इंदु ॥ ८ ॥ हरिविक्रम नृप सेवतो ए ॥ अ० ॥ दरसण पद अभिराम ॥ पद श्री जिन हरषें धर्युं, वधते शुभ परिणाम ॥ ९ ॥

॥ काव्यं ॥ अणंत विन्नाण सुकारणस्स, अणंत संसार विदारण स्स ॥ अणंत कम्मावलि धंसणस्स, णमो णमो निम्मलदंसणस्स ॥१०॥ ॐ ह्रीँ श्रीदर्शनायनमः ॥ इति ॥ ९ ॥

॥ अथ दशम विनय पद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ विनय भुवन रंजन करे, विनयें जस विसतार ॥ विनय जीव भूषित करे, विनयें जयजयकार ॥ १ ॥ विनय मूल जिनधर्मनुं, विनय ज्ञानतरु कंद ॥ विनय सकलगुण सेहरो, जय जय विनय सभंद ॥ २ ॥

॥ राग सामेरी ॥ पूजोरी माई, जिनवर अंग सुगंधे ॥ एदेशी ॥ ध्यावोरी माई, विनय दशम पद ध्यावो ॥ पंच भेद दश विध तेरस विध, बावन भेद गणेशे॥ छासठ भेद कह्या आगममें, विनयतणा सुविशेषें ॥ ध्या० ॥ १ ॥ तीर्थंकर सिद्ध कुल गण संघा, किरिया धर्म वरनाणा ॥ नाणी आचारिज मुनि थविरा, पाठक गणि गुण जाणा ॥ ध्या० ॥ २ ॥ ए अरिहादिक तेरस पदनो, विनय करे जे भावें ॥ ते तीर्थंकर पद अनुभविनें, अमृतपद सुख पावे ॥ ध्या० ॥ ३ ॥ जिम कंचनमें मृदुगुण लाभे, नहीय कालिमा पावे ॥ तिण ए सकल धातुमें उत्तम, नाम कल्याण कहावे ॥ ध्या० ॥ ४ ॥ तिम विनयीमें छे मृदुता गुण, कुमति कठिनता नासे ॥ कृष्णादिक लेश्यानी मलिनता, जाये विनय गुण भासे ॥ ध्या० ॥ ५ ॥ दोय सहस अरु अधिक चिहुत्तर, देववंदन निरधारो ॥गुरु वंदन विधि च्यारशें बाणुं, भेद करी उर धारो ॥ ध्या० ॥ ६ ॥ तीर्थंकरादिकनो मन रंगे, विनय चरण शुभ ध्यायो ॥ धन नामा भविजन शुभयोगें, पद जिन हर्ष पायो ॥ ध्या० ॥ ७ ॥

॥ काव्यं ॥ आणंदिया सेसजगज्जणस्स, कुंदिंदु पादा मलताचणस्स ॥ सुधम्म जुत्तस्स दयासयस्स, णमो णमो सव्विणया लयस्स ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्री विनयाय नमः ॥

॥ अथ एकादश चारित्रपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ इग्यारमपद नित नमुं, देश सरव चारित्र ॥ पंक मलिनता दुर करि, चेतन करे पवित्र ॥ १ ॥ एह चरण सेवन करे, रंकथकी सुरराय ॥ तीन जगतपति पद दिये, जसु सुर नर गुण गाय ॥ २ ॥

॥ राग सारंग ॥ बावन चंदन घसि कु० ॥ ए देशी ॥ चरण सरण मुझ मन हरयो, सुख करण हरण घन पाप ए ॥ हां हो रे

वाला ॥ एह चरण जलधर हरे, अज्ञान तरुणतर ताप ए ॥ हां० ॥ १ ॥ आठ कषाय निवारतां, देशविरति प्रगट हुवे खास ए ॥ हां० ॥ चार कषाय निवारिया, समविरति लहे गुणवास ए ॥ हां० ॥२॥ इगवासर सेव्यो थको, शुद्ध सर्व संवरचारित्र ए ॥ हां० ॥ परमानंद घन पद दिये, सुरलोक जनित सुखचित्र ए ॥ हां० ॥ ३ ॥ भवभय तरुगण छेदवा, ए संयम निशित कुठार ए ॥ हां० ॥ ज्ञान परंपर करण छे, अमृत पदनो हितकार ए ॥ हां० ॥ ४ ॥ चरण अनंतर करण छे, निरवाण तणो निरधार ए ॥ हां० ॥ सरवविरति शुद्ध चरणसें, पामे अरिहंत पद सार ए ॥ हां० ॥५॥ वरस चरण परजायमें, अनुत्तर सुख अतिक्रम होय ए ॥ हां० ॥ सतर भेद चारित्रना, कहिया जिन आगम जोय ए ॥ हां० ॥ ६ ॥ देशथी सम संयम विषे, उज्जलता अनंत गुण थाय ए ॥ हां० ॥ अरुणदेव सेवी चरणनें, भये जगगुरु जिन महाराय ए ॥ हां० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ काव्यं ॥ कम्मोघकंतार दवानलस्स, महोदयानंद लयाजलस्स ॥ विन्नाण पंकेरुहकाणणस्स, णमो चरित्तस्स गुणापणस्स ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्रीचारित्राय नमः ॥ इति ॥ ११ ॥

॥ अथ द्वादश ब्रह्मचर्यपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ सुरतरु सुरमणि सुरगवी, काम कलश अवधार ॥ ब्रह्मचर्य इण सम कह्युं, कामित फलदातार ॥ १ ॥ जिम जोतिसियां रजनिकर, सुरगणमें सुरराय ॥ तिम सहु व्रत शिर सेहरो, ब्रह्मचर ज कहिवाय ॥ २ ॥

॥ राग काफी जंगलो ॥ भलो प्रभुगुण वाल्हा हो ॥ ए देशी ॥ भवभयहरणा शिवसुखकरणा, सदा भजो ब्रह्मचारा हो ॥ भ० ॥ शील विबुध तरु प्रतिपालनकों, कहि जिनवर नववारा हो ॥ भ० ॥ १ ॥ दिव्योदारिक करण करावण, अनुमति विषय प्रकारा हो ॥ भ० ॥ त्रि

करण जोगें ए परिहरियें, भजियें भेद अढारा हो ॥ भ० ॥ २ ॥ कनक कोडिनो दान दिये नित, कनक चैत्य करतारा हो ॥ भ० ॥ एहथी ब्रह्मचरज धारकनो, फल अगणित अवधारा हो ॥ भ० ॥ ३ ॥ सहस चोरासी श्रवण दान फल, शमब्रह्मव्रतफल सारा हो ॥ भ० ॥ विजयशेठ विजया शेठाणी, उभय पक्ष ब्रह्मधारा हो ॥ भ० ॥ ४ ॥ भये सुदर्शन शेठ शीलसें, मुगतिवधू भरतारा हो ॥ भ० ॥ सहस अढार शीलांगरथ धारा, धार करो निसतारा हो ॥ भ० ॥ ५ ॥ सिंहादिक वसुभय तरु भंजन, सिंधुर मद मतवारा हो ॥ भ० ॥ कलहकारि नारदऋषि सरिखे, तर्यों भवजलधि अपारा हो ॥ भ० ॥ ६ ॥ पच्चख्खाण विरति नहि एहमें, ए ब्रह्मव्रत उपगारा हो ॥ भ० ॥ सकल सुरासुर किन्नर नरवर, धरिय भगति हितकारा हो ॥ भ० ॥ ७ ॥ ब्रह्मचरज व्रतधर नरवरके, प्रणमे चरण उदारा हो ॥ भ० ॥ दशमे अंगें भणियो नरवर्मा, नरपति गुण आधारा हो ॥ भ० ॥ ८ ॥ ब्रह्मचरजव्रत पाल लह्युं पद, जिनहरषें जयकारा ॥ भ० ॥ ९ ॥

॥ काव्यं ॥ सग्गापवग्गग्ग सुहप्पयस्स, सुनिम्मलाणंत गुणालयस्स ॥ सव्वव्वया भूसण भूसणस्स, णमोहि सीलस्स अदूसणस्स ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीब्रह्मचर्याय नमः ॥ इति ॥ १२ ॥

॥ अथ त्रयोदश क्रियापद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ करम निरजरा हेतु हे, प्रवर क्रिया गुण खाण ॥ जिनशासननी स्थिति रहि, किरियारुपें जाण ॥ १ ॥ भवनमांहि किरिया महीं, सकल शुद्ध विवहार ॥ प्रवरनाण दरिसण तणो, शुद्ध किरिया सिणगार ॥ २ ॥

॥ राग मालवी गौडी ॥ सब अरति मथनमुदार धूपं ॥ ए देशी ॥ शुभध्यान किरिया हृदय धरीने, धर्म सकल उरधार रे ॥ आ

र्त रौद्रनी हेतु किरिया, अशुभ पणवीस वार रे ॥ शु० ॥ १ ॥ ज्ञानवंत अशस्त्र भट हे, किरिया शस्त्र वतंस रे ॥ सुभटनाणी क्रियाशस्त्रें, करयक्रम अरिध्वंस रे ॥ शु० ॥ २ ॥ ज्ञानसेंति वदे शिव यदि, तेरमे गुण ठाण रे ॥ एकनाणें करि जिनेसर, किमु न लहे निरवाण रे ॥ शु० ॥ ३ ॥ जिनप शैलेशीकरण करि, चउदमे गुणठाण रे ॥ सरबसंबर चरण करणें, लहे पद निरवाण रे ॥ शु० ॥ ४ ॥ ए अनंतर अमृत कारण, कह्यो जिनवर भाणु रे ॥ सरब संबर चरण किरिया, न शिव इण विणु जाण रे ॥ शु० ॥ ५ ॥ एक नाणें इक क्रियामें, न शिव वितरण शक्ति रे ॥ कहे जिनवर उभय योगें, लहे भविजन मुक्ति रे ॥ शु० ॥ ६ ॥ गरल मिश्रित सरस भोजन, अशुभ परिणति धार रे ॥ अंमृत संयुत तेह भोजन, रुचिर परिणति कार रे ॥ शु० ॥ ७ ॥ ज्ञानसहिता तेम किरिया, करि करे निसतार रे ॥ ज्ञानविणु किरिया न दीये, मनोगत फलसार रे ॥ शु० ॥ ८ ॥ ज्ञान परिणत रमी किरिया, तेह किरिया सार रे ॥ भयो हरिवाहन जिनेसर, शुद्ध किरिया धार रे ॥ शु० ॥ ९ ॥

॥ काव्यं ॥ विशुद्धसद्धाण विभूसणस्स, सुलद्धि संपत्तिसुपोसणस्स ॥ णमो सदाणंतगुणप्पदस्स, णमो णमो सुक्किरियापदस्स ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं श्री क्रियायै नमः ॥ इति ॥ १३ ॥

॥ अथ चतुर्दश तप पद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ शमतारस युत तपरुचिर, भणियो जिन जग भान ॥ शिवसुर सुख चंदनफलद, नंदनविपिन समान ॥ १ ॥ सघन करम कानन दहन, करन विमल तप जान ॥ विपिन धूम केतन समो, जय तप सुगुणनिधान ॥

॥ राग कल्याण ॥ तेरी पूजा बनी तेरसमे ॥ ए चाल ॥ मेरी लगी लगन तप चरणें ॥ सकल कुशलमें प्रथम कुशल ए, दुरित

निकाचित हरणें ॥ मे० ॥ १ ॥ जैसे गणधरकी जिनचरणें, चातक की जल धरणें ॥ मे० ॥ जैसी चक्रवाककी अरुणें, चकोरकी हिम किरणें ॥ मे० ॥ २ ॥ जिनवर पण तदभव शिव जाणे, त्रण चउ नाण सुकरणें ॥ मे० ॥ तदपि सुकोमल करण सरणनें, ठवय कठि न तप करणें ॥ मे० ॥ ३ ॥ कपट सहित तप चरणधरणतें, बांछित फल नवि तरणें ॥ मे० ॥ नित ए दंभ रहित तपपदके, सुरपति ग ण गुण वरणे ॥ मे० ॥ ४ ॥ पीठ महापीठ मुनि मल्लीजिन, पूरव भव तप सरणें ॥ मे० ॥ रहिया तदपि कपट नवि छंड्यो, भये स्त्रीं गोत्राचरणें ॥ मे० ॥ ५ ॥ दृढप्रहारी पांडव घनकरमी, छंड्या कर मावरणें ॥ मे० ॥ तपसें शोभ लही त्रिभुवममें, केवल कमलाभर णें ॥ मे० ॥ ६ ॥ लाख इग्यारह असी हजारा, पंच सयसदिन खिरणें॥ मे० ॥ मासखमण करि नंदन मुनिवर, पाम्यो फल शिव धरणें ॥ मे० ॥ ७ ॥ तप करियो गुणरयण संवत्सर, खंधक शमतादरणें ॥ मे० ॥ चउदसहस मुनिमें कह्यो अधिको, धन्नो तप आचरणें ॥ मे० ॥ ८ ॥ वहिरभ्यंतरभेदें ए तप, वारभेद अधिकरणें ॥ मे० ॥ वसनें कनककेतु पाम्यो पद, जिन हर्षे भवतरणें ॥ मे० ॥ ९ ॥

॥ काव्यं ॥ लद्धीसरोजावलितावणस्स, सव्वसंलग्ग सुपावण स्स ॥ अमंगलानोकुहदुद्दवस्स, णमो णमो निम्मलसत्तवस्स ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं श्री तपसे नमः ॥ इति ॥ १४ ॥

॥ अथ सुपात्रदानाधिकारे पंचदश गौतमपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ गौतम गणधर पनरमे, पद सेवो सुप्रसन्न ॥ वलि स हु जिन गणधर नमो, चौदेशें बावन्न ॥ १ ॥ दान सकल जग वश करे, दान हरे दुरितारि ॥ मनवांछित सहु सुख दिये, दान धरम हितकारि ॥ २ ॥

॥ राग सोरठ ॥ तेरी प्रीति पिछानी हो प्रभु में ॥ ए देशी ॥ पनरम पद गुण गानां हो भवि ॥ पनरम० ॥ भाव धरी करियें मन रंगें, परम सुपात्रें दानां ॥ हो भवि पनरम० ॥ १ ॥ पात्र कह्या द्रव्य भाव दुभेदें, द्रव्यलच्छन ए जानां ॥ हो भवि प० ॥ सर्वोत्तम उत्तम दुवे भाजन, रतनकनक रूपानां ॥ हो भवि प० ॥ २ ॥ मध्यम पात्र कहीजें एहवा, ताम्र धातु निपजानां ॥ हो भवि प० ॥ पात्र लोहादिक अपर जातिनां, तेह जघन्य कहानां ॥ हो भवि प० ॥ ३ ॥ भावपात्रनो लच्छन कहियें, सुणियें सुगुण सयानां ॥ हो भवि प० ॥ पंचम चरणधरें वलि वरतें, क्षीणमोह गुणठाणा ॥ हो भवि प० ॥ ४ ॥ रतनपात्र सम ते सर्वोत्तम, पात्र कह्यां जिन भाना ॥ हो भवि प० ॥ प्रवर नाण किरियाधर मुनिवर, लाभालाभ समाना ॥ हो भवि प० ॥ ५ ॥ ते कांचन भाजन सम कहियें, भवजल तारन याना ॥ हो भवि प०॥ शुद्ध मन द्वादश व्रत दरसन धर, तारपात्र सम जाना ॥ हो भवि प० ॥ ६ ॥ शुद्ध समकितधर श्रेणिक परमुख, रह्या अविरति गुणठाणा ॥ हो भवि प० ॥ ताम्रपात्र सम एहने कहियें, भावी गुणमणि खानां ॥ हो भवि प० ॥ ७ ॥ अपर सकलजन मिथ्यादृष्टि, लोहादि पात्र गिनाना ॥ हो भवि प० ॥ जिनशासन रंगें रंगानां, वाचंयम सुप्रमाना ॥ हो भवि प० ॥ ८ ॥ एहनें दान दियां शिव लहियें, एह सुपात्र पहिचानां ॥ हो भवि प० ॥ पंचदान दशदान निकरमें, अभयसुपात्र महिरानां ॥ हो भवि प० ॥ ९ ॥ नरवाहन शुभ पात्र दानतें, भये जिन हरष निधाना ॥ हो भवि प० ॥ शालिभद्र वलि सुरसुख लहियो, सुर नर करय वखानां ॥ हो भवि प० ॥ १० ॥

॥ काव्यं ॥ अनंतविन्नाण विभासरस्स, दुवाल संगी कमलाकरस्स ॥ सुलद्धवासा जरगोयमस्स, णमो गणाधीसर गोयमस्स ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं श्रीगौतमायनमः इति ॥ १५ ॥

॥ अथ षोडश वेयावच्चपद पूजा ॥

॥ दुहा ॥ सोलमपदमें जाणियें, वेयावच्च विधान ॥ अखिल विमल गुणमणि तणो, सोहे भवर निधान ॥ १ ॥ जिनसूरी पाठक मुनी, बालक वृद्ध गिलान ॥ तपसी चैत्य संघनुं करो, वेयावच्च प्रधान ॥ २ ॥

॥ राग जंगलो ॥ मुने म्हारो कब मिलशे मनमेलू ॥ दे० ॥ सेवोभाई, सोलमपद सुखकारी ॥ श्रीजिनचंद्र प्रमुख दशपदनो, करो वेयावच्च भारी ॥ से० ॥ १ ॥ श्रीतीर्थंकर त्रिभुवन शंकर, अवर केवली हारी ॥ मनपर्यवधर अवधिनाणधर, चौदपूरव श्रुतधारी ॥ से० ॥ २ ॥ दशपूर्वि उत्कृष्ट चरणधर, लब्धिवंत अणगारी ॥ ए जिन कहियें इन वंदनतें, भवि हुवे जिन अवतारी ॥ से० ॥ ३ ॥ जिनमंदिर बिंब करिय भरावे, पूज करे मनुहारी ॥ वेयावच्च कहीयें ए जिनकी, करियें भवजलतारी ॥ से० ॥ ४ ॥ आचारिज परमुख नवपदकी, वेयावच्च विजितारी ॥ भक्तिपूर्व वस्त्रोषध अनजल, देवे गुणविस्तारी ॥ से० ॥ ५ ॥ पंचसय मुनिनी करिय वेयावच्च, पूरवभव व्रतचारी ॥ भरत बाहुबलि चक्रिपदभुज, बल लह्यो वरी शिवनारी ॥ से० ॥ ६ ॥ नंदिषेण सुलसा मुनिजनको, करीय वेयावच्च सारी ॥ तिनसें स्वर्गलोकमें दुयकी, भईय प्रशंसा भारी ॥ से० ॥ ७ ॥ इत्यादिक सोलमपद उधरे, बहुलभव्य क्रम जारी ॥ तिनसें इन वेयावच्चपदकी, वारि जाउं वार हजारी ॥ से० ॥ ८ ॥ नृप जीमूतकेतु सोलमपद, सेवी भये दुखवारी ॥ श्रीजिनहर्ष धरी हरिवंदित, शरणागत निसतारी ॥ से० ॥ ९ ॥

॥ काव्यं ॥ मणुण्ण सव्वातिसया सयाणं, सुरासुराधीसर वंदियाणं ॥ रविंदु बिंबामल सग्गुणाणं, दयाघणाणंहि नमोजिणाणं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीजिनेभ्यो नमः ॥ इति १६ ॥

॥ अथ सप्तदश समाधि पद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ सतरम पदमें सेवियें, सहु सुख करण समाधि ॥ जिन सेवनतें भविकनो, गमे व्याधि अरु आधि ॥ १ ॥ ब्रह्मनगर पथ विचरतां, वर पाथेय समान ॥ ए समाधि पद जाणियें, सुरमणि किये है रान ॥ २ ॥

॥ राग कहेरबो ॥ बाजे तेरा बिछुआ रे ॥ बा० ॥ ए देशी ॥ मेरो रे समाधि चरण चित बसियो, तसु गुण समरण क्रियो मनु ब्रसियो ॥ मे० ॥ सकल जगत जन जिनकुं स्तवतुहे, अनुभवरंगें अतिहि विकासियो ॥ मे० ॥ १ ॥ द्रव्यत भावत दुविध समाधि, सुरतरु मानुं नित भुवन विलसियो ॥ असन वसन सलिलादिक भक्ति, करिय संघनी करुणा रसियो ॥ मे० ॥ २ ॥ द्रव्य समाधि प्रथम ए सुनियें, कह्यो जिन लोकालोक दरसियो ॥ सारण वारण चोयण प्रमुखें, पतित सुथिर करे भ्रममें हरसियो ॥ मे० ॥ ३ ॥ भाव समाधि द्वितीय ए कहियें, जो करे सो जिन चरण फरसियो ॥ सकल संघकों जो उपजावत, दुविध समाधि दुरित तसु नसियो ॥ मे० ॥ ४ ॥ सुमति पंच त्रण गुपति धरे नित, सुरगिरिवरनो धीरज करसियो ॥ जगत जंतु अघ तपत हरनकुं, अनुभव अमृत धार वरसियो ॥ मे० ॥ ५ ॥ ध्यान अनल कमैंधन दाहत, जिनसें परगुण परिणत खिसियो ॥ ए मुनितरणि तेज सम दीपत, अमृत सुखामृतपान तिरसियो ॥ मे० ॥ ६ ॥ इन पदमें ऐसे मुनि जनके, समरनतें हुय जग अवतंसियो ॥ ए पद सेवी नृपति पुरंदर, भये जगपति जिन हरख उलसियो ॥ मे० ॥ ७ ॥

॥ काव्यं ॥ सव्विंदिया पारविकारदारी, अकारणा सेसजणोवगारी ॥ महाभयातंकगणापहारी, जयो सदा शुद्ध चरित्तधारी॥ ८ ॥ ॐ ह्रूँ श्रीचारित्रधारिभ्योनमः ॥ इति सप्तदशसमाधिपद पूजा॥ १७॥

॥ अथ अष्टादश अपूर्वश्रुत ग्रहणरूप ज्ञान पूजा ॥

॥ दूहा ॥ श्रुत अपूर्व ग्रहिउं सदा, अष्टादश पद मांहि ॥ इण पद सेवक जन तणा, सहु संकट भय जाहि ॥ १ ॥ जेसी कुमति नि शुद्धता, घोर तपें करि होय ॥ तत अनंत गुण शुद्धता, सुज्ञानी की जोय ॥ २ ॥

॥ दिलदार यार गवरू, राखुं रे हमारा घटमें ॥ ए देशी ॥ जिन चंद्र नाम तेरा, महाराज ज्ञान तेरा ॥ जिते रे विकट भव भटने, सदपूर्वज्ञान धरणा ॥ वितरे जिनेंद्र चरणा, करे सर्व कर्म हरणा ॥ जी० ॥ १ ॥ जगमे महोपकारी, भय सिन्धु वारि तारी, कुमतांध ता विदारी ॥ जी० ॥ २ ॥ सहु भावनो प्रकाशी, परम स्वरूप भासी, परमात्म सद्मवासी ॥ जी० ॥ ३ ॥ विनु हेतु विश्वबंधू, गुण रत्न राशि सिंधू, समता पीयूष अंधू ॥ जी० ॥ ४ ॥ स्याद्वाद पक्ष गाजे, नयसप्तसें विराजे, एकांत पक्ष भाजे ॥ जी० ॥ ५ ॥ लहि तीर्थ पाव तारा, इनसें जिनेंद्र सारा, भविके किया उधारा ॥ जी० ॥ ६ ॥ पद सेवि ए नरिंदा, भये सागरादि चन्दा, जिन हर्षके स मंदा ॥ जी० ॥ ७ ॥

॥ काव्यं ॥ सुद्धक्रिया मंडल मंडनस्स, संदेह संदोह विखंडणस्स ॥ मुत्ती उपादान सुकारणस्स, णमोहि नाणस्स जसोधणस्स ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्री ज्ञानाय नमः ॥ इति ॥ १८ ॥

॥ अथ एकोनविंशति श्रुतपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ पाप ताप संहरण हरि, चंदन सम श्रुत सार ॥ तत्त्वर मण कारण करण, अशरण शरण उदार ॥ १ ॥ इगुनवीस पदमें भजो, जिनवर श्रुतनी भक्ति ॥ इनपद वंदनसे लहे, विमलनाण युत मुक्ति ॥ २ ॥

॥ राग ॥ व्रजवासी कान तें मेरी गागर ढोरी रे ॥ ए देशी ॥ भविजन श्रुतभक्ति, चरणशरण उर धरियें रे ॥ ए श्रुतभक्ति सुमंगल माल, विमलकेवल कमलावरमाल ॥ भवि० ॥ १ ॥ सकल द्रव्यगण गुणपर्याय, प्रगट करण ए श्रुत मन भाय ॥ भ० ॥ अतुल अनंतकिरण समवाय, धरणतरणगणसम कहिवाय ॥ भ० ॥ २ ॥ ए श्रुतकुमति युवतिने संग, अगणित रमणतणो करे भंग ॥ भ० ॥ अरथें भाख्यो श्रीजिनराज, सूत्रें गणधर मुनि सिरताज ॥ भ० ॥ ३ ॥ ए श्रुत सागर अगम अपार, अनंतअमल गुणरयणाधार ॥ भ० ॥ भवभय जलनिधि तरण जिहाज, निसुणि मगन भई सकल समाज ॥ भ० ॥ ४ ॥ भवकोटी लगें तप करि जीव, अज्ञानी करे जितनी सदीव ॥ भ० ॥ कर्मनिरजरा तितनी होय, ज्ञानी के इक क्षणमें जोय ॥ भ० ॥ ५ ॥ एक सहस कोडि छसयकोडि, चतुरतीस कोडि अक्षर जोडि ॥ भ० ॥ अडसठि लाख रु सात हजार, अडसय असीय प्रमित चित धार ॥ भ० ॥६॥ इतने वरनसें इक पद होय, एक शलोकका गणित ए जोय ॥ भ० ॥ इक पदको परिमाण ए जान, इण पदसें आगम परिमाण ॥ भ० ॥ ७ ॥ तीन कोडि अरु अडसठि लाख, सहस बैयालिस ए पद भाख ॥ भ० ॥ इतने पदसें अंग इग्यार, केरी गणना भवि चित्त धार ॥ भ० ॥ ८ ॥ बारम दृष्टिवादको मान, असंख्यात पदकों पहिचान ॥ भ० ॥ इनको चौदपूरव इक देश, इसको पार लह्यो हे गणेश ॥ भ० ॥ ९ ॥ एह दुवालस अंग उदार, एहनी जइयें नित बलिहार ॥ भ० ॥ एहनी द्रव्यभाव बहु भक्ति, करियें धरियें जिनपदयुक्ति ॥ भ० ॥ १० ॥ रत्नचूड नृप सुखमा धार, जिनश्रुत भक्ति करी हितकार ॥ भ० ॥ भये जिनहरष परमपद दाय, जिनके सुर नरपति गुन गाय ॥ भ० ॥ ११ ॥

॥ काव्यं ॥ अन्नाणवल्ली वणवारणस्स, सुवोहिवीजंकुरकारण स्स ॥ अणंतसंसुद्ध गुणालयस्स, णमो दयामंदर सत्थुयस्स ॥ १२ ॥ ॐ ह्रूँ श्रीश्रुताय नमः ॥ इति ॥ १९ ॥

॥ अथ विंशति श्रीतीर्थपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ प्रावचनी अरु धर्मकथी, वादि निमित्ती जांण ॥ तप सी विद्या सिद्ध पुनि, क्वी एह मुनिभाण ॥१॥ भावतीर्थ ए प्रभु क ह्या, प्रभावीक ए अष्ट ॥ तीर्थ प्रभावन जे करे, ते फल लहे विशिष्ट ॥२॥

॥ राग धन्याश्री ॥ तीरथ परभावन जयकारा, जिनसें भव सा गर जल तरियें ॥ ते तीर्थ गुण धारा ॥ ती० ॥ १ ॥ जिन के गणधर तीर्थ कहियें, वलि सहु संघ सुखकारा ॥ एह महा तीरथ पहिचानो, वंदि लहो भवपारा ॥ ती० २ ॥ अडसठ लौ किक तीर्थ तजि करि, भज लोकोत्तर सारा ॥ द्रव्यभाव दोय भेद लोकोत्तर, थिर जंगम भयहारा ॥ ती० ॥ ३ ॥ पुंडरीक परमुख पं चतीरथ, चैत्य पंच परकारा ॥ ए वर तीरथ थावर कहियें, दीठां दुरित विदारा ॥ ती० ॥ ४ ॥ श्रीसीमंधर प्रमुख वीश जिन, विहरमान भवतारा ॥ दोय कोडि केवलि विचरंता, जंगमतीर्थ उदारा ॥ ती० ॥ ५ ॥ संघ चतुर्विध जंगमतीरथ, जिनशासन उजियारा ॥ वर अनंत गुणभूषण भूषित, जिनकुं नमत जिनसारा ॥ ती० ॥ ६ ॥ ए तीरथ परभावन करियें, शुभ भावन आधारा ॥ शिवकज जलविंशतितम पदकी, जाउं प्रतिदिन वलिहारा ॥ ती० ॥ ७ ॥ ए तीरथ परभावन करतो, मेरुप्रभ अविकारा ॥ पदजिनहरष ल हीनें तरियो, भवअंभोधि अपारा ॥ ती० ॥ ८ ॥

॥ काव्यं ॥ महामहानंदपदप्रदाय, जिनश्रुतज्ञानपयोनदाय, ज गत्रयाधीश्वरवंदिताय, नमोस्तु तीर्थाय शुभंददाय ॥ ॐ ह्रूँ श्रीती र्थाय नमः ॥ इति ॥ २० ॥

॥ सुण चतुर सुजाण, परनारीशुं प्रीति कब्रू नवि कीजियें ॥ ए देशी ॥ चित हरष धरी, अनुभवरंगें वीस परमपद वंदियें ॥ शिवरमणि वरी, केवल सखीयसहायकरी चिर नंदियें ॥ ए आंकणी ॥ ए वीस चरण अशरणशरणा, चिरसंचित दुरित तिमिरहरणा, नित चित ए पद समरण धरणा ॥ चि० ॥ १ ॥ ए पदसमरण जिन चित धरिया, तरिया तरशे तरे भवदरिया, सदनंत भविक सहु भय हरिया चि० ॥ २ ॥ ए पद गुणसागर मनुहारा, वरणन तरणीयें बहुहारा, इंद्रादिक सुर न लह्यो पारा ॥ ॥ चि० ॥ ३ ॥ ए पद अतिशय महिमाधारा, अमृत पद कमला भरतारा, जिनचंद्रानंद घन पदकारा ॥ चि० ॥ ४ ॥ जिनहरष सुरिंदके शिव करणा, चंद्रामल गुणविंशतिचरणा, हुइज्यो प्रभु अरज ए अवधरणा ॥ चि० ॥ ५ ॥ इति श्रीसमस्तविंशतिपदस्तृतिः ॥

॥ कलश ॥

॥ ए वीसथानक, भुवनवंदन, अघ निकंदन जानियें ॥ विबुधेंद्रचंद्र, नरेंद्र वंदित, पद जिनेंद्र बखानियें ॥ ए वीस पद भव, जलधि तारन, तरन गुन पहिचानियें ॥ इम जानि भविजन, कुशलकारन, वीसपद उर आनियें ॥ १ ॥ इह वरस चंद्र, दिनेंद्र हरिमुख, विधि नयन छि तिमितिधरू ॥ तिह मासभाद्रव, धवलदल तिथि, पंचमी रवि वासरू ॥ बंगालजनपद, जिहां बिराजत, शिखर तीरथ गिरिवरू ॥ सहु नगरशोभित अजीम गंजपुर, द्वितीय बालूचरपुरू ॥ २ ॥ खरतरगणेशर, विजितसुरगुरु, विमल गुणगरिमाधरा ॥ गुण भवन भविजन, नलिन कानन, नित विकासन दिनकरा ॥ मुनिचंद्र श्रीजिन, लाभ सूरिंद, सुगुरु महियल युगवरा ॥ सकलेंद्र वंद्य, जिनेंद्र शासन, मंडना नित हितधरा ॥ ३ ॥ तसु पट्ट उज्जल, शिखरगणवर, उदयगिरि बासरकरा ॥ योगींद्र वृंद, नरें

द्र वंदित, चरणपंकज गणधरा ॥ आचार पंच, छतीस गुणधर, सकल आगम सागरा ॥ युगप्रवर श्री, जिनचंदसूरी, गुरु सकलसूरीसरा ॥ ४ ॥ तसु चरण कमल वि, युगलसेवन, अहनिशि मधुकरता धरी ॥ पुन सुगुरुपद, अरविंद युगनी, कृपा नित चित आदरी ॥ गणधार श्रीजिन, हरषसूरी, हरषधर घन अघहरी ॥ या बीस पदकी, विविध पूजन, विधि तणी रचना करी ॥ ५ ॥ इति श्री वीशस्थानक पूजा ॥

॥ अथ विंशतिस्थान आरति ॥

॥ जिया चतुरसुजाण नवपदके गुणगाय रे ॥ ए देशीमां ॥

॥ पिया विंशतिथान मंगलआरति गाय रे ॥ सुमतिप्रिया कहे चेतनपतिकों, निसुण वचन मन भायरे ॥ पि० ॥ १ ॥ यदि निजगुण परिणति तुम चहियें, तिणको एह उपाय रे ॥ पि० ॥ अरिहंत सिद्ध आचारिज पाठक, साधु सकल समुदाय रे ॥ पि० ॥ २ ॥ इत्यादिक विंशति पद समरण, भवभय हरण विधाय रे ॥ एह आरती अरतिवारती, अनुपमसुर सुखदाय रे ॥ पि० ॥ ३ ॥ जैसें भगते करय आरती, सकलसुरासुरराय रे ॥ तैसें भवि तुमे करो आरती, ए पदगुण चित लाय रे ॥ पि० ॥ ४ ॥ पंचप्रदीपसें करय आरती, जे नितचित उलसाय रे ॥ ते लही पंच चिदानंद घनता, अचल अमर पदपाय रे ॥ पि० ॥ ५ ॥ पंच प्रदीप अखंडित ज्योतें, दुर्मति तिमिर विलाय रे ॥ एह आरती तुरत तारती, भवजल निपतित धाय रे ॥ पि० ॥ ६ ॥ पदजिन हरष तणी ए करणी, मनहरणी कहिवाय रे ॥ चंद्रविमलशिवसिधिनिधि धरणी, वरणी किण विध जाय रे ॥ पि० ॥ ७ ॥ इति आरती ॥

॥ अथ ॥

॥ शिवचंद्रोपाध्याय कृत चतुर्विंशति ऋषिमंडल पूजा प्रारंभ ॥

॥ तत्र ॥

॥ प्रथम ऋषभजिन पूजा ॥

॥ दूहा ॥ प्रणमी श्रीपारस विमल, चरण कमल सुखदाय ॥ ऋषिमंडल पूजन रचुं, वरविधियुत चित लाय ॥ १ ॥ नंदीश्वर मंदरगिरें, शाश्वत जिन महाराज ॥ अरचे अडविध पूजशुं, जैसें सहु सुरराज ॥ २ ॥ तिम चित जिनपति गुण धरी, श्रावक समकित धार ॥ बिरचे जिन चौवीशकी, अडविध पूज उदार ॥ ३ ॥

॥ गाथा ॥ सलिल १ सुचंदन २ कुसुमभर ३, दीवगकरणंच ४ धूवदाणं च ५ ॥ वर अख्खत ६ नेवज्जं ७, सुभ फल ८ पूजा य अठविहा ॥ १ ॥

॥ दूहा ॥ ए अडविध पूजा करण, सुणियें सूत्र मझार ॥ जे भवि विरचे प्रभुतणी, ते पामे भवपार ॥ १ ॥ प्रथम जिनेश्वर तिम प्रथम, योगीश्वर नरराय ॥ प्रथम भये युग आदिमें, सकल जीव सुखदाय ॥ २ ॥

॥ राग देशाख ॥ पूर्वमुख सावनं ॥ ए देशी ॥ विमलगिरि उदयगिरिराज शिखरो परे, तरुणतर तेज दीपत दिणंदा ॥ युगल भ्रम वारकर धर्म उद्योत किय, विमल इक्ष्वाकु कुल जलधिचंदा ॥ १ ॥ मात मरुदेवि वरउदरदरि हरिवरा, सकल नृप मुकुटमणि नाभिनंदा ॥ अखिल जगनायका, मुगति सुखदायका, विमल वरनाणगुण मणिसमंदा ॥२॥ वृषभ लांछन धरा सकल भव भयहरा, अम

स्वरगीतगुण कुशल कंदा ॥ गहिर संसार सागर तरणसमधरा, नमत शिवचंद प्रभुचरण वंदा ॥ ३ ॥

काव्यं ॥ सलिल चंदन पुष्प फल व्रजैः, सुविमलाक्षत दीप सुधूपकैः ॥ विविधनव्यमधुप्रवरानकै, र्जिनममीभिरहं वसुभिर्यजे ॥१॥ 'ॐ ह्रीं श्रीपरमपरमात्मने अनंतानंतज्ञानशक्तये जन्म जरामृत्युनिवारणाय श्रीमदृषभजिनेंद्राय ॥ जलं चंदनं पुष्पं धूपं दीपं अक्षतं नैवेद्यं फलं यजामहे स्वाहा ॥ इतिश्री ऋषभजिनपूजा ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय अजित जिन पूजा ॥

॥ दूहा ॥ जय जिणंद दिणइंद सम, लखि भविकज विकसात ॥ परमानंद सुकंद जल, विजया मात सुजात ॥ १ ॥

॥ राग आशावरी ॥ आय रहो दिलबागमें, प्यारे जिनजी ॥ ए देशी ॥ एक अरज अवधारियें, अजितजिन ॥ ए० ॥ अजित जिनेसर जग अलवेसर, कूरम निजर निहारियें ॥ अ० ए० ॥ १ ॥ तारण तरण विरुद सुणि तेरो, आयो सरण तिहारियें ॥ अ० ॥ २ ॥ चरमसिंधु भवभय जल निपतित, चरणपतित मोहे तारियें ॥ अ० ॥ ३ ॥ परमानंदघन शिव वनितानन, कजमधुपान सुकारियें ॥ अ० ॥ ४ ॥ चिर संचित घन दुरित तिमिरहर, तुम जिन भये तिमिरारियें ॥ अ० ॥ ५ ॥ कहे शिवचंद अजित प्रभु मेरे, एह अरज न विसारियें ॥ अ० ॥ ६ ॥ ॥ काव्यं ॥ सलिल० ॥ ॐ ह्रीं परमप० अनं० जन्म० श्रीमदजि० ज० चं० स्वाहा ॥ इति २ ॥

॥ अथ तृतीय श्रीसंभव जिन पूजा ॥

॥ दूहा ॥ जय जितारि संभव सदा, श्रीसंभव जिनराज ॥ सकल लोक जिण जीतलिय, जीत्यो मोह समाज ॥ १ ॥ जैनाकर गु

णपूर, सेवो तेजसनूर, भक्तिभाव पूरण उर धार, मुक्तिपुरी पथ सार ॥ २ ॥

॥ राग वेलाविल ॥ गंधवटी घनसार ए ॥ ए देशी ॥ अपरिमित वर शिखरसागर, धार संभवकार ए ॥ जिनराय संभव पाय वंदो, लहो भवजल पार ए ॥ वलि जलधिजात सुजात कुंजर, कुंभ भंजन जानियें ॥ तसु जनकनाम समान नामा, भये जिन उर आनियें ॥ १ ॥ जसु चरण पंकज मधुर मधुरस, पान लय लागी रह्या ॥ मिल कर सुरासुर खचर व्यंतर, भमर नितचित ऊमह्या ॥ जसु चरण कमलें प्लवगलांछन, कनक सुवरणकाय ए ॥ सहु भुवननायक सुमतिदायक, जननिसेना जाय ए ॥ २ ॥ जसु मधुर वाणी जगवखाणी, तीस सरगुण धारिणी ॥ संसार सागर भयभरा कर, पतित पार उतारिणी ॥ स्याद्वाद पक्ष कुठार धारा, कुमतिमद तरु दारिणी ॥ प्रभु वाणि नित शिवचंद गणिके, हुओ मंगल कारिणी ॥ ३ ॥ काव्यं ॥ सलि० ॐ ह्रीँ श्रीपरम० अनं० ज्ञान० श्रीमत्संभव जिनें० जलं० य० स्वाहा ॥ इति ३ ॥

॥ अथ चतुर्थ श्रीअभिनंदभ जिन पूजा ॥

॥दूहा॥ श्रीचतुर्थ जिनवर सदा, पूजो भवि चित लाय ॥ भगति युगति संकट हरण, करण तीण शुद्ध थाय ॥ १ ॥

॥ कुंदकिरण शशि उजलो रे देवा ॥ ए देशी ॥ संवरनंदन जिनवरू रे वाला, अभिनंद न हित कामी रे ॥ जगदभिनंदन जयकरू रे ॥ वा० दुरित निकंदन स्वामी रे ॥ १ ॥ लोकालोक प्रकाशता रे ॥ वा० ॥ करता अविचल धामी रे ॥ अव्याबाध अरूपिता रे ॥ वा० ॥ विमल चिदानंद रामी रे ॥ २ ॥ वंछित पूरण सुरमणी रे ॥ वा० ॥ ए प्रभु अंतरजामी रे ॥ ऐसे प्रभु महाराजकुं रे ॥ वा० ॥ शिवचंद नमे शिर नामी रे ॥ ३ ॥ काव्यं सलिल

॥ ॐ ह्रीं पर० अनं० अभिनंदन जिनेंद्राय जलं० य० स्वाहा ॥

॥ अथ पंचम सुमति जिन पूजा ॥

॥ दूहा ॥ पंचम जिननायक नमुं, पंचम गति दातार ॥ पंच नाणवर विमलकज, वनविकसन दिनकार ॥ १ ॥

॥ राग कहेरवो ॥ बंसी तेरी बेरण बाजे ॥ ए देशी ॥ शुद्ध भाव चित थिर धरकें रे, पूजो सुमति जिणंद ॥ जिनभक्ति करण रसीला, लहो परम आणंद ॥ शु० ॥ १ ॥ जिनराज सुमति समंदा, करे कुमति निकंद ॥ प्रभुनां चरण अरविंदा, वंदे असुर सुरिंद ॥ शु० ॥ २ ॥ कनकाभ तनुद्युति सोहे, प्रभु सुमंगला नंद ॥ करुणोपशम रस भरिया, वंदे नित शिवचंद ॥ शु० ॥ ३ ॥ काव्यं ॥ ॥ सलिल० ॥ ॐ ह्रीं परम० अनं० ज्ञा० ज० श्रीमत् सुमति जिनेंद्राय जलं० स्वा० ॥ इति ॥ ५ ॥

॥ अथ षष्ठ पद्मप्रभ पूजा ॥

॥ दूहा ॥ हिव षष्ठम जिनवर तणी, पूजन कहुं उदार ॥ भवि चित भक्ति धरी करी, सुख संपति कर तार ॥ १ ॥

॥ राग सारंग ॥ बावनचंदन घसि कुमकुमा ॥ ए देशी ॥ हांहो रे वाला पदमप्रभु मुखचंद्रमा, नित सकललोक सुखदाय ए ॥ हांहो रे वाला ॥ हरिसुर असुर चकोरडा, नित निरख रह्या ललचाय ए ॥ १ ॥ हांहो रे वाला ॥ जिनमुख वचनामृत तणो, जे श्रवण करे भवि पान ए ॥ हांहो रे वाला ॥ ते अजरामरता लहे, हरिगण करे जसु गुणगान ए ॥ २ ॥ हांहो० ॥ धर नृप कुलनभदिनमणी, प्रभु मात सुसीमा नंद ए ॥ हां० ॥ प्रभु दरिसणतें प्रतिदिनें, हुइ ज्यो शिवचंद्र आनंद ए ॥ ३ ॥ काव्यं ॥ सलिल० ॥ ॐ ह्रीं परम० अनं० ज्ञा० ज० श्रीमत्पद्मप्रभ जिनें० जलं० यजामहे स्वाहा ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ अथ सप्तम सुपार्श्वजिन पूजा ॥

॥ दूहा ॥ श्रीसुपार्श्व सुरतरु समो, कामित पूरण काज ॥ भो भवियण पूजो सदा, वसुविध पूज समाज ॥ १ ॥

॥ राग कल्याण ॥ मेरा दिल लगा जिणेसरसें ॥ ए देशी ॥ मेरी लगी लगन जिनवरसें ॥ मे० ॥ जैसें चंद चकोर भमरकी, केतकि कमल मधुरसें ॥ मे० ॥१॥ एह सुपारस भए प्रभु पारस, गुणगणस मरण फरसें ॥ मे० ॥ चेतन लोहपणो परिहरकें, हुय लै कांचन सरिसें ॥ मे० ॥ २ ॥ ए प्रभु करुणाकरकुं धरि ले, उर जिम कमल भमरसें ॥ मे० जे भवि जिनपद लगन धरे तसु, नहि भय मरन असुरसें ॥ मे० ॥ ३ ॥ भात पृथवी तनुजात तनुद्युति, समशुभ कांचन सरिसें ॥ मे० ॥ कहे शिवचंद चित्त नित मेरो, रहो प्रभु पदलय भरसें ॥ मे० ॥४॥ काव्यं ॥ सलिल० ॐ ह्रीं परम० अनं० ज० सुपार्श्वजिनें० जलं यजामहे स्वाहा ॥ इति ॥ ७ ॥

॥ अथाष्टम चंद्रप्रभ पूजा ॥

॥ दूहा ॥ अष्टम जिनपद पूजियें, विविध कष्ट हरतार ॥ अष्ट सिद्धि नवनिधि लहे, जिनपूजा करतार ॥ १ ॥

॥ राग गुंड मिश्रित मल्लार ॥ मेघ वरसे भरी पुष्प बादल करी ॥ ए देशी ॥ परमपद पूर्वगिरिराज परि उदय लहि, विजित परचंद्र दिनकर अनंता ॥ चंद्रप्रभुचांद्रिका विमल केवल कला, कलित शोभित सदा जिन महंता ॥ प० ॥ १ ॥ कुमतिमत तिमिरभर हरिय पुनभूरिभवि, कुमुद सुखकरिय गुणरयण दरिया ॥ गहिरभव सिंधु तारण तरण तरणिगुण, धारि भवितारि जिनराज तरिया ॥ प० ॥ २ ॥ राखियें आज मोहे लाज जिनराज प्रभु, करण सुख चरण जिन शरण परिया ॥ परम शिवचंद्र पद पद्म मकरंद रस, पान नित करण ततपर भरीया ॥ प० ॥ ३ ॥ काव्यं ॥ सलि० ॥

ॐ ह्रीं परम० ॥ अनं० ॥ श्रीमच्चंद्रप्रभजीनें० ॥ जलं० ॥ नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति ॥ ८ ॥

॥ अथ नवम सुविधि जिन पूजा ॥

॥ दूहा ॥ सुविध सुविधि समरण थकी, कामित फल प्रकटाय ॥ अतिहिगहन संसारवन, बहुल अटन मिट जाय ॥ १ ॥

॥ राग ॥ चंपक केतकी मालती ॥ ए देशी ॥ सुविध चरण कज वंदिये ए ॥ अइयो ॥ वं० ॥ नंदियें अतिचिरकाल ॥ शिवतर वारि निकंदियें ए ॥ अ० ॥ विघनकंद ततकाल ॥ अइ० ॥ १ ॥ आज जनम सफलो भयो ए ॥ अ० ॥ दीठो प्रभु दीदार, तन मन दृग विकसित भयो ए ॥ अ० ॥ जिम कज लखि दिनकार ॥ २ ॥ अमृत जलधर वरसियो ए ॥ अ० ॥ भवि उर क्षेत्र मझार ॥ दर्शन सुरतरु ऊगियो ए ॥ अ० ॥ शिव फलनो दातार ॥ ३ ॥ काव्यं ॥ सलि०॥ ॐ ह्रीं पर० अनं० ज० श्रीमत् सुविधिजिनेंद्राय ज० नैवे० यजामहे स्वाहा ॥ इति नवम सुविधिजिन पूजा ॥९॥

॥ अथ दशम श्रीशीतल जिन पूजा ॥

॥ दूहा ॥ मुझ तन मन शीतल करो, श्रीशीतल जिनराय ॥ तुम समरण जलधारसें, अंतर तपत बुलाय ॥ १ ॥

॥ दादा कुशलसूरिंद ॥ ए देशी ॥ मेरे दीनदयाल, तुम भये सकललोक प्रतिपाल ॥ मे० ॥ सुण शीतल जिनवर माहाराज, चरण सरण धरयो प्रभुनो आज ॥ न नमूं सहु सविकारी देव, करशुं चरण कमलनी सेव ॥ मे० ॥ १ ॥ जैसे सुरमणि करतल पाय, कुण ले काच शकल उलसाय ॥ तुम सम सुरवर अवर न कोय, हेर हेर जग निरख्यो जोय ॥ मे० ॥२॥ प्रभु दरिसण जलधर घनघोर, लखिय निरत करे भविजन मोर ॥ पद शिवचंद विमल भरतार, शिव वनिता वरे अति सुखकार ॥ मे० ॥ ३ ॥ काव्यं ॥ सलिल० ॥

ॐ ह्रीं परम० अनं० श्रीमच्छीतलजिनेंद्राय० ज० नैवे० यजाम हे० स्वाहा० ॥ इति ॥ १० ॥

॥ अथ एकादश श्री श्रेयांस जिन पूजा ॥

॥ दूहा ॥ श्री श्रेयांस जिनेंद्र पद, नदद्युति सलिलाधार ॥ जे नेत्रें मज्जन करे, ते शुचि हुइ विधु तार ॥ १ ॥

॥ सोहम सुरपति वृषभ रूपकरी ॥ ए देशी ॥ श्री श्रेयांस जिनेसर जगगुरु, इंद्रिय सदन समंद हे ॥ जसु वसुविध पूजनसें अरचो, उर धरि परमानंद हे ॥ ए समकितधर श्रावक करणी, हरणी भवमन रंग हे ॥ विजयदेव जिनप्रतिमा पूजी, जीवाभिगम उवंग हे ॥ श्री० ॥ १ ॥ सूरियाभजिन पूजन करियो, रायपसेणी उवंग हे ॥ ज्ञाता अंगे द्रुपदि श्राविका, पूज्या जिन चित चंग हे ॥ जे निन्हव कुमति जिन पूजन, उत्थापे तेह अनंत हे ॥ काल लगें भमसी भव वनमें, मंमदती भयभ्रंत हे ॥ श्री० ॥२॥ विष्णु माततनु जात विष्णुनृप, विमल कुलांबर हंस हे ॥ सकल पुरंदर अमर असुरगण, शिव वरि प्रभु अवतंस हे ॥ इण सुरवरनी परि श्रावक जे, पूजे जिन उच्छरंग हे ॥ ते शिवचंद परमपद लहिशे, निश्चय करि भवभंग हे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ काव्यं ॥ सलिल० ॐ ह्रीं पर० अनं० ज० श्रेयांस जिनें० जलं० नैवे० य० स्वाहा ॥ इति ॥ ११ ॥

॥ अथ द्वादश वासुपूज्य जिन पूजा ॥

॥ दूहा ॥ हिव बारम जिनवर तणी, पूजन करियें सार ॥ भाव भक्ति युत भवि सदा, द्रव्यभक्ति चित धार ॥ १ ॥

॥ राग ॥ सब अरतिमथनमुदार धूपं ॥ ए देशी ॥ सकल जग जन करत वंदन, जयानंदन स्वामी रे ॥ देवा ॥ जया० ॥ दुरित ताप निकंदन चंदन, परम शिवपदगामी रे ॥ दे० ॥ स० ॥ १ ॥ नृपतिवर वसुपूज्यनृप कुल, विपिन नंदन जात रे ॥ दे० वि० ॥

सुहरिचंदन नंदनंदन, नंदमदकिय घात रे ॥ दे० ॥ नं० ॥ २ ॥ वसुपूज्यनंद जिनेंद्र पूजो, सकलजिन माहाराज रे ॥ दे० ॥ स० ॥ करत नुति शिवचंद प्रभु ए, निखिल सुरशिरताज रे ॥ दे० ॥ नि० ॥ ३ ॥ काव्यं ॥ सलि० ॐ ह्रीं पर० अनं० ज० वासुपूज्यजिनें० ज० नैवे० यजामहे स्वाहा ॥ इति ॥ १२ ॥

॥ अथ त्रयोदश विमल जिन पूजा ॥

॥ दूहा ॥ विमल विमलजिन कर मुझे, मलिन करम करि दूर ॥ तेरम प्रभु रमियें सदा, मुझ उरमझि गुणपूर ॥ १ ॥

॥ सिद्धचक्र पद वंदो रे भविका ॥ ए देशी ॥ विमलचरणकज वंदो रे सुरिजन ॥ वि० ॥ वंदीने आनंदो रे ॥ सु० ॥ ए आकणी ॥ जसु गणधर मुनिवरगण मधुकर, सेवत पद अरविंदो ॥ श्यामा उदर सुगति मुगताफल, कृतवरमा नृपनंदो ॥ रे ॥ सु० ॥ १ ॥ सहु जगमंडल विमल करणकुं, जिनशासन नभ चंदो ॥ उदय भयो भविकुमुद विकसवा, वरगुण रयणसमंदो रे ॥ सु० ॥ २ ॥ यदिभववंदि हरण भवि चाहो, प्रभु वंदी चिरनंदो ॥ विमल चिदानंद घनमयरूपी, नित वंदत शिवचंदो रे ॥ सु० ॥ ३ ॥ काव्यं ॥ सलिल० ॐ ह्रीं परम० अ० ज० श्रीविमल जिनें० जल० यजा० स्वा० ॥ इति ॥ १३ ॥

॥ अथ चतुर्दश श्रीअनंत जिन पूजा ॥

॥ दूहा ॥ हिव चउदम जिन पूजतां, हरियें विषयविकार ॥ भो भवियण सुणियें सदा, ए प्रभु शरणाधार ॥ १ ॥

॥ पंचवरणी अंगी रची ॥ ए देशी ॥ पूजकरणी प्रभुनी दुरित निवारी ॥ अनंत तरणि हिमकिरण तरुणतर, किरण निकर जीता है भारी ॥ अनंतनाणवर दरिसण तेजें, प्रभु सुयशोदर अवतारी ॥ पू० ॥ १ ॥ लोकालोक अनंत द्रव्यगुण, पर्यय प्रगट

करणहारी ॥ तातें अन्वय युत जिन धरियो, अनंतनाम अति मनुहारी ॥ पू० ॥ २ ॥ सिंहसेन नृपनंदन वंदन, करत इंद्रचंद्र सुखकारी ॥ सादि अनंत भंगथिति धरियो, पद शिवचंद्र विजयधारी ॥ पू० ॥ ३ ॥ काव्यं ॥ सलिल० ॐ ह्रीँ परम० अनंत० ज० श्रीमदनंत जिनेंद्राय ज० नैवे० स्वाहा ॥ इति अनंतजिन पूजा ॥ १४ ॥

॥ अथ पंचदश श्रीधर्म जिन पूजा ॥

॥ दूहा ॥ भानुभूप कुल भानुकर, पनरम जिन सुखकार ॥ शोभित सहु जग विपिन जन, हरख फलद जलधार ॥ १ ॥

॥ धीरसमीरे यमुनातीरे वसति वने वनमाली ॥ ए देशी ॥ धरम जिनेसर धरम धुरंधर, जगबंधव जगवाला ॥ मैं वारी जाउं ॥ ध० ॥ सुव्रतानंदन पापनिकंदन, प्रभुभए दीनदयाला ॥ मैं वारी जाउं ॥ ध० ॥ १ ॥ प्रभु धीरज गुण निरख अमर गिरि, लजि लीनो अचला धारा ॥ मैं० ॥ ध० ॥२॥ जिनगंभीरता चरमसिंधु लखि, किय लोकांत विहारा ॥ मैं० ॥ ध० ॥ ३ ॥ ए जिनचंद्र चरण अरचनतें, लहि जिनपति अवतारा ॥ मैं० ॥ ध० ॥ ४ ॥ करमवैरि दलि करि भवि लहिस्यो, पद शिवचंद्र उदारा ॥ मैं० ॥ ध० ॥ ५ ॥

॥ काव्यं ॥ सलिल० ॐ ह्रीँ परम० अनं० ज० श्रीधर्मजिनेंद्राय यजा० स्वाहा ॥ इति ॥ १५ ॥

॥ अथ षोडश शांतिजिन पूजा ॥

॥ दूहा ॥ अचिरा उयरें अवतरी, शांति करी सुखकार ॥ मारि विकार मिटाय करि, नाम धर्यो शांति सार ॥ १ ॥

॥ राग विभास ॥ भाव धरि धन्य दिन, आज सफलो गिणुं ॥ ए देशी ॥ शांति जिनचंद्र, निज चरणकज शरणगत, तरणि गुण धारि, भववारि तारी ॥ कुमतिजन विपिनजानि, कुमतिघन व्रतनि तत, निशित शितधार, तरवारवारी ॥ शांति० ॥ १ ॥ एक भवि

पद उभय, चक्रधर तीर्थ कर, धारिया वारियां, विघन सारा ॥ सक ल मद मारिया, विमल गुण धारिया, सारिया भक्त वांछित अपारा ॥ शांति ॥ २ ॥ हरिण लांछनधरा, करण सुवरण करा, सुरवरा हि तधरा, गतविकारा ॥ मोहभट धरणिधर, गणहरण वज्रधर, कुमुद शिवचंद्रपद रजनिकारा ॥ शां० ॥ ३ ॥ ॥ काव्यं ॥ सलिल० ॐ ह्रीं परम० अनं० ज० श्रीशांतिजिनेंद्राय जलं० यजामहे स्वाहा ॥ इति शांतिजिन पूजा ॥ १६ ॥

॥ अथ सप्तदश कुंथुजिन पूजा ॥

॥ दूहा ॥ सतरम जिनवर दीवसम, मझि भवसागर जाण ॥ भ क्तियुक्त नित पूजियें, लहियें अमल विनाण ॥ १ ॥

॥ राग ॥ अरिहंतपद नित ध्याइयें ॥ ए देशी ॥ कुंथु जिणंद गु ण गाइयें, मनवंछित फल पाइयें रे ॥ प्रभु समरण लय ल्याइयें, भवि भव तजि शिव जाइयें रे ॥ कुं० ॥ १ ॥ भवजलगत निज आतमा, करुणा उर धरि ताइयें रे ॥ चरणकरण उपयोगिता, ग्रहण करणकुं ध्याइयें रे ॥ कुं० ॥ २ ॥ ए प्रभु दरिसण जीवनें, अनुभव र सनो दाइयें रे ॥ वर शिवचंद विमल वधे, दिन दिन शोभ सवाइ यें रे ॥ कुं० ॥३॥ काव्यं ॥ सलि० ॐ ह्रीं परम० अ० श्रीकुंथुजि नेंद्राय जलं० य० स्वाहा ॥ इति ॥ १७ ॥

॥ अथ अष्टादश श्रीअरनाथ पूजा ॥

॥ दूहा ॥ जिन अढारमो ध्याइयें, भवियण चित्त मझार ॥ करण तीन इक करि मुदा, प्रतिदिन जयजयकार ॥ १ ॥

॥ राग वसंत ॥ संग लागो ही आवे रे तोसुं ॥ ए देशी ॥ निज विमल भक्तिसें अरजिनसुं, नित रमियें रे ॥ जिनगुण निजगुण तु ल्य करणकुं, चंचल चित हय दमियें रे ॥ नि० ॥ १ ॥ सुमतियुवति संगति उर धरिके, कुमतिनार संग गमियें रे ॥ अनुभव अमृतपान

करणतें, विषयविकृति विष वमियें रे ॥ नि० ॥ २ ॥ जिनवर संग रमण दव अनलें, पंकसघन वन धमियें रे ॥ कहे शिवचंद जिनेंद्र रमणसें, भववनमें नहि भमियें रे ॥ नि० ॥ ३ ॥ ॥ काव्यं ॥ सलिल० ॐ ह्रीं परम० अ० श्रीमत्अरजिनें० ज० यजामहे स्वाहा ॥ इति अरनाथ जिन पूजा ॥ १८ ॥

॥ अथ एकोनविंश मल्लिजिन पूजा ॥

॥ दूहा ॥ उगणीसम जिन चरणकज, भमर होय लय लाय ॥ सेवे तसु भव भ्रमरता, अगणित तुरत विलाय ॥ १ ॥

॥ मल्लिजिणंद उपगारी रे वाला, हांहो रे वाला वारी जाउं वार हजारी रे ॥ वाला म० ॥ कुंभ नरेसर गगनांगणमें, सहसकिरण अवतारी रे ॥ वाला म० ॥ १ ॥ पूरवभव खटमित्र नरिंदप्रति, बोध सिंधु भवतारी रे ॥ वा० ॥ वेदत्रयी विरही तनु धारयो, सकल संघ सुखकारो रे ॥ वा० म० ॥ २ ॥ सकल कुशल हरिचंदन तरुवर, नंदनवन अनुकारी रे ॥ वा० ॥ संघ चतुर्विध भूरि खचरगण, प्रणत चंद्र मनुहारी रे ॥ वा० म० ॥ ३ ॥ ॥ काव्यं ॥ सलिल० ॐ ह्रीं परम० अनं० श्रीमल्लिजिनेंद्रायजलं० य० स्वाहा ॥ इति ॥ १८ ॥

॥ अथ विंशतितम श्रीमुनिसुव्रतजिन पूजा ॥

॥ दूहा ॥ पद्मोदरवरपद्मनद, गतपरपद्मसमान ॥ विंशतितम प्रभु पूजियें, केवल लच्छि निधान ॥ १ ॥

॥ सुण चतुर सुजाण, परना० ॥ ए देशी ॥ सुण सुव्रत जिनेंद्र, सुनिजर धरि मुझ परवरदरसण दीजियें ॥ प्रभु दरस प्रीति निरुपाधिकता, करियें लहियें शिव साधकता, तब तुरत मिटे शिव बाधकता ॥ सुण० ॥ १ ॥ अमृतमें साध्यपणो विलसे, प्रभु दरिसण साधनता उल्लसे, तद मुझने साधकता मिलसे ॥ सु० ॥ २ ॥ भिन्नाधिकरणता यदि विघटे, एकाधिकरणता यदि सुघटे, तद मुझ

शिवसाधकता प्रगटे ॥ सु० ॥ ३ ॥ एकाधिकरणता शुभ्र करियें, भिन्नाधिकरणता परिहरियें, शिवचंद्रविमलपद तद वरियें ॥ सु० ॥ ४ ॥ काव्यं ॥ सलिल० ॥ ॐ ह्रीं परम० अनं० मुनिसुव्रत जिनें० जलं० चंद० य० ॥ इति ॥ २० ॥

॥ अथ एकविंशतम श्रीनमिजिन पूजा ॥

॥ दूहा ॥ अंतर वैरी नमावियां, तव लहियुं नमि नाम ॥ भवियण ए प्रभु पूजशें, सरियें वंछित काम ॥ १ ॥

॥ हम आये हे सरण तिहारे ॥ ए देशी ॥ श्रीनमि जिनवर चरणकमलमें, नयन भमर युग धरियें रे ॥ वारि ॥ न० ॥ तिण किय गुण मकरंद पानसें, चेतन मद मत करियें रे ॥ वारि ॥ चे० ॥ श्री० ॥ १ ॥ एह चरणकज अहोनिशी विकसे, परकज निशि कुमलावे रे ॥ वारि ॥ प० ॥ ए न बलें बलितुहिन अनलसें, अपरकमल बल जावे रे ॥ वारि ॥ अ० ॥ श्री० ॥ २ ॥ ए पदकज गुन मधुरस पीवत, जीव अमरता पावे रे ॥ वा० ॥ जी० ॥ अवर कमल रस लोभी मधुकर, कजगत गजगिल जावे रे ॥ वा० ॥ क० श्री० ॥ ३ ॥ परकज निजगुण लच्छिपात्र है, पदकज संपद देवे रे ॥ वा० ॥ प० ॥ तातेंपद शिवचंद जिणंदके, अहनिश सुरनर सेवे रे ॥ वा० अ० श्री० ॥ ४ ॥ काव्यं ॥ सलिल० ॥ ॐ ह्रीं परम० अनं० नमिजिनें० जलं० नैवे० यजामहे स्वाहा ॥ इति ॥ २१ ॥

॥ अथ द्वाविंशतम श्रीनेमिजिन पूजा ॥

॥ दूहा ॥ बावीसमजिन जगगुरु, ब्रह्मचारि विख्यात ॥ इणवंदन चंदनरसें, पाप ताप मिट जात ॥ १ ॥

॥ राग रामग्री ॥ गात्र लूहे जिनमन रंगशुं रे देवा ॥ ए देशी ॥ नेमि जिणंद उर धारियें रे वाला, विषय कषाय निवारियें रे वाला ॥ निवारियें रे हां रे वाला निवारियें रे ॥ ए जिननें न विसा

रियें ॥ १ ॥ जलधर जिम प्रभु गरजता रे वाला, देशना अमृत व रसता रे वाला ॥ दे० ॥ वरसता हां रे ॥ वा० ॥ भविक मोर सु ण उलसता रे ॥ २ ॥ समवसरण गिरिपर रह्या रे वाला, भामंडल चपला वह्या रे वाला ॥ चपला वह्या हां रे ॥ च० ॥ सुरनर चात क उमह्या रे ॥ ३ ॥ बोधबीज उपजावीयो रे वाला, भवि उरक्षेत्र वधावियो रे वाला ॥ वधावियो हां रे वाला ॥ वधा० ॥ भविक मु गति फल पावियो रे ॥ ४ ॥ काव्यं ॥ सलिल० ॐ ह्रीँ परम० श्री मन्नमिजिनेंद्राय जलं० नैवे० यजाम० स्वाहा ॥ इति ॥ २२ ॥

॥ अथ त्रयोविंशतम श्रीपार्श्वजिन पूजा ॥

॥ दूहा ॥ अश्वसेन नंदन सदा, वामोदरखनिहीर ॥ लोक शि खर शोभे प्रभू, विजित करम वडवीर ॥ १ ॥

॥ वाजे तेरा विछुवा रे ॥ वा० ॥ ए देशी ॥ पास जिणंदा प्रभु मेरे मन वसिया ॥ मे० ॥ शिव कमलानन कमलविमलकल, त रमकरंद पान अति रसिया ॥ पा० ॥ १ ॥ वामानंदन मोहनी मू रत, सकल लोक जनमन किय बसिया ॥ पा० ॥ २ ॥ परम ज्यो ति मुखचंद विलोकित, सुर नर निकर चकोर हरसिया ॥ पा०॥ ३ ॥ अंजनगिरि तनु दुति जिन जलधर, देशन अमृत धार वरसिया ॥ पा० ॥ ४ ॥ पिय करि भवि चिरकाल तरसिया, मुगति युवति तनु तुरत फरसिया ॥ पा० ॥ ५ ॥ कुमुद सुपद शिवचंद जिणंद नी, वारी जाउं मन मेरो अतिहि उलसिया ॥ पा० ॥ ६ ॥ काव्यं ॥ सलिल० ॐ ह्रीँ परम० अ० ज० श्रीमत्पार्श्वनाथाय ज० यजा महे स्वाहा ॥ इति ॥ २३ ॥

॥ अथ चतुर्विंशतितम वीरजिन पूजा ॥

॥ दूहा ॥ वरइख्खाकुकुल केतु सम, त्रिशलोदर अवतार ॥ ए प्र भुनी नित कीजियें, विविध भक्ति सुखकार ॥ १ ॥

॥ राग ॥ तेज तरणिमुख राजे प्रभुजीको ॥ ए देशी ॥ चरम वीर जिनराया, हां रे जिनराया मेरे प्रभु ॥ चरम वीर जिनराया ॥ सिद्धारथ कुलमंदिरधज सम, त्रिशलाजननी जाया ॥ निरुपम सुंदर प्रभु दरिसणतें, सकललोक सुख पाया ॥ मे० ॥ १ ॥ वामचरणअंगुष्ट फरसतें, सुरगिरिवर कंपाया ॥ इंद्रभूतिगणधर मुख मुनिजन, सुरपति वंदित पाया ॥ मे० ॥ २ ॥ वरतमान शासन सुखदाया, चिदानंदघनकाया ॥ चंद्रकिरण गुणविमल रुचिर धर, शिवचंद गणि गुण गाया ॥ मे० ॥ ३ ॥ वरसनंद मुनि नाग धरणिमित, द्वितीयाश्विन मन भाया ॥ धवलपक्ष पंचमि तिथि शनियुत, पुर जयनगर सुहाया ॥ मे० ॥ ४ ॥ श्रीजिनहर्षसूरि सूरीश्वर, वर खरतरगच्छराया ॥ क्षेमकीर्तिशाखा भूषणभणि, रूपचंद उवझाया ॥ मे० ॥ ५ ॥ महापूर्व जसु भुरि नरेश्वर, वंदे पद उलसाया ॥ तासु शिष्य वाचक पुण्यशीलगणि, तसु शिष्य नाम धराया ॥ मे० ॥ ६ ॥ समयसुंदर अनुग्रहि ऋषिमंडल, जिनकी शोभ सवाया ॥ पूज रची पाठक शिवचंदे, आनंद संघ वधाया ॥ मे० ॥ ७ ॥ काव्यं ॥ सलिल० ॐ ह्रीँ परम० अ० ज० श्रीवीर जिनेंद्राय ज० यजामहे स्वाहा ॥ इति ॥ २४ ॥

॥ अथ ऋषिमंडलस्तुतिकलश ॥

॥ स्रग्धरावृत्तद्वयम् ॥ दुर्वारस्फारविघ्नोत्कटकरटिघटोत्पाटनस्पष्टजाग्र, द्वीर्यप्राग्भारचंचत्कुशलहरिदरीजित्वरी दुर्नतानाम् ॥ संसारापारसिंधूत्तरणतरतरी भक्तिभाजामजस्रं, भव्यानां ब्रह्मपद्मप्रवणमधुकरी शंकरीशंकरी सा ॥ १ ॥ लोकालोकप्रलोकास्खलितविमल सद्दर्शनज्ञानभानुः ॥ श्रीमज्जैनेश्वरीयं त्रिभुवनविभुतात्रिश्चतुर्विंशतिश्च ॥ श्रीसिद्धानंतनाथालयत्रिदशदलसत्सर्वलोकाग्रभाग, प्रासादाग्रप्रदेशे जगति विजयतां वैजयंती जयंती ॥ २ ॥ इति चतुर्विंशतिजिन ऋषिमंडल पूजा संपूर्णा ॥

॥ अथ ॥

॥ शिवचंद्रोपाध्याय कृत इक्कीस प्रकारी पूजा ॥

॥ तत्र ॥

॥ प्रथम जल पूजा ॥

॥ दूहा ॥ मंगल हरिचंदन रुचिर, नंदन विपन उदार ॥ वामा नंदन पद पदम, वंदन करि जयकार ॥ १ ॥ प्रवचनमें प्रभुनी कही, एकवीस परकार ॥ पूजा हित सुख खेम शिव, मदकरणी मनुहार ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ पांचमी तप तुमे करो रे प्राणी, निरमल पा० ॥ और ॥ नंदीसर बावन जिनालय ॥ ए चाल ॥ ए इकवीस विध पूजन करिये, जिननो भव भय हरिये रे ॥ स्नपन १ विलेपन २ भूषण ३ निरुपम, पुष्प ४ वास ५ उर धरिये रे ॥ ए इकवीस० ॥ १ ॥ सुरभिधूप ६ फल ७ दीपक ८ तंदुल ९, वरनेवद्य १० मधुरिये रे ॥ पत्र ११ पूंगफल १२ निरमल जलभृत, कलश १३ बिंवपुर धरिये रे ॥ ए० ॥ २ ॥ वसनयुगल १४ सितछत्र १५ चमर १६ धुनि, मधुर तूरनी १७ करिये रे ॥ गीत १८ नटन १९ जिनवर गुणनी स्तुति २०, कोश वृद्धि २१ शुभ धरिये रे ॥ए०॥३॥

(स्नात्रिया कलश लेकर खडा रहे)

॥ दूहा ॥ प्रथम पूज ए जाणिये, न्हवण करे जिन अंग ॥ इण अरचनतें भव्यनो, होय कुमति मल भंग ॥ १ ॥

॥ [illegible] ॥ राग देशाख ॥ पूर्व मुख सावनं, करि दशन पावनं ॥ ए [illegible] ॥ अन्यदा कनकगिरिराज शिखरो परे, जिननिलय तत्र [illegible] ॥ विविध वरभक्तिभर करणकूं सुरगणा, प्रभु च [illegible] ॥ दूहा ति कर [illegible] गसिया ॥ अ० ॥ १ ॥ आवि चउसठि जिन भुनी नित कारणा, मिलकरी सुर असुर कोडिकोडी ॥ तर्थपति ध्या

वतां विमलगुण गावतां, प्रभु दरश पावता पाणिजोडी ॥ अ० ॥ २ ॥ तीर्थ वरदाम परभास मागध पदम, क्षीरसागर प्रमुख सलिल भरिया ॥ सुरवरा कनक मणिरयण रजतादिमय, कलस कर कमल उपरि धरिया ॥ अ० ॥ ३ ॥ कलस मुख पतित घन चंद्र कर विमलतर, सलिल उरु धारसें सहु सुरेंद्रा ॥ सुरगिरे सकल जिनराजको न्हवण करि, सफल किय निज जनम विगततंद्रा ॥ अ० ॥ ४ ॥ इण परे सुभमति शुद्ध श्रावक सदा, विमल जलसें करें न्हवण जिनकों ॥ तेह शिवचंद्रकर विमलपदकुं लहे, हरिय संसरण संसारवनको ॥ अ० ॥ ५ ॥

॥ काव्यं ॥ घनतरांतरतापविनाशनं । सकलमंगलशालघनाघनं ॥ जिनगणंप्रमुदाजलधारया । हितकृतेस्नपयामिरमारया ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं अनंतानंतज्ञानशक्तये सकलसुरवरेंद्रवृंदविहिभक्तिभ्यो जन्मजरामरणनिवारणकारणेभ्यः कुमतिमततरुगणकाननसमूलोन्मूलनवारणेभ्यो मंदरगिरिशिखरोपरि मंदिरोपगतशाश्वतजिनेंद्रेभ्यः श्रीऋपभाननचंद्राननवारिषेणवर्द्धमानाभिधानेभ्यो जलं यजामहे स्वाहा ॥ १ ॥ पुनइह लौकिक श्रीऋषभादि श्रीवर्द्धमानपर्यंतेभ्यश्चतुर्विंशतिजिनेंद्रेभ्यो जलं यजामहे स्वाहा ॥ इति जल पूजा ॥१॥

॥ अथ दूसरी विलेपन पूजा ॥

(स्नात्रिया केशर चंदन लेकर खडा रहे)

॥ दूहा ॥ दुतिय पूज चंदन सरस, कुंकम अरु घनसार ॥ घसके करिये जिनतणे, तिलक विलेपन सार ॥ १ ॥

॥ राग ॥ अंगण वाउल एलची रे वाल्हा ॥ ए चाल ॥ हरिचंदनवर मृगमदा रे वाल्हा, कुंकम वलि घनसार रे, म्हारो मन जिनचरणे हो लगगयो ॥ घसकरि कनक कचोलिया रे वाल्हा भरकर धरि गंधसार रे ॥ म्हा० ॥ १ ॥ मिलकर सकल सुरेसरा रे

वाल्हा, जिन अरचन चितधार रे ॥ म्हा० ॥ करइ तिलक नव अंगमें रे वाल्हा, जिनके विलेपन सार रे ॥ म्हा० ॥ २ ॥ जिन नव तनु तिलकार्चने रे वाल्हा, उपजत फल असमान रे ॥ म्हा० ॥ सुगति रमण भालस्थले रे वाल्हा, भवि होय तिलक समान रे ॥ म्हा० ॥ ३ ॥ जे भवियण इणपर करे रे वाल्हा, चंदन पूज रसाल रे ॥ म्हा० ॥ ते शिवचंद्र विमल लहे रे वाल्हा, निरुपम गुणमणि माल रे ॥ म्हा० ॥ ४ ॥

॥ काव्यं ॥ विमलभावभरान्वितयार्चया । सुरभिचंदनजातसपर्यया ॥ जिनवरेंद्रसुभुघनमर्चये । निशमहंसमपूजनवर्यया ॥ २ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं० सकल० जन्म० कुमत० मंदिर० श्रीऋषभा० चंदनं यजामहे स्वाहा ॥ पूनरिहलौ० ॥ इति चंदन पूजा ॥ २ ॥

॥ अथ तीसरी भूषण (आभरण) पूजा ॥

(स्नात्रिया गहणा अथवा रोक रुपया लेकर खडा रहे)

॥ दूहा ॥ तृतीय पूज जिनराजनी, करहु भविक सुखदाय ॥ मंडण मंडित जिन तनू, करिये भक्ति मिलाय ॥ १ ॥

॥ राग ॥ आद जिनेसर अरज सुणीजे ॥ ए चाल ॥ भूषण पूज तीसरी हरिगण, विरचे हित सुखकारी रे ॥ भूषण धर जिनअंगे निरुपम, अनुपम रस लहे भारी रे ॥ भू० ॥ १ ॥ विविध रयण मणिमय अति सुंदर, मौलि मुकट अति राजे रे ॥ अरधचंद्र सम प्रभु भालस्थल, विमल तिलक दुति छाजे रे ॥ भू० ॥ २ ॥ पुरण चंद्र तरणि मंडल दुतिं, कुंडल युगल सुसोहे रे ॥ श्रवणे अंगद बाहु युगलमें, त्रिभुवन जन मन मोहे रे ॥ भू० ॥ ३ ॥ कंचन थाल विसाल उरस्थल, हार तार मणिहारा रे ॥ इण विध पुजी शाश्वत जिनकुं, सफल गिणे अवतारा रे ॥ भृ० ॥ ४ ॥ इणपर सुध समकितधर नरवर, पुजे जिन जयकारू रे ॥ ते शिवचंद्र विमल जिनपति पद, संपद लहे अति वारू रे ॥ भू० ॥ ५ ॥

॥ काव्यं ॥ अतिमनोहरनिर्गतदूषणै । विविधदीप्ततराद्भुतभूषण भूषणैः ॥ जिनवरोघमहंप्रयजामिस ॥ तममनंतमनुत्तरसद्गुणम् ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं० श्रीऋषभानन० पुनरिहलौ० भूषणं यजामहे स्वाहा ॥ इति आभरण पूजा ॥ ३ ॥

॥ अथ चोथी पुष्प पूजा ॥

(स्नात्रिया छूटा पुष्प तथा माल लेकर खडा रहे)

॥ दूहा ॥ जे भवियण भगवंतनी, पूज चतुर्थी सार ॥ रचै सुरभि कुसमे करी, लहे सिंधु भव पार ॥ १ ॥

॥ राग ॥ भीमगुंड मिश्रित मल्हार ॥ मेघ वरसे भरी, पुष्प वादल करी ॥ ए चाल ॥ सुरभितर कुशम पूजनभणी ऊमह्या, शाश्वत जिनतणी सकल इंदा ॥ कुंद मचकुंद अरविंद मंदार जुही, विउलसिरि बकुल दमणक वितंद्रा ॥ सु० ॥ १ ॥ तिलक सुम मोगरा मालती मल्लिका, नाग पुन्नाग नवमालिकाली ॥ केतकी लाल गुल्लाल शरवरणयुत, जलज वलि थलज गुण शालिकाली ॥ सु० ॥ २ ॥ घनघना घनघटाकार वादल विरचि, पुष्पके कुशम जलधार वरसे ॥ गूंथि तोडर जिनप कंठ पीठे ठवे, जिनंद पुर पूंज धरि अतिह हरसे ॥ सु० ॥ ३ ॥ इणपरे जिनतणी कुशम पूजन करी, जिन चरणपद्म हरि हुय भमरिया ॥ इण विधे जेह जन कुसम अरचन करे, तेह अति गहर भवसिंधु तरिया ॥ सु० ॥ ४ ॥

॥ काव्यं ॥ त्रिभुवनेश्वरताकमलालयं । सकलभावनिभालनतालयं ॥ जिनचयंविमलाक्षयचिन्मयं । सुकुसुमैः प्रमहामिसदोदयं ॥४ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं अनंता० श्रीऋषभा० पुनरिहलौकिकाश्रीऋष० कुसमं यजामहे स्वाहा ॥ इति कुसुम पूजा ॥ ४ ॥

॥ अथ पांचमी वासक्षेप पूजा ॥

॥ दूहा ॥ वास पूज ए पंचमी, विरचे सुरवर सार ॥ सुगति वास करवा भणी, उर धरि भाव अपार ॥ १ ॥

॥ सोरठो ॥ ए चूरण भरपूर, दुरित करे चकचूर ॥ ए जिनेंद्र पूजन करतार, दुत्तर तरइ संसार ॥ २ ॥

॥ राग वेलाउल ॥ गंधवटी घनसार कुंकम मृ० ॥ ए चाल ॥ बावनाचंदन विपन नंदन जनित सुभ घनसार ए, वलि तगर कृश्नागर सुकुंकुम मृगमदा गंधसार ए ॥ कंकोल अंबर द्रव्य घस कर रुचिर चूरण कर भलो, जिनराज अंग उपांग पुजो लहो पद जग सिरतिलो ॥ ३ ॥

॥ दूहा ॥ भाव धरी भरपूर, सुरवर चढते नूर ॥ अरचे जिनपद सार, वधते हरख अपार ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥ वरवास पूजन भगति करतां गंध दहदिसि महमहे, इण भगतिकारक विमल जससें सकल जग सुरभितरहे ॥ इस वास भगते भगत भयहर अखिल मंगलतित लहे, शिवचंद्र विमल सुभाव पावक कुगतितति तरु वन दहे ॥ ५ ॥

॥ काव्यं ॥ वरतराद्भुतवाससदर्चया । निखलपूजनसद्गुणधुर्यया ॥ सकलविश्वगुरुंगुणसद्गुरुं । जिनवरंप्रयजेमुनिशंकरं ॥ ५ ॥ ॐ ह्रूँ । श्रीं अर्हं ऋषभान० इहलौकिक श्रीऋष० वासं यजामहे स्वाहा ॥ इति पंचमी वास पुजा ॥ ५ ॥

॥ अथ छठी धूप पुजा ॥

॥ दूहा ॥ ए छठी पूजा मुदा, करे सयल सुरराय ॥ इण दशांग वर धूपसें, अरचे जिन मन भाय ॥ १ ॥

॥ राग ॥ साहिबा मोती ल्योनी हमारा ॥ सा० ॥ ए चाल ॥ कृश्नागर सेल्हारस सारा, सुरभि मृगमदा वर घनसारा ॥ भाव धरी

जिन पूजा करिये, भा० ॥ कुंदरुक्क सुरभित द्रव्य सारा, करे गंध वटि अतहि उदारा ॥ भा० ॥ १ ॥ कनक जात वैडूर्य दंड जाणो, गंधवटी धरकर धूपधाणो ॥ भा० ॥ धूप पूज करता सुभ भरता, जिनवर अंग सुगंधि विरचिता ॥ भा० ॥ २ ॥ धूप धूम उरधदिशि जाति, करिहे हरिकुं उरधगतितती ॥ भा० ॥ जेसें धूप अनलमें ज लिये, इण पूजनसें करम दल बलिये ॥ भा० ॥ ३ ॥ जेसें धूप गंध दिसि पसरे, तिम पूजकना वरगुण विस्तरे ॥ भा० ॥ तीन भुवनकुं सुरभित करिये, तातें धूप पूज उर धरिये ॥ भा० ॥ ४ ॥ इम शिव चंद्र कहे भो भविका, इण पूजनसें अंतकर भवका ॥ भा० ॥ सुर पति धूप पूज करि सारा, लहे जिन दरससें हरख अपारा ॥भा०॥५॥

॥ काव्यं ॥ सुरभिधूपसुपूजनतःसदा । निजमनोमतमद्रकरंमुदा ॥ सकलविघ्नहरंवरसिद्धये । जिनवरेंद्रकदंवकमंचये ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अनं० श्री ऋषभादि० धूपं यजामहे स्वाहा ॥ इति धूपपू०६

अथ सातमी फल पूजा ॥

॥ दूहा ॥ करण तीन इक कर भवी, करिये विगत विकार ॥ फल पूजा ए सातमी, वंछीत फल दातार ॥ १ ॥

॥ राग कामोद ॥ चंपक केतकी मालती ए ॥ ए चाल ॥ नव रंगी नारंगीया, हां रे नारंगिया ए, अमल आम्रफल सार ॥ सुख करणा करणा भला, वरण्या कवि मनुहार ॥ १ ॥ जंबू नीबू करम दा, हां रे अड्यो क० कर्कटि दाडिम सार ॥ कदलीफल खारक व ली, फणस विदाम विचार ॥ २ ॥ श्रीफल अरु जंबीरिया, हां रे० जं० निमजा पिसता दाख ॥ इत्यादिक गत दोष वर, सुरभि स्वादु फल भाख ॥३॥ एह विविध फलसें भर्यो, हां रे० फ० कंचन थाल विशाल ॥ जगनायक आगल धरे, सुरपति सरस रसाल ॥ ४ ॥ इणपर भविजन सुद्धमती, हां रे अ० सु० फल पूजा करतार, सुर सुख फल लहि ते हुवे, शिव वनिता भरतार ॥ ५ ॥

॥ काव्यं ॥ अतिसुगंधियुतैर्गतदूषणै । विविधसुंदरशालविभूषणैं ॥ प्रवरकांचनपात्रगतैःफलैः सुविमलैःप्रयजेजिनमंडलं ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अनंता० फलं यजामहे स्वाहा ॥ इति फल पूजा ॥७॥

॥ अथ आठमी दीपक पूजा ॥

॥ दूहा ॥ जगगुरु पूजा अष्टमी, सुरपति भक्ति मिलाय ॥ जिन मंदिर दीपक करे, हरे कुमति समुदाय ॥ १ ॥

॥ राग सारंग ॥ हांहो रे देवा बावनचंदन घस कुमकुमा ॥ ए चाल ॥ हांहो रे वाल्हा इंद्र चंद्र नागेंद्र सुरा, करे दीपक भक्ति रसाल ए ॥ हांहो रे वाल्हा कनक रजत मणि रतनना, वरपात्र धरे घृत गाल ए ॥ १ ॥ हां० अनल ज्योति तसु वर्त्तिका, तसु मझ धरि विमल प्रकास ए ॥ हां० करइ मंदिर मणि मालिका, नासे सहु तिमर विलास ए ॥ २ ॥ हां० मंगल दीपक कर धरी, मंगल मंदिर सुरराय ए ॥ हां० कर जिन आरति पुर धरे, प्रभु मुख लख चित उलसाय ए ॥ ३ ॥ हां० दीप पूज करतारनी, दुरितांतर तिम विलाय ए ॥ हां० लोकालोक प्रगटकरु, केवल सूरज उल साय ए ॥ ४ ॥ हांहो रे० शैवचंद्र जिन पूजसें, इणपर श्रावक मन भाय ए ॥ हां० तेह होय दीपक समो, त्रिभुवन मंदिर दीपाय ए ॥ ५ ॥

॥ काव्यं ॥ जलशनाभिकजासनजालया । क्षरगवेश्वरतामलमालया ॥ विमलमंगलदीपकमालया । कमलयाकलयाजिनमर्चये ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं श्रीऋषभादि० दीपं यजामहे स्वाहा ॥ इति अष्टमी दीप पूजा ॥ ८ ॥

॥ अथ नवमी अक्षत पूजा ॥

॥ दूहा ॥ नवमी पूजा सूमती, करिये धरि सुभ भाव ॥ विमल चारु तंदुलतणी, हितकरणी ए हाव ॥ १ ॥

॥ राग कल्याण ॥ तेरी पूजा वणी हे रसमें ॥ ए चाल ॥ प्रभु पूजा प्रवचने वरणी, हो प्र० ॥ इंद्र चंद्र नागेंद्र सुरासुर, समकित धर नर करणी ॥ हो प्र० ॥ अति अपार संसारजलधि जल, तिप तित तारण तरणी ॥ हो प्र० ॥ १ ॥ हित सुख क्षेम परमपद परमा, नंद वृंद निधि धरणी ॥ हो प्र० ॥ ज्ञाताअंगे द्रुपदि श्रावका, दृढ समकितगुण धरणी ॥ हो प्र० ॥ २ ॥ जिन महाराजतणी किय अरचा, सतर भेद यत वरणी ॥ हो प्र० ॥ जेह अभव्य मंदमति कुमति, भव अनंत भव भ्रमणी ॥ हो प्र० ॥ ३ ॥ पूज उथपे पर तिख प्रभुनी, चित धरी कुमति कुरमणी ॥ हो प्र० ॥ वर शिवचंद्र किरण गण उज्वल, अक्षत तंदुल हरणी ॥ हो प्र० ॥ ४ ॥ जेसें करे सुरराय समकिती, इण विध श्रावक करणी ॥ हो प्र० ॥ इण विप रीत मंदमति भाषे, पूजा शिवपुर सरणी ॥ हो प्र० ॥ ५ ॥

॥ काव्यं ॥ असकलोज्ज्वलतंदुलमंडलै । रजतशालमयेकृतमंगलैः ॥ सकलविश्वपतीसुरसेवितं । जिनवरौघमहंप्रयजेत्वहं ॥ ९ ॥ ॐ ह्रूँ श्रीँ अर्हं अनंता० श्रीऋषभादिवर्द्धमानांतेभ्य श्रतु० अक्षतं यजामहे स्वाहा ॥ इति नवमी अक्षत पूजा ॥ ९ ॥

॥ अथ दशमी नैवेद्य पूजा ॥

॥ दूहा ॥ पूज एह नैवेद्यनी, दशमी अतहि उदार ॥ भवि करिये हरिये विषम, दुर्जय विषय विकार ॥ १ ॥

॥ राग रामगिरी ॥ गात्र लूहे जिन मनरंगसूं रे देवा ॥ ए चाल ॥ लपनश्री वर घृतवरारे वाल्हा, सिंहकेसरीया सुखकरा ॥ सु० हां हो रे वाल्हा सु० ॥ शालदाल घृत युत घरा ॥ ल० ॥ दालिया मोदक सेविया रे वाल्हा, मोतीचूर जलेबिया ॥ मनहरा हांहो० म० ॥ दाख सरकरा दुखहरा ॥ ल० ॥ २ ॥ इत्यादिक निरवद्यने रे वाल्हा, थाल भरी नेवद्य ते ढोईये ॥ हांहो० ढो० ॥ प्रभु पुर पातिक धो

इये ॥ ल० ॥ ३ ॥ पूज एह सुखदायिनी रे वाल्हा, दुरगति दुख भ रपायनी ॥ हरि करे हांहो० हं०॥ तिम वलि श्रावक चित धरे ॥ल० ॥४॥

॥ काव्यं ॥ नैवद्यपूजार्चितमिंद्रवंद्यं । युतंसमग्रातिशयैरनिंद्यं ॥ जितव्रजंवासवतप्रगद्या । नैवद्यभूषंप्रमुदाभिवंदे ॥ १० ॐ ह्रीँ श्री अनंतानं० श्रीऋषभादिवर्द्धमानांतेभ्यश्चतुर्विंशति० नैवद्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति दशमी नैवेद्य पूजा ॥ १० ॥

॥ अथ इग्यारमी नागरवेलपत्र अथवा सुवर्णपत्र पूजा ॥

॥ दूहा ॥ पत्र पूज इग्यारमी, हृदय रमे सुरराय ॥ करणदमी करिये मुदा, दरसण सुद्ध मिलाय ॥ १ ॥

॥ राग भेरवी ॥ पंचवरणी अंगी रची कुसम जाती ॥ ए चाल ॥ पूज करणी प्रभुनी कुशलकारी ॥ ए टेक ॥ नाग पुन्नाग मंदार सुसरुवो, कुंद अरविंद मुचकुंदहारी ॥ अंव कदंव असोक मल्लिका, जाइ जुइ शतपत्र वारी ॥ पू० ॥ १ ॥ भुजंग वल्लि परमुख सुरभितवर, वर्ण फलदल लेइ सारी ॥ कनकपात्र धरि जिनविंब आगल, ढोवो परम भक्ति धारी ॥ पू० ॥ २ ॥ एह भगति करि सहु सुरनायक, दायक संपद फल भारी ॥ इणपर सुध समकित धरी भविजन, पत्र पज करणी सारी ॥ पू० ॥ ३ ॥ पद शिवचंद्र जिनेंद्रनो अरचन, करतां होय सरणकारो ॥ कुगति पतित जग जीवकुं उधरत, जिम सागर गति तरिवारी ॥ पू० ॥ ४ ॥

॥ काव्यं ॥ सुरभिपत्रसदर्चनपूजनं । परमाचिवकरातिशयैर्युतं ॥ समसुरासुरवासववंदितं । जिनगणंमदनारिमहंयजे ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीँ श्री अर्हं० श्रीऋषभा० पत्रं यजामहे स्वाहा ॥ इति इग्यारमी सुरभिपत्र पूजा ॥ ११ ॥

॥ अथ वारमी पूंगफल पुजा ॥

(इस पुजामे स्नात्रिया सुपारी लेके खडा रहे)

॥ दूहा ॥ अति सुंदरतर पूंगफल, जिनवर चरण चढाय ॥ पूज वारमी जाणिये, करिये भवि मन भाय ॥ १ ॥

॥ धीर समीरे यमुना तीरे० ॥ अथवा ॥ श्री चंद्राप्रभु जिन वर साहिब, तुमपर जाउं बलिहारा, में वारी जाउं तु० ॥ ए चाल ॥ अरचीजे जिनचंद चरण कज, भमर होय भवि सारा ॥ में वारी जाउं भ० ॥ जेसें कीट फीट हुय भमरी, एसा ध्यान उपगारा ॥ में० ए० अ० ॥ १ ॥ इह अखंड सुभ सरस पूंगफल, कर लेइ अमृत आहारा ॥ में० क० ॥ भगति युगति धरि जिनवर आगल, ढोवे हरख अपारा ॥ में० ढो० अ० ॥ २ ॥ इम सुरनायकनी परजे भवि, निरखी जिन दीदारा ॥ में० नि० ॥ सुंदर करिये जिन पद पुजन, तज जंजार अपारा ॥ में० त० अ० ॥ ३ ॥ पूंगीफल पुजाफल सारा, भवि करो मनुहारा ॥ में० भ० ॥ पद शिवचंद्र लहो अवतारा, इम कहे प्रवचन सारा ॥ में० इ० अ० ॥ ४ ॥

॥ काव्यं ॥ सकलविश्वजनौघवशंकरं । चरणपद्मनताखिलशंकरं ॥ दिनकरंहरणेघतमर्च्चिपां । जिनवरवरपूंगफलैर्यजे ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं० श्रीऋषभादि श्री व० पूंगफलं यजामहे स्वाहा ॥ इति वारमी सुपारीकी पुजा ॥ १२ ॥

॥ अथ तेरमी जलकलश पूजा ॥

(इस पूजामें जलका भरा कलश लेके खडा रहे)

॥ दूहा ॥ कलस पूज ए तेरमी, सहु दिलगमी सुहाय ॥ एह पूजसें भविकनो, पातिक दूर पुलाय ॥ १ ॥

॥ राग ॥ मेरे दीनदयाल तुम भये सकललोक प्रतिपाल ॥ ए चाल ॥ वारि जय जिनराज, जयजय सकल देव सिरताज ॥ वारि

जय० ॥ जय२ त्रिभुवन जन महाराज, सोहे प्रभु पुरवार समाज ॥ वा० ॥ तुम प्रभु जगमें दीनदयाल, तुम प्रभु सरणागत प्रतिपाल ॥ वारि ज० ॥ १ ॥ कलश पूज प्रभुनी अतिसार, करिये लहिये भवजल पार ॥ वा० ॥ गंगा मागध वलि वरदाम, तीरथ जल भरिया सुखधाम ॥ वा० ॥ २ ॥ रयण कनक मणिना अवदात, सुखमा मंदिर कलश सुजात ॥ वा० ॥ अखिल पुरंदर कर परिधार, प्रभु पुर धरिये हरख अपार ॥ वा० ॥ ३ ॥ जेसें कलश पूजसें इंद्र, पूजे जगनायक जिनचंद्र ॥ वा० ॥ तेसें समकिति श्रावक वृंद, जिनपति पूजे परमानंद ॥ वा० ॥ ४ ॥ कहे शिवचंद्र हृदय उरु शाळ, प्रभुगुण समरण दीपकमाल ॥ वा० ॥ धरी हरि पापतिमिर गतपार, भगति करो भयनिकर विदार ॥ वा० ॥ ५ ॥

॥ काव्यं ॥ कलशराशिमनोरमपूजितां । जिनवरेंद्रततिघृतसन्मतिं ॥ सुदृढभक्तजनैःकृतसश्रुतिं । प्रतिदिनंप्रयजेविजितस्पृहाम् ॥१३॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्ह० श्रीऋषभादि० कलशं यजामहे स्वाहा ॥ इति तेरमी कलश पूजा ॥ १३ ॥

॥ अथ चौदमी वस्त्रयुगल पूजा ॥

॥ दूहा ॥ वसनयुगल पूजा हिवे, चउदमी मन उलसाय ॥ करिये श्रीजिनरायनी, सकल जीव सुखदाय ॥ १ ॥

॥ राग वेलाउल ॥ रे जीव जिनधर्म कीजीये ॥ ए चाल ॥ देववसनयुग अति भलो, पल्लव सुकमाल ॥ चंद्रकिरण सम उजलो, अदभुत ज्योति विशाल ॥ देव० ॥ १ ॥ अखिल विबुध वर ऊमह्या, चितधर भगति अपार ॥ वसनयुगल मंडित करे, जिनवर बिंब उदार ॥ दे० ॥ २ ॥ ए समकितधर हरितणी, करणी सुखकार ॥ इण पर देशविरति करे, कुमति अनल जलधार ॥ दे० ॥ ३ ॥ पद शिवचंद्र पदकमलनी, सुख मधुरसननी आस ॥ तद भवियण प्रतिदिन करो, ए पूजन शिव वास ॥ दे० ॥ ४ ॥

॥ काव्यं ॥ वसनयुग्मसुमंडितभूघनं। परमशांतिसुधारससद्धनं॥ जिननोचंमहामिवसुव्यै । वसनयुग्मचयैर्न्नितरांमुदा ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अनं० श्रीऋषभादि० वस्त्रयुग्मं यजामहे स्वाहा ॥ इति चवदमी वसन पूजा ॥ १४ ॥

॥ अथ पंदरमी छत्र पूजा ॥

॥ दूहा ॥ पूज छत्रनी पनरमी, दुरिततमी दिनकार ॥ ए पूजनं करता धरे, तीन छत्र सिर सार ॥ १ ॥

॥ राग ॥ म्हारे भले रे ऊगो छे दिहाडो आजनो रे ॥ ए चाल ॥ जिनराज पूज जयकारणी रे, सितचंद्र मंडल छत्र धारणी रे ॥ जि० ॥ दुरितांतर ताप निवारणी रे, अति गहिरसिधु भव तारणी रे ॥ जि० ॥ १ ॥ सुमतीजन हरख वधारणी रे, कुमतीजन हरख विदारणी रे ॥ जि०॥ सहु जग जीव जन मन हारणी रे॥ कुमतीनी कुमति सुधारणी रे ॥ जि०॥२॥ यातो त्रिभुवन यश विसतारणी रे, काल कुशल व्रततिआसारणी रे ॥ जि० ॥ सिर सोहे तसु मनुहारणी रे, करे छत्र पूज शिवचारणी रे ॥ जि० ॥ ३ ॥ हरि जिम भवि शुद्धाचारणी रे, भवसायर पार उतारणी रे ॥ जि० ॥ नरकादि कुगति दुख मारणी रे, शिव चंद्रकिरण अनुकारणी रे ॥ जि० ॥ ४ ॥

॥ काव्यं ॥ सकललोकशिवंकरताभरं । कुमतघूकमतक्षितिभास्करं ॥ सुविमलातपवारणपूजया । ह्यलमलंकृतमासमर्हयजे ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अ० श्रीऋषभादि० छत्रं यजामहे स्वाहा ॥ इति पनरमी छत्र पूजा ॥ १५ ॥

॥ अथ सोलमी चमर पूजा ॥

॥ दूहा ॥ चमर पूज ए सोलमी, करिये भविक समाज ॥ चमर युगल करकमल धर, पूजीजे जिनराज ॥ १ ॥

॥ राग केदारो गोडी ॥ कुंदकिरण शशि ऊजलो रे देवा ॥ ए चाल ॥ धवल रयण मणि जातना रे वाला, वाला अति सुकमाला रे ॥ चंद्र तरणि किरणोज्वला रे वाला, विविध रयण दंड जाला रे ॥ १ ॥ प्रतिदिन दोय पासे खडा रे वाला, सकल अमर प्रतिपाला रे ॥ ऊपरे जिनमाहाराजने रे वाला, वींझे चमर विसाला रे ॥ २ ॥ चामरयुग हरि वींझता रे वाला, गत चामरता लहस्ये रे ॥ अमर अजर शिवपद लही रे वाला, सफल अमरता वहस्ये रे ॥ ३ ॥ चमर पूज कर सुरवरा रे वाला, श्रीजिनवर गुण भाषे रे ॥ इण पर श्रावकजन करे रे वाला, शिवचंद्रामृत चाखे रे ॥ ४ ॥

॥ काव्यं ॥ विशदचामरपुजनभूषितं । विगतमारविकारमदूषितं ॥ जिनगणंविमलाखिलसद्गुणं । भयहरंचदधेहृदयांबुजे ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अनं० श्रीऋषभादि० श्चामरं यजामहे स्वाहा ॥ इति सोलमी चामर पूजा ॥ १६ ॥

॥ अथ सतरमी वाजित्र पूजा ॥

॥ दूहा ॥ पूज सतरमी मन गमी, करो भविक चित लाय ॥ मधुर तूर धुनि कीजीये, पूजनमें उलसाय ॥ १ ॥

॥ राग काफी ॥अष्टापद गिरि जात्रा करणकूं ॥ ए चाल ॥ द्रागडदिकि द्रागडदिकि धपमप धोंधों, सुरज मधुर धुनि वाजे ॥ भो त्रिभुवन महाराज भजध्वं, इम सुरदुंदुभि गाजे ॥ मन सुध भावे हो लाल, श्रीजिन वंदन करिये ॥ भावे पूजी हो लाल, जिन पद कमला वरिये ॥ १ ॥ ताल कंसाल भेरि शंख झल्लरि, निज२ धुनिसें छाजे ॥ झणण२ वलि खणण खणणकर, ताल माल कर वाजे ॥ मनसुध० भा० ॥ २ ॥ वेणु वीणादिक सुर संबंधी, सुर वाजित्र वजाया ॥ भूरि तूरस्व मिलित मधुर स्वर, सुराणी गुण

गाया ॥ म० भा० ॥ ३ ॥ इण विध श्रावक पूज रचावे, विविध वाजित्र वजावे ॥ वहुविध भववन सरण हरीने, पद शिवचंद्र सुपावे ॥ म० भा० ॥ ४ ॥

॥ काव्यं ॥ विबुधवादिततूररवाश्रितं । प्रवरपूजनमंचितसत्यदः॥ सुरगणैःसुरराजसमन्वितै । जिनगणस्यमुदाविदधेसदा ॥ १७ ॥ इति सतरमी पूजा ॥ १७ ॥

॥ अथ अढारमी गीत पुजा ॥

॥ दूहा ॥ गीत पूज अठारमी, अघविरमी सुखकार ॥ गीत गान जिन आगले, करहु भक्तिधर सार ॥ १ ॥

॥ राग वसंत ॥ इक सुण ले नाथ अरज मेरी ॥ ए चाल ॥ वलिहारी तेरी नाथ सुरति परिया ॥ व० ॥ जाउं वलिहारी वार हजारी, ए सुरत गुण मणि दरिया ॥ व० ॥ १ ॥ जे सुरती नलिना गुण मधुरस, पानकरण हुय मधुकरिया ॥ व० ॥ ते भवसागर पार उतरिया, चिदानंद घन पद वरिया ॥ व० ॥ २ ॥ इंद्रादिक वलि सकल सुरासुर, जिनचरण सरण धरिया ॥ व० ॥ इंद्राणी परिकर परवरिया, गीतगान सुंदर करिया ॥ व० ॥ ३ ॥ जलतरंग शिवचंद्र विमल यश, सुरभिगंध जग अति विसतरिया ॥ व० ॥ ए प्रभु गीत पूज करि हरिगण, इणविध भवि करो गुण भरिया ॥ व० ॥ ४ ॥

॥ काव्यं ॥ मधुरगीतसुपूजनपूजितं । प्रवलमोहनरेंद्रवलाजितं ॥ परमशांतिसुधारससागरं । जिनवरंप्रणमामिमुदाकरं ॥ १८ ॥ इति अठारमी गीत पूजा ॥ १८ ॥

॥ अथ ओगणीसमी नाटक पुजा ॥

॥ दूहा ॥ भव अटवी भटकणतणी, विघटनता प्रगटाय ॥ नटन पूज उगणीसमी, करतां कष्ट मिटाय ॥ १ ॥

॥ आर्यावृतद्वयं ॥ ततः वीणा प्रभृतिकं, ताल प्रभृति घनं ॥ वं शादिकंतु शुषिर, मानद्धं मुरजादिकं ॥ १ ॥ ततघनशुषिरानद्धा, द्यनेकगीर्व्वाणतुर्यरवमिलितैः ॥ सप्तस्वरैश्चखडजादिमैः, सुधास्पर्द्धि श्चमाधुर्याः ॥ २ ॥ भक्तिरतांसुरवनिता, श्रीमज्जिनचंद्रचंद्रगुणगानं ॥ मधुरतरामृतमधुरं, प्रकुर्वतेसत्वरंसुरा ॥ ३ ॥

॥ काव्यं युग्मं ॥ सद्यानामदभृद्गजेंद्रगमनाकल्याणकुंभस्तनाः । सद्भक्त्याकृतजैनपादनमनाःसंपूर्णचंद्रामनाः ॥ चंचद्भिर्द्दशभिःषड्डत्त रगतैःशृंगारकैःशोभिता। नृत्यंतित्रिदशेंद्रवृंदवनिता सौंदर्यदप्पोन्नता४

॥ राग केरबो ॥ वाजे तेरा विछुआ रे वाजे ॥ ए चाल ॥

नरत करत सुरकुमर कुमरिया, वजे सुरदुंदुभि गगन मधुरिया ॥ न० ॥ जिनमुखकज मझ दृग मधुकरिया, निरख हरख सुर देत भमरिया ॥ न० ॥ १ ॥ अरधचंद्र सम भाल विराजित, शरदचंद्र मुख अमृत झरिया ॥ न० ॥ अति विशाल सारंग विलोचन, नि रखित सहु सुरजन मन हरिया ॥ न० ॥ २ ॥ सकल लोक जन मत जीतनकूं, मदनसेन मानुं प्रकटन करिया ॥ न० ॥ तब सुर वनिता सुर सभ सोहत, जलदघटा मझ जेसें विजुरिया ॥ न० ॥३॥ झणण२ रणकत नेउरिया, ठमकि२ पाय वजत घुघरिया ॥ न० ॥ तत्ताथेइ थेइ थेइ चलत चरण गत, तननन री री राग उचरिया ॥ न० ॥ ४ ॥ ताल कंसाल वेणु विणादिक, विविध तूर धुनि गयण पसरिया ॥ न० ॥ द्रागडदिकि२ धपमप धों धों, द्रें द्रे वाजित मुरज मधुरिया ॥ न० ॥ ५ ॥ विविध तूर धुनि करत बधरिया, अनुभव अमृत धार उछरिया ॥ न० ॥ नटन करंतो अमर कुमरिया, जिन गुण गावत मधुर सुसुरिया ॥ न० ॥ ६ ॥ सझिय शोल सिणगार सुंदरिया, अदभुत सुर दुति घर सुर तरिया ॥ न० ॥ परमरूप ल वणिमकी दरिया, मनुय वास किय काम केसरिया ॥ न० ॥७॥

चिरंनंद चिरंजीव जिनेसर, भवजल तारण तरण सुतरिया ॥ न० ॥ चिदानंद घन सुख आगरिया, वारीजाउ जिनजीनी सूरति उपरिया ॥ न० ॥ ८ ॥ जय जगबांधव जय जगवच्छल, जय२ जिन महाराज शंकरिया ॥ न० ॥ जे प्रभु समरन तरणि पकरिया, तेह चरम सागर भव तरिया ॥ न० ॥ ९ ॥ सूरियाभ दशकंधरनी परि, जेह नटन जिनपति पुर करिया ॥ न० ॥ ते शिवचंद्र अमल जिन पदयुत, अमृत कमलालिगन धरिया ॥ न० ॥ १० ॥

॥ काव्यं ॥ भववनाटननाटननाशकं । कुशलपद्मगभस्तिविकाशकं ॥ कुमतिसंवटनंनटनंमृदा । न्वहमर्हविदधेपुरतोर्हतां ॥ १९ ॥ इति उगणीसमी नाटक पूजा ॥ १९ ॥

॥ अथ वीसमी जिनवर गुणस्तुति पूजा ॥

॥ दूहा ॥ जिन गुण तुति पूजन सदा, करो सुमति चित धार ॥ इण पूजन कर्त्तातणो, करे स्तवन दनु जार ॥ १ ॥

॥ राग ॥ विच खरे मधुवनके वावरे, में केसें भरण जाउं पानीरा ॥ ए चाल ॥ मेरी लागी लगन जिनराज चरणसें, अब तरिया भवदरिया ॥ मे० ॥ तुम प्रभु जीत लिये सुरगिरिया, धीरज गुणणी सुख करिया ॥ मे० ॥१॥ अतहि गंभीर गुणे प्रभुजी तो, परम चरम सागरिया ॥ मे० ॥ चरण कमल सेवन ततपरिया, हरिगण अमर भमरिया ॥ मे० ॥ २ ॥ अलख निरंजन अगम अगोचर, तूं प्रभु जगदीसरिया ॥ मे० ॥ असरण सरण चरण निपतित भवि, जनगण तारण तरिया ॥ मे० ॥ ३ ॥ लोकालोक कमलवन विकसन, तुम प्रभु वासर करिया ॥ मे० ॥ तुम महाराज सकल जग जनको, तुम दरशन दृग ठरिया ॥ मे० ॥ ४ ॥ मंगल केरव कानन वोधन, प्रभु शिवचंद्र निकरिया ॥ मे० ॥ जे भवि मुख तुम्ह तवन उचरिया, ते जिन कमला वरिया ॥ मे० ॥ ५ ॥ इण विध श्रा

ना ध्यानथी सौख्यभाजा, सदा सिद्ध चक्राय श्रीपाल राजा ॥२॥ कर्यां कर्म दुर्मर्म चकचूर जेणें, भला भव्य नवपद ध्यानेन तेणें ॥ करी पूजना भव्य भावें त्रिकालें, सदा वासियो आतमा तेण कालें ॥ ३ ॥ जिके तीर्थंकर कर्म उदयें करीने, दिये देशना भव्यने हित धरीने ॥ सदा आठ महापाडिहेरें समेता, सुरेशें नरेशें स्तव्या ब्रह्मपुत्ता ॥ ४ ॥ कर्यां घातियां कर्म चारे अलग्गा, भवोप्पग्रही चार छे जे विलग्गा ॥ जगत् पंचकल्याणकें सौख्य पामे, नमो तेह तीर्थंकरा मोक्षकामें ॥ ५ ॥

॥ दूहा ॥ परम मंत्र प्रणमी करी, तास धरी उर ध्यान ॥ अरिहंत पदपूजा करो, निज निजशक्ति प्रमाण ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ त्रीजे भव विधिसें करी, वीश स्थानक तप करिने रे ॥ गोत्र तीर्थंकर बांधियुं, समकित शुद्ध मन धरिने रे ॥ १ ॥ अरिहंत पद नित वंदियें, करम कठिन जिम छंडियें रे ॥ ए आंकणी ॥ जनम कल्याणकने दिनें, नारकी सुखिया थावे रे ॥ मति श्रुत अवधि विराजता, जसु उपम कोइ नावे रे ॥ अ० ॥ २ ॥ दीक्षा लीधी शुभ मने, मनःपर्यव आदरियो रे ॥ तप करि कर्म खपाइने, ततखिण केवल वरियो रे ॥ अ० ॥ ३ ॥ चउतिस अतिशय शोभता, वाणी गुण पेंतीसो रे ॥ अठदस दोष रहित थइ, पूरे संघ जगीसो रे ॥ अ० ॥ ४ ॥ तन मन वयण लगाइने, अरिहंत पद आराधे रे ॥ ते नर निश्चयथी सही, अरिहंत पदवी साधे रे ॥ अ० ॥ ५ ॥

॥ श्लोक ॥ अथाष्टदलमध्याब्ज, कर्णिकायां जिनेश्वरान् ॥ आविर्भूतलसद्बोधा, नावृतः स्थापयाम्यहम् ॥ १ ॥ निःशेषदोषेंधनधूमकेतू, नपारसंसारसमुद्रसेतून् ॥ यजे समस्तातिशयैकहेतून्, श्रीमज्जिनानांबुजकर्णिकायाम् ॥२॥ ॐ ह्रूँ अर्हद्भ्यो नमः ॥ इति ॥१

॥ अथ द्वितीय सिद्धपद पुजा ॥

॥ दूहा ॥ दूजी पूजा सिद्धनी, कीजे दिल खुशियाल ॥ अशुभ कर्म दूरें टले, फले मनोरथमाल ॥ १ ॥

सिद्धाणमाणंदरमालयाणं, नमो नमोणंतचउक्कयाणं ॥ करी आठ कर्म क्षयें पार पाम्या, जरा जन्म मरणादि भय जेणें वाम्या ॥ निरावरण जे आत्म रूपें प्रसिद्धा, थया पार पामी सदा सिद्ध बुद्धा ॥ त्रिभागोनदेहावगाहात्मदेशा, रह्या ज्ञानमय जातवर्णादिलेशा ॥ सदानंतिसौख्याश्रिता ज्योतिरूपा, अनाबाध अपुनर्भवादि स्वरूपा ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ सकल करमनो क्षय करी, सिद्ध अवस्था पाइ रे ॥ गुण इगतीस विराजता, ओपम जस नही कांइ रे ॥ ६ ॥ मन शुद्ध सिद्धपद वंदियें ॥ ए आंकणी ॥ जनम मरण दुःख निर्गम्या, शुद्धातम चिदरूपी रे ॥ अनंत चतुष्टय धारता, अव्याबाध अरूपी रे ॥ म० ॥ ७ ॥ जास ध्यान जोगीसरू, करे अजप्पा जापें रे ॥ भव भव संच्यां जीवडे; कठिण करम ते कापे रे ॥ म० ॥ ८ ॥ ध्यान धरंतां सिद्धनुं, पूजंतां मनरागें रे ॥ अविचल पदवी पाईयें, कहुं जिनवर वड भागें रे ॥ म० ॥ ९ ॥

॥ श्लोक ॥ तस्य पूर्वदले सिद्धान्, सम्यक्त्वादि गुणात्मकान् ॥ निःश्रेयसपदं प्राप्तान्, निदधे भक्तिनिर्भरः ॥ १ ॥ तत्पूर्वपत्रे परितः प्रणष्ट, दुष्टाष्टकर्मानधिगम्य शुद्धिम् ॥ प्राप्तान्नरान् सिद्धिमनंतबोधान्, सिद्धान्यजे शांतिकरान्नराणाम् ॥२॥ ॐ ह्रीं सिद्धेभ्यो०॥इति२

॥ अथ तृतीय आचार्यपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ हिव आचारज पद तणी, पूजा करो विशेष ॥ मोह तिमिर दूरें हरे, सूझे भाव अशेष ॥ १ ॥

॥ सूरीण दूरीकयकुग्गहाणं, नमो नमो सूरिसमप्पहाणं ॥ नमो

सूरिराजा सदा तत्वताजा ॥ जिनेंद्रागमे प्रौढ साम्राज्य भाजा ॥ षट्वर्ग वर्गितगुणें शोभमाना, पंचाचारने पालवे सावधाना ॥ भविप्राणिने देशना देशकाले, सदा अप्रमत्ता यथा सूत्र आले ॥ जिके शासनाधार दिग्दंतिकल्पा, जगें ते चिरंजीवजो शुद्धजल्पा ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ गुणछत्तीशें दीपता, पाले पंच आचारो रे ॥ जिन मारग साचो कहे, जुगप्रधान जयकारो रे ॥ १० ॥ आचारिज पद वंदीयें ॥ ए आंकणी ॥ सारण वारण चोयणा, पडिचोयण चौशिक्षा रे ॥ भव्यजीव समझायवा, देवाने ते दिक्षा रे ॥ आ० ११ ॥ जिनवर सूरिज आथम्या, परतख दीपक जेहा रे ॥ सकल भाव परगट करे, ज्ञानमयी जसु देहा रे ॥ आ० ॥ १२ ॥ विधिशुं पूजा साचवे, ध्यावे निज हित जाणी रे ॥ पावे लघुतर कालमां, आचारिज पद प्राणी रे ॥ १३ ॥

॥ श्लोक ॥ स्थापयामि ततः सूरीन्, दक्षिणेऽस्मिन् दलेऽमले ॥ चरतः पंचधाचारं, षट्त्रिंशत् सद्गुणैर्युतान् ॥ १ ॥सूरीन् सदाचाररतांश्चसारा, नाचारयंतः स्वपरान्यथेष्टम् ॥ उग्रोपसर्गैकनिवारणार्थं, मभ्यर्चयाम्यक्षतगंधधूपैः ॥ २ ॥ ॐ ह्रूँ सूरिभ्योनमः ॥ इति ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्थ उपाध्याय पदपुजा ॥

॥दूहा॥ गुण अनेक जग जेहना, सुंदर शोभित गात्र ॥ उवझाया पद अरचियें, अनुभव रसनुं पात्र ॥ १ ॥

॥ छंद ॥ सुत्तत्थवित्थारण तप्पराणं, नमो नमो वायग कुंजराणं ॥ नही सूरि पण सूरिगुणनें सहाया, नमुं वाचका त्यक्तमदमोह माया ॥ वली द्वादशांगादि सूत्रार्थ दानें, जिके सावधाना निरुद्धाभिमानें ॥ धरे पंचनें वर्गवर्गित गुणौघाः, प्रवादि द्विपोच्छेदने तुल्य सिंघाः ॥ गुणिगच्छसंधारणे स्तंभभूता, उपाध्याय ते वंदियें चित्प्रभूता ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ द्वादशांगी वाणी वदे, सूत्र अरथ विस्तारे रे ॥ पंच वरग गुण जेहना, सुमति गुपति नित धारे रे ॥ १४ ॥ श्रीउवझाया वंदियें ॥ ए आंकणी ॥ दायक आगम वाचना, भेद भावयुत सारी रे ॥ मूरखकूं पंडित करे, जगतजंतु हितकारी रे ॥ १५ ॥ श्री० ॥ शीतलचंद किरण समी, वाणी जेहनी कहिये रे ॥ ते उवझाया पूजतां, अविचल सुखडां लहीयें रे ॥ १६ ॥ श्री० ॥ इति ॥

॥ श्लोक ॥ द्वादशांगश्रुताधारान्, शास्त्राध्ययनतत्परान् ॥ निवेशयाम्युपाध्यायान्, पवित्रे पश्चिमे दले ॥ १ ॥ श्रीधर्मशास्त्राण्यनिशं प्रशांत्ये, पठंति येऽन्यानपि पाठयंति ॥ अध्यापकांस्तानपराब्जपत्रे, स्थितान्पवित्रान्परिपूजयामि ॥२॥ ॐ ह्रूँ उपाध्या० ॥ इति ॥४॥

॥ अथ पंचम साधुपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ मोक्षमारग साधन भणी, सावधान थया जेह ॥ ते मुनिवरपद वंदतां, निर्मल थाये देह ॥ १ ॥

॥ छंद ॥ साहूण संसाहिय संजमाणं, नमो नमो सुद्ध दयाद माणं ॥ करे सेवना सूरिवायग गणीनी, करूं वर्णना तेहनी शी मुणीनी ॥ समेता सदा पंच समितित्रिगुप्ता, त्रिगुप्ते नही काम भोगे सु लिप्ता ॥ वली बाह्य अभ्यंतरें ग्रंथि टाली, हुये मुक्तिने योग्य चारित्र पाली ॥ शुभाष्टांग योगे रमे चित्त वाली, नमुं साधुनें तेह निज पाप टाली ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ सकल विषय विष वारिने, आतमध्यानें राता रे ॥ उपशम रसमां झीलता, निज गुण ज्ञानें माता रे ॥ १७ ॥ हित धरि मुनिपद वंदियें ॥ ए आंकणी ॥ रतनत्रयी आराधतां, षट्काया प्रतिपाले रे ॥ पंचेंद्री जीपे सदा, जिन मारग अजुवाले रे ॥ हि० ॥ १८ ॥ गुण सत्तावीश अलंकर्या, पंच महाव्रत धारी रे ॥ द्वादशविध तप आदरे, चिदानंद सुखकारी रे ॥ हि० ॥ १९ ॥

नवविध ब्रह्मचरिज धरे, करम महा भट जीत्या रे ॥ एहवा मुनि ध्यावे सदा, ते नर जगत विदीता रे ॥ हि० ॥ २० ॥

॥ श्लोक ॥ व्याख्यादिकर्म कुर्वाणान्, शुभध्यानैकमानसान् ॥ उदकपत्रगतानित्यं, साधून्वंदामि सुव्रतान् ॥ १ ॥ वैराग्यमंतर्वचसि प्रसिद्धं, सत्यं तपो द्वादशधा शरीरे ॥ येषामुदकूपत्रगतान् पवित्रान्, साधून सदा तान् परिपूजयामि ॥ ॐ ह्रीं सर्वसाधुभ्यो०॥ इति॥

॥ अथ षष्ठ दर्शन पद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ जिनवर भाषित शुद्धनय, तत्त्व तणी परतीत ॥ ते सम्यग्दर्शन सदा, आदरियें शुभ रीत ॥ १ ॥

॥ छंद ॥ जिणुत्ततत्ते रुइलक्खणस्स, नमो नमो निम्मलदंसणस्स ॥ विपरियासहो वासनारूप मिथ्या, टले जे अनादी अछे जे कुपथ्था ॥ जिनोक्ते हुवे सहजथी श्रदधानं, कहियें दर्शनं तेह परमं निधानं ॥ विना जेहथी ज्ञानमज्ञानरूपं, चरित्रं विचित्रं भवारण्य कूपं ॥ प्रकृति सात उपशमक्षयें तेह होवे, तिहां आपरूपें सदा आप जोवे ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ सुगुरु सुदेव सुधर्मनो, सद्दहणा चित्त धरियें रे ॥ सात प्रकृतिनो क्षय करी, क्षायिक समकित वरियें रे ॥ २१ ॥ दरसण पद नित वंदियें ॥ ए आंकणी ॥ इण विण ज्ञान निफल कह्युं, चारित्र निःफल जाये रे ॥ शिव सुख इण विण नां मीले, बहु संसारी थाये रे ॥ द० ॥ २२ ॥ सतसठि भेदें शोभतुं, अजरामर फल दाता रे ॥ जे नर पूजे भावशुं, ते पामे सुख शाता रे ॥द०॥२३॥

॥ श्लोक ॥ जिनेंद्रोक्तमतं श्रद्धा, लक्षणं दर्शनं यजे ॥ मिथ्यात्व मथनं शुद्धं, न्यस्तमीशानसद्दले ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनाय नमः ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ अथ सप्तम ज्ञान पद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ सप्तम पद श्री ज्ञाननो, सिद्धचक्र तप मांहि ॥ आराधीजें शुभ मनें, दिन दिन अधिक उच्छाहि ॥ १ ॥

छंद ॥ ॥ अन्नाण संमोह तमोहरस्स, नमो नमो नाण दिवायरस्स ॥ हुवे जेहथी ज्ञान शुद्ध प्रबोधं, यथा वरण नाशे विचित्रं विबोधं ॥ तिणें जाणीएं वस्तु षडद्रव्य भावा, न होवे वितत्था निजेच्छा स्वभावा ॥ हुवे पंचमत्यादि सुज्ञान भेदें, गुरूपासथी योग्यता तेह वेदे ॥ वली ज्ञेय हेया उपादेय रूपें, लहे चित्तमां जेम ध्वांतप्रदीपें ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ भक्ष अभक्ष विचारणा, पेय अपेय निर्धारो रे ॥ कृत्य अकृत्य ने जाणियें, ज्ञान महा जयकारो रे ॥ २४ ॥ ज्ञान निरंतर वंदियें ॥ ए आंकणी ॥ ज्ञान विना जयणा नही, जयणा विण नही धर्मो रे ॥ धर्म विना शिव सुख नही, ते विण न मिटे भर्मो रे ॥ ज्ञा० ॥ २५ ॥ पांच प्रकार छे जेहना, भेद इकावन तासो रे ॥ जाणीनें पूजे सदा, ते लहे केवल खासो रे ॥ ज्ञा० ॥ २६ ॥

श्लोक ॥ अशेषद्रव्यपर्याय, रूपमेवावभासकम् ॥ ज्ञानमाग्नेयपत्रस्थं, पूजयामि हितावहम् ॥ ॐ ह्रीं० इति ॥ ७ ॥

॥ अथ अष्टम चारित्र पद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ अष्टमपद चारित्रनुं, पूजो धरी उमेद ॥ पूजत अनुभव रस मिले, पातक होय उच्छेद ॥ १ ॥

॥ छंद ॥ आराहियाखंडिय सक्कियस्स, णमो णमो संयमवीरियस्स ॥ वली ज्ञानफल चरण धरियें सुरंगें, निरासंसता द्वाररोधें प्रसंगें ॥ भवांभोधिसंतारणे यानतुल्यं, धरुं तेह चारित्र अप्राप्तमूल्यं ॥१॥ हुवे जास महिमाथकी रंक राजा, वली द्वादशांगी भणी होय ताजा ॥ वली पाप रूपोपि नि पाप थाये, थई सिद्ध ते कर्मनें पार जाये ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ सर्वविरतिनें देशविरतिथी, अणागार सागारी रे ॥ जयवंतो थावो सदा, ते चारित्र गुण धारी रे ॥ २७ ॥ चारित्रपद नित वंदीयें ॥ ए आंकणी ॥ षटखंड सुख तजि आदरे, संयमशिव सुखदायी रे ॥ सत्तर भेदें जिन कह्यो, ते आदरियें भाई रे ॥ चा० ॥ २८ ॥ तत्त्वरमण तसु मूल छे, सकल आश्रवनो त्यागी रे ॥ विधिसेंती पूजन करे, भाव धरी वडभागी रे ॥ चा० ॥ २९ ॥

॥ श्लोक ॥ सामायिकादिभिर्भेदै, श्चारित्रं चारु पंचधा ॥ संस्थापयामि पूजार्थं, पत्रे हि नैऋते क्रमात् ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ सम्यग्चारित्राय नमः ॥ इति ॥ ८ ॥

॥ अथ नवम तपपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ कर्मकाष्ठप्रति जालवा, परतख अगनि समान ॥ ते तपपद पूजो सदा, निर्मल धरियें ध्यान ॥ १ ॥

॥ छंद ॥ कम्मद्दुमोम्मूलणकुंजरस्स, नमो नमो तिव्वतवोभरस्स ॥ त्रिकालिकपणें कर्म कषाय टाले, निकाचितपणें बांधियां तेह बाले ॥ कह्युं तेह तप बाह्य अंतर दुभेदें, क्षमा युक्त निर्हेतु दुर्ध्यान छेदे ॥ हुवे जास महिमाथकी लब्धि सिद्धि, अवांछकपणे कर्म आवरण शुद्धि ॥ तपो तेह तप जे महानंद हेतें, हुवे सिद्धि सीमंतिनी निज संकेतें ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ निज इच्छा अवरोधीयें, तेहिज तप जिन भाख्युं रे ॥ बाह्य अभ्यंतर भेदथी, द्वादशभेदें दाख्युं रे ॥ ३० ॥ अनुपम तप पद वंदीयें ॥ ए आंकणी ॥ तद्भव मोक्ष गामीपणुं, जाणे पण जिन राया रे ॥ तप कीधां अति आकरा, कुत्सित करम खपायां रे ॥ अ० ॥ ३१ ॥ करम निकाचित क्षय हुवे, ते तपने परभावें रे ॥ लब्धि अठावीश ऊपजे, अष्ट महासिद्धि पावे रे ॥

अ० ॥ ३२ ॥ एहवुं तपपद ध्यावतां, पूजंतां चित्त चाहे रे ॥ अ क्षयगति निर्मल लहे, सहु योगिंद सराहे रे ॥ अ० ॥ ३३ ॥

॥ श्लोक ॥ द्विधा द्वादशधा भिन्नं, पूते पत्रे तपश्चयं ॥ संस्थापयामि भक्तयात्र, वायव्यां दिशि शर्मदम् ॥ ॐ ह्रीं सम्यग्तपसे नमः ॥ इति ॥ ९ ॥

॥ अथ कलश ॥

॥ इम नव पद ध्यावे, पर्म आनंद पावे, नव भव शिव जावे, देव नर भव पावे ॥ ज्ञान विमल गुण गावे, सिद्ध चक्र प्रभावें, सहु दुरित शमावे, विश्व जयकार पावे ॥ १ ॥

॥ अथ स्तवन उपरनो कलश ॥

॥ अरिहंत सिद्ध आचार्य उवज्झाय, साधु दंसण नाण ए ॥ चारित्र तप नवपद थकी, इहां सिद्धचक्र प्रमाण ए ॥ १ ॥ श्रीपाल राजा सुख्ख ताजां, लह्यां सिद्धचक्र ध्यानसों ॥ भविजन भजो जिन लाभ जाणी, हिये आणी भाव सो ॥२॥ इय नवपय सिद्धि, लद्धि विज्जा समिद्धं, पयडिय सरवग्गं, ह्रींतिरेहासमग्गं ॥ दिसिवइ सुरसारं, खोणिपीढावयारं, तिजय विजयचक्कं सिद्धचक्कं नमामि ॥ ३ ॥ निःस्वेदत्वादि दिव्यातिशयमयतनून् श्री जिनेंद्रान्सुसिद्धान्, सम्यक्त्वादि प्रकृष्टाष्टगुणगणभृदा, चार सारांश्च सूरीन् ॥ शास्त्राणि प्राणिरक्षाप्रवचनरचनासुंदराण्यादिशंत, तत्सिद्ध्ये पाठकानां यतिपतिसहितानर्चया म्यर्घ्यदानैः ॥ १ ॥ इथ्थमष्टदलं पद्मं, पूरयेदर्हदादिभिः ॥ स्वाहांतैः प्रणवाद्यैश्च, पदैर्विघ्ननिवृत्तये ॥ २ ॥ ॐह्रीं पंचपरमेष्ठिने सम्यग्ज्ञानादिचतुरन्वितेभ्यो नमः ॥ इति श्री नवपद स्तुतिः ॥ इति लघु नवपद पूजा समाप्त ॥

॥ अथ ॥

॥ श्री जसविजयोपाध्यायादि विरचित ॥

॥ श्रीबृहन्नवपद पूजा प्रारभ्यते ॥

॥ तत्र ॥

॥ प्रथम अरिहंतपद पूजा प्रारभ्यते ॥

॥ दूहा ॥ परम मंत्र प्रणमी करी, तास धरी उर ध्यान ॥ अरिहंतपद पूजा करो, निज निज शक्ति प्रमाण ॥ १ ॥

काव्यं ॥ उपजातिवृत्तम् ॥ उप्पन्नसन्नाणमहो मयाणं, सप्पाडिहेरासण संठियाणं ॥ सद्देसणा णंदिय सज्जणाणं, णमो णमो होउ सया जिणाणं ॥ १ ॥

॥ भुजंगप्रयातवृत्तम् ॥ नमोऽनंतसंतप्रमोदप्रदान, प्रधानाय भव्यात्मने भास्वताय ॥ थया जेहना ध्यानथी सौख्यभाजा, सदा सिद्धचक्राय श्रीपाल राजा ॥ १ ॥ करया कर्म दुर्मर्म चकचूर जेणें, भलां भव्य ! नवपद ध्यानेन तेणें ॥ करी पूजना भव्य ! भावें त्रिकालें, सदा वासियो आतमा तेण कालें ॥२॥ जिके तीर्थंकर कर्म उदयें करीने, दिये देशना भव्यने हित धरीने ॥ सदा आठ महा पाडिहारें समेता, सुरेशें नरेशें स्तव्या ब्रह्मपुत्ता ॥३॥ करयां घातियां कर्म चारे अलग्गां, भवोपग्रही चार जे छे विलग्गां ॥ जगत् पंच कल्याणकें सौख्य पामे, नमो तेह तीर्थंकरा मोक्ष कामें ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥ देशी उलालानी ॥ तीर्थपति अरिहा नमुं, धर्म धुरंधर धीरो जी ॥ देशना अमृत वरसता, निजवीरज वड वीरो जी ॥१॥ उलालो ॥ वर अखय निर्मल ज्ञानभासन, सर्वभाव प्रकाशता ॥ निजशुद्ध श्रद्धा आतम भावें, चरण थिरता वासता ॥ जिन नाम क-

र्मे प्रभाव अतिशय, प्रातिहारज शोभता ॥ जगजंतु करुणावंत भगवंत, भविक जनने थोभता ॥ २ ॥

॥ पूजा ॥ ढाल ॥ श्रीपालना रासनी देशी ॥ त्रीजे भव वर थानक तप करी, जेणें बांध्युं जिननाम ॥ चउसठ इंद्रे पूजित जे जिन, कीजें तास प्रणाम रे ॥ भविका ! सिद्धचक्रपद वंदो, जिम चिरकालें नंदो रे ॥ भ० ॥ उपशम रसनो कंदो रे ॥ भ० ॥ रत्नत्रयीनो वृंदो रे ॥ भ० ॥ सेवे सुर नर इंदो रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ जेहने होय कल्याणक दिवसें, नरके पण अजवालुं ॥ सकल अधिकगुण अतिशयधारी, ते जिन नमि अघ टालुं रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ २ ॥ जे तिहु नाण समग्ग उप्पन्ना, भोग करम क्षीण जाणी ॥ लेइ दीक्षा शिक्षा दिये जगने, ते नमियें जिन नाणी रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ३ ॥ महागोप महा माहण कहियें, निर्यामक सत्थवाह ॥ उपमा एहवी जेहने छाजे, ते जिन नमियें उत्साह रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ४ ॥ आठ प्रातिहारज जसु छाजे, पेंतीस गुणयुत वाणी ॥ जे प्रतिबोध करे जगजनने, ते जिन नमियें प्राणी रे ॥ ॥ भ० ॥ सि० ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ अरिहंत पद ध्यातां थकां, दव्वहगुण पज्जाय रे ॥ भेद छेद करी आतमा, अरिहंत रूपी थाय रे ॥ १ ॥ वीर जिनेसर उपदिशे, सांभलजो चित्त लाई रे ॥ आतमध्यानें आतमा, ऋद्धि मिले सवि आई रे ॥ २ ॥ वी० ॥ ॥ अथ काव्यं ॥ द्रुतविलंबितवृत्तं ॥ विमल केवलभासनभास्करं, जगतिजंतुमहोदय कारणं ॥ जिनवरं बहुमानजलौघतः, शुचिमनाः स्नपयामि विशुद्धये ॥ १ ॥ अथ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं परमात्मनेऽनंतानंतज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमदर्हते पंचामृतं, चंदनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्ष

तान्, नैवेद्यं, फलं, वस्त्रं, वासं यजामहे स्वाहा ॥ इति प्रथमश्री अरिहंत पद पूजा ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय सिद्धपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ दूजी पूजा सिद्धकी, कीजें दिल खुसियाल ॥ अशुभ करम दूरें टले, फले मनोरथ माल ॥ १ ॥

॥ इंद्रवज्रावृत्तम् ॥ सिद्धाणमाणंद रमालयाणं, णमो णमोऽणंतचउक्कयाणं ॥ समग्ग कम्मक्खयकारयाणं, जम्मंजरा दुक्खनिवारयाणं॥१

॥ भुजंगप्रयातवृत्तम् ॥ निजानादिकर्माष्टकें क्षय करीने, जराजन्म मरणादि दूरें हरीने ॥ स्थिता सर्व लोकाग्र भागें विशुद्धा, चिदानंदरूपा स्वरूपें प्रसिद्धा ॥ १ ॥ निजानंदबोधादि युक्त प्रदेशा, निराबाधनानिर्वृता जे अलेशा ॥ निराकार साकार भावें महंता, भजो ते प्रमोदें सदा सिद्धसंता ॥ २ ॥ करी आठ कर्म क्षयें पार पाम्या, जरा जन्म मरणादि भय जेण वाम्या ॥ निरावरण जे आत्मरूपें प्रसिद्धा, थया पार पामी सदा सिद्ध बुद्धा ॥ ३ ॥ त्रिभागोनदेहावगाहात्मदेशा, रह्या ज्ञानमयजातवर्णादिलेशा ॥ सदानंद सौख्याश्रिता ज्योतिरूपा, अनाबाध अपुनर्भवादिस्वरूपा ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥ देशी उलालानी ॥ सकल करममल क्षय करी, पूरण शुद्ध स्वरूपो जी ॥ अव्याबाध प्रभुतामयी, आतम संपतिभूपाजी ॥ १ ॥ उलालो ॥ जेह भूप आतम सहज संपति, शक्ति व्यक्तिपणे करी ॥ स्वद्रव्यक्षेत्र स्वकालभावें, गुण अनंता आदरी ॥ स्वस्वभाव गुणपर्याय परिणति, सिद्धिसाधन परभणी ॥ मुनिराज मानस हंस समवड, नमो सिद्धमहागुणी ॥ २ ॥

॥ पूजा ॥ ढाल ॥ श्रीपालना रासनी देशी ॥ समयपएसंतर अणफरसी, चरम तिभाग विशेष ॥ अवगाहन लही जे शिव पहोता, सिद्ध नमो ते अशेष ॥ रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ६ ॥ पूर्व

प्रयोगनें गतिपरिणामें, बंधन छेद असंग ॥ समय एक ऊरधगति जेहनी, ते सिद्ध प्रणमो रंग रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ७ ॥ निर्मल सिद्ध शिलानी ऊपर, जोयण एक लोगंत ॥ सादि अनंत तिहां स्थिति जेहनी, ते सिद्ध प्रणमो संत रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ८ ॥ जाणे पण न सके कही पुर गुण, प्राकृत तिम गुण जास ॥ उपमा विण नाणी भवमांहे, ते सिद्ध दीयो उल्लास रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ९ ॥ ज्योतिशुं ज्योति मिली जस अनुपम, विरमी सकल उपाधि ॥ आतमराम रमापति समरो, ते सिद्ध सहज समाधि रे ॥भ०सि०॥१०

॥ ढाल ॥ रूपातीत स्वभाव जे, केवल दंसणनाणी रे ॥ ते ध्याता निज आतमा, होय सिद्ध गुण खाणी रे ॥ वी० ॥ ३ ॥ काव्यं ॥ विमल० ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ अ० ॥ प० ॥ सिद्धाय० ॥ पंचा० ॥ इति सिद्ध पदपूजा समाप्ता ॥ २ ॥

॥ अथ तृतीय आचार्य पद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ हिव आचारिज पदतणी, पूजा करो विशेष ॥ मोह तिमिर दूरें हरे, सूजे भाव अशेष ॥ १ ॥

॥ काव्यं ॥ इंद्रवज्रावृत्तम् ॥ सूरीणदूरीकयकुग्गहाणं, णमो णमो सूरसमप्पहाणं,॥ सद्देसणादाण समायराणं,अखंडछत्तीसगुणायराणं॥

॥ भुजंगप्रयातवृत्तम् ॥ नमुं सूरिराजा सदा तत्त्वताजा, जिनेंद्रागमें प्रौढ साम्राज्यभाजा ॥ षडवर्गवर्गित गुणें शोभमाना, पंचाचारनें पालवे सावधाना ॥ १ ॥ जिके पंच आचार पाले सुभावें, अनित्यादि सद्भावना नित्य भावे ॥ जिनेंद्रागमें ज्ञानदानें सुरत्ता, वहुभव्यमें जे रहे अप्रमत्ता ॥ २ ॥ छतीसेगुणें दीप्पमाना गणेशा, सदा शासनाधारभूता सुलेशा ॥ वहुभव्यलोकासुमार्गे नयंता, हुजो सूरिमुख्या सदा तेजवंता ॥ ३ ॥ भविप्राणिने देशना देश कालें, सदा अप्रमत्ता यथा सूत्र आले ॥ जिके शासनाधार दिग्दंतिकल्पा, जगत्ते चिरंजीवजो शुद्धजल्पा ॥ ४ ॥

॥ ढाल उलालानी देशी ॥ आचारिज मुनिपति गुणी, गुणछ त्रीशी धामो जी ॥ चिदानंदरस स्वादता, परभावें निःकामो जी ॥ १ ॥ उलालो ॥ निःकाम निर्मल शुद्ध चिदघन, साध्यनिज नि रधारथी ॥ निज ज्ञान दर्शन चरण वीरज, साधनाव्यापारथी ॥ जीव बोधक तत्त्वशोधक, सयलगुण संपति धरा ॥ संवरसमाधी गतउपा धी, दुविध तपगुण आगरा ॥ २ ॥

॥ पूजा ढाल ॥ श्रीपालना रासनी देशी ॥ पंच आचार जे सूधा पाले, मारग भांखे साचो ॥ ते आचारिज नमियें तेहशुं, प्रेम करी ने जाचो रे ॥ भवि० ॥ सि० ॥ ११ ॥ वर छत्रीश गुणें करी सोहे, युगप्रधान जग मोहे ॥ जग बोहे न रहे खिण कोहे, सूरि न मुं ते जोहे रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ १२ ॥ नित अप्रमत्त धर्म उवएसे, नहिं विकथा न कषाय ॥ जेहने ते आचारिज नमियें, अकलुष अमल अमाय रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ १३ ॥ जे दिये सारण वारण चो यण, पडिचोयण वली जनने ॥ पटधारी गच्छ थंभ आचारिज, ते मा न्या मुनि मनने रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ १४ ॥ अत्थमियें जिन सूरज केवल, चंदें जे जगदीवो ॥ भुवनपदारथ गटन पटु ते, आ चारय चिरंजीवो रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ १५ ॥

॥ ढाल ॥ ध्याता आचारिज भला, महामंत्र शुभ ध्यानी रे ॥ पंच प्रस्थानें आतमा, आचारिज होय प्राणी रे ॥ वी० ॥ ४ ॥ काव्यं ॥ विमल के० ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं अर्हं पर० ॥ आचार्या० ॥ पंचा० ॥ यजा० ॥ स्वा० ॥ इति तृतीय आचार्यपद पूजा समाप्ता ॥ ३

॥ अथ चतुर्थ उपाध्याय पद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ गुण अनेक जग जेहना, सुंदरशोभित गात्र ॥ उव ज्झाया पद अरचियें, अनुभवरसनो पात्र ॥ १ ॥

॥ काव्यं ॥ इंद्रवज्रावृत्तम्, सुतत्थ वित्थारणतप्पराणं ॥ णमो

णमो वायगकुंजराणं ॥ गणस्स संधारण सायराणं, सव्वप्पणावज्जि य मच्छराणं ॥ १ ॥

॥ भुजंगप्रयातवृत्तम् ॥ महासूत्रसिद्धांत सुद्धं करीने, पढावे सुशिष्या अनुग्रह धरीने ॥ करे पूजना लोक मध्यें त्वदीया, स्फुरंती हशी जास शक्ति स्वकीया ॥ १ ॥ गण सारथुद्धं सुहर्ष करंता, मुनिवर्गमध्यें प्रमादो हरंता ॥ पचीशे गुणें युक्तदेहा सुधुर्या, सदा वंदीयें ते उपाध्याय पूर्या ॥ २ ॥ नहीं सूरि पण सूरिगुणने सुहाया, नमुं वाचका त्यक्तमदमोहमाया ॥ वलि द्वादशांगादि सूत्रार्थ दानें, जिके सावधानें निरुद्धाभिमानें ॥ ३ ॥ धरे पंचने वर्गवर्गित गुणौघा, प्रवादि द्विपोच्छेदने तुल्यसिघा ॥ गुणी गच्छसंधारणे स्तंभभूता, उपाध्याय ते वंदियें चित् प्रभूता ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥ उलालानी देशी ॥ खंतिजुआ मुत्ति जुआ, अज्जव मद्दव जुत्ता जी ॥ सच्चं सोयं अकिंचणा, तव संजम गुणरत्ता जी ॥१॥ उलालो ॥ जे रम्या ब्रह्म सुगुत्ति गुत्ता, समिति समिता श्रुतधरा ॥ स्याद्वादवादें तत्त्ववादक, आत्मपर विभंजनकरा ॥ भवभीरु साधन धीरशासन, वहन धोरी मुनिवरा ॥ सिद्धांत वायण दान समरथ, नमो पाठक पदधरा ॥ २ ॥

॥ पूजा ॥ ढाल ॥ श्रीपालना रासनी देशी ॥ द्वादश अंग सज्झाय करे जे, पारग धारग तास ॥ सूत्र अर्थ विस्तार रसिक ते, नमो उवज्झाय उल्लास रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ १६ ॥ अथ सूत्रने दान विभागें, आचारिज उवज्झाय ॥ भव त्रण्यें जे लहे शिवसंपद, नमियें ते सुपसाय रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ १७ ॥ मूरख शिष्य निपाई जे प्रभु, पहाणने पल्लव आणे ॥ ते उवज्झाय सकलजन पूजित, सूत्र अरथ सवि जाणे रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ १८ ॥ राज कुमर सरिखा गणचिंतक, आचारिज पद योग ॥ जे उवज्झाय सदा ते

नमतां, नावे भवभय सोग रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ १९ ॥ बावना चंदन रस समवयणें, अहितताप सवि टाले ॥ ते उवज्झाय नमीजें जे वली, जिन शासन अज्जुवाले रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ २० ॥

॥ ढाल ॥ तपसज्झायें रत सदा, द्वादश अंगनो ध्याता रे ॥ उपाध्याय ते आतमा, जगबंधव जगभ्राता रे ॥ वी० ॥५॥ काव्यं॥ विमल० ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं अर्हं परमा०॥उपाध्याया०पंचा०यजा०४

॥ अथ पंचम मुनिपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ मोक्ष मारग साधन भणी, सावधान थयां जेह ॥ ते मुनिवरपद वंदतां, निर्मल थाये देह ॥ १ ॥

॥ काव्यं ॥ इंद्रवज्रावृत्तम् ॥ साहूण संसाहिअ संजमाणं, नमो नमो सुद्ध दयादमाणं ॥ तिगुत्तिगुत्ता णसमाहियाणं, मुणीणमाणं दपयट्ठियाणं ॥ १ ॥

॥ भुजंगप्रयातवृत्तम् ॥ जिके दर्शनज्ञान चारित्र रत्नें, करी मोक्ष साधे प्रधान प्रयत्नें ॥ सुमत्ती गुपत्ती धरे सावधाना, शुभाचार पाले हरे मोहमाना ॥ १ ॥ विवर्जे विकत्था प्रमादादिदोषा, जितेंद्रियपणे जे महाज्ञान कोशा ॥ शुभध्यान ध्यावे गणौघें समिद्धा, नमो ते सदा सर्व साधु प्रसिद्धा ॥ २ ॥ करे सेवना सूरिवायग गणीनी, करुं वर्णना तेहनी शी मुणिनी ॥ समेता सदा पंचसमितें त्रिगुप्ता, त्रिगुप्तें नही काम भोगेषु लिप्ता ॥ ३ ॥ वली बाह्य अभ्यंतर ग्रंथि टाली, होये मुक्तिनें योग्य चारित्र पाली ॥ शुभाष्टांग योगें रमे चित्त वाली, नमुं साधने तेह निज पाप टाली ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥ उलालानी देशी ॥ सकल विषय विष वारिनें, निःकामी निःसंगी जी ॥ भवदवताप समावता, आतमसाधन रंगी जी ॥१॥ उलालो ॥ जे रम्या शुभ स्वरूप रमणें, देह निर्मम निर्मदा ॥ काउस्सग्ग मुद्रा धीर आसन, ध्यान अभ्यासी सदा ॥ तप तेज दी

पे कर्म झीपे, नैव छीपे परभणी ॥ मुनिराज करुणासिंधु त्रिभु वन, बंधु प्रणमुं हित भणी ॥ २ ॥

॥ पूजा ॥ ढाल ॥ श्रीपालना रासनी देशी ॥ जिम तरु फूलें भमरो वेसे, पीडा तस न उपावे ॥ लइ रसने आतम संतोषे, तिम मुनि गोचरी जावे रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ २१ ॥ पंचेंद्रीने कषाय निरुंधे, षट कायक प्रतिपाल ॥ संयम सतर प्रकार आराधे, वंदूं ते ह दयाल रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ २२ ॥ अढार सहस शीलांगना धोरी, अचल आचार चरित्र ॥ मुनि महंत जयणायुत वांदी, की जें जनम पवित्र रे ॥ भ० ॥ सि० ॥२३॥ नवविध ब्रह्मगुपति जे पाले, बारसविह तप सूरा ॥ एहवा मुनि नमियें जो प्रगटे, पूरव पुण्य अंकूरा रे ॥ भ० ॥ सि० ॥२४॥ सोनानी परें परीक्षा दीसे, दिन दिन चढते वाने ॥ संजमखप करता मुनि नमियें, देश का ल अनुमानें रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ २५ ॥

॥ ढाल ॥ अप्रमत्त जे नित रहे, नवि हरखे नवि सोचे रे ॥ सा धु सुधा ते आतमा, शुं मूडे शुं लोचे रे ॥ वी० ॥ ६ ॥ काव्यं ॥ विमल० ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं अर्हं परमा० ॥ साधुभ्यो० ॥ पंचा० य० स्वा० ॥ इति मुनिपद पूजा ॥ ५ ॥

॥ अथ षष्ठ सम्यक्त्व दर्शन पद पूजा प्रारंभः ॥

॥ दूहा ॥ जिनवर भाषित शुद्धनय, तत्त्वतणी परतीत ॥ ते स म्यक दरसन सदा, आदरियें शुभरीत ॥ १ ॥

॥ काव्यं ॥ इंद्रावज्रावृत्तम् ॥ जिणुत्ततत्ते रुइ लख्खणस्स, नमो नमो निम्मलदंसणस्स ॥ मिच्छत्तनासाइसमुग्गमस्स, मूलस्ससद्ध म्ममहाद्दुमस्स ॥ १ ॥

॥ भुजंगप्रयातवृत्तम् ॥ अनंतानुबंधी क्षयादिप्रकारें, महामोह मिथ्यात्वने जेह वारे ॥ इगध्यादि भेदें करी वर्णवीजें, सडसठि भेद

॥ अथ नवम तपपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ कर्म काष्ठप्रति जालवा, परतिख अगनि समान ॥ तपपद पूजो भवि सदा, निर्मल धरियें ध्यान ॥ १ ॥

॥ काव्यं ॥ इंद्रवज्रावृत्तम् ॥ कम्मद्दुमुम्मूलण कुंजरस्स, नमो नमो तिव्वतवोभरस्स ॥ अणेगलद्धीणनिबंधणस्स, दुसज्जअत्थाणय साहणस्स ॥ १ ॥

॥ मालिनीवृत्तम् ॥ इय नव पय सिद्धं, लद्धि विज्जा समिद्धं ॥ पयडियसुरवग्गं, ह्रींतिरेहासमग्गं ॥ दिसिवइ सुरसारं, खोणि पीढावयारं ॥ तिजय विजय चक्कं, सिद्धचक्कं नमामि ॥ १ ॥

॥ भुजंगप्रयातवृत्तम् ॥ विधें जे कर्यो आतमा उज्जवाले, घणा कालनो कर्मराशि प्रजाले ॥ अनेकासुलद्धि लहे यत्प्रभावें, क्षमायुक्त ए साधु महानंद पावे ॥ १ ॥ वली बाह्य अभ्यितरें भेद भिन्नं, जिनेंद्रागमें वर्णव्युं जे अछिन्नं ॥ अनासं स्वभावें तिलोकें सुनंद्यं, नमुं ते प्रमोदें तपःपदमनिंद्यं ॥ २ ॥ इति जिनवर वंद्यं भक्तितोय स्तुवंति, परमपदनिधानं मानसे संस्मरंति ॥ परभवइह वा श्रीपालवन्मानवानां, प्रभवति किल तेषां चारुकल्याणलक्ष्मीः ॥ ३ ॥ त्रिकालिक पणे कर्म कषाय टाले, निकाचित पणे बांधियां तेह बाले ॥ कह्युं तेह तप बाह्य अंतर दु भेदें, क्षमायुक्त निर्हेतु दुर्ध्यान छेदे ॥ ४ ॥ होये जास महिमाथकी लब्धि सिद्धि, अवांछकपणे कर्म आवरणशुद्धि ॥ तपो तेह तप जे महानंद हेतें, होये सिद्धि सीमंतिनी जिम संकेतें ॥ ५ ॥ इस्या नवपद ध्यानने जेह ध्यावे, सदानंद चिद्रूपता तेह पावे ॥ वली ज्ञान विमलादि गुणरत्नधामा, नमुं ते सदा सिद्धचक्र प्रधाना ॥ ६ ॥

॥ मालिनीवृत्तम् ॥ इम नवपद ध्यावे, पर्म आनंद पावे, नव

भव शिव जावे, देव नरभव पावे ॥ ज्ञान विमल गुण गावे, सिद्ध चक्र प्रभावें, सवि दुरित समावे, विश्व जयकार पावे ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ उलालानी देशी ॥ इच्छारोधन तप नमो, बाह्य अभ्रितर भेदें जी ॥ आतमसत्ता एकता, पर परिणति उच्छेदे जी ॥ १ ॥ उलालो ॥ उच्छेद कर्म अनादि संतति, जेह सिद्धपणुं वरे ॥ योगसंग निद्राहार टाली, भाव अक्रियता करे ॥ अंतर मुहूरत तत्त्व साधे, सर्व संवरता करी ॥ निज आतमसत्ता प्रगट भावें, करो तप गुण आदरी ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ इम नवपद गुणमंडलं, चउ निख्खेप प्रमाणें जी ॥ सात नयें जे आदरे, सम्यगज्ञानें जाणे जी ॥ ३ ॥ उलालो ॥ निर्द्धारसेंती गुणे गुणणो, करे जे बहु मान ए ॥ तसु करण ईहा तत्त्व रमणें, थाय निर्मल ध्यान ए ॥ इम शुद्धसत्ता भल्यो चेतन, सकल सिद्धि अनुसरे ॥ अक्षय अनंत महंत चिद्घन, परम आनंदता वरे ॥४॥

॥ कलश ॥ इय सयल सुखकर गुणपुरंदर, सिद्धचक्र पदावली ॥ सवि लद्धि विज्जासिद्धिमंदर, भविक पूजो मन रली ॥ उवज्झायवर श्रीराजसागर, ज्ञान धर्म सुराजता ॥ गुरु दीपचंद सुचरण सेवक, देवचंद्र सुशोभता ॥ १ ॥ इति कलश ॥

॥ पूजा ॥ ढाल ॥ श्रीपालना रासनी देशी ॥ जाणंतां त्रिहुं ज्ञानें संयुत, ते भवसुगति जिणंद ॥ जेह आदरे कम खपेवा, ते तप शिवतरु कंद रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ४१ ॥ कर्म निकाचित पण खय जाई, क्षमा सहित जे करता ॥ ते तप नमियें जेह दीपावे, जिन शासन उजमंता रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ४२ ॥ आमोसही पमुहा बहु लद्धि, होवे जास प्रभावें ॥ अष्ट महासिद्धि नव निधि प्रगटे, नमियें ते तप भावें रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ४३ ॥ फल शिवसुख महोटुं सुर नरवर, संपति जेहनुं फल ॥ ते तप सुरतरु सरिखुं वंदूं,

शम मकरंद अमूल रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ४४ ॥ सर्व मंगल मांहि पहेलुं मंगल, वरणवियुं जे ग्रंथें ॥ ते तप पद त्रिकरण नित नमियें, वर सहाय शिव पंथें रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ४५ ॥ इम नवपद थुणतो तिहां लीनो, हुओ तन्मय श्रीपाल ॥ सुजस विलास छे चोथे खंडे, एह इग्यारमी ढाल रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ४६ ॥

॥ ढाल ॥ इच्छारोधें संवरी, परिणति समता योगें रे ॥ तप ते एहिज आत्मा, वर्ते निजगुण भोगें रे ॥ वी० ॥ १० ॥ आगम नोआगम तणो, भाव ते जाणो साचो रे ॥ आतम भावें थिर हुवो, परभावें मत राचो रे ॥ वी० ॥ ११ ॥ अष्ट सकल समृद्धिनी, घटमांहि रुद्धि दाखी रे ॥ तिम नवपद रुद्धि जाणजो, आतमराम छे साखी रे ॥ वी० ॥ १२ ॥ योग असंख्य छे जिन कह्या, नव पद मुख्य ते जाणो रे ॥ एह तणे अवलंबनें, आतम ध्यान प्रमाणो रे ॥ वी० १३ ॥ ढाल बारमी ए हवी, चोथे खंडे पूरी रे॥ वाणी वाचक जस तणी, कोइ नयें न अधूरी रे ॥ वी० ॥ १४ ॥

॥ काव्यं ॥ विमल० ॥ १ ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ अर्हं परमा० ॥ पंचा० ॥ तपसे० ॥ यजा० ॥ स्वाहा ॥ ९ ॥

॥ स्नात्र करतां जगतगुरु शरीरें, सकल देवें विमल कलश नीरें ॥ आपणा कर्ममल दूर कीधा, तेणें ते विबुध ग्रंथें प्रसिद्धा ॥ १ ॥ हर्ष धरि अप्सरावृंद आवे, स्नात्र करि एम आशीष पावे ॥ जिहां लगें सुर गिरि जंबुदीवो, अम तणा नाथ देवाधिदेवो ॥ २ ॥ इति बृहन्नव पद पूजा संपूर्णा ॥

॥ अथ नवपदजीकी आरति ॥

॥ जय जय जग जन वंछित पूरण, सुरतरु अभिरामी ॥ सु० ॥ आतम रूप विमल कर तारक, अनुभव परिणामी ॥ ज० ॥ १ ॥ जयजय जगसारा, भविजन आधारा ॥ भ० ॥ आरति पार उतारा,

सिद्धचक्र सुखकारा ॥ ज० ॥ २ ॥ जगनायक जगगुरु जिणचंदा, भज श्री भगवंता ॥ भ० ॥ आतमराम रमा सुख भोगी, सिद्धा जगवंता ॥ ज० ॥ ३ ॥ पंचाचार दिये आचारज, युगवर गुणधारी ॥ यु० ॥ धारक वाचक सूत्र अरथना, पाठक भवतारी ॥ ज० ॥ ४ ॥ शमदम रूप सकल गुणधारक, महोटा मुनिराया ॥ मो० ॥ दरिसण नाण सदा जय कारक, संजम तप भाया ॥ ज० ॥ ५ ॥ नवपद सार परम गुरु भाखे, सिद्धचक्र सुखकारी ॥ सि०॥ इह भव परभव रिधि सिधि दायक, भवसायर वारी ॥ ज०॥६॥ कर जोडी सेवक जस गावे, मनवंछित पावे ॥ म० ॥ श्रीजिनचंद चरणपरि पूजक, शिव कमला पावे ॥ ज० ॥ ७ ॥ इति नवपद आरति संपूर्णा ॥

॥ अथ पंचज्ञान पूजा ॥

॥ तत्र प्रथम मतिज्ञान पूजा ॥

॥ दूहा ॥ स्वस्तिश्री केलीसदन, नतसुर अलिझंकार ॥ नाभिनंदप दपद्मयुग, सुरुचिरमानसधार ॥१॥ निखिलजंतु सुखकारिणी, जिन वाणी उर धार ॥ पंचज्ञानपूजन तणो, कहिशुं विधि विस्तार ॥२॥

॥ ढाल ॥ सकल क्रियानुं मूल जे राजे, अद्भैतिक जसुमहिमा छाजे ॥ जे सहु दुरित तिमिर अपहारे, लज्जित कोटि दिनंद अवतारे ॥ १ ॥

॥ उलालो ॥ अवतार जसु मति नाण श्रुत पुन, स्वधि नाण वखाणियें ॥ मनभाव परिणति, विशद वेदन, मन पर्यय जाणियें ॥ वर अनंतानंत केवल, अपडिहय गइ जाण ए ॥ प्रतिपत्ति भेदें ज्ञान भाख्युं, जिनपती जगभाण ए ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ विंशति पदमांहे अष्टम पद ए, भावें वंदन करि भव तरियें ॥ नवपद सप्तमपद मन भायो, श्रीतीरथ पति श्री मुख गायो ॥ १ ॥

॥ दूहा ॥ योग्य देशथित वस्तु जे, विषय प्रगट प्रतिभास ॥ इंद्रिय मन कारण करी, भेद बत्तीस प्रकाश ॥ १ ॥ उपयोग क्रमते कह्यो, मति पूर्वक सुय नाण ॥ प्रथम पीठ भवि अरचियें, नमो नमो मइ नाण ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ समकित उतपति कालें मतिश्रुत, लबधें होय समकालें ॥ सुयनिस्सिय पुनरुस्सुय निस्सिय, भेदें सुय अजुवाले रे ॥ भविका श्रीमइनाण ते वंदो, वंदीने चिर नंदो रे ॥ भ० ॥ समकित रसनो कंदो रे ॥ भ० ॥ शिवतरुबीजनो वृंदो रे ॥ भ० ॥ श्रीमइ० ॥ ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ अष्टाविंशतिधा सुय निस्सिय, अत्थुग्गह ईहावाय ॥ धारण ए चउ पण इंद्रियमण, करि चउविंशति थाय रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ २ ॥ नयन मनोविन इंद्रिय सारू, वंजणुगह चउभेय ॥ उप्पइया वेणइया कम्मिय, पारिणामिय अवसेय रे ॥ ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ३ ॥ उग्गह इक्कसमय ईहावाय, अद्ध मुहुत्तम संख ॥ संखकाल धारण उक्किठ, अरचो एह निकंख रे ॥ भ० ॥ ॥ श्री० ॥ ४ ॥

॥ शार्दूलविक्रीडितवृत्तद्वयम् ॥

॥ लोकेऽवग्रह ईहनं पुनरपायो धारणे वै चतु, र्भेदैः क्षिसमवग्रहोप्युभयथाथो व्यंजनातोऽर्थतः ॥ त्वङ्ना सारसनाश्रवोभिरथ सा वेदोन्मिता व्यंजना, षोढार्थोपिमनोक्षियुक्तरसनात्वग्घ्राणकर्णैः स्फुटम् ॥ १ ॥ षोढे हापि तथेंद्रियैश्च मनसापायोऽपि षोढा तथा, षोढैवं खलु धारणापि च मतिज्ञानं किलेत्थं च यत् ॥ अष्टाविंशतिधा मतं नवपदे गंधादिभिः पूजनं, द्रव्यैरष्टभि रर्चयामि तदहं भक्त्या शिवायामलम् ॥ २ ॥

॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीमतिज्ञानाय जलं चंदनं पुष्पं धूपं दीपं अक्षतान् नैवेद्यं फलं यजामहे स्वाहा ॥ इति ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय श्रुतज्ञान पूजा ॥

॥ दूहा ॥ सर्वद्रव्यगुणपर्यय, प्रकटकरण दिनकार ॥ अगम अपार अनंत श्रुत, गुणगण रयणाधार ॥ १ ॥ अभिलापे प्लावित अरथ, ग्रहणहेतु चिदनूप ॥ समकित मिथ्यातें करी, बोधाबोध सरूप॥२

॥ राग सामेरी ॥ पूजो रे भवि श्रीश्रुतज्ञान उदार ॥ पू० ॥ तीरथपतिपद लहि भविजनके, यातें करत उधार ॥ पू० ॥ १ ॥ अख्खर सन्नी सम्मं साई, सपर्यवसित शुभभावें ॥ गमियं अंगपविठ्ठ ए चउदह, भेद विपर्यय भावे ॥ पू० ॥ २ ॥ पर्यायादिक समास सहित यह, विंशतिधा पुन होवे ॥ सर्व चरण करण क्रियाधार, पातककलिमल खोवे ॥पू०॥३॥ इक इक श्रुत अक्षरना करतां, स्व पर विभाग विचार ॥ होवे पर्ययराशि अनंती, सा मेरी मति धार ॥ पू० ॥ ४ ॥

॥ पृथ्वीवृत्तम् ॥ यदक्षरमथोभिधावद्दतमादियुक्तं ततः, सपर्यवसितं च वै गमिकमंगविष्टं तथा ॥ नञा सह समासतः पुनरिमानि चेत्थं श्रुतं, चतुर्दशविधं यजे नवपदे शुभैरष्ठभिः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ श्रीमते श्रुतज्ञा० ज० ॥ इति श्रु० पूजा ॥ २ ॥

॥ अथ तृतीय अवधिज्ञान पूजा ॥

॥ दूहा ॥ द्रव्य क्षेत्र पुन काल अरु, भावें विपय प्रमाण ॥ वेदे रूपी द्रव्यकों, नमो नमोऽवधिनाण ॥ १ ॥

॥ कुण खेले तोसुं होरी रे ॥ ए देशी ॥ अवधिज्ञान नित भजियें रे, निज विमल भक्तिसें ॥ अ० ॥ अनुगामी ते देशांतरगत, ज्ञानीने अनुगमियें रे ॥ नि० ॥१॥ जिम बहु बहुतर दारु प्रक्षेपें, ज्वाला जलन वधेयें रे ॥ नि०॥ सुविमल विमलतराध्यवसायें, वर्द्धमान जग जयियें रे ॥ नि० ॥ २ ॥ प्रतिपातीतें एक कालमें, दीप इवास्तंगमीयें रे ॥ नि० ॥ सइतरभेदे गुणकारण यह, छद्धा

ओही कहियें रे ॥ नि० ॥ ३ ॥ भव प्रत्ययि ते बहुतर भेदें, सुर निरि भवमां गहियें रे ॥ नि० ॥ परमावधि अभिरामचंद्रोदयें, निश्चें केवल लहियें रे ॥ नि० ॥ ४ ॥

॥ शार्दूलविक्रीडितवृत्तम् ॥ यच्चैकं ह्यनुगामि चान्यदुदितं संवर्द्धमानं तथा, तार्तीयं प्रतिपात्यमूनि हि पुनर्नञ्पूर्वकाणीदृशम् ॥ षोढारूपि पदार्थमात्रविषयं श्रीसिद्धचक्रेऽनघे, द्रव्यैरष्ठभिरादरात्तदवधिज्ञानं शुभैरर्चये ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ श्रीमते अव० ॥ ज० य० ॥ इति अवधिज्ञान पूजा ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्थ मनःपर्यवज्ञान पूजा ॥

॥ दूहा ॥ जे सप्तम गुणठाण थित, ऋद्धिमंत मुनिराय ॥ उपजें तस ऋजुविपुलमति, भेदें मनपर्याय ॥ १ ॥ मूर्त्तवस्तु अवलंबि यह, द्रव्य क्षेत्र अरु काल ॥ भावें चउहा जाणिये, अरचि लहो सुख माल ॥ २ ॥

जिनराज नाम तेरा ॥ ए देशी ॥

॥ मनपर्यवाभिधानं, गुणरत्नके निधानं, पूजो रे भविक शुभ भावें ॥ १ ॥ घटमात्र बोधकर्त्ता, सामान्य भावधर्त्ता, संसारभीति हर्त्ता ॥ पू० ॥ २ ॥ सार्द्ध द्वय दीवसागर, सन्नीपंचिंदिआगर, मन भावके दिवाकर ॥ पू० ॥ ३ ॥ मनद्रव्यके अशेष, गुणपर्ययादिशेष, स्फुटभासिते विशेष ॥ पू० ॥ ४ ॥

॥ शिखरिणीवृत्तम् ॥

॥ मनःपर्यायाख्यं विपुलमति चान्यदृजुमति, द्विधेत्थं यद् ज्ञानं हृदयगतभावप्रकटनम् ॥ सुसंज्ञावत्पंचेन्द्रियविषयिरम्यैर्नवपदे, यजे पूजाद्रव्यैस्तदहमधुना मंगलकरम् ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ श्रीमनःपर्ययज्ञानाय जलं चं० यजामहे स्वाहा ॥ इति मनःपर्यय० ज्ञान पूजा ॥४॥

॥ अथ पंचम केवलज्ञान पूजा ॥

॥ दूहा ॥ शुद्ध असाधारण सकल, निर्व्याघातानंत ॥ एक सकल साकार फुनि, केवल नंतानंत ॥ १ ॥ पंचमगति दातार यह, पंचमज्ञान उदार ॥ भवि भावें अर्चन करी, लहो परम सुख सार ॥ २

॥ केवल नाण उदार, यातें आनंद अधिक अपार ॥ आ० ॥ भवसिद्धस्थ दुभेद, तस अंतर बहुतरभेद, तेतो वरणें किमुकविवार ॥ के० ॥ १ ॥ रवि जिम अमल प्रकाम, द्रव्यसकल परिणाम, तस सत्ता विज्ञतिकार ॥ के० ॥ २ ॥ काल त्रय अनुसारें, निज निज वेद्य आकारें ॥ प्रतिविवित्त होय तिणवार ॥ के० ॥ ३ ॥ क्षेत्रथी लोकालोक, अभिरामचंद्रोदयालोक, यातें परमानंद अपार ॥के०॥४

॥ शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ॥ सम्यक्त्वं समुपैति शुद्धमखिलं, यस्माज्जगद्भासते, साक्षाद्धस्तगतं त्रिकालजनितं वृत्तं स्फुरत्यंजसा ॥ जायंतेऽतुलसिद्धयो नवपदे द्रव्यैः शुभैः केवल, ज्ञानं तत् परिपूजयामि सततं भावैरनंत महत् ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं समस्तलोकालोकप्रकाशकाय श्रीकेवलज्ञानाय जलं चंदनं पुष्पं यजामहे स्वाहा ॥ इति पंचज्ञान पूजा ॥

॥ अथ पांच ज्ञान पूजाकी आरति ॥

॥ जय जगसुखकारी ॥ वारी जय समपद चित धारी ॥ आरति करूं सारी ॥ जय० ॥ अष्टाविंशति भेद करीनें, मतिज्ञान राजे ॥ म० ॥ ध्यावत पूजत भवि जन केरा, भवसंकट भाजे ॥ जय० ॥ १ ॥ भेद चतुर्दश अथवा विंशति, प्रवचनपति दाखे ॥ प्र० ॥ श्रीश्रुतज्ञानकी महिमा जिनवर, स्वमुखथी भाखे ॥ जय० ॥ २ ॥ रूपिद्रव्य विषयि मर्यादा, करि अवधी सोहे ॥ क० ॥ भेद षटक संख्याती तीजा, भविजन मन मोहे ॥ जय० ॥ ३ ॥ तुर्यज्ञान मनपर्यव कहियें, भेदयुगम लहिये ॥ भे० ॥ रुजुमति विपुलमति सर

दहियँ, न्यूनाधिक गहियें ॥ जय० ॥ ४ ॥ लोकालोकांतर्गत वस्तु, गुण पर्यवभासी ॥ गु० ॥ केवल एक सहायअनंते, भए निर्वृति वासी ॥ ज० ॥ ५ ॥ पंचज्ञानकी आरति करतां, भवआरति छीजे ॥ भ० ॥ जिम वरदत्तकुमर गुणमंजरी, तिम भक्ति कीजे ॥ जय० ॥ ६ ॥ बृहत भट्टारक खरतरपति, जिनहंस सूरिराया ॥ जि० ॥ ततपदकज मधुकरकंचननिधि, आनंद वरताया ॥ ज० ॥ ७ ॥ इति आरति ॥

॥ अथ आरति ॥

॥ जय जय आरति ज्ञानदिनंदा, अनुभव पद पावन सुखकंदा ॥ तीन जगतके भाव प्रकाशक, पूरण प्रभुता परम आनंदा ॥ जय० ॥ १ ॥ मति श्रुत अवधि अने मनपर्यव, केवल काटे सब दुखदंदा ॥ जय० ॥ २ ॥ भवजल पार उतारण कारण, सेवो ध्यावो भविजनवृंदा ॥ जय० ॥ ३ ॥ शिवपुरपंथ प्रगट ए सीधा, चौमुख भाखे श्री जिनचंदा ॥ जय० ॥ ४ ॥ अविचल राजहीयासे पावे, चिदानंद निजतेज अमंदा ॥ जयजय आरति ज्ञानदिनंदा, अनुभव० ॥ इति ॥

॥ अथ ॥

॥ शिवचंद्रोपाध्याय कृत नंदीश्वरद्वीप पूजा ॥

॥ तत्र ॥

॥ प्रथम न्ह्वण पूजा ॥

॥ दूहा ॥ स्वस्तिश्री सुखकरण घन, विघनहरण जयकार ॥ अश्वसेन नंदन चरण, शरण रुचिर उरधार ॥ १ ॥ जिनवाणी समरण करी, सकलजीव सुखकार ॥ कहिशुं नंदीश्वर जगत, पति पूजन विस्तार ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ तीर्च्छा अखिलद्वीप शिरताजे, अष्टम नंदीश्वर द्वीप छाजे ॥ वलयाकार जगत सुखकारी, निरुपम अतिशय गुण मणिधारी ॥ १ ॥

॥ उलालो ॥ मणिधारि बावन, विमल गिरिवर, जैनमंदिर युत सदा ॥ शुभभक्ति धर, निर्जरपुरंदर, निरखि पामे संपदा ॥ इक कोडि शतत्रिण, सठिकोडिय, चोरासीलख योजना ॥ इण द्वीपनो, चक्रवाल विष्कंभ, मान जाणो भो जना ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ इण द्वीपें पूरव दक्षिण आसा, पश्चिम उत्तर दिशि चउपासा ॥ चतुरंजन गिरिसुखमा धारी, चारणसुर विद्याधरचारी॥२

॥ उलालो ॥ धरचारि निज दुति, भरवि निर्जित, सजल जलधर घनघटा ॥ वलि चतुरशीति, सहस्र योजन, तुंगता धरता स्फुटा ॥ इण प्रवर अंजन, शिखरि शिखरें, शाश्वतां जिनमंदिरां ॥ चउसंख्य सुंदर, कनक कलशो, पमधरा जग सुखकरा ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ इक इक अंजनगिरि चउपासा, चउपुक्करिणी प्रगट प्रकासा॥ विस्तर इगलख योजनसारा, तासुमांहि इक इक्क उदारा॥३

॥ उलालो ॥ इक इक उदारा, सहस्र चउसठि, योजनोन्नतताकुला ॥ जिनराज मंदिर, मंडिता सहु, चंद्र किरण समुज्ज्वला ॥ दधिमुख धरा, धरदीर्घिका प्रति, विदिशि दोय दोय रतिकरा ॥ दश सहस्र योजन, उन्नताधर, उदय करुणारुणवरा ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥ जिनमंदिर युत रतिकर विमला, पूरवदिशि तेरस सहु अमला ॥ यह रीतें पर त्रिण दिशि जाणो, इम बावन्नगिरी इ वखाणो ॥ ४ ॥

॥ उलालो ॥ इ वखाण शत, योजन सुदीर्घा, बहुत्तर योजन प्रमा ॥ अति उन्नता, पंचास योजन, विस्तरा निजगृहसमा ॥ शत्

एक अष्टो, त्तर प्रमाणा, पंचशत धनुरुन्नता, इण रीति प्रति, प्रासाद प्रतिमा, जाणियें बिंब शाश्वतां ॥ ४ ॥

॥ दूहा ॥ ऋषभानन चंद्रानना, वारिषेण वर्धमान ॥ ए जाणो शाश्वत सकल, जिनप्रतिमा अभिधान ॥ १ ॥ सुरगिरि शिखरें जिन तणो, जिनन्हवणोत्सव सार ॥ करिके नंदीश्वर जई, हरिगण विबुध उदार ॥ २ ॥ अनुभव रसयुत भक्तिवर, हृदय सरोज मझार ॥ इण परि शाश्वत जिनतणी, करे पूज अति सार ॥ ३ ॥ पूरवदिशि अंजनगिरी, मंदिरगत जिनराज ॥ अडविधि पूजायें सदा, अरची जें हित काज ॥ ४ ॥ प्रथम पूज जिन राजनी, विमल जलें भर पूर ॥ करियें न्हवण सदा भवी, होय सकल दुःख दूर ॥ ५ ॥

॥ कुंदकिरण शशिऊजलोजी देवा ॥ ए देशी ॥

॥ मिलि करि सकल सुरासुरा रे वाला, निज सेवक सुर पासें रे ॥ क्षीर जलधि मागधथकी रे वाला, सिंधुनदी गंगासें रे ॥ १ ॥ वलि वरदाम सुतीर्थसें रे वाला, विमल सलिल अणावे रे ॥ मणि कनकादि कलश भरी रे वाला, ओषधि कुसुम मिलावे रे ॥ २ ॥ इंद्रादिक सहु सुरगणा रे वाला, शाश्वत जिन न्हवरावे रे ॥ विमल सलिल धारा करी रे वाला, कुमति तापने गमावे रे ॥ ३ ॥ इण परि जे भगतें भवी रे वाला, न्हवण करे जिन अंगें रे ॥ ते सुर वर सुख अनुभवी रे वाला, लहे शिवपद मन रंगें रे ॥ ४ ॥ द्रव्य पूज करि सुरवरा रे वाला, करे जिणंद गुणगाना रे ॥ कुशल कुमुद विकसायवा रे वाला, प्रभु शिवचंद समाना रे ॥ ५ ॥

॥ काव्यं ॥ दुरितदावघनातपवारणं, सकलभावविकासनकारणम् ॥ जगति भव्यभवोदधि तारणं, जिनगणं स्नपयाम्यमलैर्ज्जलैः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं। श्रीअर्हं परमात्मेभ्यो अनंतानंतज्ञानशक्तिभ्यः प्रणतसकलसुरासुरेंद्रवृंदविहितभक्तिभ्यः कठिनकर्म्मशालमालोन्मूलनच

रणेभ्यो जन्मजरामृत्युनिवारणकारणेभ्यो नंदिश्वराष्टमद्वीपगतपूर्वां जनगिरिशिखरस्थसिद्धायतनमंडनाय मानेभ्यः श्रीरुषभाननचंद्रान नवारिषेणवर्द्धमानाभिधानाष्टोत्तरैकशतशाश्वतजिनेंद्रेभ्यो जलं यजामहे स्वाहा ॥इति प्रथम जल पूजा ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय चंदनपूजा ॥

॥ दूहा ॥ द्वितीयपूज जिनराजकी, करहुं भक्ति भर सार ॥ वरसु गंध द्रव्यें करी, तरहुं सिधु संसार ॥ १ ॥

॥ मेघ वरसे भरि पुष्फवादल करी ॥ ए देशी ॥ भक्ति धरि भविक जन, पूज महाराजकुं, एह वर गंध द्रव्यें सदाई ॥ विमल घन सार, चंदन सरसमृगमदा, कुंकमें कर विलेपन सुदाई ॥ भ० ॥ १ ॥ जे भवी सुरभितर गंधद्रव्यें करी, सुरभितनु करे, जिनराज केरो ॥ तेहनी चंद्रकर, अमल यशवासना, सुरभितम करइ, सहु जग घणेरो ॥ भ० ॥ २ ॥ एम वर सुरभितर, द्रव्यसें सुरवरा, अरच करि जगपती विंब सारा ॥ परमशुभ भावना, भावता गावता, विशद जिनवर गुणा अति अपारा ॥ भा० ॥३॥ सकलसुरगण मिली, एम जंपे मुदा, भो सुरा आज जिनराज अरचो ॥ विरति गुण रहित निज, जन्म सफलो कियो, सुमति संयोग दुरमति विमूचो ॥ भ० ॥ ४ ॥ दुतिय इम पूज, करतां हरे भव्यनो, पापघनताप आपें अपारा ॥ स्वर्ग निरवाण, पुरपंथ प्रकटीकरण, विशदशिव चंद्रकरगण उदारा ॥ भ० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ काव्यं ॥ मृगमदोज्ज्वल कुंकुम चंदनै, श्चिरतनांतरतापनिकंदनैः ॥ जिनवरानघतामसभास्करान्, स्वहितवृद्धिधये च समर्चये ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीअर्हं परमात्म० प्रणत०कठिन० नंदीश्वरा० रु० चंद्रा० वारि० वर्द्धमानाष्टोत्तरैकशत शाश्वत जिनें० चंदनं यजामहे स्वाहा ॥ इति द्वितीयचंदन पूजा ॥ २ ॥

॥ अथ तृतीय पुष्पपूजा ॥

॥ दूहा ॥ तृतीयपूज जिनराजनी, विकसित अतिहि रसाल ॥ सुरभिकुसुम करि भविय जन, करियें भक्ति विशाल ॥ १ ॥

॥ पांच वरणी अंगी रची ॥ ए देशी ॥ एह जिनकी पंकहरणी भगति सारी, मिलकर हरिवर सकल सुरासूर, त्रिकरण इक करि हितकारी ॥ एह० ॥ १ ॥ अनुभवरस युत चित्त भक्ति धरि, पूरव पुण्य उदय भारी ॥ एह० ॥ इणविध कुसुम भक्ति जिनवरकी, करइ हरइ घन दुरितारी ॥ ए० ॥ २ ॥ मालती, नागपुन्नाग के वडो, दमणक कुंद सुगंधधारी ॥ एह० ॥ मरुक केतकी पद्म सो गरा, कुसुममाल करि मनुहारी ॥ ए० ॥३॥ जिनवर कंठ ठवे प्रभु आगल, कुसुमपुंज धरि दुःख वारी ॥ ए० ॥ इणविध पुष्प भक्ति करि भवि जन, वरइ सकल जग सिरनारी ॥ ए० ॥ ४ ॥ करिकें शुक्लध्यान पावकसें, भस्म विषम सम कर्म वारी ॥ ए०॥ चिदानंदघनशिवचंद्रोपम, पामे अतिगुण विस्तारी ॥ ५ ॥

॥ काव्यं ॥ भवदवानलतापघनाघनं, कुशलचंदननंदनकाननम् ॥ विशदशारदचंद्रसमाननं, जिनगणं कुसुमैश्च समर्चये ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्री अर्हं परमात्मभ्यो ऽनंता० ॥ प्रणत० कठिन० नंदी० श्री ऋष० चंद्रा० वारि० वर्द्ध० भिधान अ० जिनेभ्यो पुष्पं यजामहे स्वाहा ॥ १ ॥ इति ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्थ धूप पूजा ॥

॥ दूहा ॥ जगनायक जिनचंदनी, एह चतुर्थी जाण ॥ धूपपूज करियें सदा, हरियें कुमति अनाण ॥ १ ॥

॥ सुब अरातिमथनमुदारधूपं ॥ ए देशी ॥ जग कुशलकारि अघालि हरणं, धूपपूज उदार रे ॥ धूप अनलें कुगति दुःखभर, फलद दहन अपार रे ॥ ज० ॥ १ ॥ सरस चंदन अगर अंबर, मृगमदा

घनसार रे ॥ कुंदरुक्कबली सेलारस, करियें गंधवटि सार रे ॥ ज० ॥ २ ॥ रतनमय वर धूपधाणो, धूप भृत कर धार रे ॥ सुर पुरंदर पूज करतां, लहे लाभ अपार रे ॥ ज० ॥ ३ ॥ धूप परिमल मह महे जिम, तेम भुवन मझार रे ॥ धूपपूजा ते भविकनो, गुण सु गंधि विचार रे ॥ ज० ॥ ४ ॥ भव अंधकूप पतंत उधरत, धूप अरचन धार रे ॥ कहत गणि शिवचंद पाठक, पूजा चतुर्थी सार रे ॥ ज० ॥ ५ ॥

॥ काव्यं ॥ भव सुदुस्तर वारिधि तारणं, विषयसौख्यविकारनिवारकम् ॥ निरुपमोत्तरमंगलकारकं, जिनगणं श्रुतधूपकरायते ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अँर्ह परमात्म० प्रणत कठिन० ॥ नंदीश्वरा० श्रीरिष० चंद्रा० वारि० वर्द्धमानाभिधान अ० धूपं य० ॥ इति ॥ ४ ॥

॥ अथ पंचम दीप पूजा ॥

॥ दूहा ॥ दीप पूज इह पंचमी, करियें विविध प्रकार ॥ दीप पूज करतो भविक, दीपे जगत मझार ॥ १ ॥

॥ तेरी पूजा बणी ते रसमें ॥ ए देशी ॥ मेरी लगीय प्रीत प्रभु चरणे ॥ निजगुण परिणति करण करावण, सकल लोक सुखकरणे ॥ मे० ॥ १ ॥ गहिर सिंधुभव निपतित तारण, तरण तरणि गुण धरणे ॥ मे० ॥ अनंत रूपधर दुर्गति भयहर, परम ज्योति अधिकरणे ॥ मे० ॥ २ ॥ करुणाधार विमल गुण आगर, निरुपम अशरण शरणें ॥ मे० ॥ ए जिनचरण दीप पूजनसें, अर्चीजें दुख हरणे ॥ मे० ॥ ३ ॥ केवल विमल चिदानंद लहियें, दीप पूज के करणे ॥ मे० ॥ रतन दीपसें करें आरती, हरिगण जिनगुण चरणे ॥ मे० ॥ ४ ॥ ए प्रभु चरण सेव भविजनकुं, अमृत पद सुवितरणें ॥ मे० ॥ कुमति रजनि अज्ञान तिमिर हर, वर शिवचंद्र सुकिरणे ॥ मे० ॥ ५ ॥

॥ काव्यं ॥ मदनसिंधुरसिंधुरवैरिणं, गुरु कषायकरेणुसमीरणम् ॥ मदधराधरताबल वैरिण, जिनगणं प्रयजे वरदीपकैः ॥ ॥ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमा० प्रणत० कठिन० नंदीश्वरा० श्रीरुषभ० चंद्रा० ॥ वारि० ॥ वर्द्धमान अ० दीपं० यजामहे स्वाहा ॥ इति ॥ ७ ॥

॥ अथ षष्टाक्षत पूजा ॥

॥ दूहा ॥ छट्ठी अक्षत अरचना, करियें धरि शुभ भाव ॥ वरियें सिद्धवधू परम, अक्षय सुखनो दाव ॥ १ ॥

॥ हांहो रे देवा बावना चंदन घसि कुमकुमा ॥ ए चाल॥ हांहो रे वाला ए जगदीसर हितकरू, अलवेसर जिन माहाराज ए ॥ अतिगहिरा भवजलधितें, प्रभु तारण तरण जिहाज ए॥ हां० ॥१॥ भीमकरम कुंजर घटा, भंजन मृगराज समान ए॥ हांहो रे वाला भव्यकमल प्रतिबोधवा, ए प्रभुवासर महिरान ए ॥ हां० ॥ २ ॥ रजत शालि तंदुलमयी, अक्षत पूजन अग्रसार ए ॥ ए पूजा जिन चंदनो, वांछित सुखनी दातार ए ॥ हां० ॥ ३ ॥ ठवण जिनंद दरिसण अछे, अनुभव रसतरुनो कंद ए ॥ भाव जिणेसर दरसनो, कारण कह्यो सकल जिणंद ए ॥ हां० ॥ ४ ॥ ए पाठक शिवचंद ने, जिन चरण शरण आधार ए ॥ प्रतिभव हुय जो ए कही छट्ठी, अक्षत पूजा सार ए ॥ ५ ॥

॥ काव्यं ॥ विजितमंदरभूधरधीरतं, निहत सागरराजगभीरतम् ॥ प्रजितपातकयोधसुवीरतं, जिनगणं प्रयजेऽक्षतपूजया ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं परमात्मभ्यो अनंता० प्रणत० कठिन० नंदीश्वरा० श्रीरुष० चंद्रा० वारिषेणवर्द्धमानाभिधानाष्टोतरैक० जिनें० अक्षतान् यजामहे स्वाहा ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ अथ सप्तम नैवेद्य पूजा ॥

॥ दूहा ॥ हिव पूजा नैवेद्यनी, सप्तम अतिहि विशाल ॥ करियें जिनवरनी अचल, लहियें मंगल माल ॥ १ ॥

॥ राग ॥ जिनगुणगानं श्रुतअमृतं ॥ ए देशी ॥ जिनवर दरसण वर अमृतं ॥ आंकणी ॥ ए जिन दरिसण अमृत फरसे, भवि तजि मिथ्या अवगुणतं ॥ जि० ॥ १ ॥ जगदीसर परमात्मदशापद, पामे अनुपम कांचनतं ॥ तिणसें सुरपति प्रभुदरिसण वरि, भगतें गावे जिनचरितं ॥ जि० ॥ २ ॥ मोदक घृत वरखज्जक परमुख, वरनैवेद्य सरस धरितं ॥ हरिगण जगप्रभु आगल ढोवे, मणिमय कनक थाल भरितं ॥ जि० ॥ ३ ॥ जे नैवेद्य करी जिनपूजन, करइ तेह जगमन हरितं ॥ अतिही स्वादु सुरगति शिवपद सुख, ततिनित सेवे भवि तुरितं ॥ जि० ॥ ४ ॥ विंशति पदमें ये जिनपति पद, वर शिवचंद विमल अमितं ॥ इणपद सेवक भविजन केरो, संचित भूरि हरइ दुरितं ॥ जि० ॥ ५ ॥

॥ काव्यं ॥ अनंतविज्ञानमयस्वरूपं, समस्तलोकत्रयभूतिभूपम् ॥ लसद्गुणौघामृत चारुकूपं, यजे सुनैवेद्यचयाज्जिनौघम् ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं परमात्मेभ्योऽनंता० प्रणत० कठिन० नंदी० श्रीऋष० चंद्रा० वारि०. वर्द्धमानाभिधानाष्टोत्तरैकशत जिनेभ्यो० नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति ॥ ७ ॥

॥ अथाष्टम फल पूजा ॥

॥ दूहा ॥ जिनफल पूजा अष्टमी, कष्टअनिष्टविदार ॥ करियें शुभभावें सदा, भरिये पुण्य भंडार ॥ १ ॥

॥ तेजतरणि मुख राजे ॥ ए देशी ॥ सुरनायक जस गावे, जिनजीको ॥ सुर० ॥ ए आंकणी ॥ निरमल मनवच काय करणतें, लुलिलुलि शीश नमावे ॥ सुर अवतार सफल भयो मेरो, जिनपूजन सुपसावे ॥ जि० ॥१॥ नयनचकोर चंद्र सम ज्योती, संचित दूर पुलावे ॥ निरखि निरखि मनमोहन मूरति, आनंद अंग न मावे ॥ जि० ॥ २ ॥ नालिकेर नारंगी कवला, केलां आम्र अणावे

॥ पूगीफल दाडिम परमुख फल, जिनवर चरण चढावे ॥ जि० ॥ ३ ॥ जे भवि फलपूजा जिनवरकी, करे करावे भावे ॥ अनुमोदे ते परमचिदानंद, घनअमृत फल पावे ॥ जि० ॥ ४ ॥ वरस अढार छिहोत्तर जेठें, प्रतिपद सुकल सोहावे ॥ चंद्रसूनुवासर जय नगरे, खरतर गच्छ जग चावे ॥ जि० ॥ ५ ॥ श्रीजिनहर्ष सूरि सूरीस्वर, विजयमान वड दावे ॥ रूपचंद गणिपाठक पारी, वादींद्र बिरुद धरावे ॥ जि० ॥ ६ ॥ तास शिष्य वाचक पुण्यशील शिष्य, समयसुंदर कहिरावे ॥ तासु शिष्य पाठक शिव चंदें, पूज रची मन भावें ॥ जि० ॥ ७ ॥ जे नंदीश्वर शाश्वत जिनकी, वसुविध पूज रचावे ॥ ते जन सकल लोकके ईश्वर, तीर्थंकरपद पावे ॥ जि० ॥ ८ ॥

॥ काव्यं ॥ कलश ॥

॥ सुरपति सुरासुर, वृंद वंदित, चरण पंकजमघहरं ॥ सद्वीप नंदीश्वर जिनालय, परमतर सुख माकरं ॥ अति निशद हिमकर, चंद्रिका मल, निखिल गुण मणि सागरं ॥ जिनराज गणमह, मर्चये वर, फल चयैः करुणाकरं ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मेभ्यो ऽनंता प्रणतस० कठिन० नंदीश्वरा० श्री रुष० चंद्रानन० वारि० वर्द्धमा नाभिधानाष्टोत्तरैकशतशाश्वत जिनेंद्रेभ्यः फलं यजामहे स्वाहा ॥ इत्यष्टम० ॥ ८ ॥

॥ दूहा ॥ पूरव दिशि अंजनगिरी, मंदिरगत जिनराज ॥ अडविधि पूजायें सदा, अरचीजें हितकाज ॥ १ ॥ पूरव परमुख चिहुं दिसे, पुक्करणी अभिराम ॥ दधिमुख चउमंदिर जिना, अरचीजें शुभ काम ॥ २ ॥ ईशानादि विदिशिगत, वसुरतिकर गिरिराज ॥ मंदिरगत जिनराजकी, करियें पूज समाज ॥ ३ ॥ दक्षिण अंजनशैलमें, चउ दिशि दधिमुख सार ॥ चउमंदिर जिनराजकी, करियें पूज उदार ॥ ४ ॥ दक्षिण दिशि अंजन गिरी, मंदिरगत जिनराज ॥ वसुविधि

पूजायें सदा, पूजीजें हित काज ॥ ५ ॥ दक्षिण ईशानादिकें, विदिशें अतिहि उदार ॥ अड रतिकर गिरिवर जिना, पूजो विविध प्रकार ॥ ६ ॥ पश्चिम दिशि अंजन गिरो, मंदिर जिन महाराज ॥ वसुविधि पूजायें सदा, पूजो भविक समाज ॥ ७ ॥ पश्चिम अंजन शैलनें, चउदिशि दधि मुखधार ॥ चउमंदिर जगनाथकी, पूज करो सुखकार ॥ ८ ॥ पश्चिम ईशानादिकें, विदिशें जग हित कार ॥ अड रतिकर गिरि जिनप्रतें, अरचुं जगदाधारा ॥९॥ उत्तर दिशि अंजनगिरी, मंदिर गत जगराय ॥ अष्टविधार्चनसें भविक, अर्चो जीउ सुखदाय ॥ १० ॥ उत्तर अंजनशैलनें, चउदिशि दधि मुखनाम ॥ चउमंदिर तीर्थेशने, अरचो शुभ परिणाम ॥११॥ उत्तर ईशानादिकें, विदिशें रुचिराकार ॥ वसु रतिकरगिरि जगविभू, पूजो अरति विदार ॥ १२ ॥ सकल संघ वलि जेठमल, कोठारी चित्तचंग ॥ इनके आग्रहसें करी, पूजा अतिहि सुरंग ॥ १३ ॥ इति श्री नंदीश्वरजीकी पूजा संपूर्णा ॥

॥ अथ नंदीश्वर लघु अष्टप्रकारी पूजा ॥

॥ स्ववासिवासे सुनरां प्रकाशे। नंदोश्वरे द्वीप वेरष्टमेहम् । सुगंधि तीर्थामि जलैः सुभक्तए । जिनेश्वराणां स्नपयामि मूर्तीः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरे । अष्टम द्वीपे । श्रीमत्शाश्वत जिनेश्वरेभ्यो ॥ जलं० ॥ स्ववासिवासे सुतरां प्रकाशे। नंदीश्वरे द्वीपवरेष्ट मेहम् । कर्पूर सचंदन कुंकुमैश्च । समर्चये श्रोजिनराज मूर्त्तीः ॥ २ ॥ स्ववासिवा० । नंदी० । विकासभाक् शुद्ध सुगंधी पुष्पैः । समर्चये श्री जिनराज मूर्त्तीः ॥ ३ ॥ स्ववासिवासे० नंदी० । तुरुक्क कृष्णा गुरु मुख्यधूपं । मुदा प्रयच्छामि जिनेश्वरेभ्यः ॥ ४ ॥ स्ववासिवा० । नंदी० । सुनिर्मलाज्येन भृतैः प्रदोपैः । कुर्वे प्रमोदा जिनराज पूजाम् ॥५॥ स्ववासिवा० नंदी० स्वयं पुरस्ता जिन पुंगवानां । सद

क्षतौघा नुप ढौकयामि ॥ ६ ॥ स्ववासिवा० । नंदी० । स्वयं० पुरस्ता० । नैवेद्य जातान्युप ढौकयामि ॥७॥ स्ववासि० । नंदी० । स्वयंपुर० । फलानि चाग्र्याए युप ढौकयामि ॥ ८ ॥ इच्छं जिनानां प्रविधाय पूजां । सद्रव्यतो भाव विशुद्धिभाजः । भव्यांगिनो नुक्रमतो लभंते । स्वर्गंच मोक्षं विरहाद्भवस्य ॥ ९ ॥ इत्यष्टप्रकार पूजाष्टकम् ॥

॥ अथ ॥

॥ आत्मारामजी विरचित स्नात्र पूजा ॥

॥ दोहा ॥ वामासूनु पणमीए, श्रीशंखेश्वरपास ॥ स्नात्र रचू जिनवरतणा, जिम तूटे भवपास ॥ १ ॥ अलंकार विकार विना, विधुवत् कमनीय अंग ॥ सहज उपाधिकमुक्त विभु, सोभे जीत अनंग ॥ २ ॥

(यह पढके प्रतिमाजीके अलंकार उतारने)

॥ दोहा ॥ बिंब भला जिनराजका, महिमा जास अपार ॥ कुसुमाभरण उतारीए, त्रिभुवनमोहनहार ॥ ३ ॥

(यह पढके निर्माल्य अर्थात् पहिले चढाये हुये फूलादि उतारने)

॥ दोहा ॥ बालपणमे सुरगिरौ, कनककलश भरि नीर ॥ करे स्नात्र सुराधिपत, पाम्या भवजलतीर ॥ १ ॥ दिठा जिन जिनराजकों, धन्य जन्म हे तास ॥ नयन सफल पिण तेहना, सफल फली मन आस ॥ ५ ॥

(यह पढकर प्रथम स्थापेल कलशोंकरके प्रतिमाजीका स्नात्र करणा. पीछे शुद्ध जलकेसाथ स्नान कराके, अंगलूहणा करके, चंदनपुष्पादिकसें पूजा करनी.)

(पीछे धोए हुए धूपादिकसें पवित्र करे हुए कलशोंमे स्नात्र

करने योग्य सुगंधि पंचामृत पाके हारबंध रखने, उसके ऊपर शुद्ध वस्त्र ढक देना. पीछे सर्व स्नात्री हाथमें केशर, चदन, धूप, पुष्प, चामर, आदि लेके हारबंध खडे रहे. एक स्नात्री * कुसुमांजलि लेके भगवान्के दाहणे (जमणे) पासे खडा रहे. पीछे नीचे मूजिब उच्चारण करे.)

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥

॥ दोहा ॥ अतिसयचउतीससंयुत, वाणीगुणपणतीस ॥ सो परमेसर देख भवि, त्रिभुवनकेरो ईस ॥ १ ॥

॥ कुसुमांजलि ढाल ॥

॥ पार्वतीका पति जो कहीए, जिनपति पूजेफूलोंसें ॥ यह चाल ॥

॥ सर्व सुरेंद्र पूजे जिम तिम, कुसुमांजलिकरो फूलोंसें ॥ अंचलि ॥ पवित्र उदक लेई अंग पखाली, शुची वसनं तनु धारी रे ॥ आदिजिनंदके चरणकमलमे, कुसुमांजलि मनोहारी रे ॥ कु० २ ॥ सर्व० ॥ १ ॥

(यह पढकर कुसुमांजलि चढावनी. कुसुमांजलिके साथ तिलक, पुष्प, धूप, आदि पूजाका विस्तार जाणना. सर्व कुसुमांजलिमें ऐसेहि समझना. इति प्रथम कुसुमांजलिः ॥ १ ॥)

॥ नमोऽर्हत्० ॥ दोहा ॥ जो निजगुणपर्यव रमो, जस अनुभव इकरंग ॥ सहजानंदी शिवंकरु, अचलसरुप अनंग ॥ २ ॥

॥ कुसुमांजलि ढाल ॥ रयणसिंहासन जिन थापीजे, आत्मगुण आनंदी रे ॥ शांतिजिनंदके चरणकमलमे, कुसुमांजलि सुखकंदी रे ॥ कु० ३ ॥ सर्व० ॥ २ ॥

(यह पढकर कुसुमांजलि चढानी. इति द्वितीयकुसुमांजलिः ॥२)

---

* धोके कोरे करे हूए सुगंधित फूल अथवा तिनके अभावे धोके कोर करके केशर लगाए हूए अखडित अक्षत. (आखे चावल)

१ वस्त्र २ शरीर.

वांतर जिनपदसंगी, पंदर खेत्रमे नृपकुलचंगी ॥ आर्यदेशमे नृपप टराणी, अवतरे कुखमे जिन त्रिहुंनाणी ॥ सु० ॥२॥ सुखसिज्जामे माता देखे, चउदस सुपन सुहंकर रेखे ॥ गजवर वृषभ सिंहवर कमला, फुलमाला विधु सूर्य हि अमला ॥ सु० ॥ ३ ॥ धजा कलस वलि पद्मसेरावर, रतनागर पयअतिहीविसाला ॥ भवन विमान रतनकी रासी, अग्निशिखा अति झाकझमाला॥सु०॥४॥ पतिकों सुपन प्रकासें पति कहे, तीर्थंकर सुत त्रिभुवननंदा ॥ होसे सुणकर माता हरखी, आत्माराम जिनंद सुखकंदा ॥सु०॥५॥ इति द्वितीय ढाल ॥

॥ ढाल तिसरी ॥

॥ दोहा ॥ सुभलग्ने जिन जनमिया, त्रिभुवन भयो प्रकास ॥ नारकने सुख ऊपनो, भविजन पूरे आस ॥ १ ॥

॥ वारी जाउंरे केसरिया सामरा, गुणगाउंरे ॥ वारि० ॥ यह चाल ॥

॥जन्ममहोच्छव गावो रे, भवताप निवारी ॥ जन्ममहोच्छव०॥ अंचलि ॥ उर्द्ध अधो दिशे अठ अठ आवे, सुंदररूप कुमारी रे ॥ भ० ॥ १ ॥ रुचक गिरि चउ दिसथी अठ अठ, चार विदिसि मध्य चारी रे ॥ भ० ॥ २ ॥ अष्ट संवर्त्तक वात गंधोदक, अड जल भरी ले भृंगारीरे ॥ भ० ॥ ३ ॥ दर्पण[1] अष्ट अष्ट लेई चामरं[2], पंखा[3] अष्ट लेई भारीरे ॥ भ० ॥ ४ ॥ कदलीघर कर पुत्र मातायुत, सुचीकरण कुंभवारी रे ॥ भ० ॥ ५ ॥ माताने कुसुमालंकार करीने, राखडी बांधे सारी रे ॥ भ० ॥ ६ ॥ सयने थापी गिरिसम आयु, होजो जिनजी तुमारी रे ॥ भ० ॥ ७ ॥ पूजी वांदी निजगेहँ[4] पहुंती, आत्मआनंदकारी रे ॥ भ० ॥ ८ ॥ इति तृतीय ढाल ॥

१.–इस समय आरीसा सामने धरना. २.–इस समय चामर करना. ३.–इस समय पखा करना. ४.–गृह.

॥ ढाल चउथी ॥

॥ दोहा ॥ जन्म्या जिन जननीघरे, कंपे आसन सार ॥ दाहिणं उत्तरनायके, जान्यो यह अधिकार ॥ १ ॥ घंटानादं बजायके, करे सुघोषण सार ॥ सुरगिरि मिलि सब आवजो, जन्ममहोच्छवकार ॥ २ ॥

॥ राग भैरवी ॥ लागी लगन कहो कैसें छूटे प्राणजीवन ॥ यह चाल ॥

॥ सुरपति सगरे जिनपतिकेरा, करे महोच्छव रंगे रे ॥ सुरपति सगरे० ॥ अंचलि ॥ सब सुरवर मिलि सुरगिरि आवे, सोहमपति चित चंगे रे ॥ बहु परिवारें जन्मनगरमे, जिनपति नमत ऊमंगे रे ॥ सुर० ॥ १ ॥ रत्नकूखधारिणि सुण माता, सोहमपति हुं सुरंगे रे ॥ तुम सुतकेरा ओच्छव करसुं, भय मतिकरी मन चंगे रे ॥ सुर० ॥ २ ॥ थापी प्रतिबिंब जिनवर लेइ, पंच रूप करी संगे रे ॥ पांडुक वनमे सिलासिंहासने, जिनवर लेइ ऊँछंगे रे ॥ सुर० ॥ ३ ॥ शक्र विराजे त्रेसठ सुरपति, सुरगिरी मिले मनरंगेरे ॥ अच्युतपति तिहां हुकमज कीनो, हरख न मावे अंगे रे ॥ सुर० ॥ ४ ॥ सामग्री सकल मिलावो सुरवर, खीरंनिधिजल गंगे रे ॥ ओच्छव करे जो जिनपतिकेरा, जन्मादिक दुख भंगे रे ॥ सुर० ॥ ५ ॥ मागध आदि तीर्थउदक वर, ओषधि मृतिका सुरंगेरे ॥ सूत्रे भाषी सर्व सामग्री, मेली अधिक उमंगे रे ॥ सुर० ॥ ६ ॥ अडजातिना कलश प्रतेके, अडअड सहस सुचंगेरे ॥ चउसठ सहस ही इक अभिषेके ॥ अढीसें गुणा सर्वंगेरे ॥ सुर० ॥ ७ ॥ ईसानइंद्र ले खोले प्रभुने, सोहमपति मनरंगे रे ॥ वृषभरूप करी शृंगे जल भरी, न्हवण करे प्रभुअंगे रे ॥ सुर० ॥ ८ ॥ आतमआनंद जन्म सफल कर, गावे गीत सुरंगारे ॥ भवसंतापनिवारणहारा, जिनपतिमज्जन चंगारे ॥ सु० ॥ ९ ॥ इति चतुर्थ ढाल ॥

१–दक्षिण. २–इस समय घंट घडीआलादि बजाने, ३–इंद्र ४–गोद (खोले) ५–क्षीरसमुद्र ६–सर्व मिलाके १६००००००.

(पीछे पंचामृतसें भरे हूए कलशोंसें स्नात्र करावणा और नीचे मूजिब पढना.)

॥ ढाल पंचमी ॥

॥ राग कमाच ॥ कलश इंद्र भर ढारे, जिनंद पर कलश इंद्र॥ अंचलि ॥हाथोहाथ हि सुरवर लावत, खीरविमलजलधारे ॥ जि० ॥ ॥ १ ॥ सुरवनिता मिल मंगल गावे, आनंद हरख अपारे ॥ जि० ॥ २ ॥ गंधर्वकिन्नरगण सब करते, गीतनृतस्वरतारे ॥ जि० ॥ ३ ॥ देवदुंदुभि मनहर वाजे, बोले जयजयकारे ॥ जि० ॥ ४ ॥ आत्मआनंद पदके दाता, जगजीवन हितकारे ॥ जि० ॥ ५ ॥ इति पंचम ढाल ॥

(संपूर्ण पंचामृतसें स्नात्र कराए बाद स्वच्छ जलसें स्नान कराके अंग लूहणे करके चंदन केशर धूपादिकसें पूर्वसें अधिकतर पूजन करना. पीछे स्नात्री धूप चामरादि करे, और नीचे मूजिब पढें.)

॥ ढाल छठी ॥

॥ दोहा ॥ पुष्पादिकसें पूजके, करि बहू मंगलमाल ॥ रच संगीत सुहावना, सुघर बजावे ताल ॥ १ ॥

॥ राग कमाच तराना ॥ नाचत शक्रशक्री, हे री माइ नाचत शक्रशक्री ॥ छंछंछंछंछननननन, नाचत शक्रशक्री॥ हे री माइ नाचत शक्रशक्री ॥ अंचलि ॥ श्री ह्री धृति कीर्ति बुद्धि बहु बनी ठनी, इंद्र हि इंद्राणी करे नाटक संगीत धुनी ॥ जयजय जिन जग तिमिरभानु तूं, चरण घुंगरी छननननन ॥ माइ० ॥ १ ॥ धों धों धपमप मादल करत धुनी, सुंदर रंगीली गोरी गावत जिनंदगुनी ॥ धन्य कृतपुन्य हम जन्म सफल अज, मेटे भवदुख तुम वरननन नन ॥ मा० ॥२॥ त्रौं त्रौं त्रिकत्रिक वेणु वीणा त्रात्रिक, भामरी फिरत गावे गीत मानु मधुपिक ॥ चारगतिभ्रमण मिटावे भवि जनकों,

तेरे विन नही कोइ सरनननन ॥ मा० ॥ ३ ॥ करके संगीत सुद्ध करमसें करी शुद्ध, माताकर सोंप बुध वचन उचारे सुद्ध ॥ सुत तुम स्वामी हम जतनसें राखजो, जनममरणदुखहरननननन ॥ मा० ॥ ४ ॥ बत्ती कोडी कनक वसन मणि माणकुं, वृष्टि करे पुन्य भरे रिद्धिसिद्धि दाणकुं ॥ आत्मआनंद भरी दीप नंदीसरे जाइ, करके अठाइ गए सदनननन ॥ मा० ॥ ५ ॥

॥ अथ कलश ॥

॥ राग डुमरी ॥ गिरनारीकी पहारी पर कैसे गुजरी ॥ यह चाल ॥

॥ जिनजन्ममहोच्छव जयकारी, जयकारी रे देवा जयकारी ॥ जि० ॥ अंचलि ॥ दीक्षाकेवलज्ञानकल्याणक, नित नित उच्छव चित धारी ॥ जि० ॥ १ ॥ जंबूदीपपन्नतीए भाष्यो, जन्ममहोच्छवविधि सारी ॥ जि० ॥ २ ॥ ते अनुसार संखेप रूपसें, जिनगुण गाया कुमत छारी ॥ जि० ॥ ३ ॥ तपगच्छगगनमें दिनमणि सरिसा, विजयसिंह प्रभु गणधारी ॥ जि० ॥ ४ ॥ सत्य कपूर क्षमा जिन उत्तम, पद्म रूप कीर्ति भारी ॥ जि० ॥ ५ ॥ श्रीकस्तूर मणि बुद्धि विजया, आत्मरूपआनंदचारी ॥ जि० ॥ ६ ॥ खं सर अंक इंदु (१९५०) सुभ वर्षे, झडिआले मास रहे चारी ॥ जि० ॥ ७ ॥ संघके आग्रहसें करी रचना, जिनकल्याणक अघटारी ॥ जि० ॥ ८ ॥ इति कलश ॥

(पीछे आरती मंगलदीपक और लूण उतारना, सो विधि लिखते है. प्रभुके आगे पडदा करके प्रभुके सन्मुख बैठके आरति करनेवालेके नव अंगमें कुंकुम (रोले) के अगर केशरके तिलक करने. पीछे एक थालमें आरति, और सज्जे (जिमणे) पासे मंगलदीपक स्वस्तिक करके रखना. जिसमें आरतिमें थोडा घृत पावणा, और मंगलदीपक पूर्ण भरना. और पीछे एक रकेबीमें लूण और पाणी लेके आरतिकी तेंर उतारना और नीचे मुजिब पढना ॥)

॥ अथ लूण पाणी उतारण ढाल ॥

॥ मन मोह्या जंगलकी हरणीने ॥ यह चाल ॥

॥ भवि नंदो जिनंदमतकरणीने ॥ अंचली ॥ जिनवरअंगे लूण उतारी, पापपंक सब हरणीने ॥ भ० ॥ १ ॥ विमलउदकत्रिणधार करीने, लूण अग्नि पर धरणीने ॥ भ० ॥ २ ॥ तडतड करी जिम लूणज फूटे, तिम तुम पाप विदरणीने ॥ भ० ॥ ३ ॥

(यह पढकर लुणकों अग्निशरण करना. पीछे थालीमें अगर रकेबीमें लूण और पाणी लेके आरतिकी तरेंहि उतारना और नीचे मूजिब पढना.)

नयनकचोले दयारसभीने, गयो लूण जलसरणीने ॥ भ० ॥ ४ ॥ जो जिन ऊपर करे मन भेली, लूण जेम जाय गरणीने ॥ भ० ॥ ५ ॥ अगरकुंधरुधूप सुगंधी, करे भवसागर तरणीने ॥ भ० ॥ ६ ॥आतमअनुभवरसमें भीनो, आनंदमंगल भरणीने ॥ भ० ॥ ७ ॥ इति लूणपाणी उतारण ढाल ॥

(यह पढकर लूणकों जलशरण करना. पीछे थालमें रखे हुए आरति मंगलदीपककी केशर, फूल, चावलसें, पूजा करनी. ऊपर कुंकुमके छिट्टे डालने. पीछे मंगलदीपक जालना. उस मंगलदीपकसें आरति सिलगावनी. पीछे मंगलदीपक नीचे चोकी (बाजोठ) ऊपर रखके आरति उतारनी, सो पाठ लिखते है.)

॥ अथ आरती ॥

॥ चाल—डागरीयांकी ॥ करुं जिनआरतियां सुरंगसें, करुं जिनआरतियां ॥ सकल मनोरथ सफल हुए मम, करुं जिन आरतियां ॥ ए अंचलि ॥ रतनकनकमय थाल हि ल्यावो, कर सुभ [1]भारतियां ॥ सुरंगसें कर० ॥ आरति उतारो जिनवरआगे, अघ सब [2]छारतियां ॥ अघ० सु० स० ॥ १ ॥ सात चौद एकवीस वार करी,

---

१—बुद्धि. २—छारदीए. अर्थात् दरकर दीए.

करम विदारतियां ॥ सुरंगसें करम० ॥ त्रिण त्रिण वार प्रदक्षिणा करीने ॥ जनम कृतारतियां ॥ जनम० सु० स० ॥ २ ॥ जिम जिम जलधारा देइ जंपे, कंपे मारतियां ॥ सुरंगसें कंपे० ॥ बहु भवसंचित पाप पणासे, भववन जारतियां ॥ भव० सु० स० ॥ ३ ॥ द्रव्य पूजासें भाव सुहंकर, आतम तारतियां ॥ सुरंगसें आतम० ॥ जिनवर सम नही तीन भवनमें, इम कहे आरतियां ॥ इम० सु० स० ॥ ४ ॥ इति आरती.

(पीछे मंगलदीपक उतारना सो लिखते है.)

॥ अथ मंगलदीपक ॥

॥ राग जोग ॥ मंगलदीपक सारा रे, मनमोहनगारा ॥ मंगल० ॥ अंचलि ॥ भुवनप्रकासक जिन चिर नंदो, अष्टादश दोष जारा रे ॥ मन० ॥ १ ॥ चंद सूर तुम मुखना लूंछण, फिरता करे नित्य वारा रे ॥ मन० ॥ २ ॥ इंद्राणी मंगलदीपक कर, भ्रमरी दीये रंग भारा रे ॥ मन० ॥३॥ जिम जिम धूपघटी अति दहके, तिम तिम पाप जरा रे ॥ मन० ॥ ४ ॥ उदकाक्षतकुसुमांजलि चंदन, धूपदीपफल सारा रे ॥ मन० ॥ ५ ॥ नैवेद्य वंदन जिनवर आगे, करो निज आतमप्यारा रे ॥ मन० ॥६॥ इति मंगलदीपक ॥

(पीछे संक्षेपसें अष्ट प्रकारी पूजा करनी, यदि न होवे तो शेष फल, फूल, नैवेद्य, जो होवे सो चढा देणा. पीछे गीत गुण गाने जयजय शब्द उच्चारने. देवद्रव्यकी वृद्धि करनी, यथाशक्ति दान देणा.)

१–फाडदीए २–कृतार्थ. ३–कामदेव ४–भग जावे ५–जाल दीया.

॥ अथ गीतं ॥

॥ राग जयजयवंती ॥ सुरगण इंद मधुर ध्वनि छंद, पठन करी करे न्हवण जिनंदा ॥ मागध वरदामने परभासा, अपर तरंगिनी उदक अमंदा ॥ १ ॥ क्षीरोदधि अडजाति कलशभर, न्हवण करे जिम चोशठ इंदा ॥ तिम श्रावक जिन भक्तीरंगें, न्हवण करे जरे करमको कंदा ॥ सुर० ॥ २ ॥ विप्रवधू सोमेश्वरी नामे, जल पूजनसें लहे महानंदा ॥ कारण कारज समज भलीपरें, आतम अनुभव ज्ञान अमंदा ॥ सुर० ॥ ३ ॥

॥ अथ काव्यं ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय जलं यजामहे स्वाहा ॥ १ ॥ इति प्रथम पूजा ॥

(पूजा विधि २. पछी पखाल करी, अंगलूहणादि लुहीने केशरनी कचोली रकेबीमां राखी, रकेबी हाथमां लइ बीजी पूजानो नीचे मुजब पाठ भणी मंत्र कही, चंदन पूजा करे.)

॥ अथ द्वितीय विलेपन पूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ कुमति कुवास निरासिनी, वासिनी चिद्घन रूप ॥ भासिनि अमर अनघपद, नासिनी भव जलकूप ॥ १ ॥ सुरपति जिन अंगे करे, सरस विलेपनसार ॥ श्रावक तिम लेपन करे, चंदन घसि घनसार ॥ २ ॥

॥ राग जिंद काफी ॥ कर रे कर रे कर रे कर रे, श्रीजिनचंद विलेपन कर रे ॥ श्रीजि० ॥ ए आंकणी ॥ चेतन जान कल्याण करनकों, आन मिल्यो अवसर रे, ॥ शास्त्र प्रमान जिनंदजी पूजी, मन चंचल स्थिर कर रे ॥ श्रीजि० ॥ १ ॥ सरस चंदन केशर हरिचंदन, घसी घनसार सुधर रे ॥ कनक रतन जरी भरी रे कचोरी, मन वच तनु शुचि कर रे ॥ श्रीजि० ॥ २ ॥ चरण जानु कर अंश शि

रोपर, भालकंठ प्रभु उर रे ॥ उदर तिलक नव कर जिनवरके, आतम आनंद भर रे ॥ श्रीजि० ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥ शीतल गुण जिनमें वसे, शीतल जिनवर अंग ॥ आतम शीतल कारणें, पूजो अरिहंत रंग ॥ १ ॥

॥ अथ गीतं ॥

॥ राग कसूरी जंगलो ॥ सिद्धि वधू लइ रे, जिनरंग राची ॥ जिन० ॥ ए आंकणी ॥ हरिचंदन घनसार सुमन हर रे, द्रव्य तिलक नव दइ ॥ जि० ॥ १ ॥ अचल सुरंगी सुमन गुण भृंगी रे ॥ भावतिलक शिर भइ ॥ जिन० ॥ २ ॥ पूजक चार तिलक करि अंगें रे, पूजे अति हरखइ ॥ जि० ॥ ३ ॥ जयसुर शुभमति जिनवर पूजी रे, दंपती शिवपद लइ ॥ जि० ॥ ४ ॥ आतमानंदी करम निकंदी रे, आनंदरस रंग मइ ॥ जि० ॥ ५ ॥

॥ अथ काव्यं ॥ मंत्रः ॐ ह्रीं श्रीं परम० जिनेंद्राय चंदनं यजामहे स्वाहा ॥ इति पूजा ॥ २ ॥

(पूजा विधि ३–पछी चंदन पुजा करीने फूल रकेबीमां राखी. रकेबी हाथमां लइ त्रीजी पूजानो नीचे मुजब पाठ भणी, मंत्र कही फूल चढावे.)

॥ अथ तृतीय कुसुमपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ त्रीजी पूजा सुमनकी, सुमन करे भवि रंग ॥ पंचबाण पीडा हरे, भावसुगंधि अभंग ॥ १ ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ अब मावडी गिरि जान दे, मेरा नेमजीसें काम है ॥ ए देशी ॥

॥ अब भविक जन जिन पूज ले, जिम सुधरे सघरे काम रे ॥ अब० ॥ ए आंकणी ॥ अतिही सुगंधी कुसुम लीजें, खरचीने बहु दाम रे ॥ मोघरा चंपक मालती, केतकी पाडल आम रे ॥ अब० ॥ १ ॥ जासुल प्रियंगु पुन्नाग नागं, दाउदी वरनाम रे

॥ मचकुंद कुंद चंबेलि ले, जे उगियां शुभ थान रे ॥ अव ॥ २ ॥ सदा सोहागन जाइ जुइ, बोलसिरी शुभ ठाम रे ॥ लही कुसुम जिनवर देवने, पूजो जरे जिम काम रे ॥ अव० ॥ ३॥ शुभ सुमन केरी माल गुंथी, जिनगले धरी जाम रे ॥ आतम आनंद सुहंकरु, जिम मिले शिववधूधाम रे ॥ अव० ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥ सुभग अखंड कुसुम ग्रही, दूर करी सब पाप ॥ त्रिभुवन नायक पूजियें, हरे मदन संताप ॥

॥ अथ गीतं ॥

॥ श्रीराग वा कालिंगडो ॥ मंगल पूजा सुरतरु कंद ॥ मं० ॥ ए देशी ॥

॥ जिनवर पूजा शिवतरु कंद ॥ जिनवर० ॥ ए आंकणी ॥ दमनक मरुवो बकुल केवडो, सरस सुगंधित अति महकंद ॥ जि० ॥ १ ॥ कुसुमार्चन भवि करो मन रंगें, ताप हरे प्रभु जिनवरचंद ॥ जि० ॥ २ ॥ विषयि देवकों आक धत्तुरा, पूजे नरवायस मतिमंद ॥ जि० ॥ ३ ॥ वणिक धुआलिलावती पूजी, फूलें जिनवर हरि भव फंद ॥ जि० ॥ ४ ॥ आतम चिद्‌घन सहजविलासी, पामी सतचिद् पद महानंद ॥ जि० ॥ ५॥

॥ अथ काव्यं ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम० ॥ जिनेंद्राय पुष्पं यजामहे स्वाह ॥ इति तृतीय पूजा ॥ ३ ॥

(पूजा विधि ४.—पछी चोथी पूजामां धूपधाणुं रकेबीमां राखी, रकेबी हाथमां लेइ नीचे मुजब चोथी पूजानो पाठ कही, छेल्लो मंत्र भणी प्रभुनी डाबी बाजु धूप उखेवे.)

॥ अथ चतुर्थ धूपपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ कर्मेंधनके दहनकों, ध्यानानल करि चंड ॥ द्रव्य धूप करि आतमा, सहज सुगंधित मंड ॥ १ ॥

॥ राग पिलु अथवा बरवा ॥ धूप पूजा अघ चूरे रे भविका,

धूप पूजा अघ चूरे ॥ एतो भवभय नासत दूरे रे ॥ भ०॥ ए आंकणी ॥ कृष्णागर अंबर घनसारे, तगर कपूर सनूरे ॥ कुंदरु मृगमद तुरक सुगंधि, चंदन अगर सचूरे रे ॥ भविका० ॥ १ ॥ ए सब चूरण करी मनरंगें, भंगें करम अंकूरे ॥ नव नव रंगी शुद्धदशांगी, जिनवर आगें अदूरें रे ॥ भविका० ॥ २ ॥ धूपदान कंचनमणि रत्नें, जडित घडित अति पूरे ॥ निर्धूम पावक अति चमकंती, जिनपतिकों कर तुं रे ॥ भविका० ॥ ३ ॥ जिनवर मंदिरमें महमहती, दशदिग् सुगंध पूरे ॥ आतम धूप पूजन भविजनके, करम दुर्गंधने चूरे रे ॥ भविका० ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥ धूपदान निज घट करी, जिनभक्तीवर धूप ॥ करम कुगंधी मिट गइ, पूजे आतमभूप ॥ १ ॥

॥ अथ गीतं ॥

॥ राग-खमाचका तिलाना ॥ पूजित आनंद कंद री हे री माई ॥ पूजित० ॥ ए आंकणी ॥ जिनप जिनंद चंद, पूजे सुर नर वृंद ॥ सेवत अनूप धूप, मिटे दुर्गंध रूप ॥ जिनवर अंध भ्रम, तिमिरभानु तुं ॥ मरन हरन तुम, चरनननन ॥ पूजित० ॥ १ ॥ दश अंग धूप खेवी, दशही निदान सेवी ॥ सुभग सुरंगी रंगी, मुगती वधूटी लेवी ॥ जिनवर सेवी हम, ऊर्ध्व अभंग गति ॥ तिम तुम गति जिन, अरचननननन ॥ पू० २ ॥ सिद्द बुद्ध अजर, अमर अज निर्मल ॥ कालवेदी भव छेदी, दूर करी कलमल ॥ एसा महानंद पद, धूप पूजा फल करे ॥ अखय भंडार भरे, कोन करे वरननननन ॥ पू० ३ ॥ वाम अंगें धूप करी, पूजी मन शुद्ध करी ॥ चार गति दुःख हरी, आत्म आनंद भरी ॥ विनयंधर नृप सात, भव सिद्धि वर ॥ नहि कोइ तुम विन, सरननननन ॥ प० ॥ ४ ॥

॥ काव्यम् ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रूँ श्रीं परम० जिनेंद्राय धूपं यजामहे स्वाहा ॥ इति ॥ ४ ॥

(पूजा विधि ५--पछी पांचमी पूजामां मौलीसूत्र प्रमुखनी वाट करी, निर्मल सुगंधीत घृतथी दीपक भरी रकेबीमां राखी, रकेबी हाथमां लेइ नीचे मुजब पूजानो पाठ कही, छेल्लो मंत्र भणी, प्रभुजीनी जमणी बाजुयें दीपक राखी उपर टीको करे.)

॥ अथ पंचम दीपकपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ पंचमि पूजा जिन तणी, पंचमि गति दातार ॥ दीपकसें प्रभु पूजियें, पामीयें केवल सार ॥ १ ॥

॥ राग–सिंध काफी ॥ पूजो अरिहंत रंगें रे, भवि भाव सुरंगें पूजो० ॥ ए आंकणी० ॥ दीपक ज्योति बनी नवरंगी, जिनजीके दाहीण अंग ॥ रयण जडित चमकत शुभ रंगे, गोघृत भरी अति चंग रे ॥ भवि० ॥ १ ॥ करुणा रससें धरी शुभ फानस, मरत न जेम पतंग ॥ झगमग ज्योती सुंदर दीपे, अनुभव दीप अभंग रे॥ भवि० ॥ २ ॥ जिन मंदिरमें दीप प्रगट करी, भावना शुद्ध मन रंग ॥ ध्यान विमल करतां अघ नासे, मिथ्या मोह भुजंग रे ॥ भवि० ॥ ३ ॥ दीप दरससें तस्कर नासे, आतम तिमिर उत्तंग ॥ तिम जिन पूजित मिले चित्त दीपक, जरत हे समरपतंग रे ॥ भ०॥४॥

॥ दोहा ॥ द्रव्य दीपक विभावरी, तिमिर करे सब दूर ॥ भाव दीपक जिन भक्तिसें, प्रगटे केवल सूर ॥१॥

॥ अथ गीतं ॥

॥ राग भैरवी ॥ दीप जयंकर चिदघन संगी, केवल जगती प्रकाशे रे ॥ ए आंकणी ॥ द्रव्य दीपक अर्चन कर रंगे, मिथ्या तिमिर निरासे रे ॥ तस फल केवल दीप सुहंकर, लोकालोक विकासे रे॥ दीप० ॥ १ ॥ पड

त पतंग न धूपकी रेखा, केवल दीप उजासे रे ॥ जनम मरण गति चार भयंकर, दुर्मति दुःख सब नासे रे ॥ दीप० ॥ २ ॥ घृत विन पूरे ज्योति असंडित, वर्तिक मल न चिकासे रे ॥ पाप पतंग जरत सब छिनमें, ज्योतिमें ज्योति मिलासे रे ॥ दी० ॥ ३ ॥ जिनमति धनसिरि दीप पूजनसें, सिद्धगती सुखरामें रे ॥ आतम आनंद घन प्रभु मिलशे, पूजत भवि जो उल्लासें रे ॥ दीप० ॥४॥

॥ काव्यम् ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० जिनेंद्राय दीपं यजा० ॥ इति ॥ ५ ॥

(पूजा विधि ६—पछी छठी पूजामां उज्वल असंड अक्षत रकेबीमां नासी, रकेबी हाथमां धरी नीचे मुजब पूजानो पाठ कही, छेल्लो मंत्र भणी, प्रभुजी आगल स्वस्तिक तथा तांदुलना त्रण पुंज करे.)

॥ अथ षष्ठाक्षतपूजा प्रारंभ. ॥

॥ दोहा ॥ अक्षय शिव सुख कारणें, अक्षत पूजा सार ॥ चौगति चूरण साथियो, करे कुमति मत छार ॥ १ ॥

॥ राग वदंस ॥ तुम तो सुघर भये शिव साधो, अक्षत पूजा करो मनमें रे ॥ तुम तो० ॥ ए आंकणी ॥ अक्षत तंदुल माणि मुक्ताफल, साथीयो कर जिन बिंब पूरो रे ॥ माणक मरकत अंक आदिसें, जिन पूजी मन आनंद लो रे ॥ तुम० ॥ १ ॥ तंदुल गोधूम अन्न असंडित. आदि लेइ ढिग पूज करो रे ॥ अक्षत पूजा करी मन रंगें, अक्षत सुख भंडार भरो रे ॥ तुम० ॥ २ ॥ आतम अनुभव रत्न सुरंगो, चिंतामणि सुरद्रुम सरो रे ॥ अक्षत पूजामें भवि प्रगटे, जिनवर भक्ति हृदयमें धरो रे ॥ तुम० ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥ शुद्धाक्षत तंदुल ग्रही, नदावर्त्त विधान ॥ जिन सन्मुख होय पूजियें, जरे करमसंतान ॥ १ ॥

॥ अथ गीतं ॥

॥ राग मराठीमें ॥ अरिहंत पद अर्चन करी चेतन, जिन सरूपमें रम रहीयें ॥ निजसत्ता प्रगटे जारकें, करम भरम निज सुख लहियें ॥ अरिहंत० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ तुं निज अचल ईश विभुचिदघन, रंग रूप विन तुं कहीयें ॥ अज अचल निराशी, शिव शंकर अघहर जग महीयें ॥ अरिहं० ॥ २ ॥ अव्यय विभु निरंजन स्वामी, त्रिभुवन रामी तुं कहीयें ॥ सब तेरी विभुति, अक्षत अर्चनसें झट लहियें ॥ अरिहं० ॥ ३ ॥ मरुदेवी नंदन चरणसुहंकर, कीर जुगल अक्षत गहीयें ॥ करि अर्चन सुरनर, अंतमें परमात्मपद रस वहीयें ॥ अरिहं० ॥ ४ ॥

॥ काव्यम् ॥ मंत्रः ॐ ह्रीँ श्री परम० जिनेंद्राय अक्षतान् यजामहे स्वाहा ॥ इति ॥ ६ ॥

(पूजा विधि ७–पछी सातमी पूजामां मोदक, मिश्री, खाजां, पतासां प्रमुख अनेक उत्तम पकान्न रकेबीमां नाखी, रकेबी हाथमां धरी नीचे मुजब पूजानो पाठ कही, छेल्लो मंत्र भणी, प्रभु आगल नैवेद्य धरे.)

॥ अथ सप्तम नैवेद्य पूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ शुचि निवेद्यरस सरसशुं, भरि अष्टापद थाल ॥ विविध जाति पकवानसें, पूजियें त्रिभुवनपाल ॥ १ ॥

॥ राग ठुमरी ॥ जिन अर्चन सुखदाना रे ॥ भविका ॥ जिन० ॥ ए आंकणी ॥ अमृति अमृत पाक पतासां, बरफी कंद विदाना रे ॥ फेणी घेबर मोदक पेठा, मगदल पेंडा सोहाना रे ॥ जि० ॥ १ ॥ लाखणसाई सक्करपारा, मोतीचूर मनमाना रे ॥ खाजां खुरमां खीर खांड घृत, सेव कंसार विधाना रे ॥ जि० ॥ २ ॥ साटा दोठां मठडी सबुनी, कलाकंद कलिदाना रे ॥ सीरा ला

पसी पूरी कचोरी, शाल दाल घृत आनां रे ॥ जिन० ॥ ३ ॥ इत्यादि नैवेद्य सुरंगा, पूजियें त्रिभुवन राना रे ॥ आतम आनंद शिव पदरंगी, संगी सदा आधाना रे ॥ जि० ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥ अनाहार पद दीजियें, हे जिन दीनदयाल ॥ करुं अर्चन नैवेद्यशुं ॥ भर भर सुंदर थाल ॥ १ ॥

॥ अथ गीतं ॥

॥ राग–जंगलो ॥ महावीर तोरे समवसरणकी रे ॥ महा ॥ ए देशी ॥

॥ जिनंदा तोरे चरनकमलकी रे, जो करे अर्चन नर नारी ॥ नैवेद्य भरी शुभ थारी ॥ तनमन कर शुद्ध आगारी ॥ जिनंदा तोरे चरण सरणकी रे ॥ जि० ॥ १ ॥ वीणा रंग राजे रे, मृदंग ध्वनि गाजे रे, वाजे वाजितर भारी ॥ मिल अर्चन जन भृंगारी, आये जिन मंदिर शुभकारी ॥ जिनंदा० ॥ २ ॥ भविजन पूजो रे, जग में देव न दूजो रे, धूजे जिम करम कठारी ॥ माग्युं पद अणाहारी, ज्युं वेगें वरु शिवनारी ॥ जिनं० ॥ ३ ॥ पूजा फल ताजा रे, हालीजन राजा रे, आतमकों आनंदकारी ॥ भव भ्रांति मिट गइ सारी, जिन अर्चनकी वलिहारी ॥ जि० ॥ ४ ॥

काव्यम् ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्री परम० जिनेंद्राय नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति ७ ॥

(पूजा विधि ८–पछी आठमी पूजामां लविंग, एलची, सोपारी, नालियेर, वदाम, द्राख, वीजोरां, दाडिम, नारिंगी, आंबां, केलां प्रमुख सरस सुगंधित रमणीय फल, रकेबीमां राखी, रकेबी हाथमां धरी, नीचे मुजब पूजानो पाठ कही, छेलो मंत्र भणीने प्रभु आगल फल धरे.)

(पछी पूजानो कलश कही, विधिसंयुक्त स्नात्रीओ प्रभुजीथी अंतर पट करी, हाथमां आरति ले अने बीजा स्नात्रीयापासें प्रभु

ने नव अंगें तिलक करावी, अंतरपट दूर करी, नमो "अरिहंताणं०" कही, आरति कहे. पछी निर्धूम वर्ति० तथा तुभ्यं नमस्ति भुवन० ए काव्य, भक्तामरनां प्रभातें कहे, पछी जयजय शब्द करे, गुणगीत करे, चैत्यवंदन करे, साहामिवात्सल्य करे, यथाशक्ति दान आपे.)

॥ अथाष्टमफलपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ अष्ट करमके हरनकों, आठमि पूजा सार ॥ अडगुण आतम परगटे, फल पूजन फलकार ॥

राग—ठुमरी ॥ महावीर चरणनमें जाय । मेरो मन लाग रह्यो ॥ महा० ॥ एदेशी ॥

॥ मेरो मन रंग रह्यो, फल अर्चनमें सुखदाय ॥ मेरो० ॥ ए आंकणी ॥ श्रीफल पूगी पिस्ता बदामा, द्राक्ष अखोड मिलाय ॥ मेरो० ॥ १ ॥ खारक मीठे अंब नारंगी, कदली सीताफल लाय ॥ मेरो० ॥ २ ॥ द्राख आलूचां फनस संतरा, अंगुर जंबीर सुदाय ॥ मेरो० ॥ ३ ॥ तरबूजां खरबूज सिंगोडां, सेव अनार गिनाय ॥ मेरो० ॥ ४ ॥ इत्यादि शुभ फल रस चंगे, कंचन थाल भराय ॥ मेरो० ॥ ५ ॥ फलसें पूजा अर्हन् केरी, आतम शिव फल थाय ॥ मेरो० ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥ इंद्रादिक जिम फल करी, पूजे श्री अरिहंत ॥ तिम श्रावक पूजन करे, फल वरे सादि अनंत ॥ १ ॥

॥ अथ गीतं ॥

॥ रेखता ॥ जिनवर पूज सुखकंदा, नसे अड कर्मका धंदा ॥ सुंदर भरि थाल रतनंदा, जिनालये पूज जिनचंदा ॥ जिन० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ विविध फल साररस चंगा, अपुनरावृत्ति फल मंगा ॥ अड दिठि संपदा रंगा, बुद्धि सिद्धि शिव वधु संगा ॥ जि० ॥ २ ॥ पूजे भवि भावशुं रंगा, करी अडकर्मशुं जंगा ॥ करी शुध रूप अनंगा, उतरी अनादिकी भंगा ॥ जि० ॥ ३ ॥ कीरयुग दुर्गता

तंगा, करी फल पूजना मंगा ॥ आतम शिवराज अभंगा, विमळ अति नीर जिम गंगा ॥ जि० ॥ ४ ॥

॥ काव्यम् ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० जिनेंद्राय फलं यजा० स्वाहा ॥ इति ॥ ८ ॥

॥ अथ कलश ॥

॥ राग—धन्याश्री ॥ पूजन करो रे आनंदी, जिनंद पद पूजन करो रे आनंदी ॥ ए आंकणी ॥ अष्टप्रकारी जनहित कारी, पूजन सुरतरु कंदी ॥ जि० ॥ १ ॥ श्रावक द्रव्यभाव करे अर्चन, मुनिजन भाव सुरंगी ॥ जि० ॥ २ ॥ गणधर सुरगुरु सुरपति सगरे, जिनगुण कोन कहंदी ॥ जि० ॥ ३ ॥ में मतिमंदही बाल रमण ज्युं, जिनगुण कथन करंदी ॥ जि० ॥ ४ ॥ तपगच्छ मुनिपति विजय सिहवर, सत्यविजय गणि नंदी ॥ जि० ॥ ५ ॥ कपूर क्षमा जिनोत्तम सद्गुरु, पद्मरूप सुखकंदी ॥ जि० ॥ ६ ॥ कीर्त्तिविजय कस्तूर सुहंकर, मणीविजय पद वंदी ॥ जि० ॥ ७ ॥ श्रीगुरु बुद्धि विजय महाराजा, कुमति कुपंथ निकंदी ॥ जि० ॥ ८ ॥ शिखि जुग अंक इंदु (१९४३) शुभवर्षे, पालिताणा सुरंगी ॥ जि०॥९॥ विमलाचल मंडन पद भेटी, तन मन अधिक उमंगी ॥जि०॥१०॥ आतमराम आनंद रस पीनो, जिन पूजत शिवसंगी ॥ जि० ॥ ११ ॥ इति श्रीमदात्माराम (आनंदविजयजी) महाराज विरचित अष्टप्रकारी पूजा समाप्त ॥

॥ अथ नवपदादिक पूजाओमां जोइती अवश्य उपयोगी चीजोनां नाम ॥

॥ दुध, दधि, घृत, शर्करा, शुद्धजल, ए पंचामृत, तथा केशर, सुगंधि चंदन, कर्पूर, कस्तूरी, अमर, रोली, मोली, छुटां फुल, फु

लोनी माला, फूलोना चंद्रुवा, धूप, तांदुल प्रमुख नव जातिनां धान्य, नव प्रकारनां नैवेद्य, नव प्रकारनां फल, नव प्रकारनी पक्क वस्तु, मिश्री, पतासां, ओला प्रमुख तथा अंगलूहणांने वास्ते सपेत वस्त्र, अने पहेरावयाने वास्ते उत्तम रेशमी वस्त्र, वासक्षेप, गुलाबजल, अत्तर इत्यादिक बीजा पण नव नव नालीना कलश, नव रकेबी, परात (थास), तसला, आरती, मंगलदीपक, भगवाननी आंगी, समवसरण, इत्यादिक सर्व वस्तु प्रथमथी ठीक करीने राखवी. ए थकी पूजामां विघ्न न होय ॥ ए संक्षेप विधि कह्यो, विशेषविधि गुरुथकी जाणवो ॥

॥ अथ श्रीनवपदपूजाऽध्यापन विधि ॥

॥ तत्र प्रथम कलशढालनविधि ॥ चैत्र तथा आश्विन मासमां ए पूजाओ भणाय, तेवारें नव स्नात्रिया करियें. महोटा कलश प्रमुखमां पंचामृत भरियें. स्थापनामां श्रीफल तथा रोकड नाणुं धरियें. तेने गुरुनी पासेंथी मंत्रावी केशरथी तिलक करे, कंकणदोरो हाथमां बांधे, डावा हाथमांस्वतिक करीने विधिसंयुक्त स्नात्र भणावे. पछी श्रीअरिहंत पदमां तांदूल, धूप, दीप, नैवेद्य प्रमुख अष्ट द्रव्य, वासक्षेप, नागरवेल प्रमुखनां पान, रकेबीमां धरीने ते रकेबी हाथमां राखे. नव कलशने मौलीसूत्र बांधी, कुंकुमना स्वास्तिक करी, पंचामृतथी भरीने ते कलशो हाथमां लेइ, प्रथम श्रीअरिहंत पदनी नीचे मुजब पूजा भणे, ते संपूर्ण भणी रह्या पछी महोटी परातमां (थालमां) प्रतिमाजीने पधरावे " ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं " ए प्रमाणे कहेतो थको, श्रीअरिहंत पदनी पूजा करे. अष्टद्रव्य अनुक्रमें चढावे ॥ इति प्रथमपदपूजा विधिः

॥ आत्मारामजी विरचित श्रीनवपद पूजा प्रारंभः ॥

॥ अथ प्रथम श्रीअरिहंतपद पूजा ॥

॥ दोहा ॥ श्री संखेश्वर पासजी, पूरो वंछित आस ॥ सिद्ध चक्र पूजा रचूं, जिम तूटे भव पास ॥ १ ॥ उपगारी जिन राजकी, पूजा प्रथम विधान ॥ जो भवि साधे रंगसुं, अजर अमरकी खान ॥ २ ॥ उत्पन्न ज्ञान सत रूप है, प्रतिहारज सोभंत ॥ सिंहासन बैठे विभु, दे उपदेश महंत ॥ ३ ॥

॥ राग कमाच ॥ जिन पूजन आनंद खानी ॥ जि० ॥ अंचली ॥ संति अनंत प्रमोद अनंगं, सत चित आनंद दानी ॥ जि० ॥१॥ तीर्थंकर शुभ नाम कर्म के, उदय कहे जिनवानी ॥ जि० ॥२॥ घाति कर्मका नाश करीने, अष्टादशम लहानी ॥ जि० ॥३॥ करे अघाति जीर्ण वसनसें, तीर्थेश्वर पद ठानी॥ जि०॥४॥ ऐसे अर्हन् देव सुहंकर, भय भंजन निर्वानी॥ जि० ॥५॥ आत्मआनंद पूरण स्वामी, नमो देव मन मानी. ॥ जि० ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥ शासनपति अरिहा नमो, धर्म धुरंधर धीर ॥ देशना अमृत वर्षणी, निज वीरज वडवीर ॥ १ ॥ निर्मल ज्ञान असय निधि, शुद्ध रमण निजरूप ॥ थिरता चरण सुहंकरू, पूजो अर्हन् भूप ॥ २ ॥

॥ महबूबजानी मेरा ॥ यह चाल ॥

॥ श्री अर्हन् स्वामी मेरा, छिन नाहि भूलानारे ॥ तुम पूजो भवि मन रंगे, भव भयहि मिटाना ॥ श्री० ॥ १ ॥ भव तीजे वर तप करके, सेवी निदानारे ॥ जिननाम कर्म शुभ बांधी, हुए त्रिभुवन राना ॥ श्री० ॥ २ ॥ जिनके कल्याणक दिवसे, नरके सुहानारे ॥ उद्योत हूए त्रिभुवनमें, अतिशय गुण गाना ॥ श्री० ॥ ३ ॥ प्रभु तीन ज्ञान लेइ उपने, जगमें सुभानारे ॥ लेइ दीक्षा

भविजन तारे, हूए केवल ज्ञाना ॥ श्री० ॥ ४ ॥ महा गोप सत्थ निर्यामक, वलि महा महाना रे ॥ येह उपमा जिनाकों छाजे, ते त्रिभुवन भाना ॥ श्री० ॥ ५ ॥ प्रतिहारज अड जस शोभे, गुण पैंतीस वाना रे ॥ प्रभु चौतिस अतिशय धारी, महानंद भराना ॥ श्री० ॥ ६ ॥ भवि अर्हन् पदकों पुजो, निजरूप समाना रे ॥ जिन आत्म ध्याने ध्यावे, तद रूप मिलाना ॥ श्री० ॥ ७ ॥ इति प्रथम श्रीअरिहंतपदपूजा समाप्ता ॥

॥ काव्यम् ॥ द्रुतविलंबित वृतम् ॥ अखिलवस्तु विकाशनभास्करं। मदनमोहतमस्तु विनाशकम् ॥ नवपदावलि नाम सुभक्तितः, । शुचिमनाः प्रयजामि विशुद्धये ॥ १ ॥

॥ मंत्रम्ः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु निवारणाय श्रीमतेऽर्हते जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥

॥ पूजा विधि २—बीजुं सिद्धपद रक्तवर्णं छे, माटे गहुं रकेबीमां धरी श्रीफल तथा अष्ट द्रव्य लेइने नव कलश पंचामृतथी भरीने वीजी पूजा भणे. ते संपूर्ण थयाथी " ॐ ह्रीं णमो सिद्धस्स " एम कही कलश ढोले. अष्ट द्रव्य चढावे. इति द्वितीयपद पूजा विधिः)

॥ अथ द्वितीय सिद्धपद पूजा ॥

॥ दोहा ॥ अलख निरंजन अचर विभु, अक्षय अमर अमार ॥ महानंद पदवी वरी, अव्यय अजर उदार ॥ १ ॥ अनंत चतुष्टय रूप ले, धारी अचल अनंग ॥ चिदानंद ईश्वर प्रभु, अटल महोदय संग ॥ २ ॥ अष्ट कर्मकों क्षय करी, फिर नहि जग अवतार ॥ सिद्ध बुद्ध सतरूपही, शिवरमणी भरतार ॥ ३ ॥

॥ निज स्वरुप जाने विनु चेतन ॥ यह चाल ॥

॥ सिद्ध स्वरूप जाने विनु चेतन, मिटे नहीं जगका फेरा ॥ सद्गु कुमत विहंडी छांडदे, ममता रंडीका डेरा ॥ सि० ॥ १ ॥ त्रि

भागो नही चरम देहसें, ज्ञानमय आत्म केरा ॥ निरावरणही ज्योति निराबाधव, गाहन विभु तेरा ॥ सि० ॥ २ ॥ सकल कर्ममल दूर करीने, पुरण अडगुण ले संगी ॥ निज गुण पर्याये बोलते, जिन मतमेंही सतभंगी ॥ सि० ॥ ३ ॥ स्वद्रव्यही खेतरकाल स्व भावे, स्वपर सत्ता गिनज्ञानी ॥ निजगुणही अनंते सक्तिव्यक्ति, कर मन मानी ॥ सि० ॥ ४ ॥ एक अनेक स आदि अनादि, अंतरहित जिनवर वानी ॥ निज आत्मरूपे अज अमल, अखंडित सुख खानी ॥ सि० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥ प्रदेशांतर फरसे नहि, एक समय गति जास ॥ सदानंदमय आत्मा, पावे शिवपुर वास ॥ १ ॥

॥ राग भैरवी तथा काफीमें गजल । मुख बोल जरा ॥ यह चाल ॥

॥ टुक खोज जरा मन लाय खरा, सिद्ध और नही तुं और नही ॥ टु० ॥ अंचली । अति पूज खरा सिद्ध चक्रधरा, निज कारण मान अभंग वरा; जब पूजा करे सब पाप झरे ॥ सिद्ध०॥१॥ उपादान तुही सिद्धरूप बुही, है निमित्त खरो सिद्धचक्र मुही, जब ध्याताध्येय अरु ध्यान मिले ॥ सि० २ ॥ बंधन छेद असंग लही, गति कारण पूर्व पयोग कही, जब गति परिणामका राग गहे ॥ सि० ३ ॥ एक समय गति उर्द्ध करी, थिररूप भये सब विघ्न जरो; जब ज्योतिसेंज्योति मिले सुधरी ॥ सि० ४ ॥ निर्मल सिद्ध शिलाथी सही, एक जोयण लोकनो अंत कही, जब सादि अनंत स्वरुप गही ॥ सि० ५ ॥ सुखकी उपमा जगमें नही, तिण केवल ज्ञानी शके न कही; जब सहज समाधीके रंग पगे ॥ सि० ॥ ६ ॥ रुपातीत स्वभाव धरे, शुद्ध केवल ज्ञानही दर्श वरे, जब आत्माराम आनंद भरे ॥ सि० ७ ॥ इति द्वितीय श्री सिद्ध पद पूजा समाप्त ॥

॥ काव्यम् ॥ अखिल वस्तु विकाशन भास्करं मदनमोह तमस्सु विनाशकम्म् ॥ नव पदावलि नाम सुभक्तितः। शुचिमनाः प्रयजामि विशुद्धये ॥

॥ मंत्रम् ॥ ॐ ह्रीँ श्री परम पुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु निवारणाय श्रीमते सिद्धाय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ इति ॥

(पूजा विधि ३.–त्रीजुं आचार्यपद पीले वर्णे छे, माटे चणानी दाल, अष्ट द्रव्य, श्रीफल प्रमुख लइ, नव कलश पंचामृतथी भरीने त्रीजी पूजानो पाठ भणे, ते संपूर्ण थयाथी " ॐ ह्रीँ। णमो आयरियाणं " एम कही कलश ढोले, अष्ट द्रव्य चढावे, इति तृतीय सूरि पदपूजा विधिः)

॥ अथ तृतीय श्री सूरि पद पूजा ॥

॥ दोहा ॥ तीजे पद सूरि नमो, रवि जिम तेज प्रकाश ॥ कलह कदाग्रह छोरिने, करी कुमतिका नाश ॥ १ ॥

॥ राग परज कालिंगडा ॥ जिनवर वचनं श्रुति अमृत ॥ यह चाल ॥

॥ सूरिजन अर्चन सुरतरुकंद, सूरिजन० ॥ अंचली ॥ तत्व बोध जिन आगम धारी, सदा निवारी भवभय फंद ॥ षट वर्गे वर्गित गुण शोभे, पंचाचार धरे निरधंद ॥ सू० ॥१॥ सूत्रानुसारी दीए देशना, भवि चकोर शशि करत आनंद ॥ चिदानंद रसस्वाद मगनता, परभावे नखचे मुनिचंद ॥ सू० ॥ २ ॥ निष्कामी निर्मल शुद्ध चिदघन, दर्शन ज्ञान चरण शिवकंद ॥ साधे साध्य भविक जन बोहे, गुण संपत निर्मल जिमचंद ॥ सू० ॥ ३ ॥ सहज समाधि संवर धारी, गत उपाधि शक्ति अमंद ॥ बाह्य अभ्यंतर तप गुण भारी, जारी मोह कर्मको कंद ॥ सू० ॥ ४ ॥ षटपंचाशत संपत सोहे, खोहे नही सुर रमणी वृंद ॥ जिनशासन आधार सुहंकर, आत्म निर्मल सदाही आनंद ॥ सू० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥ महा मंत्रके ध्यानसे, आचार्य पद लीन ॥ पंच प्रस्थाने आत्मा, अदभुत निजगुण पीन ॥ १ ॥

॥ कोयल टौंक रही मधुवनमें ॥ यह चाल ॥

॥ सूरिपद पूजन करो मनतनसें, पाप कलंक नसे इक छिनमें ॥ सू० ॥ अंचली ॥ पांच आचार जे सूधा पालें, भीज गए संजम इक रंगमें ॥ सत्योपदेश करे भविजनकों, आचारज माने मोरे मनमें ॥ सू० ॥ १ ॥ वर छत्रीश गुणे करी शोभे, युग प्रधान शोभे मुनिजनमें ॥ जग वोहे न रहे खिण कोहे, कर्म अरिकों हणे इक रनमें ॥ सू० ॥ २ ॥ सदा अप्रमत्त धर्म उपदेशें, विकथा कषाय नहि निज मनमें ॥ अमल अकलुष अमाय अद्वेषी, रागरहित जिम वर्षत घनमें ॥ सू० ३ ॥ सारण वारण नोदन करता, प्रतिनोदन देता मूनिजननें ॥ पट्टधारी गच्छ थंभ आचार्य, जे मान्या सत भविजन मनमें ॥ सू० ॥ ४ ॥ अत्थमिए जिन सूर्य केवल, चंद गए दीपकसम तममें ॥ भुवन पदार्थ प्रगट न पउजे, आत्माराम आनंद भवनमें ॥ सू० ॥ ५ ॥ इति तृतीय श्री सूरिपद पूजा समाप्त ॥ ३ ॥

॥ काव्यम् ॥ अखिल वस्तु विकाशन भास्करं । मदनमोह तमस्तु विनाशकम्म् ॥ नव पदावलि नाम सुभक्तितः । शुचिमनाः प्रयजामि विशुद्धये ॥ १ ॥

॥ मंत्रम् ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम पुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु निवारणाय श्रीमते सूरये जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ इति ॥

(पूजा विधि ४.–चोथुं उपाध्यायपद नील वर्णे छे, माटे मग प्रमुख तथा अष्टद्रव्य लइने पूर्वोक्त विधियें पूजा भणी संपूर्ण थया थी " ॐ ह्रूँ णमो उपाध्यायेभ्यः ' एम कही कलश ढोळे. अष्टद्रव्य चढावे ॥ इति विधिः)

॥ अथ चतुर्थ श्री उपाध्याय पद पूजा ॥

॥ दोहा ॥ सूत्र अर्थ विस्तारणे, तत्पर श्री उवज्झाय ॥ नहीं सूरि पण सूरिसम ॥ गणकों अतिहि सहाय ॥ १ ॥

॥ राग कमाच ॥ पाठकपद जिनवैन देंन, मन समरस भींनो रे ॥ पाठक० ॥ अंचली ॥ मोह ममता माया सब भंग, सूत्र अर्थ दीए द्वादश अंग॥ मदन विहंडन धर्म रंग, मद सब तज दीनो रे ॥ पाठक० ॥ १ ॥ पंच वर्ग वर्गित गुण चंग, वादि द्विप छेदन वली सिंघ॥ गणिगच्छ धारण थंभ संग, सूर असूर पूजीनो रे ॥ पाठक० ॥ २ ॥ दशविध जति धर्म धरी अंग, चरण करण उपदेशक रंग॥ धार ब्रह्म नव गुप्ती संग, जिनवच रस पीनो रे ॥ पा० ॥ ३ ॥ स्याद्वादसें तत्व विचारी, निजगुण ले परगुण सब छारी ॥ करे जिनिंद शासन उतंग, नर भव फल लीनो रे ॥ पा० ॥ ४ ॥ वाचन दान करण अतिसूर, शोडष उपमा योग्य सूनूर ॥ दूर करे सब कर्म चूर, आतम पद लीनोरे ॥ पाठक० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥ निकट होइ पढिये सदा ॥ जिनवर वचन अभंग ॥ सदानंद पाठक पदे ॥ लाग्यो अविहड रंग ॥ १ ॥

॥ राग ॥ बिहाग ॥ जिनिंद मत पाठक पूज सुज्ञानी ॥ पाठक० अंचली ॥ द्वादश अंग सिज्झाय करे जे, पारग धारक धामी ॥ सूत्र अर्थ विस्तार रसिक ते, पाठक नमुं सिरनामी ॥ जि० ॥ १ ॥ अर्थ सूत्रके दान विभागे, आचार्य उवझाय ॥ भव तीजें लहे शिवपद संपत, नमिये ते हर्षाय ॥ जि० ॥ २ ॥ मूर्ख शिष्य करे शुद्ध ज्ञानी, ध्यानी चिद्घन संगी ॥ उपलको पल्लव सदगुनी करता, मोह मिथ्यात्व विरंगी ॥ जि० ॥ ३ ॥ राजकुमर सरिसा गण चिंतक, आचारज पद जोगी ॥ बावना चंदन रससम वचने, निज आत्म सुख भोगी ॥ जि० ॥ ४ ॥ जिन शासनकों प्रकट करे जग, स्वाध्याय तप

पर विर्ना ॥ आत्मराम आनंदके ध्याता, कदेइ नही मन दिना ॥ जि० ॥ ५ ॥ इति चतुर्थ श्री उपाध्याय पद पूजा समाप्ता ॥

॥ काव्यम् ॥ अखिल वस्तु विकाशन भास्करं । मदनमोह तमस्तु विनाशकम्म् ॥ नव पदावलि नाम सुभक्तितः । शुचिमना प्रयजामि विशुद्धये ॥ १ ॥

॥ मंत्रम्म् ॥ ॐ ह्रीँ श्री परम पुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमते पाठकाय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥

(पूजा विधि ५—पांचमुं श्रीसाधुपद श्यामवर्णे छे, माटे अडद प्रमुख लेइ वीजो सर्व पूर्वोक्त विधि करी पूजा भणे. ते संपूर्ण थया थी ॐ ह्रीँ णमो सर्वसाधुभ्यः कहे ॥ इति पंचम पदपूजा विधिः)

॥ अथ पंचम श्री साधु पद पूजा ॥

॥ दोहा ॥ साधु संजम धारता ॥ दयातणा भंडार ॥ इंद्रिय मदयुत संजमी ॥ नमो नमो हितकार ॥ १ ॥

॥ राग झिंद काफी ॥ मुनिजन अर्चन शुद्ध मन करेरे, करेरे करेरे करेरे ॥ मुनि० ॥ अंचली ॥ सूरिजन वाचकनी नित्य सेवा, समिति गुप्ति शुद्ध धररे ॥ कामभोग जल दूर तजीने, उर्द्धकमल जिम तररे ॥ मु० ॥ १ ॥ बाह्य अभ्यंतर ग्रंथि निवारी, मुक्तिपंथ पग धररे ॥ अंग अष्ट चित्त सोग समाधि, पाप पंक सब झररे ॥ मु० ॥ २ सकल विपय विष दूर निवारी, भवदव तापसु हररे ॥ शुद्धस्वरुप रमणता रंगी, निर्मम निर्मद वररे ॥ मु० ॥ ३ ॥ काउसग मुद्रा घोर ध्यानमें, आशन सहिजसु थिररे ॥ तप तेजे दीपे दया दरियो, त्रिभुवन बंधुसु गिररे ॥ मु० ॥ ४ ॥ ऐसो मुनिपद पूज सुहंकर, आतम आनंद भररे ॥ शत्रु मित्रसम जन्म मरणको, जगत मोक्ष इक कररे ॥ मु० ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥ क्षमा मुक्ति रूजु नम्रता, सत्य अकिंचन शर्म ॥ तप संजम लघु रमणता, ब्रह्मचर्य मुनि धर्म ॥ १ ॥

॥ आइ इंद्र नार करकर शृंगार ॥ यह चाल ॥

॥ चिदघन आनंद मुनिराज वंद, सवि कटित फंद भवि पूज रंग ॥ मनमें उमंग समतारस भीना ॥ चि० ॥ अंचली ॥ जिम तरु फूले चैत भृंग, आतम संतोषे अधिक रंग ॥ विना पीडे ले मकरंद चंग, होके आनंद गोचर कर लीना ॥ चि० ॥१॥ कषाय टार पण इंद्री रोध, षटकाय पार मुनि शुद्ध बोध ॥ संजम सतरे मन शुद्ध शोद्ध, मचे रणमें जोध मनमें नही दीना ॥ चि० ॥ २ ॥ अठारेस हस्र शिलांगधार, जयणायुत अचल आचार पार ॥ नवविध गुप्ति सें ब्रह्मकार, आतम उजार भववन दवदीना ॥ चि० ॥३॥ जे द्वादश विध तप करत चंग, दिनदिन शुद्धसंयम चडित रंग ॥ सोनानी परे धरे परिख चंग, चितमें अभंग संजमरस लीना ॥ चि० ॥ ४ ॥ देशकाल अनुमाननंद, संयम पाले मुनिराजचंद ॥ मिटे हर्षशोक परमादधंद, आत्म आनंद अनुभवरस पीना ॥ चि० ॥ ५ ॥

॥ काव्यम् ॥ अखिल वस्तु विकाशन भास्करं । मदन मोह तमस्तु विनाशकम्म् ॥ नव पदावलि नाम सुभक्तितः । शुचिमनाः प्रयजामि विशुद्धये ॥ १ ॥

॥ मंत्रम्म् ॥ ॐ ह्रूँ श्रीं परम पुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु निवारणाय श्रीमते साधवे जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ १ ॥

(पूजा विधि ६– छट्ठुं दर्शनपद श्वेत वर्णे छे, माटे तांदुल प्रमुख लइ बीजो सर्व पूर्वोक्तविधि करी पूजा भणे. पछी ॐ ह्रूँ णमो दंसणस्स कहे. इति षष्ठपदपूजा विधिः)

॥ अथ षष्ठ श्री सम्यग् दर्शन पद पूजा ॥

॥ दोहा ॥ जिनवर भाषित तत्वमें, रुचिलक्षण चितधार ॥ सम्यग् दर्शन प्रणमिए, भवदुःख भंजनहार ॥ १ ॥

॥ थारी गइरे अनादि निद ॥ यह चाल ॥ राग माढ ॥

॥ मिटगइरे अनादी पीर, चिदानंद जागोतो सही ॥ अंचली० ॥ विपरीत कदाग्रह मिथ्यारूप जे, त्यागो तो सही ॥ जिनवर भाषित तत्वरुचि ढिग, लागोतो सही ॥ मि० ॥ १ ॥ दर्शन विना ज्ञान नही भविने, मानोतो सही ॥ विना ज्ञान चरण न होवे, जाणोतो सही ॥ मि० ॥ २ ॥ निश्चय करणरूप जस निर्मल, सक्तितो सही ॥ अनुभव करत रूप सब छंडी, व्यक्तितो सही ॥ मि० ॥ ३ ॥ सत्ता शुद्ध निजधर्म प्रगटकर, छानोतो सही ॥ करणरुची उछले बहु माने, ठानोतो सही ॥ मि० ॥ ४ ॥ साध्य दृष्ट सर्व करणी कारण, धारोतो सही ॥ तत्वज्ञान निज संपत मानी, कारोतो सही ॥ मि० ॥ ५ ॥ आत्माराम आनंद रस लीनो, प्यारोतो सही ॥ जिनवर भाषित सत्यमानकर, सारोतो सही ॥ मि० ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥ देव धर्म गुरु तत्वकी, सद्दहणा परिणाम, सातों मलकें मिट गए, सम्यग् दर्शन नाम ॥ १ ॥

॥ राग परज ॥ निशदिन जोउ वाटडी ॥ यह चाल ॥

॥ सम्यग् दर्शन पूज ले, जिम मिटे मन झोला ॥ अंचलि० ॥ मल उपशम खय उपशमें, खयसें दृग खोला ॥ त्रिविध भंगसम दर्शने, जिनवर इम बोला ॥ स० ॥१॥ जिनधर्मे दृढ संगसें, अनुभव रस घोला; निज परसत्ता ज्ञानसें, जिम कृमिरंग चोला ॥ स० ॥ २ ॥ पांच वार उपशम लहे, क्षय उपशम डोला ॥ संख्यातीत सो जानीए, क्षय इंदु अमोला ॥ स० ॥ ३ ॥ जिसविन ज्ञान अज्ञानहै, वृत्तितरु न वि मोला ॥ सुख निर्वाण न भवि लहे, समकित विन भोला ॥ स० ॥ ४ ॥ सडसठ बोले अलंकर्यो, ज्ञान चरण अंदोला ॥ भववन मिथ्या दहनकों, दावानल तोला ॥ स० ॥ ५ ॥ सब करणीका मूल

है, शिवपंथ अमोला ॥ दर्शन तेहीज आत्मा, आतम रंग रोला ॥ स० ॥ ६ ॥ इति षष्ठ श्री सम्यग् दर्शनपद पूजा ॥

॥ काव्यम्म् ॥ अखिल वस्तु विकाशन भास्करं। मदनमोह तमस्सु विनाशकम्म् ॥ नव पदावलि नाम सुभक्तितः। शुचिमनाः प्रयजामि विशुद्धये ॥

ॐ ह्रीं श्री परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु निवारणाय श्रीमते सम्यग् दर्शनाय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥

(पूजा विधि ७.—सातमुं ज्ञानपद श्वेतवर्णे छे, माटे चावल प्रमुख लेवा बीजो सर्व पूर्वोक्त विधि करवो ने ॐ ह्रीं णमोणाणस्स कहेवुं. ॥ इति सप्तमपदपूजा विधिः ॥

॥ अथ सप्तम श्री सम्यग् ज्ञानपद पूजा.

॥ दोहा ॥ मिथ्या मोह कुपंथही, अज्ञ तिमिर करे दूर ॥ निज परसत्ता सहू लहे, ज्ञानहि निर्मल सूर ॥ १ ॥

॥ राग भैरवी ॥ लागी लगन कहो ॥ यह चाल ॥

॥ ज्ञान सुहंकर चिदघन संगी, सप्तभंगी मत सारेरे ॥ अंचली ॥ शुद्ध ज्ञान मिथ्यात्व मिटेसें, ज्ञानावरण विडारेरे ॥ षद्रव्य नाना बोध स्वरूपे, निज इच्छा सब वारेरे ॥ ज्ञा० ॥ १ ॥ गुरु सेवासें योग्यता प्रगटे, हेय उपादेय कारेरे ॥ ज्ञेय अनंत स्वरूपें भासें, दीप तिमिर जिम टारेरे ॥ ज्ञा० ॥ २ ॥ नित्यानित्य नाश अविनाशी, भेदाभेद अभंगीरे ॥ एक अनेक रूपही अरूपी ॥ स्यादवाद नय संगीरे ॥ ज्ञा० ॥ ३ ॥ अर्पितानर्पित मुख्य गौणता, साधन सिद्ध विरंगीरे ॥ वाच्यावाच्य सअंश निरंशी, आनंद घन दुःख रंगीरे ॥ ज्ञा० ॥ ४ ॥ विभाव स्वभावी शुद्ध स्वभावी, वीतराग जड संगीरे, संशय सर्वही दूर निवारे, आत्म समरस चंगीरे ॥ ज्ञा० ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥ सूत्र संयुत सूचीवत्, कचवर पिंड मझार ॥ विनसे नहीं तिम श्रुतयुत, पामे भवनो पार ॥ १ ॥

॥ कंकन खोल देउ महाराजा ॥ यह चाल ॥

॥ सबमें ज्ञानवंत वडवीर, काटे सकल कर्म जंजीर ॥ अंचली ॥ भक्षाभक्ष न जे विन जाने, गम्यागम्य नही पीछाने ॥ कार्याकार्य न जाने कीर ॥ स० ॥ १ ॥ प्रथम ज्ञानही दया पिछाने, अज्ञानी सरसो नहीं जाने ॥ ऐसे कहे सिद्धांते वीर ॥ स० ॥ २ ॥ श्रद्धा सकल क्रियाका मूल, तिसका मूलही ज्ञान अमूल ॥ सच्चा ज्ञान धरो मन धीर ॥ स० ॥ ३ ॥ पंच ज्ञानमें श्रुत प्रधान, स्वपर प्रकाशे तिमिर मिटान ॥ जगमें अति उपगारी हीर ॥ स० ॥ ४ ॥ लोकालोक प्रकाशन हारा, त्रिभुवन सिद्धराज सुख भारा ॥ सतचिद आत्मराम गंभीर ॥ स० ॥ ५ ॥

॥ काव्यम् ॥ अखिलवस्तु विकाशन भास्करं ॥ मदनमोह तमस्तु विनाशकम्म् ॥ नव पदावली नाम सुभक्तितः ॥ शुचिमनाः प्रयजामि विशुद्धये ॥

॥ मंत्रम् ॥ ॐ ह्रूँ श्री परम पुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु निवारणाय श्रीमते सम्यग् ज्ञानाय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥

(पूजा विधि ८.–आठमुं चारित्रपद पण श्वेतवर्ण छे. माटे चोखा प्रमुख लेइबीजोसर्व पूर्वोक्त विधि करवो पछी ॐ ह्रूं णमो चारित्तस्स कहेवुं ॥ इति अष्टमपद पूजा विधिः)

॥ अथ अष्टम श्री सम्यक् चारित्र पदपूजा ॥

॥ दोहा ॥ सकल जन्म पूरण करे, नही विराधे लेश ॥ आराधिक चारित्रको, ए जिनवर उपदेश ॥ १ ॥

॥ राग वसंत ॥ होलीकी चाल ॥

॥ बंदे कछु करले कमाइरे, जांते नर भव सफल कराइ ॥ बंदे कछु करले कमाइरे ॥ अंचली ॥ ज्ञान फल चरण सुरंगा, निराशंसता थाइ ॥ आश्रवरोध यानपात्र सुखदाइ

॥ बंदे० ॥ १ ॥ थारो चरण नही मिले मोले, रंक राज्यपददाइ ॥ बारह अंग पढे जस महिमा, क्योंकर वरनी जाइ ॥ बंदे० ॥ २ ॥ तत्व रमण जस मूल सुहंकर, पररमणा मिटजाइ ॥ सकलसिद्धि अनु कूल हूए जब, समदम संयम पाइ ॥ बं० ॥ ३ ॥ सामायिक आ दि पंच भेद है, दशविध धर्म सुहाइ ॥ संवर समिति गुप्तिआदि ले, ए जसनामपर जाइ ॥ बं० ॥ ४ ॥ अकषाय अति उज्वल निर्मल, मदन कदन चितलाइ ॥ आत्माराम आनंदके दाता, चारित्र पद मन भाइ ॥ बंदे० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥ देश सर्व विरती भली, गृहयती अभिराम ॥ ते चा रित्र सदा जयो, कीजे तास प्रणाम ॥ १ ॥

॥ राग ठुमरी ॥ ब्रह्मज्ञान नही जानारे ॥ यह चाल ॥

॥ चारित्र मुज मन मानारे भविका ॥ चा० ॥ अंचली० ॥ तृ णपरे जे सब सुख छंडी, षटखंड केरा रानारे ॥ चक्रवर्त्ति संयमसिरि व रीया, चारित्र अखेसुख दानारे ॥ चा० ॥ १ ॥ रंक हूआ चारित्र आदरे, इंदनरिंद पूजानारे ॥ असरण सरण चारित्रही वंदु, सतचि द आनंद भरानारे ॥ चा० ॥ २ ॥ बारामास संयम पर्याये, अनु त्तर सुखही क्रमानारे ॥ शुक्ल शुक्ल अभिजात्य ते ऊपर, सो चारित्र महानारे ॥ चा० ॥ ३ ॥ चयते अष्ट कर्मका संचय, रिक्त करे सब थानारे, चारित्रनाम निरुक्तिएं भाष्यो, ते वंदु गुण ठानारे ॥ चा० ॥ ४ ॥ चारित्र सोइ आत्मा मानो, निज स्वभाव रमानारे ॥ मो हवने नही भ्रमण करतुहै, तब तुं आतम रानारे ॥ चा० ॥ ५ ॥

॥ काव्यम् ॥ अखिल वस्तु विकाशन भास्करं । मदनमोह तम स्सु विनाशकम्म् ॥ नव पदावलि नाम सुभक्तितः । शुचिमनाः प्रय जामि विशुद्धये ॥ १ ॥

नही तिम म्म् ॥ ॐ ह्रीं श्री परम पुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरा मृत्यु ...मते सम्यक् चारित्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥

(पूजा विधि ९—नवमुं तपपद श्वेतवर्णे छे, माटे चोखा प्रमुख लेइ पूर्वोक्त विधि करीने ॐ ह्रीँ णमो तवस्स कही, कलश ढोले. अष्ट द्रव्य चढावे. पछी अष्ट प्रकारी पूजा करे ॥ इति श्रीनवमपद पूजाविधिः)

अथ नवमी श्री सम्यक तपपद पूजा.

॥ दोहा ॥ कर्म द्रुम उन्मूलने । वर कुंजर अतिरंग ॥ तप समूह जयवंतही । नमो नमो मनचंग ॥ १ ॥

॥ राग रामकली ॥ तेरो दरस भले पायो ॥ यह चाल ॥

श्री तप मुज मन भायो, आनंदकर श्री०॥ अंचली ॥ इच्छारहित कषाय निवारी, दुर्ध्यान सवही मिटायो ॥ बाह्य अभ्यंतर भेद सुहंकर, निर्हेतुक चित्त ठायो ॥ आ० ॥ १ ॥ सर्व कर्मका मूल उखारी, शिवरमणी चित्त लायो ॥ अनादि संतती कर्म उच्छेदी, महानंदपद पायो ॥ आ० ॥ २ ॥ योगसंयोग आहार निवारी, अक्रियतापद आयो ॥ अंतर बहुरत सर्व संवरी, निज सत्ता प्रग टायो ॥ आ० ॥ ३ ॥ कर्म निकाचित छिनकमे जारे, क्षमासहित सुखदायो ॥ तिसभव मुक्ति जाने जिनंदजी, आदर्यो तप निरमायो ॥ आ० ॥ ४ ॥ आमो सहीआदि सवलब्धि, होवे जासपसायो ॥ अष्टमहासिद्धि नवनिधि प्रगटे, सो तप जिनमत गायो ॥ आ० ॥ ॥ ५ ॥ शिवसुर फलसुख नरवर- संपद, पुष्पसमान सुभायो ॥ सो तप सुरतरुसम नित्य वंदु, मनवंछित फल दायो ॥ आ०॥६॥ ॥ सर्व मंगलमें पहिलो मंगल, जिनवर तंत्रसु गायो ॥ सो तपपद त्रिहुं कालमें नमीए, आतमराम सहायो ॥ आ० ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥ इच्छा रोधन संवरी । परणति समता जोग ॥ तपहै सोइज आतमा, वरते निजगुण भोग ॥ १ ॥

॥ राग सोरठ ॥ जिनजीने दोनी माने एक जरी, एक भुजंग

पंचविष नागन, सूंघत तुरत मरी ॥ जि० ॥ अंचली ॥ समता संवर परगुण छारी, समरस रंग भरी ॥ अचल समाधि तपपद रमतां, ममता मूरजरी ॥ जि० ॥ १ ॥ योग असंखही जिनवर भाषित, नवपद मूख्य करी, कर अवलंबन भवि मन शुद्धे, कर्म जंजीर जरी ॥ जि० ॥ २ ॥ आगमनोआगम करी भेदे, आतम रमण करी ॥ सप्तनय सतभंगी अनघवर, घटमेंही रिद्धि धरी ॥ जि० ॥ ३ ॥ ए नव पद शुद्ध अर्चनकरके, निज घटमांहे धरी ॥ चिदानंदघन सहज विलाशी, भववन दाह करी ॥ जि० ॥ ४ ॥ सिरीपाल सिद्धचक्र आराधी, मनतन राग हरी ॥ नव भवांतर शिव कमला ले, आतमानंद भरी ॥ जि० ५ इति ॥

॥ कलश ॥

॥ भविनंदो जिनंद जस बरणीने ॥ यह चाल ॥

॥ भवि वंदो जिनंदमत करणीने ॥ भ० ॥ अंचली० ॥ इम नवपद मंडल गुण वरणी च्यार न्यास दुःख हरणीने ॥ भ० ॥ १ ॥ सम्यक् सात नयें सब जाणी, आदरी कुमति विहरणीने ॥ भ० ॥ २ ॥ श्री तपगच्छ नभोमणि वरमुनिपति, विजयसिंहसूरि चरणीने ॥ भ०॥३॥ सत्य कपूर क्षमा जिन उत्तम, पद्मरूप अघ टरणिने ॥ भ० ॥४॥ कीर्त्ति विजय कस्तुर सुगंधी, मणि तिमिर जग हरणीने ॥ भ० ॥ ५ ॥ श्री गुरुबुद्धि विजय महाराजा, विजयानंद जिन सरणीने ॥ भ० ॥ ६ ॥ जीरागाम तिहां संघ जयंकर, सुख संपत उदय करणीने ॥ भ० ॥ ७ ॥ तिनके कथनसें रचना कीनी, सुगम रीत अघ हरणीने ॥ भ० ॥ ८ ॥ पसु युग अंक इंदु शुभवर्षे, पट्टी नगर सुख धरणीने ॥ भ० ॥ ९ ॥ रही चौमासा येह गुण गाया, आतम शिववधू परणीने ॥ भ० ॥ १० ॥ इति कलश ॥

॥ काव्यम् ॥ अखिल वस्तु विकाशन भास्करं । मदनमोह

तमस्तु विनाशकम्म् ॥ नव पदावलि नाम सुभक्तितः । शुचिम नाः प्रयजामि विशुद्धये ॥

॥ मंत्रम् ॥ ॐ ह्रूँ श्री परम पुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमते सम्यक् तपसे जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ इति नवपद पूजा समाप्ता ॥

॥ अथ सत्तरभेदी पूजाऽध्यापनविधिः ॥

॥ प्रथम स्नात्र करे, पछी अष्टप्रकारी पूजा करे ॥ उज्ज्वल रूपा प्रमुखनी रकेबीमां कुंकुम तथा केशर विगेरेनो स्वस्तिक करे. पछी सुंदर कलश, केशर प्रमुख मिश्रित शुद्ध जलें भरी, स्थापनानो रूपैयो कलशमां नांखे. कलश रकेबीमां राखी, पछी स्नात्रीया मुखकोश उत्तरासंगथी करी त्रण नवकार गणी नमस्कार करे. हाथे धूप देइ रकेबी हाथमां धारण करे, मन स्थिर राखे, छींक वर्जन करे, स्नात्रीया प्रभुजी सन्मुख उभा रहे. पंचामृतनो कलश अडग राखे, मुखथकी पहेली पूजानो पाठ भणे, ते भणीने पछी प्रभुनें पंचामृतनुं न्हवण करे तथा प्रभुनी डावी बाजुने अंगुठे जलधारा आपे)

॥ अथ ॥

॥ श्रीआत्मारामजी कृत सत्तरभेदी पूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ सकल जिणंद मुणिंदनी, पूजा सत्तर प्रकार ॥ श्रावक शुध भावें करे, पामे भवनो पार ॥ १ ॥ ज्ञाता अंगें द्रौपदी, पूजे श्री जिनराज ॥ रायपसेणि उपांगमें, हित सुख शिवफल ताज ॥ २ ॥ न्हवण विलेपन वस्त्रयुग, वास फूल वरमाल ॥ वरण चुन्न ध्वज शोभती, रत्नाभरण रसाल ॥ ३ ॥ सुमनसगृह अति शोभतुं, पुष्प वरा मंगलीक ॥ धूप गीत नृत्य नादशुं, करत मिटे सब भीक ॥ ४ ॥

॥ अथ प्रथम न्हवण पूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ शुचितनु वदन वसन धरी, भरे सुगंध विशाल ॥ कनक कलश गंधोदकें, आणि भाव विशाल ॥ १ ॥ नमत प्रथम जिनराजकुं, मुख बांधी मुखकोश ॥ भक्ति युक्तिसें पूजतां, रहे न रंचक दोष ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥

॥ राग खमाच ॥ ताल पंजाबी ठेको ॥ मान तुं काहे पें करता ॥ ए देशी ॥

॥ मान मद मनसें परहरता, करी न्हवण जगदीश ॥ मा० ॥ ए आकणी ॥ समकितनी करनी दुःख हरनी, जिन पखाल मनमें धरता ॥ अंग उपंग जिनेश्वर भाखी, पाप पडल जरता ॥ क० ॥ १ ॥ कंचनकलश भरी अति सुंदर, प्रभु स्नान भविजन करता ॥ नरक वैतरणी कुमति नासे, महानंद वरता ॥ क० ॥ २ ॥ काम क्रोधकी तपत मिटावे, मुक्तिपंथ सुख पग धरता ॥ धर्म कल्पतरु कंद सींचता, अमृत घन झरता ॥ क० ॥३॥ जन्म मरणका पंक पखारी, पुण्य दशा उदय करता ॥ मंजरी संपद तरु वर्द्धनकी, अक्षय निधि भरता ॥ क० ॥ ४ ॥ मनकी तप्त मिटी सब मेरी, पदकज ध्यान हृदे धरता ॥ आतम अनुभव रसमें भीनो, भव समुद्र तरता ॥ क० ॥ ५ ॥ (यह पूजा पढकें पंचामृत तथा तीर्थ जलसें भगवानकूं स्नान करावे) ॥ इति ॥ १ ॥

(पूजा विधि २—पछी सुंदर सूक्ष्म अंगलूहणे जिनबिंब प्रमार्जी केशर, चंदन, मृगमद, अगर, कर्पूरादिकथी कचोली भरी हाथमां लइ उभा रहीने मुखथकी बीजी पूजानो पाठ भणे. ते भणीने विलेपन करी नव अंगे पूजन करे.)

॥ अथ द्वितीय विलेपन पूजा ॥

॥ दोहा ॥ गात्र लुही मन रंगशुं, महके अतिही सुवास ॥

गंधकपायी वसनथुं, सकल फले मन आश ॥ १ ॥ चंदन मृगमद कुंकुमें, भेली मांहे वरास ॥ रतनजडित कचोलीयें, करी कुमतिनो नाश ॥ २ ॥ पग जानु कर खंधमें, मस्तक जिनवर अंग ॥ भाल कंठ उर उदरमें, करे तिलक अति चंग ॥ ३ ॥ पूजक जन निज अंगमें, रचे तिलक शुभचार ॥ भाल कंठ उर उदरमें, तस मिटा वनहार ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥

॥ ठुमरी ॥ ताल–पंजाबी ठेको ॥ मधुवनमें मेरे सावरीया ॥ ए देशी ॥

॥ करी विलेपन जिनवर अंगें, जन्म सफल भविजन माने ॥ क० ॥ १ ॥ मृगमद चंदन कुंकुम घोली, नव अंग तिलक करी थाने ॥ क० ॥ २ ॥ चक्री नवनिधि संपद प्रगटे, करम भरम सव क्षय जाने ॥ क० ॥ ३ ॥ मन तनु शीतल सव अघ टारी, जिन भक्ती मन तनु ठाने ॥ क० ॥ ४ ॥ चौसठ सुरपति सुर गिरिंगें, करी विलेपन घन माने ॥ क० ॥ ५ ॥ जागी भाग्यदशा अव मेरी, जिनवर वचन हृदे ठाने ॥ क० ॥ ६ ॥ परम शिशिरता प्रभु तन करतां, चितसुख अधिके प्रगटाने ॥ क० ॥ ७ ॥ आत्मानंदी जिनवर पूजी, शुद्ध स्वरूप निज घट आने ॥ क० ॥ ८ ॥ (यह पढकें विलेपन कीजें, प्रभुकुं नव अंगें टीकी दीजें) ॥ इति ॥

(पूजा विधि ३–पछी अत्यंत सुकोमल सुगंधित अमुलक वस्त्र युग्म उपर केशरनो स्वस्तिक करी, प्रभुजी आगल उभो रही, मुख थकी त्रीजी पूजानो पाठ भणे. ते भणीने प्रभुजी आगल वस्त्र युग्म चढावे.)

॥ अथ तृतीय वस्त्रयुगल पूजा ॥

॥ दोहा ॥ वसन युगल अति उज्ज्वलें, निर्मल अतिही अभंग ॥ नेत्रयुगल सूरी कहे, येही मतांतर संग ॥ १ ॥ कोमल चंदन

चरचियें, कनक खचित वरचंग ॥ हय पल्लव शुचि प्रभु शिरें, पहेरावे मन रंग ॥ २ ॥ द्रौपदी शक्र सुरियाभ ते, पूजे जिम जिनचंद ॥ श्रावक तिम पूजन करे, प्रगटे परमानंद ॥ ३ ॥ पाय लुहण अंग लूहणां, दीजें पूजन काज ॥ सकल करम मल क्षय करी, पामे अविचल राज ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥

॥ राग देश सोरठ ॥ पंजाबी ठेको ॥ कुबजाने जादू डारा ॥ ए देशी ॥

॥ जिनदर्शन मोहनगारा, जिने पाप कलंक पखारा ॥ जिन० ॥ ए आंकणी ॥ पूजा वस्त्रयुगल शुचि संगें, भावना मनमें विचारा ॥ निश्चय व्यवहारी तुम धर्मे, वरनुं आनंदकारा ॥ जि०॥१॥ ज्ञान क्रिया शुद्ध अनुभव रंगें, करुं विवेचन सारा ॥ स्वपर सत्ता धरुं हरुं सब, कर्म कलंक पहारा ॥ जि० ॥ २ ॥ केवल युगल वसन अर्चितसें, मांगत हुं निरधारा ॥ कल्पतरु तुं वंछित पूरे, चूरे करम कठारा ॥ जि० ॥ ३ ॥ भवोदधि तारण पोत मिला तुं, चिद्घन मंगलकारा ॥ श्रीजिनचंद जिनेश्वर मेरे, चरण सरण तुम धारा ॥ जि० ॥ ४ ॥ अजर अमर कर अलख निरंजन, भंजन करम पहारा ॥ आत्मानंदी पापनिकंदी, जीवन प्राण आधारा ॥ जि० ॥ ५ ॥ इति ॥

(पूजा विधि ४—पछी अगर, चंदन, कपूर, कुंकुम, कस्तूरीनुं चूर्ण करी, कचोली भरी प्रभु आगल उभो रही, मुखथकी चोथी पूजा नो पाठ भणे. ते भणीने वासचूर्ण बिंब उपर छांटे, जिनमंदिरमां चूर्ण उछाले.)

॥ अथ चतुर्थ गंधपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ चोथी पूजा वासकी, वासित चेतन रूप ॥ कुमति कुगंध मिटी गइ, प्रगटे आतमरूप ॥ १ ॥ सुमती अति हर्षित भ

इ, लागी अनुभव वास ॥ वास सुगंधे पूजतां, मोह सुभटको नाश ॥ २ ॥ कुंकुम चंदन मृगमदा, कुसुम चूर्ण घनसार ॥ जिनवर अंगें पूजतां, लहियें लाभ अपार ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥

॥ राग जंगलो ॥ ताल पंजाबी ठेको ॥ अब मोहे डांगरीया ॥ ए देशी ॥

॥ चिदानंद घन अंतरजामी ॥ अब मोहे पार उतार ॥ जिनंदजी ॥ अब० ॥ ए आंकणी ॥ वासखेपसें पूजन करतां, जनम मरण दुःख टार ॥ जि० ॥ निजगुन गंध सुगंधी महके, दहे कुमति मद मार ॥ जि० ॥ १ ॥ जिन पूजतही अति मन रंगें, भंगे भरम अपार ॥ जि० पुदगलसंगी दुर्गंध नाठे, वरते जयजयकार ॥ जि० ॥ २ ॥ कुंकुम चंदन मृगमद मेली, कुसुम गंध घनसार ॥ जि०॥ जिनवर पूजन रंगें राचे, कुमति संग सब छार ॥ जि० ॥ ३ ॥ विजय देवता जिनवर पूजे, जीवाभिगम मझार ॥ जि० ॥ श्रावक तिम जिनवासें पूजे, गृह स्वधर्मनो सार ॥ जि० ॥ ४ ॥ समकितनी करणी शुभ वरणी, जिन गणधर हितकार ॥ जि० ॥ आतम अनुभव रंगरंगीला, वास यजनका सार ॥ जि० ॥ ५ ॥ (यह पढके प्रभु आगें वासक्षेप उछाले) ॥ इति चतुर्थ पूजा ॥

(पूजा विधि ५.—पछी गुलाब, केतकी, चंपो, कुंद, मचकुंद, सोवन जाति, जाइ. जूई, विउलसिरि, इत्यादि सुगंधयुक्त पंचवर्ण फूल लेइ, उभो रही, मुख थकी पांचमी पूजानो पाठ भणे. ते भणीने पंचवर्ण फूल चढावे.)

॥ अथ पंचम पुष्पारोहण पूजा ॥

॥ दोहा ॥ मन विकसे जिन देखतां, विकसित फूल अपार ॥ जिनपूजा ए पंचमी, पंचमि गति दातार ॥ १ ॥ पंच वरणके फूल

सें, पजे त्रिभुवन नाथ ॥ पंच विघन भवि क्षय करी, साधे शिव पुर साथ ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥

॥ राग कहेरवा ॥ ताल ठुमरी ॥ पास जिनंदा प्रभु, मेरे मन वसीया ॥ ए देशी ॥

॥ अर्हन् जिनंदा प्रभु, मेरे मन वसीया ॥ ए आंकणो ॥ मोगर लालगुलाब मालती, चंपक केतकी निरख हरसीया ॥ अ०॥१॥ कुंद प्रियंगु वेलि मचकुंदा, बोलसिरि जाइ अधिक दरसीया ॥ अ० ॥२॥ जल थल कुसुम सुगंधी महके, जिनवर पूजन जिम हरि रसीया ॥ अ० ॥३॥ पंच बाण पीडे नहि मुझकों, जब प्रभु चरणें फूल फरसीया ॥ अ० ॥ ४ ॥ जडता दूर गई सब मेरी, पांच आवरण उखार धरसीया ॥ अ० ॥ ५ ॥ अवर देवकूं आक धत्तूरा, तुमरे पंच रंग फूल वरसीया ॥ अ० ॥ ६ ॥ जिन चरणें सहु तपत मिटतु हे, आतम अनुभव मेघ वरसीया ॥ अ० ॥ ७ ॥ (यह पढकें पंच वरणके फूल चढावे ॥ इति पंचम पुष्पारोहण पूजा समाप्त ॥

(पूजा विधि ६—पछी नाग, पुन्नाग, मरुओ, दमणो, गुलाब, पाडल, मोघरो, सेवंत्री, चंपेली, मालती, प्रमुख पंचवर्णनां कुसुमनी सुंदर माला गुंथीनें रकेबीमां मुकी ते हाथमां लेइ उभो रही छठी पूजानो पाठ भणे, ते भणीने प्रभुने कंठें फूलनी माला पहेरावे.)

॥ अथ षष्ठ पुष्पमाला पूजा ॥

॥ दोहा ॥ छठी पूजा जिन तणी, गुंथी कुसुमनी माल ॥ जिन कंठें थापी करी, टालियें दुःख जंजाल ॥ १ ॥ पंच वरण कुसुमें करी, गुंथो जिन गुण माल ॥ वरमाला ए मुक्तिकी, वरे भक्त सुविशाल ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥

॥ राग जंगलो ॥ ताल दीपचंदी ॥ पार्श्वनाथ जपत है जो जन, करम न आवे ताके नेरे ॥ ए देशी ॥

॥ कुसुम मालसें जो जिन पूजे, कर्मकलंक नासे भवि तेरे ॥

कु० ॥ ए आंकणी ॥ नाग पुन्नाग प्रियंगु केतकी, चंपक दम नक कुसुम घने रे ॥ मल्लिका नव मल्लिका शुद्ध जाति, तिलक वसंतिक सब रंग हे रे ॥ कु० ॥ १ ॥ कल्प अशोक बकुल मगदंती, पाडल मरुक मालती ले रे ॥ गुंथी पंच वरणकी माला, पाप पंक सब दूर करे रे ॥ कु०॥२॥ भाव विचारी निजगुण माला, प्रभुसें मागे अरज करे रे॥ सर्व मंगलकी माला रोपे, विघन सकल सब साथ जले रे ॥ कु० ॥ ३ ॥ आतमानंदी जगगुरु पूजी, कुमति फंद सब दूर भगे रे ॥ पूरण पुण्यें जिनवर पूजे, आनंदरूप अनूप जगे रे ॥ कु० ॥ ४ ॥ (यह पढी प्रभु कंठे फूल माला चढावे) इति ॥ ६ ॥

(पूजा विधि ७--पछी पंचवर्ण फूलनी केशरथी आंगी रची, हाथमां लेइ मुख थकी सातमी पूजानो पाठ भणे. ते भणीनें, सुगंधित पुष्पें करी, अत्यंत भक्तियें सहित भगवंतना शरीरें आंगी रचे.)

॥ अथ सप्तम अंगीरचना पूजा ॥

॥ दोहा ॥ पांच वरणके फूलकी, पूजा सातमी मान ॥ प्रभु अंगें अंगो रचो, लहियें केवलज्ञान ॥ १ ॥ मुक्तिवधूकी पत्रिका, वरणी श्री जिनदेव ॥ शुद्ध तत्त्व समजे सही, मूढ न जाणे भेव ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥

॥ तुम दीनके नाथ दयाल लाल ॥ ए देशी ॥

तुम चिद्घनचंद आनंद लाल, तोरे दर्शनकी बलिहारी ॥ तु० ॥ १ ॥ पंचवरण फुलोसें अंगीयां, विकसे ज्युं केसर क्यारी ॥ तु० ॥ २ ॥ कुंद गुलाब मरुक अरविंदो, चंपकजाति मंदारी ॥ तु० ३ ॥ सोवन जाती दमनक सोहे, मनतनु तजित विकारी ॥ तु० ॥ ४ ॥ अलखनिरंजन ज्योति प्रकासे, पुद्गल संग निवारी ॥ तु० ॥ ५ ॥ सम्यग् दर्शन ज्ञानस्वरूपी, पूर्णानंद विहारी ॥ तु० ॥ ६ ॥ आतम

सत्ता जबहीं प्रगटे, तबही लहे भवपारी ॥ तु० ॥ ७ ॥ (यह पद के सुगंध पुष्पे करी भगवानके शरीरें अंगी रचे) इति सप्तम पूजा ॥

(पूजा विधि ८—पछी घनसार, अगर, सेलारस प्रमुख सुगंध वटी इत्यादिक सुगंधचूर्ण रकेबीमां नाखी, हाथमां लेइ परमेश्वर आगल उभो रही मुखथकी आठमी पूजानो पाठ भणे. ते भणीने प्रभुजीने सुगंधीचूर्ण चढावे.)

॥ अथाष्टमचूर्ण पूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ जिनपति पूजा आठमी, अगर भला घन सार ॥ सेलारस मृगमद करी, चूरण करी अपार ॥ १ ॥ चुन्नारोहण पूजना, सुमती मन आनंद ॥ कुमती जन खीजे अति, भाग्यहिन मतिमंद ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥

॥ राग जोगीयो ॥ नाथ मेंनुं छडके गढ गिरनार तुं गयो री ॥ ए देशी ॥

करम कलंक दह्यो री, नाथ जिनज जके ॥ ए आंकणी ॥ अगर सेलारस मृगमद चूरी, अतिघनसार मह्यो री ॥ ना० ॥ १ ॥
तीर्थंकर पद शांति जिनेश्वर, जिन पूजीने ग्रह्यो री ॥ ना० ॥ २ ॥
अष्टकरम दल उदभट चूरी, तत्त्वरमणकूं लह्यो री ॥ ना० ॥ ३ ॥
अठोही प्रवचन पालन शूरा, दृष्टी आठ रह्यो री ॥ ना० ॥ ४ ॥
श्रद्धा भासन रमणता प्रगटे, श्रीजिनराज कह्यो री ॥ ना० ॥ ५ ॥
आतम सहजानंद हमारा, आठमी पूजा चह्यो री ॥ ना० ॥ ६ ॥
(यह पाठ पढकें प्रभुजीकों चूरण चढावे) ॥ इति अष्टम चूर्ण पूजा ॥

(पूजा विधि ९—पछी सधवा स्त्रियो एकठी थइने पचवर्णी ध्वजा, धूपसहित सुवर्णमय दंडें करी संयुक्त, उज्ज्वल थालमां कुंकुमनो स्वस्तिक करी अक्षत, श्रीफल, रूपानाणुं धरीने ते थालमां ध्वजा धारण करे. पछी सधवा स्त्रीना मस्तकें राखी गीत गान गातां सर्व जातिनां वाजित्र वाजतां त्रण्य प्रदक्षिणा आपे. पछी

ध्वजा उपर गुरुपासें वासक्षेप करावे. प्रभु सन्मुख गहूंली करे. उपर अक्षतथी स्वस्तिक करे ते उपर सोपारी चढावी मुखथकी नवमी पूजानो पाठ भणे. ते भणीने ध्वजा चढावे.)

॥ अथ नवम ध्वजपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ पंचवरण ध्वज शोभती, घूघरिनो घमकार ॥ हेम दंड मन मोहनी, लघू पताका सार ॥ १ ॥ रणझण करती नाचती, शोभित जिनहर शृंग, लहके पवन झकोरसें, बाजत नाद अभंग ॥ २ ॥ इंद्राणी मस्तक लई, करे प्रदक्षिण सार ॥ सधवा तिम विधि साचवे, पाप निवारणहार ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥

॥ ठुमरी झींझोटीनी ॥ ताल पंजाबी ठेको ॥ आइ इंद्रनार ॥ ए देसी ॥

आइ सुंदर नार, कर कर सिगार, ठाढी चैत्यद्वार, मन मोदधार, प्रभु गुण विचार, अघ सब क्षय कीनो ॥ आ० ॥ १ ॥ जोजन उतंग, अति सहस चंग, गइ गगन लंघ, भवि हरख संघ, सब जग उतंग, पदछिनकर्मे लीनो ॥ आ० ॥ २ ॥ जिम ध्वज उतंग तिम पद अभंग, जिन भक्ति रंग, भवि मुक्ति मंग, चिदघन आनंद, समता रस भीनो ॥ आ० ॥ ३ ॥ अब तार नाथ, मुझ कर सनाथ, तज्यो कुगुरु साथ, मुझ पकड हाथ, दीनाके नाथ, जिनवच रस पीनो ॥ आ० ॥ ४ ॥ आतम आनंद, तुम चरण वंद, सब कटत फंद, भयो शिशिर चंद, जिन पठित छंद, ध्वजपूजन कीनो ॥ आ० ॥ ५ ॥ (ए पदके ध्वज चढावे) ॥ इति ॥ ९ ॥

(पूजा विधि १०—पछी पीरोजा, नीलम, लसणीया, मोती माणकथी जडेला एवा मुकुट, कुंडल, हार, तिलक, बहेरखा, कंदोरा, कडां इत्यादिक आभरण लेइ मुखथकी दशमी पूजानो पाठ भणे. ते भणीने आभरण तथा रोकड नाणुं डबल चढावे.)

॥ अथ दशमी आभरण पूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ शोभित जिनवर मस्तकें, रयण मुकुट झलकंत ॥ भाल तिलक अंगद भुजा, कुंडल अति चमकंत ॥ १ ॥ सुरपति जिन अंगें रचे, रत्नाभरण विशाल ॥ तिम श्रावक पूजा करे, कटे करम जंजाल ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥

॥ राग जंगलो, ताल दादरो ॥ अंग्रेजी वाजेकी चाल ॥

॥ आनंद कंद पूजतां, जिनंद चंद हुं ॥ ए आंकणी ॥ मोति ज्योति लाल हीर, हंस अंक ज्युं ॥ कुंडल्ल सुधारकरण, मुकुट धार तुं ॥ आ० ॥ १ ॥ सूर चंद कुंडलें, शोभित कान दु ॥ अंगद कंठ कंठलो, मुणिंद तार तुं ॥ आ० ॥ २ ॥ भाल तिलक चंगरंग, खंगचंग ज्युं ॥ चमक दमक नंदनी, कंदब जीत तुं ॥ आ० ॥ ३ व्यवहार भाष्य भाखीयो, जिनंद बिंब युं ॥ करे सिंगार फार कर्म, जार जार तुं ॥ आ० ॥ ४ ॥ वृद्धि भाव आतमा, उमंग कार तुं ॥ निमित्त शुद्ध भावका, पियार कार तुं ॥ आ० ॥ ५ ॥ (ए पूजा पढकें भूषण चढावे) ॥ इति ॥ १० ॥

(पूजा विधि ११–पछी कोल, अंकोल, कुंद, मचकुंद, एवा सुगंधित पुष्पोनुं गृह बनावी छाजली, गोख, कोरणी प्रमुखनी रचना करी, हाथमां लेइ मुखथकी अगीयारमी पूजानो पाठ भणे. ते भणीने फूलघर चढावे. फूलनी चंदनमाला, फूलना चंद्रुवा, पोंठीया प्रमुख बांधे.)

॥ अथैकादश पुष्पगृहपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ पुष्पघरो मन रंजनो, फूले अद्भुत फूल ॥ महके परिमल वासना, रहकें मंगलमूल ॥ १ ॥ शोभित जिनवर बीचमें, जिम तारामें चंद ॥ भवि चकोर मन मोदसें, निरखी लहे आनंद ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥

॥ राग खमाच–ताल पंजाबी ठेको ॥ शांति वदन कज देख नयन ॥ ए देशी ॥

॥ चंदवदन जिन देख नयन मन, अमीरस भीनो रे ॥ ए आंकणी ॥ राय वेल नव मालिका कुंद, मोघर तिलक जाति मच कुंद ॥ केतकी दमणके सरस रंग, चंपक रस भीनो रे ॥चं० ॥१॥ इत्यादिक शुभ फूल रसाल, घर विरचे मन रंजन लाल ॥ जालि झरोखा चितरी शाल, सुर मंडप कीनो रे ॥ चं० ॥ २ ॥ गुच्छ झुमखां लंबां सार, चंद्रुआ तोरण मनोहार ॥ इंद्रभुवनको रंगधार, भव पातक छीनो रे ॥ चं० ॥ ३ ॥ कुसुमायुधके मारन काज, फूलघरे थापे जिनराज ॥ जिम लहियें शिवपुरको राज, सब पात क खीनो रे ॥ चं० ॥ ४ ॥ आतम अनुभव रसमें रंग, कारण का रज समझ तुं चंग ॥ दूर करो तुम कुगुरु संग, नरभव फल लीनो रे ॥ चं० ॥ ५ ॥ (ए पूजा पढके प्रभुकुं फूलघर चढावे) ॥ इति एकादश पुष्पगृह पूजा ॥ ११ ॥

(पूजा विधि १२–पछी पंचवर्णा सुगंधित पुष्प लेइ, फूलनो मेघ वरसावतो बारमी पूजानो पाठ भणे. ते भणीने पुष्प उछाले.)

॥ अथ द्वादश पुष्पवर्षणपूजा प्रारंभ. ॥

॥ दोहा ॥ बादल करी वरषा करे, पंचवरण सुर फूल ॥ हरे ताप सब जगतको, जानूदघन अमूल ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

॥ अडिल छंद ॥ फुल पगर अति चंग रंग बादर करी, परिम ल अति महकंत मिले नर मधुकरी ॥ जानुदघन अति सरस वि कच अधो बींट हे, बरसे बाधारहित रचे जेम छींट हे ॥ १ ॥

॥ राग काफी ॥ ताल दीपचंदी ॥ साचा साहेब मेरा चिंतामणि स्वामी ॥ ए देशी ॥

॥ मंगल जिन नामें, आनद भविकुं घनेरा ॥ ए आंकणी ॥ फूल पगर बदरी झरो रे, हेठ बींट जिनकेरा ॥ मं० ॥ १ ॥ पीडा

॥ अथ पंचदश गीतपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ ग्राम भले आलापिने, गावे जिनगुण गीत ॥ भावे शुद्धज भावना, जाचे परम पुनीत ॥ १ ॥ फल अनंत पंचाशकें, भाखे श्रीजगदीश ॥ गीत नृत्य शुध नादसें, जो पूजे जिन ईश ॥ २ ॥ तीन ग्राम स्वर सातसें, मूरछना एकवीश ॥ जिन गुण गावे भक्तिशुं, तार तीस ओगणीश ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥

॥ राग सोयणी–ठेको पंजाबी ॥

॥ जिन गुण गावत सुरसुंदरी ॥ ए आंकणी ॥ चंपकवरणी सुर मनहरणी, चंद्रमुखी शृंगार धरी ॥ जि० ॥ १ ॥ ताल मृदंग बंसरी मंडल, वेराड उपांग धुनि मधुरी ॥ जि० ॥ २ ॥ देव कुमार कुमारी आलापे, जिनगुण गावे भक्ति भरी ॥ जि० ॥ ३ ॥ नकुल मुकुंद वीण अति चंगी, ताल छंद अयति समरी ॥ जि० ॥ ४ ॥ अलख निरंजन ज्योति प्रकाशी, चिदानंद सत् रूप धरी ॥ जि० ॥ ५ ॥ अजर अमर प्रभु ईश शिवंकर, सर्व भयंकर दूर हरी ॥ जि० ॥ ६ ॥ आतम रूप आनंद घन संगी ॥ रंगी निज गुन गीत करी ॥ ७ ॥ इति ॥ १५ ॥

(पूजा विधि १६.–पछी पंचेंद्रियें परिपूर्ण एवा सुंदर कुमार अने कुमारिकाओ अथवा समान अवस्थावाली सधवा स्त्रियो अथवा एकली कुमारिकाओ सुंदर वस्त्र आभूषण पहेरी, प्रभुनी सन्मुख उभी रही, शंका कांक्षा रहित नाटक करे, कदापि स्त्रियोनो योग न बने तो समान अवस्थावाला पुरुष मली, नाटक करता थका मुखथकी सोलमी पूजानो नीचे मुजब पाठ भणे. ते भणीने सोलमी पूजा करे.)

॥ अथ षोडश नाटक पूजा ॥

॥ दोहा ॥ नाटक पजा सोलमी, सजि सोले शणगार ॥ नाचे प्रभुनी आगलें, भव नाटक सब टार ॥ १ ॥ देव कुमर कुमरी म

ली, नाचे एक शत आठ ॥ रचे संगीत सुहावना, बत्तिस विधका नाट ॥ २ ॥ रावण ने मंदोदरी, प्रभावती सुरियाभ ॥ द्रौपदी ज्ञाता अंगमें, लियो जन्मको लाभ ॥ ३ ॥ टालो भव नाटक सवी, हे जिन दीन दयाल ॥ मिलकर सुर नारी करे, सुधर बजावे ताल ४

॥ ढाल ॥

॥ राग कल्याण–ताल दादरो ॥

॥ नाचत सुर वृंद छंद, मंगल गुन गारी ॥ ए आंकणी ॥ ॥ कुमर कुमरी कर संकेत, आठ शत मिल भ्रमरी देत ॥ चंद्र तार रण रणाट, घुघरुं पग धारी ॥ ना० ॥ १ ॥ बाजत जिहां मृदंग ताल, धप मप धुधु मकिट धमाल ॥ रंगचंग द्रंग द्रंग, त्रौं त्रौं त्रिक तारी ॥ ना० ॥ २ ॥ तता थेइ थेइ तान लेत, मुरज राग रंग देत ॥ तान मान गान जान, किट नट धुनि धारी ॥ ना० ॥ ३ ॥ तुं जिनंद शिशिर चंद, मुनिजन सब तार वृंद ॥ मंगल आनंद कंद, जय जय शिवचारी ॥ ना० ॥ ४ ॥ रावण अष्टापद गिरिद, नाच्यो सब साज संग ॥ बांध्यो जिन पद उत्तंग, आतम हितकारी ॥ ना० ॥ ५ ॥ इति ॥ १६ ॥

(पूजा विधि १७–पछी मद्दल, कंसाल, तबल, ताल, झांज, वीणा, सतार, तूरी, भेरी, फेरी, दुंदुभि, शरणाइ, चंग, नफेरी प्रमुख सर्व जातिनां वाजित्र वजावता थका मुखथकी सत्तरमी पूजानो पाठ भणे. ते भणीने सतरमी पूजा करे.)

॥ अथ सप्तदश वाजित्र पूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ तत वीतत घन जूसर, वाद्य भेद ए चार ॥ विविध ध्वनि कर शोभते, पुजा सतरमी सार ॥ १ ॥ समवसरणमें वाजिया, नाद तणा झंकार ॥ ढोल ददामा दुंदुभी, भेरी पणव उदार ॥ २ ॥ वेणू वीणा किंकिणी, पड भ्रामरी मरदंग ॥ झलरी

झंझा नादशुं, शरणाई मुरजंग ॥ ३ ॥ पंच शब्द वाजे करी, पूजे श्री अरिहंत ॥ मनवांछित फल पामियें, लहियें लाभ अनंत ॥४॥

॥ ढाल ॥

॥ राग–जंगलो ताल ठुमरीकी ॥ मन मोह्या जंगलकी हरणी ने ॥ ए देशी ॥

भवि नंदो जिनंद जस वरणीने ॥ ए आंकणी ॥ वीण कहे जग तुं चिर नंदे, धन धन जग तुम करणीने ॥ भ० ॥ १ ॥ तुं जगनंदी आनंद कंदी, तपली कहे गुण वरणीने ॥ भ० ॥ २ ॥ निर्मल ज्ञान वचन मुख साचे, तूंण कहे दुख हरणीने ॥ भ० ॥ ३ ॥ कुमति पंथ सब छिनमें नासे, जिन शासन उदेधरणीने ॥ भ० ॥ ४ ॥ मंगल दीपक आरति करतां, आतम चित्त शुभ भरणीने ॥ भ० ॥ ५ ॥ इति सत्तरमी पूजा ॥

॥ अथ कलश ॥

॥ रेखता ॥ जिनंद जस आज में गायो, गयो अघदूर मो मन को ॥ शत अठ काव्य हू करकें, थुणे सब देव देवनको ॥ जि० ॥ १ ॥ तप गच्छ गगन रवि रूपा, हुआ विजयसिंह गुरु भूपा ॥ सत्य कर्पूर विजयराजा, क्षमा जिन उत्तमा ताजा ॥ जि० ॥ २ ॥ पद्म गुरु रूप गुण भाजा, कीर्ति कस्तूर जग छाजा ॥ मणीबुध जगतमें गाजा, मुक्ति गणि संप्रति राजा ॥ जि० ॥ ३ ॥ विजय आनंद लघु नंदा, निधि शशी अंक हे चंदा ॥ अंबाले नग्रमें गायो, निजातम रूप हुं पायो ॥ जि० ॥४॥ इति सत्तरभेदी पूजा संपूर्णा ॥

(पछी आरति करे तेनो विधि कहे छे. पूजा भणी रह्या पछी सर्व वस्त्रप्रमुख पहेरी, उत्तरासंग करे. पछी प्रभुथी अंतरपट करी पोताने ललाटें कुंकुमनुं तिलक करे. पछी अंतरपट दूर करी, रकेबीमां स्वस्तिक करी मांहे रूपानाणुं, तांदुल, सोपारी धरे. पछी आरति दीपक साथें संयोजीने प्रभुनी सन्मुख दक्षिणावर्त्तथें सव वाजित्र वाजतां आरति करे. पछी मंगलदीपक उतारे.)

॥ अथ वीश स्थानक पूजाऽध्यापन विधिः ॥

॥ वीश स्थानकनुं तप मांडतां अथवा एक एक ओली संपूण थाय तेवारें, अथवा तप न कर्युं होय अने स्वाभाविक भाव भक्तियें पूजा भणाववी होय, तो तेनो विधि आ प्रमाणे छेः—

॥ दिनशुद्धियें शुभ उत्सवें आसन उपर एक पंक्तियें वीश प्रतिमा अलंकारसहित स्थापियें. तेनी आगल वली उपरा उपर त्रण बाजोठ मांडिने, तेनी उपर पंचतीर्थी प्रतिमा स्थापन करीने, प्रथम लघु स्नात्र भणावियें. पछी तीर्थकूपादिकनां पवित्र जल आडंबरें सहित प्रथमथीज लावी मूकेलां होय, ते जलने सुवासित करी, ते जलमांथी थोडे थोडे जलें करी वीश कलश भरीने, पवित्र थयेला वीश पुरुषना हाथमां आपी तेमने उभा राखवा.

॥ वली ते वीश अभिषेक करवाने अर्थें एक पुरुष फूलनी माला एक पात्रमां राखे, एक पुरुष चंदन केशरनो प्यालो राखे, एक पुरुष दीवामां पूरवाने अर्थे घृतनुं पात्र राखे, एमज फल, अक्षत, नैवेद्य, धूप प्रमुख जे सामग्री मेलवेली होय, ते सर्व चीज एक एक पुरुष पोतपोताना स्वाधीनमां राखे.

॥ तेवार पछी एक पंक्तियें राखेली वीश प्रतिमा मांहेथी एक प्रतिमा लेइने स्नात्र भणावेली पंचतीर्थी प्रतिमा पासें स्थापन करी सर्वजनो वीश स्थानकनी पूजा मांहेलुं प्रथम स्तवन, रुडी रीतें भणीने प्रतिमाजी उपर वीशे कलश नामे. तेवार पछी एक जण प्रतिमाजीने अंगलूहणुं करे, एक पुरुष प्रतिमानुं पूजन करे, एक पुरुष फूलनी माला चढावे, एक पुरुष प्रतिमा आगल बार स्वस्तिक करीने तेनी उपर फूल मूके. ए जेम प्रथम श्री अरिहंत पदना बार गुण छे, तो त्यां बार स्वस्तिक करवा कह्या. तेमज जे जे पदना जेटला जेटला गुण होय, ते ते पदनी पू

जामां तेटला तेटला स्वस्तिक करवा. एवी रीते नैवेद्यादिक सर्व वस्तु चढावीने, जिन प्रतिमाने रूपानाणे पूजन करी फरी प्रथम स्थानकें पधरावीने, पछी पूर्वोक्त वीश प्रतिमानी पंक्तिमांथी बीजी प्रतिमा लेइने पंच तीर्थिकनी प्रतिमा पासें स्थापन करे. तेवार पछी फरी वीश कलश थोडे थोडे जलें भरीने बीजुं स्तवन कही, प्रथमनी परें बीजो सर्व विधि करे. एम वीशे पदने विषे विधि करवो. विधि पूर्ण थया पछी छेवट आरति, मंगल दीवो करे. ए उत्कृष्ट विधि कह्यो. अंतमां मिच्छामि दुक्कड देवो, पछी गुरुपूजा, प्रभावना, साहामिवात्सल्य करवुं.

॥ अने घणी शक्ति न होय तो एक पुरुष एक कलश लइ एक एक स्तवन कही पंचतीर्थिनीज पूजा करे. एम वीश वखत वीश स्तवन कहीने पूजे. एम एकज पंचतीर्थिक आगल यथाशक्ति क्रिया करे तोपण चाले. कारण के द्रव्यथकी अशक्तने जो भावनुं बाहुल्य छे तो तेने तेटलुं पण अत्यंत फल दायक थाय छे. ॥ इति वीशस्थानक संक्षेप विधिः ॥

॥ अथ ॥

॥ श्री आत्मारामजी विरचित विंशतिस्थानक ॥
॥ पूजा प्रारभ्यते ॥

॥ तत्र ॥

॥ प्रथम अरिहंतपद पूजा प्रारंभः ॥

॥दोहा॥ समरस रसभर अघहर, करम भरम सब नास ॥ कर मन मगन धरम धर, श्रीशंखेश्वर पास ॥ १ ॥ वस्तु सकल प्रकाशिनी, भासिनि चिद्घनरूप ॥ स्यादवाद मतकाशिनी, जिनवाणी रस कूप ॥ २ ॥ छठ्ठे अंग आवश्यकें, वीश निमित्त विधान ॥ ते साध

जिनपद लहे, अजर अमरकी खान ॥ ३ ॥ जिन गणधर वाणी नमी, आणी भाव उदार ॥ विशति पद पूजन विधि, कहिशुं विधि विस्तार ॥ ४ ॥ विंशति तप पद सारिखी, करणी अवर न कोय ॥ जो भवि साधे रंगशुं, अर्हन्रूपी होय ॥ ५ ॥ क्रमसे पीठ त्रिको पेरं, थापी जिनवर वीश ॥ सामग्री सहु मेलिने, पूजे त्रिभुवन ईश ॥ ६ ॥ एक एक पद पूजियें, पंच अष्ट सत्तवार ॥ द्रव्यार्चनविधि जाणियें, इगविस विधि विस्तार ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ राग–धन्याश्री ॥ दो नयणादा मारया मरजादा परदेशीडा ॥ ए देशी ॥

॥ अरिहंत पद मनरंग, चिदानंद-अरिहंत पद०॥ ए आंकणी ॥ चिदानंदघन मंगलरूपी, मिथ्या तिमिर दिणंद ॥ चि०॥अ० ॥१॥ चौतिस अतिशय पैंतिस वाणी, गुण बारे सुखकंद ॥ चि० ॥ अ० ॥ २ ॥ महागोप महामाहण कहियें, काटे भव भव फंद ॥ चि०॥ अ० ॥ ३ ॥ निर्यामक सत्थवाह भणीजें, भवि चकोर मनचंद ॥ चि० ॥ अ० ॥ ४ ॥ चार निक्षेप रूप जग रंजन, भंजन करम नरिंद ॥ चि० ॥ अ० ॥ ५ ॥ अवर देव वामा वश कीने, तुं नि कलंक महिंद ॥ चि० ॥ अ० ॥ ६ ॥ ज्ञायक नायक शुभगति दा यक, तुं जिन चिद्घन वृंद ॥ चि० ॥ अ० ॥ ७ ॥ देवपाल श्रे णिक पद साधी, अरिहंत पद निपजंद ॥ चि० ॥ अ० ॥ ८ ॥ सर्व शिवंकर ईश निरंजन, गत कलिमल सब धंद ॥चि०॥अ०॥९॥ जिनके पंच कल्याणिक जगमें, करे उद्योत अमंद ॥ चि०॥अ०॥१०॥ आतम निर्मल भाव करीने, पूजो त्रिभुवन इंद ॥ चि०॥ अ०॥११॥

॥ काव्यं ॥ द्रुतविलंबितवृत्तम् ॥

अतिशयादिगुणाब्धिवदान्यकं । जिनवरेंद्रपदस्य निदानकम् ॥
निखिलकर्मशिलोच्चयसूदनं । कुरुत विंशतिसंपदपूजनम् ॥ १ ॥

॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु निवारणाय श्रीमते अर्हते जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥

(उपरनो काव्य तथा मंत्र प्रत्येक पूजा दीठ कहेवा.)

॥ अथ द्वितीय सिद्धपद पूजा ॥

॥ दोहा ॥ तनु त्रिभाग दूरें करी, घन स्वरूप अघ नाश ॥ ज्ञान स्वरूपी अगमगति, लोकालोक प्रकाश ॥ १ ॥ अक्षर अमर अगोचरा, रूप रेख विन लाल ॥ जे पूजे सो भवि लहे, अरहन् पद उजमाल ॥ २ ॥

॥ कान्हा में नहि रहेणा रे, तुमचे रे संग चलुं ॥ ए देशी ॥

॥ सिद्ध अचल आनंदी रे, ज्योतिमें ज्योति मिली ॥ ए आंकणी ॥ अज अलख अमूरति रे, निजगुण रंग रली ॥ सि० ॥१॥ शिव अजर अनंगी रे, करमको कंद दली ॥ सि० ॥ २ ॥ समय एकमें त्रिपदी रे, नास थिर आविर वली ॥ सि० ॥ ३ ॥ ऋजु एक समय गतिका रे, अनंत चतुष्टय मिली ॥ सि० ॥ ४ ॥ गुण इक त्रिश धारी रे, निर्मल पाप गली ॥ सि० ॥ ५ ॥ त्रिहुं काल के देवा रे, सब सुख मेल मिली ॥ सि० ॥ ६ ॥ गुणानंत करीजें रे, वरगित वरग वली ॥ सि० ॥ ७ ॥ नभ एक प्रदेशें रे, सब सुख पुंज भिली ॥ सि० ॥ ८ ॥ लोकालोक नमावे रे, जिनवर तत्र चली ॥ सि० ॥ ९ ॥ बंधन छेद असंगा रे, पूर्व प्रयोग फली ॥ सि० ॥ १० ॥ गति करण निदाना रे, सुमति संग भली ॥ सि० ॥ ११ ॥ हस्तिपाल आराधी रे, जिनपद सिद्ध तुली ॥ सि० ॥१२॥ प्रभु आत्मानंदी रे, पूजत कुमति टली ॥ सि० ॥ १३॥ काव्यं ॥ अतिशया० ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ पर० ॥ सिद्धाय जला० यजामहे स्वाहा ॥ इति ॥ २ ॥

॥ अथ तृतीय प्रवचनपद पूजा ॥

॥ दोहा ॥ त्रीजे प्रवचन पूजीयें, कारि कुमतिसंग दूर ॥ मिथ्या मत टाली सवे, जन्म मरण दुख चूर ॥ १ ॥ भाव रोगकी औषधी, अमृतसिंचनहार ॥ भव भय ताप निवारिणी, अरिहंत पद फलकार २

॥ राग वदंस ॥

॥ प्रवचन पद भवपार उतारे, पूजो भवि मन रंग रे ॥ प्रव० ॥ ए आंकणी ॥ प्रवचन अमृत रस भरी ध्यानें, चिदघन रंग रगील रे ॥ कुमति जाल सब छिनकमें जारे, प्रगट अनुभव लील रे ॥ प्र० ॥ १ ॥ तीनशो साठ तीन (३६३) मतधारी, जगमें तिमिर अज्ञान रे ॥ जो जिनवचन सूर तम नाशक, भासक अमल निधान रे ॥ प्र० ॥ २ ॥ सप्तभंगी नय सप्त सुहंकर, युक्तमान दोय सार रे ॥ षड्भंगी उत्सर्गादिकनी, अडपक्ष सम्यककार रे ॥ प्र० ॥ ३ ॥ प्रवचनाधार संघ जग साचो, जिन पूजे भवपार रे ॥ अरिहंत धर्म कथानक अवसर, करत प्रथम नमोकार रे ॥ प्र० ॥ ४ ॥ प्रवचन अमृत जलधर वरसे, भवि मन अधिक उल्लास रे ॥ कुमति पंथ अंधजन जे ते, सूकत जेसें जवास रे ॥ प्र० ॥ ५ ॥ संभव नरपति प्रवचन साधी, तीर्थंकर पद स्थान रे ॥ पंच अंग ताली सद्गुरुकी, प्रवचन संघ निधान रे ॥ प्र० ॥ ६ ॥ आत्म अनुभव रत्न सुहंकर, अचर अनघ पद खान रे ॥ जो भवि पूजे मन तन शुद्धें, अरिहंत पदको निदान रे ॥ प्र० ॥ ७ ॥ काव्यं ॥ अतिशया० ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ पर० ॥ श्रीप्रवचनाय जलादिकं० ॥ य० ॥ इति तृतीय प्रवचन पद पूजा ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्थ सूरिपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ चोथे पद सूरी नमो, चरण करण पद धार ॥ सारण वारण नोदना, प्रतिनोदन करतार ॥ १ ॥ षट् त्रिशत गुण शोभता, संपत पट् पंचास ॥ मेढी सम जिनशासनें, भवि पूजे सुखराश ॥ २ ॥

॥ राग काफी—चाल होरीकी—ताल दीपचंदी ॥

॥ अपने रंगमें रंग दे, हेरी हेरी लाला, अपने रंगमें रंग दे ॥ ॥ ए आंकणी ॥ पांच आचार अखंडित पाले, जन्म मरण दुख भंग दे ॥ हेरी० ॥ १ ॥ पंच प्रस्थान जे मंत्र रायकों, स्मरण करे मन रंग दे ॥ हेरी० ॥ २ ॥ आठ प्रमाद तजे उपदेशें, शिवरमणी सुख मंग दे ॥ हेरी० ॥ ३ ॥ चार अनुयोग सुधारस धारे, धरम करन उमंग दे ॥ हेरी० ॥ ४ ॥ सातहि विकथा दूर निवारी, मोह सुभट संग जंग दे ॥ हेरी० ॥ ५ ॥ श्रुतके सातो अंग रंगीले, मुझ हृदयेमें टंग दे ॥ हेरी० ॥ ६ ॥ पुरुषोत्तम नृप जिनपद लीनो, आतमराज शिव चंग दे ॥ हेरी० ॥ ७ ॥ काव्यम् ॥ अतिश० ॥ ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ पर० ॥ श्रीसूरये जलादि० यजा० ॥ इति चतुर्थ सूरिपद पूजा ॥ ४ ॥

॥ अथ पंचम थिविर पद पूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ परम संगी रंगी नही, ज्ञायक शुद्ध स्वरूप ॥ भवि जन मन थिर करनकों, जय जय थिवर अनूप ॥ १ ॥

॥ राग जंगलो झींझोटी—ताल पंजाबी ठेको, चाल ठुमरीकी ॥ मत जानां उनमार्ग तनू मन, दाखत सुगुरु सुगुण वातियां रे ॥ ए देशी ॥ ॥

॥ थिविर सुहंकर पदकज पूजी, तर्थंकर पद सुख गतियां रे ॥ ॥ थि० ॥ १ ॥ डिगमिग डिगमिग मन चंचल हय, धरम करे फिर चित रतियां रे ॥ थि० ॥ २ ॥ सूत्र थिविर वय व्रत परिणामें, जाने समवायांग वातियां रे ॥ थि० ॥ ३ ॥ साठ वरस व्रत वरस वीसमे, थिर परिचित्त शुद्ध बुद्ध मतियां रे ॥ थि० ॥ ४ ॥ दश विध अंग तिसरे वरने, थिविर गृहे इह जिन व्रतियां रे ॥ थि० ॥ ॥ ५ ॥ वंदन पूजन नमन करन मति, भक्ति करे शुद्ध पुण्य रति यां रे ॥ थि० ॥ ६ ॥ पद्मोत्तर नृप इह पद सेवी, आत्म अरिहंत

पंद वतियां रे ॥ थि० ॥ ७ ॥ काव्यं ॥ अतिश० मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं प० ॥ थिविराय ज० ॥ य० ॥ इति ॥ ५ ॥

॥ अथ षष्ठपाठकपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ स्यादवाद नय पंथमें, पंचानन षलपूर ॥ दुर्नय वादि वृंदने, करे छिनकमें दूर ॥ १ ॥ पठन करावे शिष्यने, स्व पर सत्तातूर ॥ मिथ्या तिमिर विनाशनें, जय जय पाठक सूर ॥ २ ॥

॥ राग खमाच ॥ ताल पंजाबी ठेको ॥ वीतरागकों देख दरस, कुबीधा मोरी मिट गइ रे ॥ वि० ॥ ए देशी ॥

॥ पाठक पद सुख चेन देन, वस अमीरस भीनो रे ॥ पाठक० ॥ ॥ ए आंकणी ॥ स्वपर रूप विकासीचंद, अनुभव सुर तरु केरो कंद ॥ स्यादवाद मुख उचरे छंद, जिन वचरस पीनो रे ॥ पा० ॥ १ ॥ कुमति पंथतम नाशक सूर, सुमति कंद घनवर्द्धन पूर ॥ दे उपदेश संत रसभूर, अघ सव क्षय कीनो रे ॥ पा० ॥ २ ॥ त्रीजे भव शिवरमणी चंग, चरण करण उपदेशक रंग ॥ कर्म निकंदन करण भंग, सुर असुर पूजीनो रे ॥ पा० ॥ ३ ॥ हय गय वृषभ सिंह सम किन, उपेंद्र इंद्र चक्री दिन इन ॥ चंद्र भंडारी उपमा दीन, नग मेरु करीनो रे ॥ पा० ॥ ४ ॥ जंबू सीतासरित वखान, चरम जलधि तिम गुण मणि खान ॥ षोडश उपमा करी विधान, बहुश्रुत जस लीनो रे ॥ पा० ॥ ५ ॥ अवगुण चौदे दूर करीन, पन्नर गुणकारी शिष्य पीन ॥ सरस वचन जिम तंत्री वीन, निज गुण सव चीनो रे ॥ पा० ॥ ६ ॥ महेंद्रपाल पद सेवी सार, तीर्थंकर पद लीनो सार ॥ मदन भरमकों जार जार, आत्मरस भीनो रे ॥ पा० ॥ ७ ॥ काव्यं ॥ अतिश० ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम० पाठकाय ज० ॥ य० ॥ इति षष्ठपाठक पद पूजा ॥ ६ ॥

॥ अथ सप्तम साधुपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ नजी विभाव स्वभावना, रमता समता संग ॥ वि

शदानंद स्वरूपता, लाग्यो अविहड रंग ॥ १ ॥ माने जग त्रिहुं कालमें, मुनि कहीयें तस नाम ॥ साधे शुद्धानंदता, साधु नाम अभिराम ॥ २ ॥

॥ राग जंगलो–ताल दादरो–इंग्रेजी वाजानी चाल ॥

॥ मुणिंद चंद ईश मेरे, तार तार तार ॥ ज्ञानके तरंग भंग, सात जास कार ॥ मुणिं० ॥१॥ संतके महंत मूणि, साध ऋषि धार ॥ यति व्रती संजमी हे, जगतको आधार ॥ मु० ॥ २ ॥ नवविध भाव लोच, केश दशकार ॥ अनंग रंग भंग संग, सुमतिचंग नार ॥ मु० ॥ ३ ॥ सप्त चाली दोष टाली, लेत हे आहार ॥ सातविश गूण धार, आतमा उजार ॥ मु० ॥४॥ पंचही प्रमादके, कल्लोल लोल भार ॥ संसारनीरनिधि पोत, ज्योति ज्ञान सार ॥ मु० ॥ ५ ॥ पार करे संत अंत, कर्मका निहार ॥ ब्रह्मचर्य धार वाड, नवरंग लार ॥ मु० ॥ ६ ॥ वीरभद्र साधु सेव, जिनपद सार ॥ आतम उमंग रंग, कुगुरु संग छार ॥ मु० ॥ ७ ॥ काव्यं ॥ अतिश० मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ साधवे जला० ॥ य० ॥ इति सप्तमसाधुपद पूजा ॥ ७ ॥

॥ अथाष्टम ज्ञानपद पूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ निज स्वरूपके ज्ञानसें, परसंग संगत छार ॥ ज्ञान आराधक प्राणिया, ते उतरे भव पार ॥ १ ॥

॥ राग भेरवी अजमेरी–ताल पंजाबी ठेको ॥ लागी लगन कहो केसें छूटे, प्राणजीवन प्रभु प्यारेसें ॥ ए देशी ॥

॥ ज्ञान सुहंकर चिदघन संगी, रंगी जिनमत्त सारेमें ॥ रंगी० ॥ ज्ञान० ॥ १ ॥ पांच एकावन भेद ज्ञानके, जडता जग जन टारेमें ॥ जड० ॥ ज्ञान० ॥ २ ॥ भक्ष अभक्ष विवेचन कीनो, कुमति रंग सब ठारेमें ॥ कु०॥ ज्ञान० ॥३॥ प्रथम ज्ञानने पछी अहिंसा, करम कलंक निवारेमें ॥ कर०॥ ज्ञान० ॥ ४ ॥ सदसदभाव विकाशी ज्ञानी, दुर्नय पंथ विसारेमें ॥ दुर्न० ॥ ज्ञान० ॥ ५॥ अज्ञानीकी करणी एसी,

अंक विना शून्य सारेमें ॥ अंक०॥ ज्ञान० ॥६॥ मति श्रुत अवधि मनःपर्यव हे, केवल सर्व उजारेमें ॥ केव० ॥ ज्ञान० ॥ ७ ॥ अज्ञानी वर्ष एक कोटिमें, करम निकंदन भारेमें ॥ कर० ॥ ज्ञा० ॥८॥ ज्ञानी श्वासोश्वास एकमें, इतके करम विडारेमें ॥ इत० ॥ ज्ञान० ॥ ९ ॥ भरतेश्वर मरुदेवी माता, सिद्धि वरे दुःख जारेमें ॥ सि० ॥ ज्ञान० ॥ १० ॥ देश विराधक सर्वाराधक, भगवती वीर उजारेमें ॥ भ० ॥ ज्ञान० ॥ ११ ॥ जयंत नरेश्वर यह पद साधी, आतम जिनपद धारेमें ॥ आ० ॥ ज्ञान० ॥ १२ ॥ काव्यं ॥ अतिशया० ॥ मंत्रः० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम० ॥ ज्ञानाय जलं०॥ य०॥ इति ॥८॥

॥ अथ नवम दर्शनपद पूजा ॥

॥ दोहा ॥ तत्व पदारथ नव कहे, महावीर भगवान ॥ जो सर्द्दे सद्भावसें, सम्यग्दर्शी जान ॥ १ ॥ श्रद्धा विण नही ज्ञान हे, तद विण चरण न होय ॥ चरण विना मुक्ती नही, उत्तरज्झयणे जोय ॥ २ ॥

॥ राग–परज मारू ताल– दीपचंदी ॥

॥ निशिदिन जोवुं वाटडी, घेर आवो ढोला ॥ ए देशी ॥

॥ दर्शन पद मनमें वस्यो, तव सव रंग रोला ॥ जगमें करणी लाख छे, एक दर्श अमोला ॥ द० ॥ १ ॥ दर्शन विण करणी करी, एक कोडी न मोला ॥ देवगुरु धर्म सार हे, ईनका क्या मोला ॥ द० ॥ २ ॥ दर्शन मोहनो नाशसें, अनुभव रस घोला ॥ जिन दर्शन पूजन करे, एही हर्ष कल्लोला ॥ द० ॥ ३ ॥ सम संवेग निर्वेदता, आस्ति करुणा तंबोला ॥ इन लक्षणसें मानीयें, समकित रस चोला ॥ द० ॥ ४ ॥ एक मुहूरत फरसीयें, दर्शन सुख ढोला ॥ निश्चय मुक्ती पामीयें, जिनवर एम बोला ॥ द० ॥ ५ ॥ इग दुग ती चउ सर दसे, सतसठ भेद तोला ॥ दर्शन पायो सिज्जंभवें,

देखी प्रतिमा अमोला ॥ द० ॥ ६ ॥ हरिविक्रम नृप सेवना, अंतर दृग खोला ॥ आतम अनुभव रंगमें, मिटे मनका झोला ॥ द० ॥ ७ ॥ काव्यं ॥ अतिशया० ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ दर्शनाय जलां० ॥ य० ॥ इति ॥ ९ ॥

॥ अथ दशम विनयपद पूजा ॥

॥ दोहा ॥ गुण अनंतको कंद हे, विनय भुवन शृंगार ॥ विनयमूल जिनधर्म हे, विनयिक धन अवतार ॥१॥ पांच भेद दस तेरसा, बावन बासठ मान ॥ आगममें वीनय तणा, भेद कह्या भगवान ॥२॥

॥ राग–जंगलो–ताल दीपचंदी ॥ एकेली जानसें; में तो दुःख सह्यो री ॥ए देशी ॥

॥ सखी में तो विनय पिछाना री, अनंतें कालसें ॥ स० ॥ अ० ॥ १ ॥ तीर्थंकर सिद्ध कुलगणसंघा, किरिया धर्म सुज्ञाना री ॥ स० ॥ अ० ॥ २ ॥ ज्ञानी सूरी थिविर पाठक, गणी पद तेरा विधाना री ॥ स० ॥ अ० ॥ ३ ॥ अनाशातना भक्ति सुहंकर, अति मान गुण गाना री ॥ स० ॥ अ० ॥ ४ ॥ दोय सहसने चिहुत्तर अधिकें, वंदन देव विधाना री ॥ स० ॥ अ० ॥ ५ ॥ चारसो बावन गुरुवंदन विधि, विनयी जन चित्त आनां री ॥ स० ॥ अ० ॥ ६ ॥ जिनवंदन हित अति भारी, दुर्गति नाश करानां री ॥ स० ॥ अ० ॥ ७ ॥ श्रद्धा भासन तत्व रमणता, विनयी कार जगानां री ॥ स० ॥ अ० ॥ ८ ॥ धन्ना एह पद विधिशुं सेवी, आत्मरंग भरानां री ॥ स० ॥ अ० ॥ ९ ॥ काव्यम् ॥ अतिश० ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ पर० ॥ विनयाय जलां० यजाम० ॥ इति० ॥ १० ॥

॥ अथैकादश चारित्रपद पूजा ॥

॥ दोहा ॥ चरण शरण भवजल तरण, चरण शरण सुख सार ॥ रंक महंत करे सही, सुरवर सेवाकार ॥ १ ॥ तीन जगतपति पद दिये, इंद्रादिक गुण गाय ॥ कलिमल पंक पखारना, जय जय संयम राय ॥ २ ॥

॥ राग सोरठ—ताल जंपक तथा त्रीताल ॥ लगीलो नाभी नंदनशुं ॥ ए देशी ॥

॥ चरण पद मनरंग ॥ रे जीया ॥ च० ॥ ए आंकणी ॥ आठ कर्मका संचकों जे, रिक्त करे भय भंग ॥ चर० ॥ चारित्र नाम निरुक्त मान्यो, शिवरमणीको संग ॥ रे जी० ॥ च० ॥ १ ॥ षद् खंड केरु राज्य जेहनें, रमणी भोग उत्तंग ॥ चक्री संजम रसमें लीनो, चिदघन राज अभंग ॥ रे जी० ॥ च० ॥ २ ॥ वारे कषाय जरे जब कीनी, प्रगटे संयम चंग ॥ आठ कषाय गये अणुविरती, चारित्र मोह विरग ॥ रे जी० ॥ च० ॥ ३ ॥ वर्ष संयमके सुखकी श्रेणी, अनुत्तर सुर सुख चंग ॥ तत्व रमणता संयम विण नही, समर अमर अनंग ॥ रे जी० ॥ च० ॥ ४ ॥ वरुण देव संयम पद साधी, अरिहंत रूप असंग ॥ आतमानंदी सुरनर वंदी, प्रगट्यो ज्ञान तरंग ॥ रे जी० ॥ च० ॥ ५ ॥ काव्यम् ॥ अतिश० ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रूँ श्रीँ परम० ॥ चारित्राय जला० ॥ यजा० ॥ इति ॥ ११ ॥

॥ अथ द्वादश ब्रह्मचर्यपद पूजा ॥

॥ दोहा ॥ कामकुंभ सुरतरु भणी, सब व्रत जीवन सार ॥ कामित फलदायक सदा, भव दुख भंजनहार ॥ १ ॥ तारागणमें उडुपति, सुरगणमें जिम चंद ॥ विरति सकल मुख मंडना, जय जय ब्रह्म थिरिंद ॥ २ ॥

॥ राग सोरटी सामेरी—ताल दीपचंदी—मध्यरात्रि समयकी, श्याम नेक दय' मोसें न करी, नेम नेक० ॥ ए देशी ॥

॥ श्याम ब्रह्म सुहंकर लख री ॥ श्याम० ॥ ए आंकणी ॥ कुमति संग सब शुधबुध भूली, अनुभव रस अब चख री ॥ श्याम० ॥ १ ॥ नव वाडें शुद्ध ब्रह्म आराधे, अजर अमर तुं अलख री ॥ श्याम० ॥ २ ॥ औदारिक सुर कामजालसें, अपने आपकों रख री ॥ श्याम० ॥ ३ ॥ हिंसादिक पशु भय सब नासे, ब्रह्मचर्य रस

चख री ॥ श्याम० ॥ ४ ॥ विजयशेठ विजया गुणवंती, सुदर्शन काम कख री ॥ श्याम० ॥ ५ ॥ दशमे अंगें बत्रीश उपमा, ब्रह्म चर्यकी दख री ॥ श्याम० ॥ ६ ॥ आतम चंद्रवर्म नरवर ज्युं, अ रिहंत पद सुख अख री ॥ श्याम० ॥ ७ ॥ काव्यम् ॥ अतिशया० ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रूँ श्रीं परम० ॥ ब्रह्मचर्याय जला० य० ॥ इति ॥ १२

॥ अथ त्रयोदश क्रिया पद पूजा ॥

॥ दोहा ॥ चिद विलास रस रंगमें, करे क्रिया भवि चंग ॥ क रम निकंदन यश भरे, उछले ज्ञान तरंग ॥ १ ॥ आगम अनुसारी क्रिया, जिनशासन आधार ॥ प्रवर ज्ञान दर्शन लहे, शिवरमणी भरतार ॥ २ ॥

॥ राग माढ—ताल लावणीकी—फलवर्द्धी पारसनाथ, प्रभुकों पूजो तो सही ॥ ए देशी ॥

॥ थारी गइ रे अनादि निंद, जरा टुक जोवो तो सही ॥ जोवो तो सही ॥ मेरा चेतन जोवो तो सही ॥ था० ॥ ए आंकणी ॥ ज्ञान संग किरिया दुःखहरणी, नेवो तो सही ॥ मेरा चेतन नेवो तो सही ॥ एह धर्म शुक्ल शुद्ध ध्यान हृदयमें, प्रोवो तो सही ॥ मे० ॥ था० ॥ १ ॥ आर्त्त रौद्रनी पणवीस क्रिया, खोवो तो सही ॥ मे० ॥ अनुभव समरस सार जरा तुम्म, टोवो तो सही ॥ मे० ॥ था० ॥ २ ॥ अड दिट्ठी समता जोगनी किरिया, ढोवो तो सही ॥ मे० ॥ प्रथम चार तजी चार ग्रही पर, होवो तो सही ॥ मे० ॥ था० ॥ ३ ॥ समकितकी करणी दुःखहरणी, लेवो तो सही ॥ मे० ॥ टुक दूर नय पंथ विडार ज्ञान रस, गोवो तो सही ॥ मे० ॥ था० ॥ ४ ॥ अंतर तत्त्व विषय मन प्रीति, छोवो तो सही ॥ मे० ॥ एह ज्ञान क्रिया निज गुण रंग राची, थोवो तो सही ॥ मे० ॥ था० ॥ ५ ॥ अशुभ ध्याननां थानक त्रेशठ, खोवो तो सही ॥ मे० ॥ पुण्यानुबंधी पुण्य बीज टुक, बोवो तो सही ॥ मे०

॥ था० ॥ ६ ॥ क्रोध मान माया जडता संग, धोवो तो सही ॥ मे० ॥ एह हरिवाहन आतम रस चासी, मेवो तो सही ॥ मे० ॥ था० ॥ ७ ॥ काव्यम् ॥ अतिश० ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रूँ श्रीं परम० ॥ क्रियायै फ० ॥ य० ॥ इति त्रयोदश क्रिया पद पूजा ॥ १३ ॥

॥ अथ चतुर्दश तप पद पूजा ॥

॥ दोहा ॥ उपशम रस युत तप भलुं, काम निकंदन हार ॥ कर्म तपावे चीकणां, जय जय तप सुखकार ॥ १ ॥

॥ राग विहाग ॥ ताल दीपचंदी ॥

॥ युं सुधरे रे सुज्ञानी, अनघ तप ॥ युं० ॥ ए आंकणी ॥ कर्म निकाचित छिनकमें जारे, निर्दंभ तप मन आनी ॥ अ० ॥ १ ॥ अर्जुनमाली दृढप्रहारी, तपथुं धरे शुभ ध्यानी ॥ अ० ॥ २ ॥ लाख अग्यारह एंशी हजारह, पंच सय गिने ज्ञानी ॥ अ० ॥ ३ ॥ इतने मास उमंग तप कीनो, नंदन जिनपद ठानी ॥ अ० ॥ ४ ॥ संवत्सर गुणरत्न पीनो, अतीमुक्त सुख खानी ॥ अ० ॥ ५ ॥ चौद सहस मुनिवरमें अधिको, धन धन्नो जिनवानी ॥ अ० ॥ ६ ॥ कनककेतु तप शुध पद सेवी, आतम जिनपद दानी ॥ अ० ॥ ॥ ७ ॥ काव्यम् ॥ अतिश० ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रूँ श्रीं परम० ॥ तपसे जला० ॥ य० ॥ इति ॥ १४ ॥

॥ अथ पंचदश दान पद पूजा ॥

॥ दोहा ॥ दानें भवसंकट मिटे, दानें आनंद पूर ॥ दानें जिनवर पद लहे, सकल भयंकर चूर ॥ १ ॥ अभय सुपातर दान दे, निस्तरिया संसार ॥ मेघ सुमुख वसुमति घना, कहत न आवे पार ॥ २ ॥

॥ राग जंगलो–ठेको पंजाबी–रच्यो सिरि वृंदावन, रास तो गोविंद रच्यो ॥ ए देशी ॥

॥ दान तो अभंग दीजें, मन धरी रंग ॥ दान तो० ॥ ए आंकणी ॥ खान तो अमर अज, सुख तो अभंग ॥ गौतम रतन

सम, पात्र सुरंग ॥ दान तो० ॥ १ ॥ कनक समान मुनि, पात्र उत्तंग ॥ देशविरति पात्र रौप्य, मध्यम सुमंग ॥ दा० ॥ २ ॥ सम दर्शि जीव मानो, जघन तरंग ॥ कांस्य पात्र पात्रसम, सुख दे निरंग ॥ दा० ॥ ३ ॥ शालिभद्र कृत पुन्ना, धन्ना शुभचंद ॥ दान से अनंत सुख, कहत जिणंद ॥ दा० ॥ ४ ॥ दानसे हरिवाहन लीनो, जिनपद संग ॥ आतम आनंद कंद, सहज उमंग ॥ दा० ॥ ॥ ५ ॥ काव्यम् ॥ अतिश० ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ पर० ॥ दानाय जला० ॥ यजाम० ॥ इति ॥ १५ ॥

॥ अथ षोडश वैयावृत्त्य पद पूजा ॥

॥ दोहा ॥ वेयावच्च पद सोलमें, अखिल विमल गुणखान ॥ ए अप्रतिपाति खरो, आगम कथित निदान ॥ १ ॥ जिनसूरी पाठक मुनि, बालक वृद्ध गिलान ॥ तपी संघ जिन चैत्यनुं, वेयावच्च विधान ॥ २ ॥

॥ राग जंगलो झींझोटी ॥ ताल पंजाबी ठेको—गिरनारीकी पाहाडी पर केसें गुजरी ॥ गिर० ॥ ए देशी ॥

॥ शुद्ध वेयावच्च करी जिनपद वर री ॥ शुद्ध० ॥ ए आंकणी ॥ तीर्थंकर केवलि मनपर्यव, अवधि चतुर्दश पुव्वधरी री ॥ शुद्ध ॥ १ ॥ दशपूर्वी उत्कृष्ट चरणधर, लब्धिवंत ए जिन सगरी ॥ शुद्ध० ॥ २ ॥ जिनमंदिर जिन चैत्य करावे, पूजा करे मन तनु सुधरी ॥ शुद्ध० ॥ ३ ॥ दशमे अंगें जिनवर भाखें, कुमति कुसंग दुर भग री ॥ शुद्ध०॥ ४ ॥ नवपद शेष सूरीश्वर आदि, वैयावृत्त्य कर उठि जग री ॥ शुद्ध०॥ ५ ॥ सतपंच मुनिनुं वेयावच्च करीने, भरत बाहुल शिवमग री ॥ शुद्ध० ॥ ६ ॥ नृप जिमूतकेतु पद साधी, आतम जिन पद रस गगरी ॥ शु० ॥ ७ ॥ काव्यम् अतिश०॥ ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ वैयावृत्त्याय जला०॥ यजा०॥१६

॥ अथ सप्तदश समाधि पद पूजा ॥

॥ दोहा ॥ निजातम गुण रमणता, इंद्रिय तजी विकार ॥ थिर समाधि संतोषमें, भव दुःख भंजनहार ॥ १ ॥

॥ राग जंगलो झींझोटी–ताल पंजाबी ठेको–मानो ने चेतनजी मारी बात मानो ने ॥ ए देशी ॥

॥ राचो रे चेतनजी मन शुद्ध लाग ॥ राचो० ॥ धारो धारो समाधि केरो राग ॥ राचो० ॥१॥ या संग नाश कह्यो भववनको, अब क्युं सरको भाग ॥ राचो० ॥ २ ॥ द्रव्य समाधि भाव समाधि, सुमति केरो सुहाग ॥ राचो० ॥ ३ ॥ अशन वसनसें भक्ति संघकी, द्रव्यसमाधि अथाग ॥ राचो० ॥ ४ ॥ सारण वारण चोयण करनी, दुतिय समाधी जाग ॥ राचो० ॥ ५ ॥ सकल संघकूं दुविध समाधि, निपजावे महाभाग ॥ राचो० ॥ ६ ॥ पंच सुमति नित गुप्ति धरे तिन, निशिदिन धरत विराग ॥ राचो० ॥ ७ ॥ चार निक्षेप नय सप्तभंगी, कारण पंच निराग ॥ राचो० ॥ ८ ॥ चार प्रमाण द्रव्य षट माने, नव तत्त्व दिलमें चिराग ॥ राचो० ॥ ९ ॥ सामायिक नव द्वार विचारी, निज सत्ताको विभाग ॥ राचो० ॥ १० ॥ पुरंदर नृप ए पद सेवी, आतम जिनपद माग ॥ राचो० ॥ ११ ॥ काव्यम् ॥ अतिरा० ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम० ॥ समाधये ज० य० ॥ इति सप्तदश समाधि पद पूजा ॥१७

॥ अथाष्टादशाभिनव पद पूजा ॥

॥ दोहा ॥ ज्ञान अपूरव ग्रहण कर, जागे अनुभव रंग ॥ कुमति जाल सब जार कें, उछले तत्त्वतरंग ॥ १ ॥ पद अढारमे पूजियें, मन धरि अधिक उमंग ॥ ज्ञान अपूरव जिन कहे, तजी कुगुरुको संग ॥ २ ॥

॥ राग बरवो–ताल दुमरी–ताल दुमरी–मन मोह्या जंगलकी हरणीने ॥ ए देशी ॥

॥ भवि वंदो, अपूर्व ज्ञानतरणीने ॥ भवि० ॥ ए आंकणी ॥

कुमति घूक सब अंध हुये हें, भूले जडमति करणीने ॥ भवि० ॥ ॥ १ ॥ ज्ञान अपूरव जबही प्रगटे, शुद्ध करे चित्तधरणीने ॥ भवि० ॥ २ ॥ निर्युक्ति शुद्ध टीका चूर्णी, मूल भाष्य सुख भरणीने ॥ भवि० ॥ ३ ॥ संप्रदाय अनुभव रसरंगें, कुमति कुपंथ विहरणीने ॥ भवि० ॥ ४ ॥ सदगुरुकी ए तालिका नीकी, रतन संदुख उद्धरणीने ॥ भवि० ॥ ५ ॥ इन विन अर्थ करे सो तस्कर, काल अनंता मरणीने ॥ भवि० ॥ ६ ॥ सम्मति कर्म्म ग्रंथ रत्नाकर, छेद ग्रंथ दुःख हरणीने ॥ भवि० ॥ ७ ॥ द्वादशार वली अंग उपांग, सप्तभंग शुद्ध वरणीने ॥ भवि० ॥ ८ ॥ इत्यादिक भवि ज्ञान अपूरव, पठन करे धरे चरणीने ॥ भवि० ॥ ९ ॥ सागरचंद जिनपद पायो, आतम शिव वधु परणीने ॥ भवि० ॥ १० ॥ काव्यम् ॥ अतिश० ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ प०॥ अभिनवज्ञानपदाय ज०॥य०

॥ अथ एकोनविंशती श्रुत पद पूजा ॥

॥ दोहा ॥ पाप तापके हरणकों, चंदन सम श्रुत ज्ञान ॥ श्रुत अनुभव रस रार्चीयें, माचियें जिन गुण तान ॥ १ ॥ इगुणविश पद पूजीयें, जिनवर वचन अभंग ॥ तीर्थंकर पद भवि लहे, छार कुमतिको संग ॥ २ ॥

॥ राग श्याम कल्याण ॥ श्रीराधे राणी ॥ दे डारो ने वांसरी हमारी ॥ श्रीराधे० ॥ ए देशी ॥

॥ श्री चिदानंद विडारो ने, कुमति जो मेरी ॥ श्री० ॥ ए आंकणी ॥ दुषम कालमें कुमति अंधेरो, प्रगट करे सब चोरी ॥ श्री० ॥ १ ॥ बत्तीस दोष रहित श्रुत वांचे, आठगुणें करी जोरी ॥ श्री० ॥ २ ॥ अरिहंत गणधर भाषित नीको, श्रुत केवली बल फोरी ॥ श्री० ॥ ३ ॥ प्रत्येक बुद्ध दश पूरवधर, श्रुत हरे भवकों री ॥ श्री० ॥ ४ ॥ आठ आचार जो कालादिक हे, साधे करमनी चोरी ॥ श्री० ॥ ५ ॥ चारोहि अनुयोग गुरुगम वांचे, टूटे कूपंथनी दोरी ॥

श्री० ॥ ६ ॥ चौद भेद श्रुत वीश भेद हे, अंग पयन्नाको री ॥ श्री० ॥ ७ ॥ रत्नचूड नृप ए पद सेवी, आतम जिनपद हो री ॥ श्री० ॥ ८ ॥ काव्यम् ॥ अतिश० मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम० ॥ श्रुतायजला० ॥ य० ॥ इति ॥ १९ ॥

॥ अथ विंशति तीर्थपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ जिनमतकी परभावना, करे प्रभावक आठ ॥ श्रावक धन खरची करे, रथयात्रादिक ठाठ ॥ १ ॥ प्रावचनी अरु धर्मक थी, वाद निमित्त सुज्ञान ॥ तपी सिद्ध विद्या कवि, आठ प्रभा वक जान ॥ २ ॥

॥ राग पीलू—ताल दीपचंदी ॥

॥ तीर्थ उजारो अब करीयें, भविक वृंद ॥ दाख्यो रे जिनपद, आनंद भरे री ॥ तीर्थ० ॥ ए आंकणी ॥ तीर्थ प्रकार दोय, थावर जंगम जोय ॥ सिद्धगिरि आदि जोय, दर्श करे री ॥ तीर्थ० ॥१॥ शिखर समेत चंपा, पावापुरी दुःख कंपा ॥ अष्टापद रेवत, जिनंद शिव वरे री ॥ ती० ॥ २ ॥ इत्यादि जिनस्थान, जनम विरत ज्ञा न ॥ समज सुजान ठान, भक्ति खरे री ॥ ती० ॥ ३ ॥ थावर ती र्थ रंग, मन धरी अति चंग ॥ संघ काढी महानंद, धर्मशुं धरे री ॥ ती० ॥ ४ ॥ संघकी भक्ति करी, जेजेकार जग करी ॥ पावन प्रभावनासें, उन्नति करे री ॥ ती० ॥ ५ ॥ भरत सागर लेन, म हापद्म हरिषेण ॥ संप्रति कुमारपाल, वस्तुपाल नरें री ॥ ती० ॥ ६ ॥ आतम आनंद पूर, करम कलंक चूर ॥ मेरुप्रभ जिन पद, सुखमें वरे री ॥ ती० ॥ ७ ॥ काव्यम् ॥ अति० ॥ मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम० ॥ तीर्थेभ्यो जलादिकं यजा० ॥ इति ॥ २० ॥

॥ अथ कलश ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ ताल–पंजाबी ठेको.

॥ शुद्ध मन करो रे आनंदी, विंशति पद ॥ शुद्ध० ॥ ए आं कणी ॥ विंशति पद पूजन करी विधिशुं, उजमणुं करो चित्त रंगी ॥ विं० ॥ १ ॥ ए सम अवर न करणी जगमें, जिनवर पद सुख चंगी ॥ विं० ॥ २ ॥ तपगच्छ गगनमें दिनमणी सरिसो, विजय सिंह विरंगी ॥ विं० ॥ ३ ॥ सत्य कपूर क्षमा जिन उत्तम, पद्मरूप गुरु जंगी ॥ विं० ॥ ४ ॥ कीर्तिविजय गुरु समरस भीनो, कस्तू रमणि हे निरंगी ॥ विं० ॥ ५ ॥ श्री गुरु बुद्धिविजय महाराजा, मुक्तिविजयगणि चंगी ॥ विं० ॥ ६ ॥ तस लघु भ्राता आनंदविजयो, गाय विंशति पद भंगी ॥ विं० ॥ ७ ॥ खं युग अंक इंदु (१९४०) वत्सरमें, वीकानेर सुरंगी ॥ विं० ॥ ८ ॥ आतमराम आनंद पद पूजो, मन तन होय एक रंगी ॥ विं० ॥ ९ ॥ इति कलश संपूर्ण ॥ इति विंशतिस्थानकपदपूजा समाप्ता ॥

इति मुनिराज श्री आत्मारामजी आनंदविजयजी विरचित सर्व पूजा समुदाय समाप्ता.

॥ अथ ॥

नंदीश्वराष्टमे द्वीपे द्वापंचाशज्जिनालय पूजा विधिः ॥

॥ तहां पहली पूर्वदिशिमें चौमुख पूजा ॥

॥ पूर्वदिशिके बीचमें अंजनगिरीके चोमुख आगे अष्ट द्रव्य नालेर पांन थापना लेकर खडा रहे ॥ नमोर्हत् सिद्धा० ॥ शिखरणी छंद ॥ दिशीश्रीपूर्व्वस्यांसुरवरयुतैदेवरमणेः । स्फुरत्तुंगेश्रृंगे जलदसदृशेकज्जलगिरौ ॥ जगत्पूज्येसिद्धायतनउदितेभूमिविदिते । नमोनंदीद्वीपेरुषभजिननाथादिविभवैः ॥ १ ॥ ॐ ह्रूँ श्री अर्ह परमात्मने अनंतानंत ज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्यु निवारणाय श्रीरुषभानन चंद्रानन वारिषेण वर्द्धमाननामानो एकशतचतुर्विंशति अधिक शाश्वत जिननाथाय जलं चंदनं पुष्पं धूपं दीपं अक्षतं नैवेद्यं फलं यजामहे स्वाहा ॥ इति प्रथम पूजा ॥ १ ॥

॥ दधिमुख पर्वत पूर्वदिशिमें पूर्ववत् द्रव्य लेके खडा रहे ॥ शिखरणी छंद ॥ ततःप्राच्यांवापीविमलसलिलादेवरमणा । दनंद्यानंद्याकाजलजललितातोरणभृता ॥ तदुत्संगाधिस्थेदधिमुखगिरौचैत्यनिलये । नमंस्तत्रश्रीमद्दृषभजिननाथादिविभवे ॥ १ ॥ ॐ ह्रूँ श्री अर्ह परमा० अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति ॥ २ ॥

॥ दधिमुख पर्वत दक्षिणदिसीमे ॥ शिखरणी छंद ॥ तदैतादेरम्याचलदनलसत्तोयनिवहा । शुभामोघापाच्यांभ्रमरनिकरैर्भक्तितितरा ॥ तदुत्सगाधिस्थेदधिमुखगिरौचैत्यनिलये । नमस्तत्रश्रीमद्दृषभजिननाथादिविभवे ॥ १ ॥ ॐ ह्रूँ श्री अ० अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति ॥ ३ ॥

॥ पश्चिमदिशिमें दधिमुखपर्वतमें ॥ शिखरणी छंद ॥ प्रतीच्यामाशायांतदधिगिरितौमंजुलधरा । सुवापीगोस्तूपासुरसरदिवाभांतिसत्

तं ॥ तदुत्संगाधिस्थेदधिमुखगिरौचैत्यनिलये । नमस्तत्रश्रीमदृषभजिननाथादिविभवे ॥१॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अष्टद्रव्यं य० स्वाहा ॥४॥

॥ उत्तर दिशामें दधिमुख पर्वतपर ॥ शिखरणी छंद ॥ उदीच्यांसोपानावतरदमरस्त्रीव्रजवदा । सुदर्शाद्यानांतालदचलवरात्पुष्करणिका ॥ तदुत्संगाधिस्थेदधिमुखगिरौचैत्यनिलये । नमस्तत्रश्रीमदृषभजिननाथादिविभवे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अष्टद्रव्यं यजामहे ॥ ५ ॥

॥ ईसानकूणमें रतिकर पर्वतपर ॥ वसंततिलका छंद ॥ वाप्यंतरेरतिकरःप्रथितावदातः । ईशानगोगिरिवरोगगनाश्रितश्च ॥ तत्रस्थचैत्यरुषभादिजिनेश्वराणां । वंदेमुदाविशदबिंबमुदारवृत्त्या ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं० अष्टद्रव्यं यजामहे० ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ इशानकूणमें दुसरा रतिकर पर्वतपर ॥ काव्यं ॥ तादृकूवरोरतिकरोपितथाद्वितीयः । शैलस्सहोदरइवप्रचकास्तियत्र ॥ तत्रस्थचैत्यरुषभादिजिनेश्वराणां । वंदेमुदाविशदबिंबमुदारवृत्त्या ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं० अष्टद्रव्यं यजामहे० ॥ इति ॥ ७ ॥

॥ अग्निकूणमें वावडीमें प्रथम रतिकर पर्वतपर ॥ काव्यं ॥ आग्नेयाश्रितोरतिकरोरतिमूर्त्तिरूपः । स्वर्गांगणोवसुमतीवतथैवतस्य ॥ तस्मिन्जिनालयवरेजगदीश्वराणां । रूपंततोस्मिनरजन्मफलाभिलाषो ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं० अष्टद्रव्यं यजामहे० ॥ इति ॥ ८ ॥

॥ अग्निकूणमें दुसरा रतिकर पर्वतपर ॥ काव्यं ॥ तत्रैवतत्समधरस्समपंक्तितोभ्यो । गोत्रोत्तमोरतिकरोनरदेवकाम्यः ॥ तस्मिन्जिना० रूपंततो० ॥१॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं० अ० द्र० य० ॥ इति ॥९॥

॥ नैरुतिकूणमें रतिकर पर्वतपर ॥ काव्यं ॥ नैरुत्यगोरतिकरस्सुरशैलकीर्त्तिः । विस्फूर्त्तिमूर्त्तिविजितःशुशुभेसदैव ॥ तत्रस्थजैनभुवनेभुवनोत्तमत्वे । संस्तौमिसाधुरुषभादिप्रभुंसदाभं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं० अष्टद्रव्यं यजामहे० ॥ इति ॥ १० ॥

॥ नैरुतिकूणमें दुसरे पर्वतपर ॥ काव्यं ॥ तस्यैवपार्श्वपरिवर्त्ति नगाधिराजस्तत्तुल्यगोरतिकरोद्युतिभृद्दिगंतः । तत्रस्थजैनभुवनेसुव० संस्तोमिसाधुरुषभादिप्रभुंसदाभं ॥१॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्ह० ॥११॥

॥ वायव्यकूणमें पहिले पर्वत रतिकर पर ॥ काव्यं ॥ गीर्वाण वर्गगतिदःशुभदोजनानां । वायव्यगोरतिकरःक्षुधरस्तथैव ॥ तत्रापि पारगतमंदिरबिंबवृंदं । नित्यंनमामिवृषभादिजगत्प्रभूणां ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्ह० अष्टद्रव्यं यजामहे० ॥ इति ॥ १२ ॥

॥ वायव्यकूणमें दुसरे रतिकर पर्वतपर ॥ काव्यं ॥ तत्सदृशोर तिकरःसुखचारुभूमिः । पद्मानुरागइतरःकलकेलिसद्म ॥ तत्रापिपारग त०। नित्यं० ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्ह० अष्टद्रव्यं यजामहे० ॥१३॥

॥ दक्षिणदिशिमें अंजनगिरि पर्वतपर ॥ काव्यं ॥ इंद्रवज्रा छंद ॥ योदक्षिणस्यांदिशिभातिनित्यं । द्योतांजनाद्रीरमणीयताद्रः ॥ तस्योप रस्थेजिनराजचैत्ये । नौमिस्वयंभूरुषभादिजातं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्ह० अष्टद्रव्यं यजामहे० ॥ इति ॥ १४ ॥

॥ पूर्वदिशि पुष्करणी दधिमुख पर्वतपर ॥ काव्यं ॥ तत्पवता त्प्राक्दिशिराजमाना । नंदोत्तरापुष्करणीप्रधाना ॥ दध्याननाद्रेःतद गाधतोये । चंद्राननाद्यंप्रणमामिसद्यः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्ह० १५

॥ दक्षिणदिशिमें अंजनागिरि पास दधिमुख पर्वत पर ॥ काव्यं ॥ नित्योद्योतादंजनाद्दक्षिणस्यां । नंदावापीसार्वनामतदंतः ॥ दध्या स्याद्रौचंदनाद्यैर्भजामि । प्राशादेश्रीवर्द्धमानादिसार्व ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्ह० अष्टद्रव्यं यजामहे ॥ इति ॥ १६ ॥

॥ पश्चिमदिशि दधिमुख पर्वतपर ॥ काव्यं ॥ तस्यैवाद्रे पश्चिमा यासुनंदा । तस्या मध्येश्रीदधिस्यान्नगेंदुः ॥ तस्मिन्चैत्यैश्रीजिनाधीश जालं । नामंनामंतंनमामिप्रकामं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्ह० ॥१७॥

॥ उत्तरदिशि वाप्यां दधिमुखेषु ॥ काव्यं ॥ उरादीचीनादीर्त्रि

कानंदिवद्धे । नीसान्वर्थातन्नगा तत्रसंस्थै ॥ जैनावासैर्वारिषेणादिबिंब । नत्वानाथेमुक्तिसौख्यंनितांतं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं० ॥१८॥

॥ हिवं इशानकूणें प्रथम रतिकर विषे चैत्य ॥ काव्यं ॥ शालिन्यु०॥ रतिकरोस्तिजिनालयमाश्रितो । विदिशिभैरवदेवतएतयोः ॥ तदचलैरुषभादिजिनेश्वरं । समनुनम्यररामितदंतिके ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ॥१९

॥ इशानकूणै द्वितीय रतिकरपर्वतें ॥ काव्यं ॥ द्रुतविलंबित छंद ॥ तदपरोपितथैवतदन्वितो । जिननिकेतनकेतुसुमंडितः ॥ तदचले रुषभादिजिनेश्वरं । समनुनम्यररामितदंतिके ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ॥२०॥

॥ अग्निकूणें रतिकर पर्वत विषे चैत्य ॥ काव्यं ॥ द्रुतविलंबित छंद ॥ रतिकरोजिनराजगृहांकितौ । लसतिवह्निविदिग्क्षितिभूषितः ॥ तदपरस्तदगेरुषभादिकं । नमतनाथमनाथसनाथकं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं० अष्टद्रव्यं यजामहे० ॥ इति ॥ २१ ॥

॥ अग्निकूणै दूजै रतिकरपर्वतें ॥ काव्यं ॥ तदपरापरगोनगनायको । रतिकरस्तदितैजिनमंदिरे ॥ नतिततिप्रतिरोहतुमामकी । लसदनंतगुणाकरतेप्रभो ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं० अष्टद्रव्यं० ॥ २२ ॥

॥ नैरुतिकूणै प्रथम रतिकरें चैत्य आगैं ८ वस्तु लेई ॥ काव्यं॥ द्रुतविलंबित छंद ॥ विदिशि नैरुतिगेजिनपालये । रतिकरेरुषभादिस्वयंभुवं ॥ सुमनसासुमनोभिरितोंजनात् । यजतभव्यजनाअतिभावतः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं० अष्टद्रव्यं यजामहे० ॥ २३ ॥

॥ नैरुतें दूजै रतिकरैं ॥ काव्यं ॥ द्रुतविलंबित छंद ॥ तदितरः समसीमधराधरो । रतिकरोविभवेश्मबिभर्तियः ॥ तदचलेजिनराजजगद्गुरुं । सततनौम्मिमुदारुषभादिकं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं० ॥२४॥

॥ वायव्यकूणें प्रथम रतिकरै ॥ काव्यं ॥ द्रुतविलंबित छंद ॥ अनिलदेवविदिग्धरणीधरो । रतिकरोजनतोस्तितदिद्रगे ॥ भवतुमे रुषभादिजगत्पतौ । सतविधानमनंतमनंतशः ॥१॥ ॐ ह्रीं श्रीं ॥२५

॥ वायवें दूजें रतिकरें ॥ काव्यं ॥ द्रुतविलंबित छंद ॥ रतिकरो पितदन्यतरस्तथा । शिरसितस्यजिनायतनेयथा ॥ दधतुमेजिनपुंगव चंदनां । विधिवदंगभवत्पदपंकजे ॥ १ ॥ ॐ ह्रूं श्रीं अर्हं० ॥२६॥

॥ पश्चिमदिशि अंजनगिरि विषे चैत्यपूजाः ॥ काव्यं ॥ नंदीश्व रेनंदितपश्चिमायां । स्वयंप्रभःसुप्रभायांजनाद्रिः ॥ तज्जैनसद्मगतमी तिछ्मे । भजामिभक्त्यावृषभादिवृंदं ॥ १ ॥ ॐ ह्रूं श्रीं० ॥ २७ ॥

॥ पश्चिमदिशि अंजनगिरिथी पूर्वदिशि दधिमुख पर्वतें चैत्य गृह आगें ८ वस्तु लेई ॥ काव्यं ॥ हिरणी छंद ॥ दधिमुखगिरिर्भद्रा वाप्यांरराजतदंजना । दधिनिचयचैत्येपौरस्त्यायासुरासुरसेवितः ॥ जिनपतिगृहेतस्मिन्भूभ्रौजिनंरुषभादिकं । नमनविषयीकृत्यास्वादं सुधारसजंलभे ॥ १ ॥ ॐ ह्रूं श्रीं अर्हं० अष्टद्रव्यं यजा० ॥ २८॥

॥ दक्षिणदिशि दधिमुखरे विषें चैत्य चौमुख आगें अष्टप्रकार पूजा ॥ काव्यं ॥ हिरणी छंद ॥ कलजलविशालायांवाप्यांतदेवन गांजनात्। दिनकरकराघौघौपाच्यांदधीतमुखाचलः ॥ ततदचलवरेदे वावासेप्रभोचरणांबुजे । परमशरणंप्राप्यानंतंमुदंलभितोस्मिते ॥१॥ ॐ ह्रूं श्रीं अर्हं० अष्टद्रव्यं यजामहे० ॥ इति ॥ २९ ॥

॥ पश्चिमदिशि अंजनगिरि चैत्य ॥ काव्यं ॥ हिरणी छंद ॥ क मकुमुदावाप्यांतस्माच्छिलोच्चयतोजनात् । वरुणककुभिःश्रीदध्यास्य स्तदहुपरिस्थिते ॥ जिनपवसतौश्रीमज्जैनाकृतिचिधिवद्दृशं । प्रणति ततिभिर्नत्वानाथेस्वकीयसुखास्पदं ॥ १ ॥ ॐ ह्रूं श्रीं अर्हं० ॥३०॥

॥ उत्तरदिशि अंजनगिरि विषें अष्टप्रकार पूजा ॥ काव्यं ॥ हिरणी छंद ॥ जलधिसदृशापुंडर्याद्याकिणीकिलदीर्घिका । दधिमुख नग कौबेरीयातदंतरतोंजनात् ॥ तदुपरिगतेऽर्हतप्रासादेजिनेंद्रकदंबकं । तलितदुरितोजातोजातुप्रणम्यप्रभोःपुरः ॥१॥ ॐ ह्रूं श्रीं० ॥३१॥

॥ पश्चिमदिशि अंजनगिरितः दीर्घिका वापिरे ईशानकूणमें प्रथ

म रतिकरें चैत्य ॥ काव्यं ॥ दीर्घिकयोरंतराल ईशांनगरतिकरना म । तत्रविचित्रचरित्रजिनेश्वरधान ॥ तद्गृहीतसाधतसद्मनिश्रीऋषभा दिराजान । मंतर्गतधृतिमत्यांवंदेहंसद्धान ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीं० ३२

॥ पश्चिमदिशि अंजनगिरितः दीर्घिकावापीरै ईशानकूणमें द्वितीय रतिकर पर्वतें जिनालय आगैं अष्टप्रकार द्रव्य लेई ऊभा रहै ॥ काव्यं ॥ तैनैवरीत्यारतिकरइतरस्तस्यसमेन । शोभतिसोन्नतयशसा सोयंसोश्चगुणेन ॥ तद्गृहीतसाधितसद्मनिश्रीऋषभादिराजान मंतर्गते धृतिमत्यांवंदे ॥१॥ ॐ ह्रीँ श्रीं अर्हं० अष्टद्रव्यं य० ॥ इति ॥ ३३ ॥

॥ हिवें अग्निकूणरे विषै दोय रतिकरहे तिणमें पहिले रतिकरे ८ द्रव्य लेई ॥ काव्यं ॥ धन्यतमस्त्वंरतिकरगिरवररत्नसमान । विदिशिक्शानौमत्नमितानांपुण्यप्रधांन ॥श्रीऋषभाननप्रभृतिप्रभूणामूर्द्ध स्थितेन । सिरसिधृतःश्रीसिद्धायतनंत्वयिकायेन ॥१॥ ॐ ह्रीँ श्रीं ३४

॥ अग्निकूणे दूजो रतिकर चैत्य आगे ८ प्रकार ॥ काव्यं ॥ समश्रेणिस्थितविस्तृतपर्वतइतरस्त्वमेव । रतिकररुचिरप्रभाखराजिनवरसद्मतदेव ॥ शक्त्यात्रिकरणभक्त्यानम्यानंदतएव । त्वामेवददतुमहोदयमेवश्रीदेवाधिदेव ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीं अर्हं० ॥ इति ॥ ३५ ॥

॥ नैऋतकूणरे विषे २ रतिकरहे सो पहिलडो रतिकर पर्वत आगे चैत्य आगे ८ प्रकारें पूजा ॥ काव्यं ॥ भवत्रयत्रायकशिवसुखदायकऋषभादिदेव । त्वद्विंबावलिमालित्यचैत्यविराजितएव ॥ जातौ नैऋतविदिशिजगद्रतिकरकारकईश । रतिकरउतश्रयितोस्मित्वामहमेवमुनीश ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीं अर्हं० अष्टद्रव्यं यजा० ॥ इति ॥३६॥

॥ नैऋत्यकूणे २ रतिकर पूजा ॥ काव्यं ॥ अपरेरतिकरऊपरिनभोचरचर्चितचैत्य । चंचुमुदंचचराचरकेतुमुदारमुपेत्यं । श्रीऋषभादिपदोत्पलउज्वलअकलंकपेश ॥ चेतोमधुकरउपरमतिस्ममेमुक्तिरमेश ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीं अर्हं० अष्टद्रव्यं यजामहे० ॥ इति ॥ ३७ ॥

॥ काव्य कहे ॥ समराधीशविदिशित्वदाश्रयतोरतिकारः । उदयाचलतिधरातलउत्तमजिनपविहार ॥ तत्रचतुर्विधशुद्धसुधानिधिविबुधविवंध । श्रीऋषभादिप्रभुंप्रणमामियशोभरनंध ॥१॥ ॐ ह्रीं श्री ३८॥

॥ काव्यं ॥ अन्यतरेरतिकरगिरिशिपरेप्रवरप्रासाद । उद्यतचातुर्द्वारउदारअपारअनादि ॥ चातुर्गतभवभ्रांतिनिवारकअभिनवभानु । श्रीऋषभादिजिनायनमोनमोभानुसमान ॥१॥ ॐ ह्रीं श्रीं ॥३९॥

॥ उत्तरस्या काव्यं ॥ चतुरशीतिसहस्रयोजनसमुच्छितेसांजनगिरि । मूलतोदशसहस्रयोजनविस्तृतःशिरसोपरि ॥ एकसहस्रयोजनउदीचीनौरम्यश्रीरमणायकः । स्तूयतेतत्रसदैवमयकासार्वश्रीऋषभादिक ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं० अष्टद्रव्यं यजामहे० ॥ ४० ॥

॥ काव्यं ॥ ततोंजनतोलक्षयोजनगतेंविजयासुनृता । प्राच्यांसुवापीसततयोजनलक्षमायतविसृता ॥ अतिकांतदधिमुखगिरिस्तस्यांअंबुमध्यगतोमत । स्तदुपरिप्रभुंश्रीऋषभप्रभृतसंनमामिप्रमोदतः ॥१॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं० अष्टद्रव्यं यजामहे ॥ इति ॥ ४१ ॥

॥ काव्यं ॥ परिपूर्णपथोवैजयंतिदाक्षिणात्यातदगिरे । विपुलगगनोत्कर्षदधिमुखपर्वतस्तदभ्यंतरे ॥ तस्यशिषरेधर्मनिकरेविशद्तरजिनमंदिरे । गतदुर्मतोर्हजिननमन्नपिपुण्ययुल्लसदिदरे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं० अष्टद्रव्यं यजामहे ॥ इति ॥ ४२ ॥

॥ जलधिजयनिप्रतिचीनाजयंतीवापीततः । तन्मध्यदधिमुखभृमृदुच्चैतस्तथैवात्रसमासतः ॥ जिनराजभुवनंशर्मसदनंकर्मशत्रुनिकंदनं । ऋषभादिपत्कजपुनीतंमेभवतुभूयोवंदनं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ॥४३

॥ अपराजिताभूराजिताजनपर्वताद्दुत्तरभूवि । निर्मत्स्यकलकल्लोलकलिताद्योतयंतीभुवोभूवि ॥ नगमुख्यदधिमुखउदगमध्यैतदुपरिचैत्यालये । ऋषभादिबोधिदमयिकरोविबोधिलाभगुणाशये ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं० अष्टद्रव्यं यजामहे ॥ इति ॥ ४४ ॥

॥ काव्यं ॥ रमणीयकांजनरसाधरतोरतिकरोधरणीधव । ईशांन भूमौतस्यमोलौविश्वपतिगृहपुंगवः ॥ तत्रतादृशतदाकारं ऋषभप्रभृति कृपानिधिः । संस्मर्यंचेतसिनमनलाभंलभेदेवदयानिधिः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं० अष्टद्रव्यं यजामहे ॥ इति ॥ ४५ ॥

॥ काव्यं ॥ तत्साम्यद्वितियोचला द्वितीयेरतिकरद्युतीमतीसदा । सकलमंगलमाल दातरिदीनवंधुगृहेमुदा ॥ ऋषभादिदीनानाथसेवे प्रतिदिनत्वाप्रतितत्तः । तत्रभवभयदुःखनिकरान्मुच्यतांमांप्रतियतः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं० अष्टद्रव्यं यजामहे ॥ इति ॥ ४६ ॥

॥ वहुलविदिशिविभर्त्तिसोयंरतिविभुवरगृहं । विश्वभूषणमखिल दूषणदुष्टदुर्मतिनिर्गृहं ॥ सद्भावभावितभव्यभविजनव्यनीतरविसम । ऋषभादिपुरुषोत्तमपुनितंजयंतुयोहिनगोत्तमः ॥१॥ ॐ ह्रीं श्रीं ॥४७

॥ काव्यं ॥ अपरभूधररूपसुंदररतिकरेनतसुरनरे । विश्वेशविशद विहारधारेरत्नमयआनंदकरे ॥ नाथकरुणाकरकृपालोश्रीशऋषभा दिप्रभो । त्वच्चरणसेवाशरणकरणंदिशतुमांप्रतिविभो ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं० अष्टद्रव्यं यजामहे ॥ इति ॥ ४८ ॥

॥ हेभविजननैर्ऋतिविदिशि । नगेंदुरतिकरोपरिजिनालये ॥ भ विजनऋषभप्रभुतिजिन । चंद्रमभिनौमिविशदाशये ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं० अष्टद्रव्यं यजामहे ॥ इति ॥ ४९ ॥

॥ हेरतिकरधन्यतमोऽसि । तदन्यआप्तनिकेतनशोभित ॥ हेतार कचेतोरमतुत्वदंत । उत्तममेविभवोन्वितः ॥१॥ ॐ ह्रीं श्रीं ॥५०॥

॥ हेभविजनवायुविदिशिरतिकार । सानुनिजिनसद्मनिततः ॥ हेजीवनश्रीऋषभादिस्वरूप । मनुभवतपस्यतुयतः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं० अष्टद्रव्यं यजामहे ॥ इति ॥ ५१ ॥

॥ हेभविजनतत्समरतिकरनाम । तत्रैवास्तिगुणोत्करः ॥ हेजिनप तिचैत्यालयऋषभादिदेव । ममैधिश्रीसुखकरः ॥१॥ ॐ ह्रीं श्रीं ॥५२

॥ कलश ॥ युगवराःश्रीकरा, दुःखकश्मलहरा, भूरिसूरिश्वराःसुचि तराए ॥ धर्मरुचिकारका, भवसमुद्रतारका, धीर्यगांभीर्यगुणसागरा ए ॥ द्वीपनंदीश्वर, पंचाद्विजिनगृहे, ऋषभप्रमुखाःसतांवंधुराए ॥ जै नचंद्राःसदा, त्रिभुवनेसुकृतिनो, जयतुमदमानवनसिंधुराए ॥५३॥ ॥ इति नंदीश्वर पूजा विधि ॥

॥ दिवालीयें वेलो करनें नंदीश्वरद्वीपरो तप करणो झालणो इम १२ मासनें अमावसरो अमावस तप उपवास करणो. गुणनौ ॐ ह्रूीं श्रीं व्रधमान नाथायनमः करीजै. इण रीतें मास १२ उपवास होय चुकै. दिवाली उपर नंदीश्वर द्वीपरौ मंडल करणौ पछै जल १ चंदन २ पुष्फ ३ धूप ४ दीप ५ अक्षत ६ नैवेद्य ७ फल ८ साराही ५२ वावन २, अंगलूहणा ५२ रोकनाणो ५२ नालेर ५२ ध्वजा ५२ ऐ चढाईजै. इण विधिसे पूजा भणावीजैः ॥ इति नंदीश्वर द्वीप पूजा संपूर्ण ॥

॥ अथ ॥

॥ उपाध्याय रामऋद्धिसारगणि विरचित ॥

॥ दादा गुरु महाराजकी पूजा ॥

(अथ पहली थापना स्थापन करके आव्हान का श्लोक पढे)

॥ काव्य ॥ सकल गुण गरिष्टान् सत्तपोभिर्वरिष्टान् शम दम य मयुष्टांश्चारु चारित्रनिष्टान् निखल जगति पीठे दर्शितात्मप्रभावान् मुनिप कुशल सूरिन्स्थापयाम्पत्र पीठे ॥ १ ॥ ॐ ह्रूीं श्रीं श्री जिन दत्त श्री जिन कुशल श्री जिन चंद्रसूरिगुरौअत्रावतरावतर स्वाहा॥ २ ॥ ॐ ह्रूीं श्रीं श्री जिन दत्त अत्रातिष्ट २ ठः ठ ठः स्वाहा इति प्रतिष्टापनं ॥ ॐ ह्रूीं श्रीं श्री जिनदत्तसूरिगुरौअत्रममसंनिहितोभव वषट् इति संनिधीकरणं ॥ ३ ॥

॥ अथ प्रथम जल पूजा प्रारंभः ॥

(जलका कलश लेके स्नात्रीया सुच होके खडा रहे.)

॥ अथ स्तुति प्रारंभ ॥ दोहा ॥ ईश्वर जग चिंतामणी, कर पर मेष्टि ध्यान। गणधर पद गुण वर्णना, पूजन करो सुजाण ॥१॥ सौ धर्मा मुनिपत प्रगट, वीर जिनेश्वर पाट ॥ मिथ्या मततम हरणकूं, भव्य दिखावण वाट ॥ २ ॥ सुस्थित सुप्रतिवद्ध गुरु, सूरि मंत्र को जाप ॥ कोटि कीयो जब ध्यान धर, कोटिकगच्छ सुथाप ॥ ३ ॥ दश पूर्व्वी श्रुत केवली, भये वज्रधर स्वाम ॥ तादिनतें गुरु गच्छ को, वज्र शाख भयो नाम ॥ ४ ॥ चंद्रसूरि भये चंद्रशम, अतहि बु द्धि निधान । चंद्रकुली सब जगतमें, पसर्यो बहु विज्ञान ॥ ५ ॥ वर्द्धमान के पाट पद, सूरिजिनेश्वर भाश ॥ चैत्य वाशि कूं जीत कर, सुविहित पक्ष प्रकाश ॥ ६ ॥ अणहिलपुर पाटणसभा, लोक मिले तिहां लंक्ष ॥ खरतर विरुद सुधानिधि, दुर्लभ राजसमक्ष ॥७ ॥ अभय देव सूरि भये, नव अंग टीकाकार ॥ थंभण पारस प्रगट कर, कुष्ट मिटावन हार ॥ ८ ॥ श्री जिन बल्लभ सुरि गुरु, रचना शास्त्र अनेक ॥ प्रतिबोधे श्रावक बहुत, ताके पट्ट विशेष ॥ ९ ॥ हुंबड श्रावग वाघडी, अठारे हज्जार ॥ जैन दया धर्मी किये, वरते जैजैकार ॥१०॥ दादा नाम विक्षात जस, सुर नर शेवग जाश ॥ दत्तसूरि गुरु पूजता, आनंद हर्ष उल्लास ॥ ११ ॥ दिल्लीमें पतसा हने, हुकम उठाया शीश ॥ मणिधारी जिन चंद गुरु, पूजो विस वावीस ॥ १२ ॥ ताके पट्ट परंपरा, श्री जिन कुशल सूरिंद ॥ अ कवर कूं परचा दीआ, दादा श्री जिनचंद ॥१३॥ एसे दादा च्या र कूं, पूजो चित्त लगाय ॥ जल चंदन कुशमादि कर, द्रव्य सौगं ध चढाय ॥ १४ ॥

॥ चाल ॥ दादा चिरंजीवो ॥ ए देशी ॥ गुरुराज तणी कर पू

जन भवि, सुख कर मिलसो लच्छि घणी ॥ ए आंकणी ॥ गुरु दत्तसूरिंद जग सुखकारी, गुरु सेवगने सानिधकारी । गुरुचरणक मळनी वलिहारी ॥ गु० ॥ १ ॥ शंवत इग्यारे वार शशी, वत्तीसे जनम्यां शुभ दिवसी ॥ श्रावग कुल हुंवडने हुलसो ॥ गु० ॥ २ ॥ जसु वाछगसा पितुनाम भणे, वाहडदे माता हर्ष घणे, इकता लीसे दिक्षा पभणे ॥ गु० ॥ ३ ॥ गुणहतरे वल्लभ पाटधरी, गुरु माया बीजनो जाप करी, गुरु जगमें प्रगट्या तरणतरी ॥गु०॥४॥ मणिधारी जिन चंद उपगारी, जिन दत्तसूरिंद के पटधारी, भये दादा दूजा सुखकारी ॥ गु० ॥५॥ राशल पितु देल्हण दे माता, श्रीमाल गोत्र बोधनशाता, दिल्ली पतसाह सु गुण गाता ॥ गु० ॥६॥ जसु चोथे पाट उद्योत करि, जिन कुशल सूरिंद अति हर्ष भरी, तेरेसे तीसे जनम धरी ॥ गु० ॥ ७ ॥ जसु जिल्हा जनक जगत्र जीयो, वर जैत सिरी शुभस्वपन लीयो, गुरु छाजेड गोत्र उद्धार कीयो ॥ गु० ॥ ८ ॥ धन संतालीसे दीक्ष धरी, जिन चंदसूरीश्वर पाट वरी, गूणहतरे सूरि मंत्र जाप करी ॥ गु० ॥ ९ ॥ सेवामे वावन वीर खरा, जोगणीया चोसठ हुकम धरा, गुरु जगमें केइ उपगार करा ॥ गु० ॥ १० ॥ माणक सुरीश्वर पद छाजे, जिन चंदसूरि जगमें गाजे, भये दादा चोथा सुख काजे ॥ गु० ॥ ११ ॥ जिन चांद उगायो उजियालो, अम्मावश की पूनमवालो, सव श्रावग मिल पूजन चालो ॥ गु० ॥ १२ ॥ जिन अकवर कूं परचा दीना, काजीकी टोपी वश कीना, वकरी का भेद कह्या तीना ॥ गु० ॥ १३ ॥ गंधोदक सुरभि कलश भरी, प्रक्षालन सद गुरु चरण परी, या पूजन कवि ऋद्धिसार करी ॥ गु० ॥ १४ ॥

॥ श्लोक ॥ सुर नदी जल निर्म्मल धारयः । प्रवल दुष्कृत दाघ निवारय· ॥ सकल मंगल वंछितदायकं। कुशल सूरि गुरोश्वरगौय

जे ॥ १ ॥ ॐ ह्रूँ श्रँ परम पुरषाय परम गुरु देवाय भगवते श्री जिनशासनो द्दीपकाय श्री जिन दत्त सूरिश्वराय मणि मंडित भाल स्थल श्री जिन चंद्र सूरिश्वराय श्री जिन कुशल सूरिश्वराय अकव्बर असुर त्राण प्रति बोधकाय श्री जिन चंदसूरीश्वराय जलं निर्व्विपामिते स्वाहाः ॥ १ ॥

॥ अथ दूजी केशर चंदन पूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ केशर चंदन मृग मदा, कर घनसार मिलाप ॥ पर चा जिन दत्तसूर का, पूज्यां तूटे पाप ॥ १ ॥

॥ चाल ॥ वीण वाजे की दीन के दयाल राज सार २ तू ॥ आंकणी ॥ आये मरु अछनग्र घाम धूम २ धूं, वाजते निशाण ठोर हर्ष रंग हूं ॥ ह० दो० ॥ १ ॥ मूसलमांन मुगलपूत फोजमो जमूं, फोत मोत होगया हायकार सूं ॥ हा० दो० ॥ २ ॥ सद्य विप्र देख आप हुकम दीन यूं, लावो मेरे पास आस जीष दान दूं ॥ जी० दो० ॥३॥ मृतक पूतमंत्र से उठाय दीन तूं, देख के अचंभ रंग दास खासकूं ॥ दा० दो० ॥४॥ करत सेव भाव पूर तूर कराज जूं, छोड के अभक्ष खाण हाजरी भरूं ॥ हा० दो० ॥ ५ ॥ वोजखोज के पडी प्रति क्रमण के मूं, हाथसे उठाय पात्र ढांक दीन छूं, ढां० ॥ दो० ॥ ६ ॥ दामनो अमोल बोल सिद्ध राज तूं, देउं वरदान छोड बंध कीन क्यूं ॥ बं० दो० ॥७॥ दत्त नाम जपत जाप करत नांह चूं, फेरमें पडूंगी नांह छोड दीनफूं ॥ छो० दो०॥८॥ करोगे निहाल आप पाव पलकनूं, रामऋद्धिसार दास चरण छाह लूं ॥ च० दो० ॥ ९ ॥ श्लोक ॥ मलय चंदन कैशर वारिणा, निखिल जाड्यरु जात पहारणा ॥ शकल० ॥ ॐ ह्रूँ श्रँ श्री जिन दत्त० केशर चंदनं निर्व्वपामिते स्वाहा ॥ २ ॥

॥ अथ तीसरी पुष्प पूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ चंपा चमेली मालती, मरवा अरु मचकूंद ॥ जो चाढे गुरु चरण पर, नित घर होय आनंद ॥ १ ॥

॥ नींद तो गई वादीला मारी ॥ ए चाल ॥ राग माढ ॥ गुरु परतिख सुर तरु रूप, सुगरु शम दूजौ तो नही । दूजो तो नही रे, सुमति जन दूजों तो नही ॥ गुरु परतिख सुर तरु रूप, सुगुरुने पूजो तो सही ॥ ए आंकणी ॥ चितोड नगरी वज्र थंभमे, विद्या पोथी रहीरे ॥ सु० दि०॥ हेजी मंत्र जंत्र विद्या से पूरी, गुरु निज हाथ गृही ॥ गु० गुरुपर० ॥१॥ पुरउजेणी महाकाल के, मंदिर थंभ कहीरे ॥ सुम० ॥ हेजी शिद्धशेन दिन करकी पोथी, विद्या सरव लही रे ॥ सु० वि० गुरुप० ॥ २ ॥ उजेणी व्याख्यान वीचमें, श्राविका रुप गृहीरे ॥ सु० श्रा० हेजी जोगणीयां छलणे कुं आई, सव कूं खील दई ॥ स० गु० ॥ ३ ॥ दीन होय जोगणीयां चोसठ, गुरु की दाश भईरे ॥ सु० गु० ॥ हेजी शात दीयां वर दान हरष से, पसरया सुजस मही ॥ प० गु० ॥ ४ ॥ पुष्पमाल गुरु गुण की गूंथी, चाडो चित्त चहीरे ॥ सु० चा० ॥ हेजी कहे रामऋद्धिसार सुजस की, बूंटी आप दई ॥ बूं० गु० ॥ ५ ॥ श्लोक ॥ कमल चंपक केतकी पुष्प कैं, परि मलाकृत् षद् पद वृंद कैं ॥ शकल० ॥ ॐ ह्रूँ श्रीं श्री जिन दत्त० पुष्पं निर्व्विपामिते स्वाहा॥३॥

॥ अथ चोथी धूप पूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ धूप पूज कर सुगुरु की, पसरे परमल पूर ॥ जस सुगंध जगमें वधे, चढे सवाया नूर ॥ १ ॥

॥ राग सोरठ ॥ कुवज्या ने जादू डारा ॥ ए चाल ॥ अंबिका विरुद वखाणे, गुरु तेरो अं० ॥ तुम युग प्रधान नही छाने ॥ गु० ॥ ए आंकणी ॥ गढ गिरनारपें अंवड श्रावक, एसो नियम चित्त

ठाणे ॥ युग प्रधान इस जुगमें कोइ, देखूं जन्म प्रमाणे ॥ गु० अं० ॥ १ ॥ कर उपवाश तीन दिन बीते, प्रगटी अंबा ज्ञाने ॥ गु० ॥ प्रगट होय करमे लिख दीना, सुवरन अक्षर दाने ॥ गु० ॥ २ ॥ या गुण संयुत अक्षर वांचै. ताकूं युग वर जाने ॥ गु० ॥ अंवड मुलक२ मे फिरता, सूरि शकल पतवाने ॥ गु० ॥ ३ ॥ आया पाश तुमारे सदगुरु, कर पसार दिखलाने ॥ गु० ॥ वास क्षेप उन ऊपर डाला, चेला वांच सुणाणे ॥ गु० अं० ॥ ४ ॥ सर्व देव हे दाश जिनो के, मरु धर कल्प प्रमाणे ॥ युग प्रधान जिन दत्त सूरिश्वर, अंवड शीश झुकाने ॥ गु० ॥ ५ ॥ उद्योतन सूरि ने निज हथ, चोरासी गच्छ ठाने ॥ सो शब तुमरी शेवा सारे, चोरासी गच्छ माने ॥ गु० ॥ ६ ॥ जो मिथ्यात्वी तुमकूं न पूजे, सो नही तत्व पिछाने ॥ भद्र बाहु स्वामी तुम कीर्त्तन, कीनी ग्रंथ प्रमाणे ॥ गु० ॥ ७ ॥ युग प्रधान परि कीएंगिडिका, गण धर पद वृत्ति म्याने ॥ कहे रामऋद्धिशार गुरु कूं, पूजा धूप कराने ॥ गु० ॥ ८ ॥ श्लोक ॥ अगर चंदन धूप दशांगजैः। प्रशरिता खिल दिक्षु सु धुम्रकै ॥ शकल मं० ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं पर० धूपं निर्विपामिते स्वाहाः ॥ ४ ॥

॥ अथ पांचमी दीप पूजाः ॥

॥ दोहा ॥ दीप पूज कर सुगण नर, नित२ मंगल होत ॥ उजियालो जगमें जुगत, रहे अखंडत जोत ॥ १ ॥

॥ चाल ख्याल की ॥ पूजन कीज्योजी, नर नारी गुरु महाराज का हो पू० ॥ सिंधु देशमें पंच नदी पर, साधे पांचु पीर ॥ लोइ ऊपर पुरष तिराये, एसे गुरु सधीर ॥ पू० ॥ १ ॥ प्रगट होय के पांच पीर ने, सात दीया वरदांन ॥ सिंधु देशमें खर तर श्रावग, होवेगा धनवान ॥ पू० ॥ २ ॥ सिंधु देश मुलतान नग्रमे, बडा म

हो छत्र देख ॥ अंवड और गच्छ का श्रावग, गुरु सें कीना द्वेष ॥ पू० ॥ ३ ॥ अणहिलपूर पत्तनमे आवो, तो में जाणुं सचा ॥ बडे महोच्छव आवेंगे तूं, निर्धन होगा कचा ॥ पू० ॥ ४ ॥ पत्तन वीच पधारे दादा, सनमुख निर्धन आया ॥ गुरु वतलाया क्यूंरे अंवड, अहंकार फल पाया ॥ पू० ॥ ५ ॥ मनमे कपट कीया अंवड ने, खर तर महिमा धारी ॥ जहर दीया उन अशन पांनमे, गुरु विध जाणी सारी ॥ पू० ॥ ६ ॥ भणशाली मुखवर श्रावग से, निर्विष मुद्री मंगाई ॥ जहर उतारा तव लोकोंमें, अंवड निंया पाई ॥ पू० ॥ ७ ॥ मरके विंतर हुवा वो अंवड, रजो हरण हर लीना ॥ भण साली विंतर वचनो सें, गोत्र उतारा कीना ॥ पू० ॥ ८ ॥ सज्ज होय गुरु औघा ले के, गोत्र वचाया सारा ॥ ऋद्धिशार महिमा सद गुरु की, दीपक का उजयारा ॥ पू० ॥९॥ श्लोक ॥ अति सुदिसमयै खलु दीपकैः विमल कंचन भाजनशंस्थितै ॥ सकल०॥ ॐ ह्रूँ। पर० दीपंनिर्व्विपामिते स्वाहाः ॥ ५ ॥

॥ अथ छट्ठी अक्षत पूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ अक्षत पूजा गुरु तणी, करो महाशय रंग । क्षती न होवे अंगमे, जीते रणमे जंग ॥ १ ॥

॥ राग आसावरी ॥ अवधू सो जोगी गुरु मेरा ॥ ए चाल ॥ रतन अमोलख पायो सु गुरु शम, रतन अमोलख पायो॥ गुरु शंकट सवही मिटायो ॥सु०॥ ए आंकणी ॥ विक्रमपुर नगरी लोकनकूं, हेजा रोग संतायो ॥ वहुत उपाय कीया शांतिकका, जरा फरक नही आयो ॥ सु० र० ॥ १ ॥ जोगी जंगम वृह्म शंन्यासी, देवी देव मनायो ॥ फरक नही किनही ने कीना, हाहाकार मचायो ॥ सु० र० ॥ २ ॥ रतन चिंतामणि सरिपो साहिव, विक्रमपुरमे आयो ॥ जेन संघ को कष्ट दूर कर, जैजेकार वरतायो

॥ सु० र० ॥ ३ ॥ महिमा सुण माहेश्वर ब्राह्मण, सबही शीश न मायो ॥ जीवत दांन करो महाराजा, गुरु तब यूं फुरमायो ॥ सु० र० ॥ ४ ॥ जो तुम समकित वृत कूं धारो, अबही करदूं उपायो ॥ तहत वचन कर रोग मिटायो, आनंद हर्ष वधायो ॥ सु० र० ॥ ५ ॥ जो कोई श्रावग वृत नही धारयो, पूत्री पूत्र चडायो ॥ साधु पांच से दीक्षत कीना, साधवीयां समुदायो ॥ सु० र० ॥ ६ ॥ मंत्र कला गुरु अतिशय धारी, एसो धर्म दिपायो ॥ ऋद्धिसार पर किरपा कीनी, साचो इलम बतलायो ॥ सुर० ॥ ७ ॥ श्लोक ॥ सरल तंदुल कै रति निर्मलै । प्रवर मौक्तिक पूंज वदू ज्वलैः ॥ शकल० ॐ ह्रीँ श्रीँ प० अक्षतं निर्व्विपामिते स्वाहाः ॥ ६ ॥

॥ अथ सातमी नैवेद्य पूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ नैवेद्य पूजा सातमी, करो भविक चित चाव ॥ गुरु गुण अगणित कुण गिणे, गुरु भव तारण नाव ॥ १ ॥

॥ राग कल्याण ॥ तेरी पूजा वणी हे रसमे ॥ ए चाल ॥ हो गुरु किया असुर कुं वशमे ॥ ए आंकणी ॥ वड नगरीमे आप पधारे, सांभेला धसमसमे ॥ ब्राह्मन लोक वडे अभिमानी, मिलकर आया सुसमे ॥ हो गु० ॥ १ ॥ महिमा देख सक्या नही गुरु की, भरे मिथ्यात्वी गुसमे ॥ मृतक गउ जिन मंदिर आगे, रखदी सनमुख चसमे ॥ हो गु० ॥ २ ॥ श्रावग देख भये आकुलता, कहे गुरु से कसमे ॥ चिंता दूर करी हे संघ की, गउ उठ चाली डसमे ॥ हो गुरु० ॥ ३ ॥ मरी गउ कूं जीती कीनी, लोक रह्या सब हसमे ॥ जाके गाय पडी रुद्रालय ॥ संघ भया सब खुसमे ॥ हो गु० ॥ ४ ॥ ब्रह्मण पांव पड्या सब गुरु के, देख तमासा इसमे ॥ हुकम उठावेंगे शिर ऊपर, तुम शंतति की दिशमे ॥ हो गु० ॥५॥ नमस्कार हे चमत्कार कूं, कीनी पूजा रसमे ॥ कहे राम ऋद्धिसार

गुरु की, आनंद मंगल जस मे ॥ हो गु० ॥ ६ ॥ श्लोक ॥ वहु विधेश्चरुभिर्वटकैर्यकैः प्रचुरसर्प्पिपिपक्कसुखज्ज कै ॥ शकल० ॥ ॐ ह्रूँी श्रीँ प० नैवद्यंनिर्व्विपामिते स्वाहाः ॥ ८ ॥

॥ अथ आठमी फल पूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ फल पूजा से फल मिले, प्रगटे नवे निधान ॥ चिहुंदिश कीरत विस्तरे, पूजन करो सुजान ॥ १ ॥

॥ रथ चढ जदुनंदन आवत हे ॥ ए चाल ॥ चालो संघ सव पूजनकूं गुरु, शमरथां सनमुख आवत हे रे ॥ चा० ॥ ए आंकणी ॥ आनंदपुर पट्टन को राजा, गुरु शोभा सुण पावत हे रे ॥ चा० ॥ भेज्या निज परधान बुलाणे, नृप अरदास सुणावत हे रे ॥ चा०॥ १ ॥ लाभ जाण गुरु नगर पधारे, भूपत आय वधावत हे रे ॥ चा० राज कुमर को कुष्ट मिटायो, अचरज तुरत दिखावत हे रे॥ चा० ॥ २ ॥ दश हज्जार कुटंब संग नृप कूं, श्रावग धर्म धरावत हे रे ॥ चा०॥ प्रताप गढका पमार राजा, पुरमे गुरु पधरावत हे रे ॥ चा० ॥ ३ ॥ दया मूल आज्ञा जिनवर की, बारे व्रत उचरावत हे रे ॥ चा० ॥ एसे च्यार राज समकित धर, खर तर संघ वणावत हे रे ॥ चा० ॥ ४ ॥ कुष्ट जलंधर क्षैण भगंदर, केइयक लोक जीवावत हे रे ॥ चा० ॥ ब्राह्मन क्षत्री अरु माहेश्वर, ओस वंस पसरावत हे रे ॥ चा० ॥ ५ ॥ तीस हजार एक लख श्रावग, महिमा अधिक रचावत हे रे ॥ चा०॥ कहत राम ऋद्धिसार गुरु कूं, फल पूजा फल पावत हे रे ॥ चा० ॥ ६ ॥ श्लोक ॥ फनसमोचसदा फलकर्कटे सुसुखदैकिलश्रीफलचिर्भटै ॥ शकल० ॥ ॐ ह्रूँी प० फलं निर्व्विपामिते स्वाहाः ॥ ७ ॥

॥ अथ नवमी वस्त्र अतर पूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ वस्त्र अतर गुरु पूजना, चोवा चंदन चंपेल॥ दुस्मन सव सज्जन हुवे, करे सुरंगा खेल ॥ १ ॥

॥ मनडो किमही न वाजे हो कुंथुजिन ॥ ए चाल ॥ लखमी लीला पावेरे सुंदर, लखमी लीला पावे ॥ जे गुरु वस्त्र चढावे रे, सुं० ॥ सुजस अतर महकावे रे, सुं०॥ दुरजन शीश नमावे रे, सुं० ॥ ए आंकणी ॥ दरिया वीच जीहाज श्रावग की, डूबण खतरे आवे ॥ साचे मन समरे सद गुरु कूं, दुख की टेर सुणावे रे ॥ सुं०॥१॥ वाचंता व्याख्यान सूरीश्वर, पंषी रूपे थावे ॥ जाय समंदमे ज्याज तिराई, फिर पीछा जब आवेरे ॥ सुं० ॥ २ ॥ पूछे संघ अचरजमे भरीया, गुरु सब बात सुणावेरे ॥ सुं० ॥ एसें दादा दत्त कुशल गुरु, परचा प्रगट दिखावे रे ॥ सुं० ॥ ३ ॥ बो थर गूजरमल श्रावग की, दादा कुशल तिरावेरे ॥ सुं० ॥ सूखसूरी गुरु शमय सुंदर की, ज्याज अलोप दिखावेरे ॥ सुं० ॥४॥ बारे से इग्यारे दत्तसूरि, अजमेर अण सण ठावे ॥ उपज्या सोधर्मा दिवलोके, सीमंधर फुरमावेरे ॥ सुं०॥५॥ इक अवतारी कारज सारी, मुक्ति नगर मे जावेरे ॥ सुं०॥ कुशल सूरि देराउर नगरे, भुवनपती सुर थावेरे ॥ सुं०॥६॥ फागण वदि अम्मावश सीधा, पूनम दरश दिखावेरे ॥ सुं०॥ मणिधारी दिल्लीमे पूज्यां, शंकट सुपने नावेरे ॥ सुं० ॥७ ॥ रथी उठी नही देख वादसा, वांही चरण पधरावेरे ॥ सुं० ॥ वस्त्र अतर पूजा मद गुर की, ऋद्धिशार मन भावेरे ॥ सुं० ॥ ८ ॥ श्लोक ॥ अखिल हीर शुचि नव चीर कै। प्रवर प्रावरणैखलु गंधतः ॥ शकल० ॐ ह्रीँ श्रीं प० वस्त्रं चोवा चंदन पुष्पसारं निर्व्विपामिते स्वाहाः ॥९॥

॥ अथ दशमी ध्वज पूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ ध्वज पूजा गुर राज की, लहके पवन प्रचार ॥ तीन लोकके शिखर पर, पोहचे सो नरनार ॥ १ ॥

जिन गुण गावत सुर सुंदरी रे ॥ ए चाल ॥ ध्वज पूजन कर हरख भरी रे ॥ ध० ॥ सज सोले शिणगार सहेल्यां, श्री सद गुर

के द्वार खरी रे ॥ ध० ॥ अपछर रूप सुतन सुक लीनी, ठम २ पग झणकार करी रे ॥ ध० ॥१॥ गावत मंगल देत प्रदक्षणा, धन २ आनंद आज घरी रे ॥ ध० ॥ निर्धन कूं लखमी वगसावत, पूत्र विना जाके पूत्र करी रे ॥ ध० ॥ २ ॥ जो जो परतिप परचा देख्या, सुणो भविक दिल वीच धरीरे ॥ ध० ॥ फतेमल्ल भडगतीया श्रावग, पहली शंका जोर करी रे ॥ ध० ॥ ३ ॥ परतिख देखूं जव में जाणूं, प्रगव्या ततखिण तरण तरीरे ॥ ध० ॥ पुष्प माल शिर केशर टीका, अधर श्वेत पोशाख करीरे ॥ ध० ॥ ४ ॥ मांग २ वर बोले वाणी, फरक वतावो गुरु मेघ झरीरे ॥ ध० ॥ फरक उगायो दोय लाख पर, तेरी महिमा नित्त हरीरे ॥ ध० ॥ ५ ॥ गैनचंद गोले छाकूं ते, परतिख दीना दरस फरीरे ॥ ध० ॥ विक्रमपुरमें थुंभ तुमारा, चित्र करावत सुर सुंदरी रे ॥ ध० ॥ ६ ॥ थांनमल्ल लूण्यां पर किरपा, लखमी लीला सहज वरीरे ॥ लखमी पति दूगड की साहिब, हुंडी की भुगताण करीरे ॥ ध० ॥ ७ ॥ जो उपगार कर्या तें मेरा, दींनी सनमुख अमृत जरीरे ॥ ध० ॥ तेरी कृपासें सिद्धी पाई, जागे जस अरु भागे भरीरे ॥ ध० ॥ ८ ॥ भुखा भोजन तिसिया पाणी, भरत हाजरी देव परीरे ॥ ध० ॥ विखम वखत पर सहाय हमारे, ऋद्धिशार की गरज सरीरे ॥ ध० ॥ ९ ॥ श्लोक ॥ मृदु मधुरध्वनि खिंखणी नाद कै ॥ ध्वजाति चित्रित विसतवास कै ॥ शकल० ॥ शिखरो परिध्वजां आरोपयामि स्वाहाः ॥

॥ अथ अर्घ पूजा प्रारंभ. ॥

॥ दोहा ॥ भट्टारक पदवी मिली, जीते वादी वृंद ॥ कंठ विराजत सरस्वती, जगमे श्री जिन चंद ॥ १ ॥

॥ राग आसावरी अथवा धन्याश्री ॥ पूजन जग सुखकारी.

सु गुरु तेरी पूज० ॥ तेरे चरण कमल बलिहारी ॥ सु० ॥ साह सलेम दिल्ली को बादस्या, सुण के शोभ तिहारी ॥ भट्ट हरायो चरचा करके, भट्टारक पद धारो ॥ सु० ॥ १ ॥ अम्मावश की पून म कीनी, चंद उगायो भारी, चढके गगन करी हे चरचा, सूरज से तप धारी ॥ सु०॥२॥ चौंदेसे उगणीस शालमे, लखनेउ नगर मझारी ॥ गोरा फिरंगी टोपीवाला, दिलमे यह बात विचारी ॥ सु० ॥३॥ जैन सितंवर देव जो सचा, पूरे मनसा हमारी ॥ वाणी निकसी राज्य तुमारा, होवेगा इधकारी ॥ सु० ॥ ४ ॥ अंधे की खोली आंख सूरत मे, पूजे सब नर नारी ॥ कहां लग गुण वरणूं में तेरा, तूं ईश्वर जयकारी ॥ सु० ॥ ५ ॥ उगणीसे संवत्सर तेपन, मिगसर मास मझारी, शुकल दूज जिन चंद सूरीशर, खरतर गच्छ आचारी ॥ सु० ॥६ ॥ कुशल सूरि के निज संतानी, क्षेम कीर्ति मनुहारी ॥ प्रतिबोध्या जिन क्षत्री पांचसे, जांन सहित अणगारी ॥ सु० ॥ ७ ॥ क्षेम धाड शाखा जब प्रगटी, जगमे आनंदकारी ॥ धर्मशील साधू गुण पूरे, कुशल निधान उदारी ॥ सु० ॥ ८ ॥ या पूजन करतां सुख आनंद, अन धन लखमी सारी, कहत राम ऋद्धिशार गुरु की, जय २ शब्द उचारी ॥ सु० ॥ ९ ॥ इति श्री दादा समस्त गुरु पूजा संपूर्ण ॥

॥ अथ दादा गुरु महाराजकी आरति ॥

जय जय गुरु देवा, आरति मंगल मेवा, आनंद सुख लेवा ॥ ॥ ज० ॥ आंकणी ॥ इकव्रत दुय व्रत तीन-चार व्रत, पंच व्रतमे सोहे ॥ गु० ॥ जगत जीव निश तारण, सुर नर मन मोहे ॥ ज० ॥ १ ॥ दुख दोहग सब हर कर सद गुरु, राजन प्रतिबोधे ॥ सुत लखमी वर देकर श्रावक कुल मोधे ॥ ज० ॥ २ ॥ विद्या पुस्तक

धर कर सद् गुरु, मुगल पूत तारे ॥ वस कर जोगण चोसठ, पांच पीर सारे ॥ ज० ॥ ३ ॥ बीज पडंती वारी सदगुरु, समंद ज्याज तारी ॥ वीर कीये बस वावन, प्रगटे अवतारी ॥ ज० ॥ ४ ॥ जिन दत्त जिन चंद कुशल सूरि गुरु, खर तर गच्छ राजा ॥ चोरासी गच्छ पूजे, मन वंछित ताजा ॥ ज० ॥ ५ ॥ मन शुद्ध आरती कष्ट निवारण, सद गुरु की कीजे ॥ जो मागे सो पावे, जगमे जस लीजे ॥ ज० ॥ ६ ॥ विक्रमपुर मे भगत तुमारो, मंत्र कला धारी ॥ नित उठ ध्यान लगावत, मन वंछित फल पावत, राम ऋद्धसारी ॥ ज० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ ॥

॥ श्री दादाजीनी अष्टप्रकारी पूजा ॥

॥ सकलगुणगरिष्ठान् सत्तपोभिर्वरिष्ठान्, शमदमयमनिष्ठांश्चारुचारित्रनिष्ठान् । निखिलजगतिपीठे दर्शितात्मप्रभावान । मुनिपकुशल सूरीन् स्थापयाम्यत्रपीठे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनकुशल सूरिगुरो अत्रावतरावतर स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनकुशलसूरे अत्र तिष्ठ ठः ठः स्वाहा ॥ इति प्रतिष्ठापनम् ॥२॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनकुशलसूरिगुरो अत्र मम सन्निहितो भव वषट् ॥ इति सन्निधीकरणं ॥३॥

॥ अथ प्रथम जल पूजा ॥

॥ दोहा ॥ गंगाजल तिम नृवल वलि, तीर्थोदक भरपूर ॥ कलशभरी गुरु चरणपर, ढाले तस दुख दूर ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ देशी सूरती महीनानी ॥ गंगाजल अतिनिरमल, अमल सुकमले पूर ॥ खीरोदधि वरदधि ज्यों, उज्जल जल भरपूर ॥ तेह उदक वलि तीरथ निर, भरि कलश सनूर, गुरुचरणे जे ढाले, टाले दुष्कृत दूर ॥ १ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनकुशलसूरिगुरुचरणकमलेभ्यः जलंनिर्व्वपामि ते स्वाहा ॥ इति जलपूजा ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय चंदन पूजा ॥

॥ दोहा ॥ बावन्ना चंदन अगर, घसि केशर घनसार ॥ चरचे जे गुरु चरणने, पामे जयजयकार ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ मलयागर तिम अगर चंदन वलि केसर सार, कस्तूरी अतिगंधें पूरी घसि घनसार ॥ कुशलसूरि गुरुचरणे चरचे चढते भाव, सकल रोग तन सोग हरे वलि जडता भाव ॥ २ ॥ ॐ ह्रूँ श्रीँ श्रीजिनकुसलसूरिगुरुचरणकमलेभ्यः चंदनं निर्व्वपामि ते स्वाहा ॥ २ ॥ इति चदनपूजा ॥ २ ॥

॥ अथ तृतीय पुष्प पूजा ॥

॥ दोहा ॥ केतकि चंपक फूलथी, पूजे जे गुरुपाय ॥ तसु जस सूर उदय हुवे, अपजस तिमिर नसाय ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ चंपक केतक मेरुवा दमन सेवंती फूल, जाई जूई मोगरो मालती तेम उड्डूल ॥ कमल गुलाब चंबेली बेली परिमल पूर, गुरुचरणे जे ढोवे होवे जस ज्यूं सूर ॥ २ ॥ ॐ ह्रूँ श्रीँ श्री जिनकुशलसूरिगुरुचरणकमलेभ्यः पुष्पं निर्व्वपामिते स्वाहा ॥ इति ॥

॥ अथ चतुर्थ अक्षत पूजा ॥

॥ दोहा ॥ उज्जल ज्यों शशि अंकविण, खंडित नही विशाल ॥ अक्षत गुरुचरणे ठवे, तसु घर मंगलमाल ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ सरल सुगंधित तंदुल उज्जल जल उत्पन्न, ज्यूंवर मोती आभा हुंती उज्जलवन्न ॥ जलधोई ससमोई सोई अक्षत नव्य, स्वस्तिक कुशल वधावे पावे मंगल भव्य ॥ २ ॥ ॐ ह्रूँ श्रीँ श्रीजिनकुशलसूरिगुरुचरणकमलेभ्यः अक्षतं निर्व्वपामि ते स्वाहा ॥ ४ ॥

॥ अथ पंचम दीप पूजा ॥

॥ दोहा ॥ कंचन मणिमय रत्ननी, दीवी कर घृतपूर ॥ वाती मोली सूत धर ॥ करो प्रदीप मनूर ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ कंचनघटित जटित गति नानाविध नव रत्न, दीवी अतिकारीगर कीवी अधिक यत्न ॥ घृत पूरी ससनूरी मौली वाती जोय, दीप करे गुरु आगें ज्योत उद्योती होय ॥ ॐ ह्रूं श्रीं श्रीजिनकुशल सूरिगुरुचरणकमलेभ्यः दीपं निर्व्वपामि ते स्वाहा ॥ ५ ॥

॥ अथ धूप पूजा ॥

॥ दोहा ॥ बावन्ना चंदन अगर, सेल्लारस घनसार ॥ धूपे जे गुरु धूपथी, तस घर रिधविसतार ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ अगर चंदन सेलारस छाड छडीलो मेल, कपूरकाचरी वलि घनसारे मृगमद भेल ॥ धूप अडंग करी गुरु धूपे चढते चित्त, ते नरचित्त सुमारग पामें नव नव नित्त ॥ २ ॥ ॐ ह्रूं श्रीं श्रीजिनकुशलसूरिगुरुचरणकमलेभ्यः धूपं निर्व्वपामि ते स्वाहा ॥ इति धूपपूजा ॥ ६ ॥

॥ अथ नैवेद्य पूजा ॥

॥ दोहा ॥ शाल दाल पकवान घन, व्यंजन नव नव भांत ॥ नेवज गुरु आगल ठवे, क्षुधा दोष उपशांत ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ पेडा मगद सेवईया लाड्डु मोतीचूर, खाजा ताजा लापसी दोठा ने घृतपूर ॥ पिस्ता द्राख वदाम छुहारा पिडखजूर, गुरुचरणे जे ढोवे भोग लहे भरपूर ॥ २ ॥ ॐ ह्रूं श्रीं श्रीजिनकुशलसूरि गुरु चरणकमलेभ्यः नैवेद्यं निर्व्वपामि ते स्वाहा ॥ इति ॥

॥ अथ फल पूजा ॥

॥ दोहा ॥ श्रीफल शीताफल सदा, फल पूगीभल लेय ॥ ढोवे जे गुरुचरण पर, तसु उत्तम फल देय ॥ १॥

॥ ढाल ॥ श्रीफल शीताफल नारंगी दाडम द्राख, खरबूजा तरबूज जंभेरी पाकी साख ॥ करुणा कवला केला नींब फनस सफार, गुरुचरणे फल ढोई फल पामे श्रीकार ॥ २ ॥ ॐ ह्रूं श्रीं श्रीजिन कुशल सूरि गुरु चरणकमलेभ्यः फलं निर्व्वपामि ते स्वाहा ॥ ८ ॥

॥ अथ अर्घ पूजा ॥

॥ अथ कलश दोहा ॥ इमजिनकुशलसूरिंदने, पूजे अष्ट प्रकार ॥ तसु घर नवनिधि संपजे । पुत्रादिक परिवार ॥ १ ॥ भट्टारक खरतर गछे, श्रीजिनलाभसुरिंद ॥ रत्नराजमुनी भमरपर, सेवे पद अरविंद ॥ २ ॥ तासु चरण रजकणसमो, ग्यान सार बुद्दिमंद ॥ श्रीसदगुरु पूजा रची, सोधो कविजनवृंद ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ सदगुरूणां आरति लिख्यते ॥

॥ पेहेली आरती दादाजीकी कीजे, दुख दोहग सब दूर हरीजे ॥ जयजय सदगुरु आरती कीजे ॥ श्रीजिन कुशल सूरि समरिजे ॥ जय० ॥ १ ॥ बीजी बीज पडंति धारा, भयवारण तूंही सुखकारा ॥ जय० ॥ २ ॥ तीजी परचा पूरक तेरी, दूर हरो सब दुर्मति मेरी ॥ जय० ॥ ३ ॥ चौथी मुगलपुत्र जियदायक, सुरवर हुकम धरे ज्युं पायक ॥ जय० ॥ ४ ॥ पांचमी पांच नदी जिणें तारी, संघ सकलनी संकट वारी ॥ जय० ॥ ५ ॥ छठी थांभो वज्र विदारी, विद्या पोथी परगटकारी ॥ जय० ॥ ६ ॥ सातमी चौसठ जोगण साधी, सूरिमंत्र सुरने आराधी ॥ जय० ॥ ७ ॥ इणविध सात आरती कीजे, मनवंछित संपति फल लीजे ॥ जय० ॥ ८ ॥ जैन लाभ खरतर गणधारी, सदगुरु चरणकमलबलिहारी ॥ जय० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ चक्केसरीकी आरती ॥

॥ जय जय जिनपदसेवनकारक, जय जय जगदंबे ॥ ए आंकणी ॥ अहनिशि तुझ पद समरन कारन, दिल बिच ध्यान धरे ॥ ॥ जय० ॥ १ ॥ भविजनवंछितपूरन सुरतरु, चक्केसरि अंबे ॥ जय० ॥ २ ॥ वसुभुजशोभित कनक छबी तनु, सेवीत सुरवृंदे ॥ जय० ॥ ३ ॥ पंचानन तिम खगपति वाहन, आयुध हस्त धरे ॥ जय०॥

मोदकारी, रुषभेसजी तिलेवक आपे, आनंद संघ घरे ॥ जय० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ यक्षराजाकी आरती ॥

॥ जय जय रुषभपदांबुजसेवक, जय जय जखराया, भविजन सुखदाया ॥ ज० ॥ कामगवी जिम वंछितदायक, कंचनवरणसुहाया ॥ ज० ॥ १ ॥ संकट विकट निवारण कारण, वरकुंजर चढि आया ॥ जय० ॥ २ ॥ उदधिभुजें करि शोभित तनु छबि, गुण निधि गोमुखसुरराया ॥ जय० ॥ ३ ॥ आरत हरवा करत आरति, श्रीसंघ चित्त हुलसाया ॥ ज० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ संध्याकी आरती ॥

॥ रुषभ अजित संभव अभिनंदन, सुमति पदम श्रीसुपासकी, जय महाराजकी दीन दयालकी आरति कीजें ॥ चंद सुविधि शीतल श्रेयांसा, वासुपूज्य जिनराजकी ॥ जय० ॥ १ ॥ विमल अनंत धर्म हितकारी, शांतिनाथ सुखकारकी ॥ जय० ॥ २ ॥ कुंथुनाथ अर मल्लि मुनिसुव्रत, नमी नमुं सोवन कायकी ॥ जय० ॥ ३ ॥ नेमिनाथ प्रभु पार्श्व चितामणि, वर्धमान भव पारकी ॥ जय० ॥ ४ ॥ कंचन आरति बहुविध सज कर, लीजें अंग उछाहकी ॥ जय० ॥ ५ ॥ सकल संघ मिल आरति करत है, आवागमन निवारकी ॥ ज० ॥ ६ ॥ इति ॥

इति खरतर तप गच्छादि पूजाका संग्रह संपूर्णम्.

॥ श्रीअर्घ पूजा ॥

॥ अथ स्तवन संग्रह कुशलइर्यंते ॥

॥ अथ पद १ लुं ॥

॥ आज वधाइ म्हारे हरष वधाइ, मोतीयडे मेह वूठा रे ॥ आ० ॥ परम पुरुष प्रभु पासजिणंदनी, सुनिजर पाइ सवाई रे ॥ आ० म्हा० ॥ १ ॥ वामानंदन जिनवर वांद्या, प्रगटी पूर्व पुन्याई रे ॥ आ० म्हा० ॥ २ ॥ वदन प्रभूजीनो जोतां वाधी, सखरी प्रीत सगाई रे ॥ आ० म्हा० ॥ ३ ॥ परहो करीने वाल्हा पातिकपडदो, लगन प्रभूसुं लगाई रे ॥ आ० म्हा० ॥ ४ ॥ अनुपम प्रभुजीनी ओलग होयजो, श्रीजिनचंद सहाई रे ॥ आ० म्हा० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ पद २ जुं ॥

॥ सहसफणा मोरा साहिबा, तेरी सांवली सूरत पर वारीजाउं रे ॥ सफली आज घडी अब मेरी, देख दरस हरखाउं रे ॥ स० ॥ १ ॥ मुझ मन लगन लगी प्रभु तुमसें, देव अवर नहीं ध्याउं रे ॥ स० ॥ २ ॥ वदनकमल छिव निरखित सुंदर, रोम २ हुलसाउं रे ॥ स० ॥ ३ ॥ तुम गुणको कुछ पार न पायो, ओपमा क्या बतलाउं रे ॥ स० ॥ ४ ॥ किर्त्तिसागर कहे भव २ तेरी, मोज महिर नित पाउं रे ॥ स० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥ २ ॥

॥ अथ पद ३ जुं ॥

॥ प्यारी पासकी देखी मूरत मो मन भाय, प्या० ॥ अश्वशेन वामाजी के नंदन, देख्यां दिल हरखाय ॥ प्या० ॥ १ ॥ तीनलोकमें महिमा जाकी, सुर नर मुनि गुण गाय ॥ प्या० ॥ २ ॥ नीलवरण मनमोहन निरख्यो, नाथ गोडीचा राय ॥ प्या० ॥ ३ ॥ सुगण सेवककी याही अरज हे, भवदुःख ताप मिटाय ॥ प्या० ॥ ४ ॥

मदा प्रमोदकारी, रूषभेसजी तिहारे ४ थुं ॥

॥ सांवरा नेम्य नाथ मांइ, सां० ॥ नैणासुं न करुं न्यारो री माई, सा० ॥ जगबंधव जादवपति जिनवर, अंतर प्राण आधारो री माई ॥ प्रभु अपणे वल जीत लियोंहे, मदन महा मतवालो री माई ॥ सां० ॥ १ ॥ नाथ निरंजन सिवादेवी नंदन, केवलज्ञान उजारो री माई ॥ राजरतन त्रिहुं लोकको नायक, सोही स्यांम हमारो री माई ॥ सां० ॥ २ ॥ इति पदं ॥ ४ ॥

॥ अथ पद ५ मुं ॥

॥ तेरे दरसकी चाह लगी, सखी स्यांमवरण दिखला जा रे ॥ ते० ॥ १ ॥ सहसावन जाय दिक्षा लीनी, हमकूं लार लगा जा रे ॥ ते० ॥ २ ॥ जाय चढे प्रभु गिरनार उपर, अब केसें विसरा जा रे ॥ ते० ॥ ३ ॥ चैनविजय कहे धन २ राजुल, प्रभु चरणां चित लाजा रे ॥ ते० ॥ ४ ॥ इति पदं ॥ ५ ॥

॥ अथ पद ६ ठुं ॥

॥ तुम केसें तिरोगे भवसें, प्रभुकी लगन नहिं जियसें ॥ तु० ॥ १ ॥ विना विवेक समता नहिं जियकूं, क्या हुय धर्म कियेसे ॥ तु० ॥ २ ॥ धन वहोत हे भाव वहुत हे, फल होगा कुछ दान दियेसें ॥ तु० ॥ ३ ॥ दान शील तप हियमें धारो, धर्म होयगा धर्म कियेसें ॥ तु० ॥ ४ इति पदं ॥ ६ ॥

॥ अथ पद ७ मुं ॥

॥ नेमजिनंदजीसें आंखडली, मोरी रेन दिवस नित लगरही रे ॥ मो० ने० ॥ १ ॥ पहली आय उन दोस्ती कीनी, ले पीछे छीटकाय दई रे ॥ ने० मो० ॥ २ ॥ पसुवन पर प्रभु दया करीने, शिवरमणीकूं वरलई रे ॥ ने० मो० ॥ ३ ॥ केई भविक रसना कर दोस्ती, रत्नविमल पद पाय लई रे ॥ ने० मो० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ [illegible] पूजा ॥

॥ वीरप्रभू तेरी दोस्तीमें, मेरी सुमकुशल [illegible] भइ रे ॥ वी० ॥ आप नहीं आवे बोध पठावे, तेरा सूरत पर कुरवांन भई रे ॥ वी० ॥ १ ॥ दास आसका पूरन कीजे, दीजे दरस वडी वेर भई रे ॥ वी० ॥ २ ॥ सेवककी प्रभु यही अरज हे, चरणनसें लप टाय रहीं रे ॥ वी० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥ ८ ॥

॥ अथ पद ९ मुं ॥

॥ क्या छिव लागत प्यारी, मरुदेवा नंदनकी, क्या छिब लागत प्यारी ॥ म० ॥ रतन जडतको मुगट मनोहर, कूंडल झलकत भारी ॥ क्या छि० ॥ १ ॥ मोतियन हार बाजूबंध छिटकत, छिटक केस कारी कारी ॥ क्या० ॥ समवसरण प्रभू चोमुख मूरत, सूरत प्रभुजीकी सारी ॥ क्या छि० ॥ २ ॥ देख दरस सबको मन हरखित, चित्र जात सुरनारी ॥ क्या छि० ॥ ३ ॥ बालचंद प्रभु अधम उधारण, चरण सरण वलिहारी ॥ क्या छि० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ पद १० मुं ॥

॥ में तो जोती फिरुं जिनराया रे, नेम स्यांम नहीं पाया रे ॥ में० जो० ॥ इक वन ढूंढ सकल वन ढूंढी, वन २ वास वसाया रे ॥ ने० में० जो० ॥ १ ॥ पसुवनकी प्रभु दया विचारी, तोरणसें रथ फेर सिधाया रे ॥ने०॥२॥ संयमधारी भये ब्रह्मचारी, गढ गिरनार वताया रे ॥ ने० में० जो० ॥ ३ ॥ राजमती अरु नेम प्रभूका, रूपचंद जस गाया रे ॥ ने० में० जो० ॥ ४ ॥ इति पदं० ॥

॥ अथ पद ११ मुं ॥

॥ जिनराज नाम तेरा, हो राखूं रे हमारा घटमें ॥ जाके प्रभाव मेरा, अज्ञानका अंधेरा, भाग्या भया उजेरा ॥ हो रा० ॥१॥ सूरत तेरो रागे, देख्यां विभाव त्यागे, अध्यात्म रूप जागे ॥ हो रा०॥२॥

मुद्रा प्रमोदकारी, ऋषभेसजी तिहारी, लागत मोहि प्यारी ॥ हो रा० ॥ ३ ॥ त्रैलोक्य नाथ तुमही, हमहें अनाथ गुनही, करिये स नाथ हमही ॥ हो रा० ॥ ४ ॥ प्रभुजी तिहारी साखे, जिन हर्ष सूरि भाखे, दिलमांहि याही राखे ॥ हो रा० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ पद १२ मुं ॥

॥ मेरो मन वस कर लीनो, जिनवर प्रभु पास ॥ मे० ॥ अखियां कमल पांखडिया, मुख शशि सुंदर जास ॥ मे० ॥ १ ॥ काने कुंडल दोय झिलके, शशि सूरज सम भास ॥ मे०॥२॥ नील वरण तनु सोहे, त्रिभुवन परकास ॥ मे० ॥ ३ ॥ प्रभु तुम्ह सरण रहीने, समरूं सासोसास ॥ मे० ॥ ४ ॥ लालचंद अरज सुणीजे, पूरो वंछित आस ॥ मे० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥ १२ ॥

॥ अथ पद तेरमुं ॥

॥ चालो सखी वंदन जइये, नाभजीके नंद ॥ चा० ॥ ममता कुटिलता मूकी, मन धरिये आनंद ॥ चा० ॥ १ ॥ देस देसके जात्री आवे, पूजे ऋषभ जिनंद ॥ चा०॥२॥ देवदुंदुभि तिहां वाजे, गाजे गहिर समंद ॥ चा० ॥ ३ ॥ चेत २ सबल सुख हेते, वंदे विमल जिणंद ॥ चा० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥ १३ ॥

॥ अथ पद १४ मुं ॥

॥ मनवा जिणंद गुण गाय रे ॥ म० ॥ या जिनजीके दरस सरसतें, दुख दोहग मिट जाय रे ॥ म० ॥ १ ॥ सुगुरु वचन परतीत मान ले, आतमसुं लय लाय रे ॥ म० ॥ २ ॥ भव २ में तोकूं सुखदाई, आनंद वंछित पाय रे ॥ म० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ पद १५ मुं ॥

॥ अरज सुणीजे अंतरजामी, पास जिनेसर स्वामी रे ॥ अश्वसेन वामाजीके नंदन, त्रिभुवन जन विसरामी रे ॥ अ० ॥ १ ॥

गुण गिरवा गोडीचा स्वामी, नाथ निरंजन नामी रे ॥ भव अ टवी वन घन विच भमतां, पुण्ये सेवा पामी रे ॥ अ० ॥ २ ॥ दीनदयाल दयाकर दीजे, अनुभव गुण विसरामी रे ॥ चरण क मल सेवा चित चाहत, सुगण सदा हितकामी रे ॥ अ० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ पद १६ मुं ॥

॥ गिरनारीकी वता दीजो डागरिया, जहां नेम प्रभुजीने जोग लिया ॥ गि० ॥ छप्पन कोड जादव मिल आये, जूनागढकी नाग रियां ॥ ज० ॥ १ ॥ सहसावनकी कूंज गलनमें, पंच महाव्रत आ दरियां ॥ ज० ॥ हितकर राजुल अरज करत हे, चरण कमल पर चित्त दियां रे ॥ ज० ॥ २ ॥ इति पदं ॥ १६ ॥

॥ अथ पद १७ मुं ॥

॥ रथ चढ जादुनंदन आवत हे रे, चलो सखी छिब देखणकूं ॥ रथ० ॥ मोर मुगट पीतांवर सोहे, गिरनारीकूं ध्यावत हे ॥ र० ॥ १ ॥ तीन छत्र अरु तीन सिंघासन, चोसठ चमर ढुलावत हे ॥ र० ॥ २ ॥ लालचंदकी यही अरज हे, सब सखी मंगल गावत हे ॥ र० ॥ ३

॥ अथ नवपद स्तवन लिख्यते ॥

॥ अथ पद १८ मुं ॥

॥ नव पदके गुण गाय रे, जिया चतुर सुजाण ॥ नवप० ॥
नवपद महिमा जगमें मोटी, गणधर पार न पाय रे ॥ जि० न० ॥ १ ॥
जो अपणे आतम सुख चहिये, तो इक ध्यान लगाय रे ॥ जि० ॥ २ ॥
करम निकाचित दूर करणकूं, सुंदर सुद्ध उपाय रे ॥ जि० ॥ ३ ॥
इनको पुष्ट आलंबन करतां, अजर अमर सुख थाय रे ॥ जि० ॥ ४ ॥
हे जिन भये आगामी होयगें, नवपद संघ पसाय रे ॥ जि० ॥ ५ ॥
श्रीजिनचंद्र सदा हितवच्छल, जीतरंग गुण गाय रे ॥ जि० ॥ ६ ॥

॥ अथ पद १९ मुं ॥

॥ प्रभुजीसें मोरी लगन लगी ॥ ए चाल ॥ नवपद सेवो भवि जन मिलके, यातें बहु सुख थाय जी ॥ न० ॥ अरिहंत सिद्ध आचारज पाठक, साधु महा मुनिराय जी ॥ न० ॥ १ ॥ दरसण ज्ञान चारित्र तप उत्तम, ए नवपद चित लाय जी ॥ न०॥ द्रव्य भाव दुय पूजा जिनकी, सूत्रे एही कहाय जी ॥ न० ॥ २ ॥ कुंकुम चंदन मृगमग घोली, विधिसें पूज रचाय जी ॥ न०॥ सुरभि द्रव्य सब आगे ढोवो, भावना बहु विध भाय जी ॥ न० ॥ ३ ॥ पाप पंक मल दूर करीने, उत्तम एह उपाय जी ॥ न० ॥ उच्छव दिन २ अधिका करिहे, वाळो चरवर दाय जी ॥ न० ॥ ४ ॥ वरस अढार पंच्याणवे आश्विन, सुदि पूनम सुखदाय जी ॥ न० ॥ श्रीजिन सौभाग्य सूरि कहे भवि, नवनिधि संपद थाय जी ॥ न० ॥५॥ इति ॥

॥ अथ पद २० मुं ॥

॥ नवपद महिमा अजब बणी, सखि सब मिल वंदन जइये रे ॥ न० ॥ अरिहंत सिद्ध आचारज पाठक, साधु महा पद कहिये रे ॥ न० ॥ सम्यग् दरसण ज्ञान चारित्र तप, ए नवपद चित गहिये रे ॥ न० ॥ १ ॥ उत्तम साधन इण सम कोइ, ओर न दूजो लहिये रे ॥ न० ॥ शुद्ध आचारे जे नर सेवे, निज गुण संपद पइये रे ॥ न० ॥ २ ॥ जे भवि भावे इक चित ध्यावे, सरदहणा सुद्ध रहिये रे ॥ न० ॥ ते नर नृप श्रीपालतणी पर, लोह कंचन जिम थइये रे ॥ न० ॥ ३ ॥ विधिसंयुत भवि पूजन करके, जिनगुण मंगल गइये रे ॥ न० ॥ श्रीजिन सौभाग्य सूरि कहे इम, जो आतम सुख चहिये रे ॥ न० ॥ ४ ॥ इति पदं ॥ २० ॥

॥ अथ पद २१ मुं ॥

॥ जिन नित्य नमो नित्य नमो नमोनमो ॥ जिन० ॥ टेर ॥ अरिहंत सिद्ध ओर आचारज, उवज्झाया मन रमोरमो ॥ जिन० ॥ १ ॥ सर्वसाधु मंगल ए पांचूं, सब पाप उपसमोसमो ॥ जिन०

॥ २ ॥ दर्सण नाण चरण तप उत्तम, याहीतै मन गमोगमो ॥ जि० ॥ ३ ॥ क्रोधादिक तज भज नवपदकूं, विषय राग दिल दमोदमो ॥ जि० ॥ ४ ॥ बाल कहै एहि सार जगतमें, ओर द्वार मत भमोभमो ॥ जि० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥ २१ ॥

॥ अथ पद २२ मुं ॥

॥ साहिब आदि जिनंद चंद, मोहे अपने रंगमें रंग दे ॥ सा० ॥ टेर ॥ रंग मिथ्यात्व लग्यौ है अनादिकौ, सौ अब हमसें तज दे ॥ सा० ॥ १ ॥ रत्नत्रयी ऋद्धि तेरी में देखी, सौ अब हमकूं सझ दे ॥ सा० ॥२॥ जयरंग पाठककी प्रभु लज्या, आप समान मोकूं कर दे ॥ सा० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥ २२ ॥

॥ अथ पद २३ मुं ॥

॥ सांवरौ सुख दाई ॥ जाकी छबि वरणी न जाई ॥ सां० ॥ टेर ॥ श्रीअश्वसेन वामा नंदनकी, कीरति त्रिभुवन छाई ॥ समेत सिखर गिरिमंडन प्रभुकौ, देख दरस हरषाइ, हृदय मेरौ अति हुलसाई ॥ सांव० ॥ १ ॥ आज हमारे सुरतरु प्रगट्यौ, आज आनंद वधाइ ॥ तीन भुवनकौ नायक निरख्यौ, प्रगटी पूर्व पुन्याई, सफल मेरौ जन्म कहाई ॥ सांव० ॥ २ ॥ प्रभुके दरस सरस विन पाए, भव भव भटक्यौ में भाइ ॥ अब प्रभु चरण सरण चित्त चाहै, बाल कहै गुण गाइ, जिनंदजीसुं लगन लगाई ॥ सां० ॥३॥

॥ अथ श्री दादागुरु स्तवन लिख्यते ॥

॥ जिन दत्त सुगुरु बलिहारी सुखकारी ॥ जिन० ॥ टेर ॥ संघ सकलनौ संकट वारी, पंच नदी जिन तारी ॥ सुखकारी ॥ जिन० ॥ १ ॥ विद्या पोथी परगटकारी, थांभौ वज्र विदारी ॥ सु० ॥ जिन० ॥ २ ॥ मृतक गऊ जिन जिनमंदिरतै, मंत्रतें करीय [illegible]री ॥ सु० ॥ जिन०॥३॥ ज्ञानसार गुरु चरण कमलपर, वारीजाउं हजारी ॥ सु० ॥ जिन०॥४॥ इति पदं ॥ इति स्तवन संग्रह संपूर्ण ॥

॥ इति श्री जिन पूजा महोदधि ग्रन्थ समाप्तः ॥